ओंकार

रीजनल-भूगोल

चौथा भाग

प्रकाशक—

ओंकार प्रेस, प्रयाग।
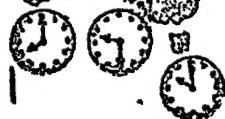
नेता जी सुभाषचन्द्र वोस

अगस्त आन्दोलन प्रारम्भ होने से पूर्व आपने अचानक भारत अन्तर्धान होकर विदेश में भारत की मुक्ति के लिए 'आज़ाद फौज' व 'आज़ाद हिंद सरकार' का निर्माण किया।

Approved by the Director of Public Instrution, U. P.
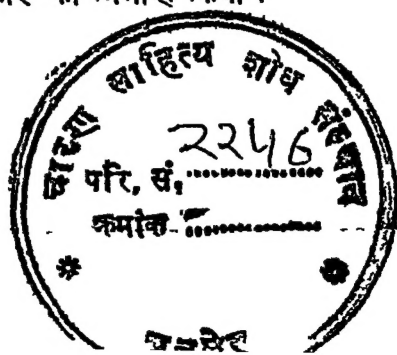
रीजनल-भूगोल

चौथा भाग

अर्थात्

प्राकृतिक भूखण्ड तथा नवीन शिक्षा-क्रम के अनुसार बाल-मनो-विज्ञान-पद्धति से वर्नाक्यूलर स्कूलों के कक्षा ६ के लड़के व लड़कियों के लिये लिखित

लेखक :—

बाबू राम भटनागर एम० ए० एल० टी०

और

श्याम लाल मेहरा बी० ए० सी० टी०

असिस्टेन्ट मास्टर्स, गवर्नमेन्ट हाई स्कूल, पीलीभीत।

इस पुस्तक में २०×३० इञ्च के २८ पौंड का सफेद एवं सुन्दर तथा कवर में ६० पौंड का रंगीन कागज लगाया गया है। साइज़ डबल क्राउन १६ पेजी है।

प्रकाशक :—

ओङ्कार प्रेस, प्रयाग।

Price 1-0-0] [मूल्य एक रुपया

प्रस्तावना

अब तक भूगोल की शिक्षा को उपयोगी विषय न समझ कर स्कूलों के शिक्षक महोदय उस पर विशेष ध्यान नहीं देते थे। उनकी समझ में किसी देश का भूगोल केवल वहां की नदियों, पर्वतों, खाड़ियों, प्राकृतिक अवस्थाओं तथा स्थानों के नामों की सूची मात्र ही थी। विद्यार्थियों को यह सूची रटा देना ही वे भूगोल की सर्वोत्तम शिक्षण-पद्धति समझते थे। अब मनुष्य अनुभव करने लगे हैं कि भूगोल-विज्ञान भी अन्य विषयों की भांति एक आवश्यक एवं उपयोगी विषय है। अतः मानवीय दृष्टि कोण के साथ साथ भूगोल-विज्ञान का भी क़ाया कल्प हो गया है। सच तो यह है कि अब भूगोल विज्ञान की परिभाषा ही परिवर्तित हो गई है।

भूगोल विज्ञान की आधुनिक परिभाषा

भूगोल वह विज्ञान है जिसमें भू अर्थात् भूमि पर जितनी सामग्री मानव-जीवन से संबंध रखती है उनका कार्य-कारण रूप में पूरा पूरा वर्णन हो। भूगोल विद्या में मनुष्य के उन उद्योगों का भी वर्णन होता है जिन्हें वह प्रकृति पर विजय पाने के लिये काम में लाता है। इसलिये मानों प्रकृति देवी के साथ एक मानव-संग्राम हो रहा है, इस संग्राम का सविस्तर और सप्रमाण वर्णन भूगोल विज्ञान के ही अन्तर्गत है। जो नवीन आविष्कार प्रतिदिन हमारे दृष्टिगोचर होते हैं उनका मनुष्य ने अग्नि, जल-वायु, भाप तथा गैसों की शक्तियों को अपने वशीभूत करके ही पता लगाया है। मानव-शक्ति ने प्राकृतिक नियमों के प्रतिकूल पृथ्वी की नैसर्गिक अवस्था, जल-वायु एवं उपज को भी अपने अधीन कर लिया है। इसीलिए हालैण्ड में अगस्त्य मुनि की तरह समुद्र को सुखा कर नवीन भूमि पर अधिकार किया जा रहा है। गिनी के समुद्र-तट (GuineaCoast) की शुष्क, आर्द्र एवं हानि

कारक जल-वायु अब पहले की अपेक्षा कुछ भागों में स्वास्थ्य-वर्द्धक तथा सहिष्णु बना ली गई है। सिनकोना जो पीरू-भूमि की एक मात्र उपज है, आज दार्जिलिंग में अधिक उगाया जा रहा है। इसी कारण वैज्ञानिकों ने मुक्तकंठ से स्वीकार किया है कि भूगोल-विज्ञान में उन सब नियमों का विस्तृत वर्णन होता है जिनके कारण भूमि तथा भू-वासियों के रहन-सहन, धन-धान्य कला-कौशल और व्यापार में वर्तमान कालिक बड़ी उन्नति हो गई है।

भौगोलिक शिक्षा की आवश्यकता

भूगोल पढ़ाने का एक मात्र लक्ष्य यही नहीं है कि विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति बलवती कर दी जाय, अपितु उनके आचार-विचारों पर प्रभाव डालना भी एक महान उद्देश्य है। जब एक विद्यार्थी अरब की मरु-भूमि के रहने वालों अथवा तिब्बत में बर्फ़िस्तान के निवासियों को देखता एवं उनका वृत्तान्त पढ़ता है तब उसके हृदय में उनके प्रति घृणा के नहीं, सहानुभूति एवं समवेदना के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। वह जानता है कि प्रकृति देवी ने उनको ऐसे वातावरण में पैदा किया है कि वे सभ्यता एवं उन्नति के मार्ग में बहुत पीछे रह गए हैं। इसलिए भूगोल का सच्चा विद्यार्थी उन्हें पद-दलित नहीं किन्तु अपना निर्बल भाई समझता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भूगोल की वास्तविक शिक्षा विश्व-बन्धुत्व भाव(Universal Brotherhood) की उद्दीपिका, समाचार पत्रों की सहोदरा एवं पथिकों की पथ प्रदर्शिका है और जहाज़ आदिकों के लिए तो प्रकाश-स्तम्भ का काम करती है।

भूगोल की वास्तविक परिभाषा जानने के बाद उसकी आवश्यकता के बारे में विशेष लिखना ऐसा ही होगा जैसे गुलाब के फूल पर गुलाबी रङ्ग चढ़ाना, परन्तु फिर भी अनुभव बताता है कि यों तो मनुष्य के लिये बचपन

से ही अपने देश का भूगोल जानना आवश्यक है। इसीलिये वह अपने घर के कमरों, कस्बे के मोहल्लों, डाकखानों, बाजारों और आस पास के गावों तथा नगरों का साधारण भूगोल अपनी आवश्यकतानुसार क्रम से सीख लेता है। किन्तु आज इस आधुनिक युग में जब रेल, तार, जहाज और हवाई जहाज़ों के फैलाव से सर्वत्र अन्तर देशीय (International) सम्बन्ध हो गया है जिससे हमारी गोल वसुन्धरा के निवासी परस्पर पूर्व और पश्चिम में क्षितिज के समान मिले हुये दिखाई दे रहे हैं। उनमें भेद भाव का पता लगाना मिले हुये नीर-क्षीर को अलग करने के समान कठिन है। ऐसे वैज्ञानिक युग में समय की द्रुत-गति के साथ यदि हम आगे बढ़ना चाहते हैं तो हमें परमावश्यक है कि हम कूप-मण्डूकपन को छोड़कर अन्यान्य देशों का भी भूगोल भली प्रकार सीखें।

भौगोलिक-शिक्षा-पद्धति

भौगोलिक विद्या की आवश्यकता तथा उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिये कि जो कुछ छात्रों को पढ़ाया जाय उसे वे भली प्रकार हृदयाङ्कित कर सकें और उनके मस्तिष्क पर भी बोझ न पड़े। अतः भूगोल पढ़ाने वाले शिक्षकों को उचित है कि वे विद्यार्थियों को कभी कभी अवकाश दें कि वे निरीक्षण द्वारा भौगोलिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस प्रकार प्राप्त की हुई विद्या की पूर्ति के लिए दर्जे में प्रश्न करें और विद्यार्थियों को भौगोलिक विषयों पर विचार करने का अभ्यास करायें। जिन विषयों का निरीक्षण वे अपनी आँखों से नहीं कर सकते, उन विषयों को अध्यापक चित्रों नक़्शों तथा नमूनों द्वारा और ख़ाका खींचकर समझायें। अध्यापन-कला भी एक दैवी देन है। जो अध्यापक इस नैसर्गिक कला से

सम्पन्न हैं वे स्वाभावतः कक्षा में पढ़ाने वाले पाठ को रुचिकर और मनोरम बना लेते हैं तथा कक्षा में विद्यार्थियों को बेकार न बैठाकर उन्हें कार्य-तत्पर रखते हैं। इसी प्रकार जो अध्यापक इस कला में उन्नत होना चाहते हैं, उन्हें भी चाहिये कि अगले दिन पढ़ाने वाले पाठ को पहिले पढ़ें फिर कक्षा में कहानी एवं उदाहरणों की सहायता से पाठ को रोचक बनावें, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी के विचार एवं धारणा में संजीवनी शक्ति पैदा हो जावे। कक्षा में अपने को तथा अपने छात्रवर्ग को कार्य-तत्पर रखना भी पाठन-कला का एक विशेष अंग हैं।

हमारा परिश्रम

हमने वर्तमान शिक्षा-पद्धति तथा केरीक्यूलम के क्रमानुसार भूगोल की इन छोटी पुस्तकों का निर्माण किया है। जिनमें भौगोलिक नियमों तथा ज्ञान को वैज्ञानिक रीति द्वारा, 'कार्य-कारण' सम्बन्ध से जोड़ा है। विषयों का क्रम नियमानुसार है और उन विषयों को नव्य-शिक्षण पद्धति से सीधी-साधी भाषा में लिखा गया हैं। एक देश का भूगोल बताने के लिये हमने उस देश को रीजन्स (Regions) अर्थात् भूखण्डों में विभाजित किया है। भूगोल की 'रीजनल' विभक्ति से जो सुविधायें प्राप्त होती हैं उनका वर्णन करना व्यर्थ है। इन छोटी छोटी पुस्तकों में हर विषय को विस्तृत रूप से लिखना असम्भव था। अतः हमने आवश्यक तथा मोटी-मोटी बातों की ओर केवल संकेत ही कर दिया है और बहुत कुछ इस कारण से नहीं लिखा है कि अध्यापकों तथा छात्रों को भी इस क्षेत्र में अपने विचार दौड़ाने का अवकाश मिले। पाठों को रोचक बनाने के लिये यथासम्भव समुचित और आवश्यक नक्शे, चित्रादि एवं सुन्दर दृश्यों का संक्षिप्त वर्णन

भी दिया गया है। प्रत्येक पुस्तक में आदि से अंत तक प्रकृति और मनुष्य का सम्बन्ध भी अच्छी तरह दिखाया है। ऐसा करने से भौगोलिक विज्ञान रूखा और फीका न रह कर रोचक बन गया है।

इन पुस्तकों के निर्माण में हमने आद्योपान्त इस बात पर ध्यान रक्खा है कि कोई बात उन छात्रों के ज्ञान के बाहर न लिखी जाय जिनके लिये कि वे लिखी गई हैं। सरल भौगोलिक नियम पहिले और कठिन नियम उसके पश्चात् लिखे गये हैं। प्रत्येक देश का भूगोल पढ़ाने में पहिले उस देश की साधारण स्थिति और वृत्तान्त का वर्णन किया है, तत्पश्चात् विस्तृत हाल बताया है। प्राकृतिक भूगोल के नियमों को आवश्यकतानुसार साधारण भूगोल के साथ समझा दिया है और इस बात पर ध्यान दिया गया है कि वर्णन की लडी टूटे नहीं। पुस्तकों की भाषा इस ढंग से लिखी है कि मानों छात्रों के साथ दर्जे में बातचीत हो रही हो। सारांश में हर प्रकार से हमारा यही लक्ष्य रहा है कि ये पुस्तकें वर्नाक्यूलर स्कूलों के उन विद्यार्थियों को भलीभांति भू-ज्ञान करा दें, जो अपनी परिस्थिति के कारण आगे पढ़ने में असमर्थ हैं। जो विद्यार्थी आगे पढ़ने के इच्छुक एवं समर्थ हैं वे इन पुस्तकों में बताई हुई बातों को अपने भविष्य-ज्ञान की अधार-शिला समझें।

हमारा यह दावा कदापि नहीं है कि प्रस्तुत-पुस्तक हमारी व हमारे विचारों की एक मात्र सम्पदा है, प्रत्युत हम तो उस मधु-मक्खी का अनुसरण सा करते हैं जो प्रकृति के सुन्दरतम सुमन-स्तवकों का मञ्जु-परिमल जुटा-जुटा कर सुमधुर-मधु का निर्माण करती है। प्रस्तुत-पुस्तक की कार्य-प्रणाली में लक्ष्य और मार्ग दर्शित करने वाले वे ही महापुरुष हैं, जिनका जीवन केवल भूगोल-विज्ञान के अविष्कार में ही व्यतीत हुआ है।

हमें यह कहते हुये अभिमान होता है कि हमारा यह अकिञ्चन भौगोलिक ज्ञान व विचार-सीमित पुस्तक गुरुजनों एवं उन्हीं पथ-प्रदर्शकों की सम्पत्ति है जिनके अमूल्य-तम जीवन का सुनहरा भाग इसके समुच्चय करने (जोड़ने) में समाप्त हुआ है।

अतः हम श्रीयुत हरबर्टसन, अंसटेड एन्ड टेलर, ब्रने, डेविस, लेक, स्कीट, ग्रिगोरी, डडले स्टैम्प मारीसन इत्यादि महोदयों के सदैव कृतज्ञ रहेंगे जिनके लेखों तथा विचारों से हमने बहुत कुछ लाभ उठाया है। मेसर्स बर्थालोम्यू एन्ड लोइड और वर्केंट लूइस भी हमारी कृतज्ञता के पात्र हैं क्योंकि इनकी बनाई हुई ऐटलसों से हमने बहुत कुछ सीखा है। हमारी यह भी इच्छा है कि हम उनके संदेशों एवं विचारों को अपने देश के शहर शहर और गांव गांव तक पहुँचा सकें।

इस पुस्तक के निर्माण के साथ यह भी अधिक सम्भव है कि आज उन्नति की ओर अग्रसर होने वाले हिन्दी-साहित्य के स्टेज पर समालोचक समाज (Reviewers)की निगाहों में इसका कोई और ही मूल्य जँचे। पर सच तो यह है कि जीवन की यात्रा में जब भावों की घुड़दौड़ होती है तो संकलित भाव केवल "स्वान्तः सुखाय" ही संचित होते हैं। हम संयुक्त प्रान्तीय शिक्षा विभाग के श्रीमान् डाइरेक्टर महोदय के भी बड़े अनुग्रहीत हैं जिन्होंने हमको इन पुस्तकों के लिखने और प्रकाशित कराने की नियमानुकूल आज्ञा प्रदान की है। अंत में हम अपने प्रकाशक महोदयों को भी धन्यवाद देते हैं जिन्होंने हमारे परिश्रम को अल्पकाल में ही इतनी सुन्दरता के साथ पुस्तकाकार रूप में कर दिया है, जिसकी हमें आशा न थी।

—लेखक

विषय-सूची

१—आस्ट्रेलिया

२—दक्षिणी अमरीका

३—उत्तरी अमरीका

४—अफ्रीका

५—यूरोप

नोट:—इस नक्शे में पहाड़ी देश अलग नहीं दिखाये गये हैं। विपुवतीय भूखण्ड में गर्म तर भाग, सर्द शीतोष्ण मरु-स्थल में ऊँचे पहाड़ो भूखण्ड और मरु-स्थल में अर्ध मरु-स्थली भाग सम्मिलित हैं। काले रंगे हुये मुल्क रूम सागरीय जल-वायु के देश हैं और बिना नम्बर के देश शीत प्रधान शीतोष्ण देश हैं।
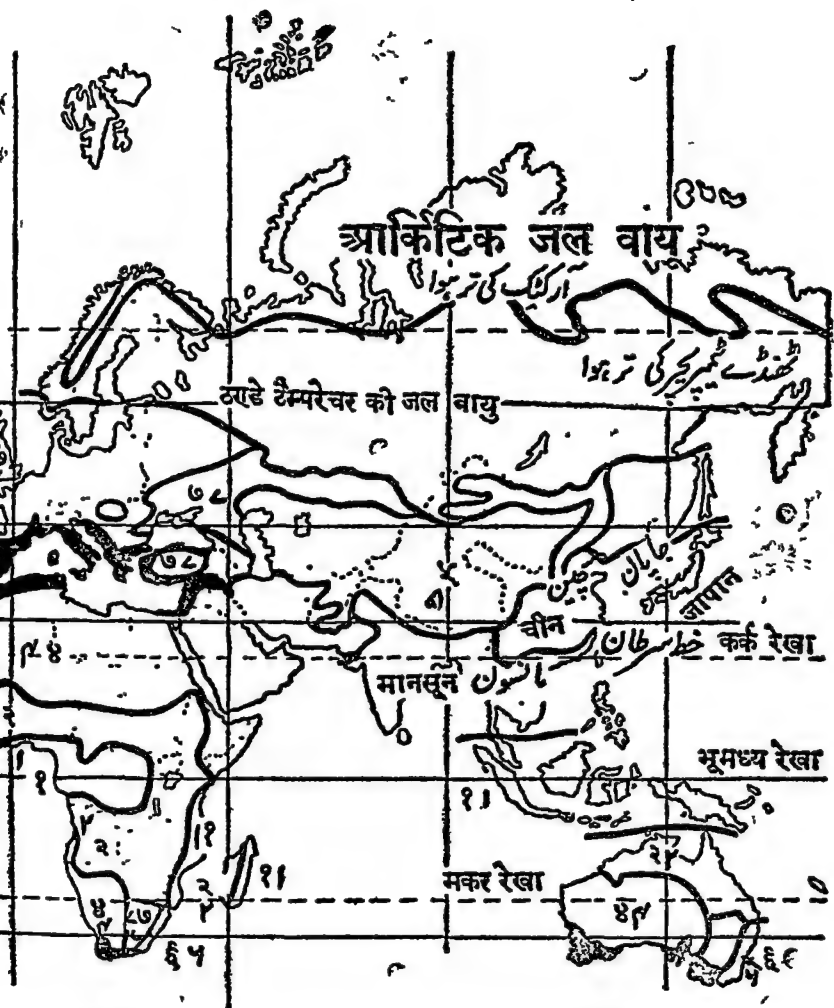
जल-वायु के अनुसार संसार के मुख्य रीजन्स	
विषुवतीय (गर्म तर)	५. शीतोष्ण मरु-स्थल
गर्मी में वर्षा पाने वाले गर्म देश	६. गर्म शीतोष्ण मैक्सीको का देश, चीन और दक्षिणी-पूर्वी आस्ट्रेलिया
मान्सूनी	७. स्थली शीतोष्ण
गर्म खुश्क मरु-स्थल	

थल गोलार्द्ध

जल गोलार्द्ध
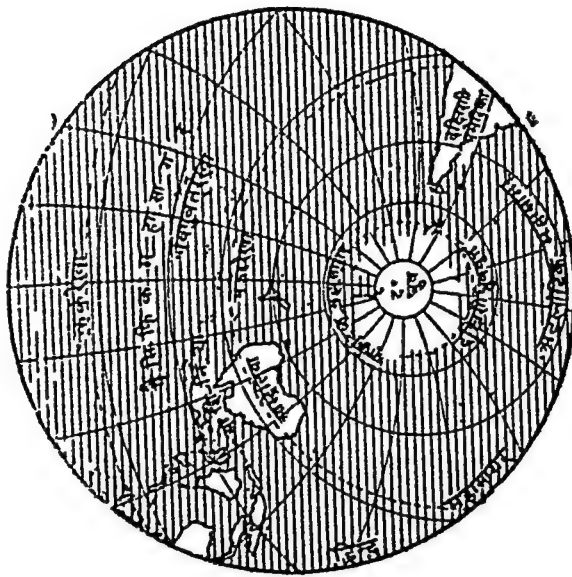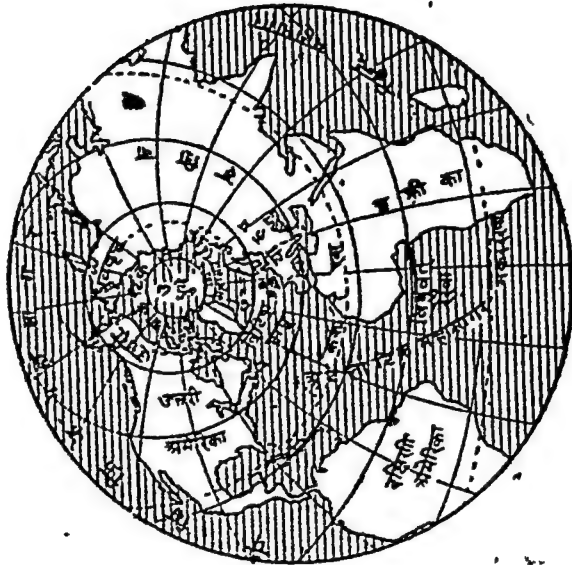
रीजनल-भूगोल

चौथा भाग

१—आस्ट्रेलिया

महाद्वीप आस्ट्रेलिया की विशेषतायें

प्रश्न—नक़शे में देख कर बताओ कि आस्ट्रेलिया किन किन अक्षांसों के बीच तथा कौन से गोलार्द्ध में स्थित है? हिन्द महासागर में किस ओर आस्ट्रेलिया बसा हुआ है? आस्ट्रेलिया महाद्वीप के तट को ध्यान से देखो और बताओ कि इसके तट पर अच्छे और प्राकृतिक बन्दरगाह हो सकते हैं? आस्ट्रेलिया का कौन सा भाग ऊष्ण कटिबन्ध में स्थित है?

तट और द्वीप आस्ट्रेलिया का महाद्वीप पूर्वी द्वीप समूह के दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित है। यह हिन्द-महासागर का सब से बड़ा द्वीप और सब से छोटा महाद्वीप है। विद्वानों का विचार है कि करोड़ों वर्ष पहले आस्ट्रेलिया, दक्षिणी-भारतवर्ष और अफ्रीका तीनों मिले हुए थे। जहाँ आज कल हिन्द-महासागर बह रहा है वहाँ एक बड़ा महाद्वीप स्थित था। पृथ्वी की भीतरी कम्पन शक्ति के कारण एक ऐसी दुर्घटना हुई कि वह

महाद्वीप समुद्र में डूब गया और आस्ट्रेलिया, हिन्दुस्तान तथा अफ्रीका एक दूसरे से पृथक हो गये। बीच में समुद्र के स्थित होने के कारण अन्य देशों से इनका कोई सम्बन्ध न रहा। धीरे धीरे महाद्वीप आस्ट्रेलिया की प्राकृतिक अवस्था मे परिवर्तन हो गया। तरह तरह के वृक्ष एवं जानवर पैदा हो गये। तुम आगे चल कर इनका हाल पढ़ोगे।

अब से लग भग तीन सौ वर्ष पहिले हालैन्ड निवासियों ने प्रथम

सिडनी

वार उस बड़े द्वीप की खोज की और इसका नाम न्यू (नवीन) हालैन्ड रक्खा। परन्तु उन्होंने इनको अपने निवास स्थान के योग्य नासमझा। तदुपरान्त अंग्रेजी कप्तान "कुक" इस द्वीप के पूर्वी हरे

भरे तट पर पहुंचा। जब वह संसार यात्रा समाप्त करके इङ्गलैन्ड लौट कर आया तो उसने अङ्गरेजों को इस द्वीप की उपयोगिता का वृतान्त सुनाया। पहिले तो यह उन अपराधियों से बसाया गया जिनको जीवन पर्यन्त कारागार भोगने का दण्ड दिया जाता था। सोने की खानों के ज्ञात हो जाने पर यह एक अङ्गरेजी उपनिवेश बना दिया गया। यहाँ न तो गेहूँ चावल आदि अनाज पैदा होते थे और न गाय भैंस, भेड़, बकरी; ऊँट या घोड़े। इस कारण यूरोपीय खान खोदने वालों को आवश्यक वस्तुयें अपने साथ लानी पड़ीं। पिछले डेढ़ सौ वर्ष में आस्ट्रेलिया के खनिज प्रदेश तथा उपजाऊ मैदान खूब बस गये हैं। सिडनी, मेलबोर्न इत्यादि ऐसे बड़े और व्यापारी बन्दरगाह बन गये कि संसार के अच्छे और प्रसिद्ध बन्दरगाहों में इनकी गिनती होने लगी है। आस्ट्रेलिया उपनिवेश अब ससार के धनी एवं उन्नति शाली देशों में गिना जाने लगा है।

समुद्र तट

दक्षिणी अमरीका के तटों की भांति आस्ट्रेलिया के तट भी सीधे और सपाट हैं। यहाँ खाड़ियाँ कम हैं तटों के पीछे पहाड़ और पठार स्थित हैं इस कारण समुद्र का प्रभाव महाद्वीप के भीतरी भागों तक नहीं पहुँच सकता। 'यार्क अन्तरीप' से 'ब्रिस्बेन' के बन्दरगाह के समीप तक तट के किनारे किनारे १००० मील लम्बी मूगे की चट्टानें चली गई हैं जो समुद्रतट से ३० मील से लेकर ७० मील तक की दूरी पर स्थित हैं। इस चट्टान के पीछे समुद्र का पानी शान्त बना रहता है जहां जहाज सुरक्षित खड़े रहते हैं। प्रशान्त महासागर में मूगे के कीड़ों के बनाये हुए बहुत से

द्वीप स्थित हैं जिनका आकार अंगूठी के सदृश होता है। ये द्वीप अटोल के नाम से पुकारे जाते हैं। 'टसमानियाँ' द्वीप और महाद्वीप
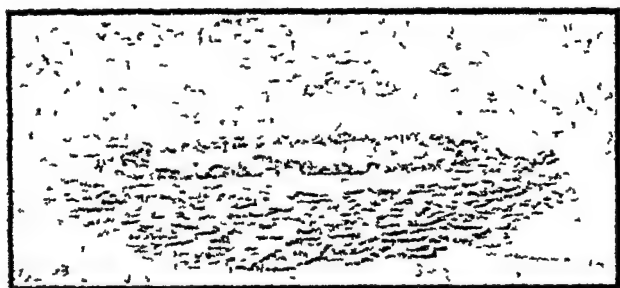
अटोल

आस्ट्रेलिया के बीच में 'वास' नामक जलसंयोजक स्थित है जो लगभग ७० मील चौड़ा है। इसमें 'फिलिप' की खाड़ी पर आस्ट्रेलिया का प्रसिद्ध बन्दरगाह 'मेल्बार्न' है। महाद्वीप से १०० मील दक्षिण-पूर्व की ओर "न्यू जीलैन्ड" के द्वीप स्थित हैं। 'जीलैन्ड' 'बाल्टिक सागर' (यूरोप) मे एक द्वीप है इसी के नाम पर लोगों ने इस द्वीप का नाम रक्खा और कप्तान 'टसमन' के नाम पर 'टस्मानियां' द्वीप का नाम रखा गया था। 'सेन्ट विन्सन्ट' की खाड़ी पर 'एडीलेड' और 'स्पेन्सर' की खाड़ी पर पोर्ट 'आगस्टा' है जहाँ से महाद्वीप के उत्तर में पोर्ट 'डार्विन' तक, तार की एक लाइन चली गई है। 'कार्पेंटरिया' की खाड़ी का तट अधिकतर उजाड़ है। आस्ट्रेलिया के दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर 'स्वान' नदी के किनारे 'फ्रीमैन्टिल' और 'पर्थ' स्थित हैं। इसके आगे 'कार्पेंटेरिया' खाड़ी तक आस्ट्रेलिया के सारे तट पर सीप और मोती निकाले जाते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—पिछले १२० वर्ष में आस्ट्रेलिया में क्या क्या परिवर्तन हो गये ?

२—आस्ट्रेलिया के समुद्र तट का संक्षिप्त वर्णन करो।

३—आस्ट्रेलिया का एक खाका खींच कर नीचे लिखी हुई बातें दिखाओः—

(क) मुख्य बन्दरगाह और खाड़ियाँ।

(ख) टस्मानियाँ और न्यूज़ीलैन्ड के द्वीप।

(ग) वह भाग जहाँ सीप और मोती निकाले जाते हैं।

(घ) मूंगे की चट्टानें।

(ङ) बड़े बड़े द्वीप।
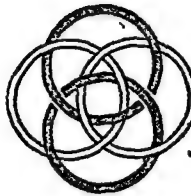
२ आस्ट्रेलिया का प्राकृतिक धन और निवासियों के व्यवसाय

प्राकृतिक दशा तथा खनिज

पूरब में तटीय मैदान की तंग पट्टी है जिसका अधिकांश भाग दक्षिणी पूर्वी ट्रेड हवाओं के रास्ते में पड़ता है। इसके पीछे आस्ट्रेलिया का लगभग २००० मील लम्बा पहाड़ी सिलसिला है जो ग्रेट डिवाइडिंग-रेन्ज (विभाजक पर्वत) के नाम से प्रसिद्ध है। ग्रेट डिवाइडिंग रेन्ज के पूर्वी ढाल अधिक ढालू हैं। परन्तु पश्चिम की ओर ये ढाल धीरे धीरे 'कूपर' और 'मरे डार्लिंग' नदियों के मैदान तथा नीचे प्रदेशों से आ मिले हैं। ये ढाल 'डार्लिङ्ग-डाउन्स' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन के दक्षिण-पश्चिम की ओर 'फिलिन्डर्स' और ब्रोकेन (टूटे हुये) पहाड़ियों की श्रेणियाँ स्थित हैं, जो उत्तर-पूर्व में 'डिवाइडिङ्ग' रेन्ज से मिल जाती हैं। पश्चिमी आस्ट्रेलिया अधिकतर गर्म मरुस्थल अथवा अर्द्ध मरु प्रदेश है जिसमें कहीं कहीं ऊँचे पठार स्थित हैं।

मध्य एशिया की भाँति आस्ट्रेलिया के बीच में भी झील 'आयर' के समीप नीचा भाग है जिसका पानी समुद्र तक नहीं पहुँचता। तुम इस भाग की दूसरी झीलों के नाम नक्शा में देखकर मालूम कर सकते

हो। 'मरे' नदी में कई सौ मील तक नावें चलाई जाती हैं, परन्तु इसके मुहाने पर रेत के कारण जहाज़ आ जा नहीं सकते। महाद्वीप के पश्चिमी भाग में 'कूलगार्डी और 'कालगूर्ली' प्रसिद्ध सोने की खानें हैं। पूर्वी पर्वतों में भी बहु-मूल्य खनिज पदार्थ मिलते हैं। 'बैलराट' और 'विन्डगो' की सोने की खानें 'विक्टोरिया प्रान्त' में स्थित हैं। 'न्यू साउथ वेल्स' में 'वैथर्स्ट' के पास सोना अधिक निकलता है। 'कुइन्सलैन्ड' में ताँबा बहुत निकलता है। दक्षिणी 'वेल्स' में ब्रोकिन हिल' (टूटी पहाड़ियों) पर चाँदी और सीसा साथ साथ निकलता है। 'कुइन्स लैन्ड' और दक्षिणी 'वेल्स' में कोयला भी पाया जाता है और 'सिडनी' के उत्तर में 'न्यूकेसिल' से जहाज़ों पर लाद कर बाहर भेजा जाता है। इसी प्रदेश में पाताल तोड़ कुयें बनाये गये हैं जिनके पानी से यहाँ खुश्क भाग आबाद और हरा भरा रहता है। यह पानी पृथ्वी के अन्दर बहुत ऊँची सतह की ढालू चट्टानों पर बह कर नीचे की सतह में आ जाता है और जब पृथ्वी को खोद कर कुआँ बनाते हैं तो एक दम उबल पड़ता है।

जल-वायु और वर्षा आस्ट्रेलिया दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। इसलिये जब हमारे यहाँ गर्मी का मौसम होता है तब यहाँ जाड़े होते हैं। क्या तुम बता सकते हो कि इसका क्या कारण है? आस्ट्रेलिया के मध्य भाग में होकर मकर रेखा गुज़रती है। इस लिये तुम समझ सकते हो कि आस्ट्रेलिया की जल-वायु गर्म कही जा सकती है। जल-वायु के नक़शों को देखकर तुम जान सकते हो कि गर्मी के दिनों में लगभग समस्त आस्ट्रेलिया का

तापक्रम ८० अंश फ० हो जाता है और जाड़ोंमें ५५ अंश फ० इससे
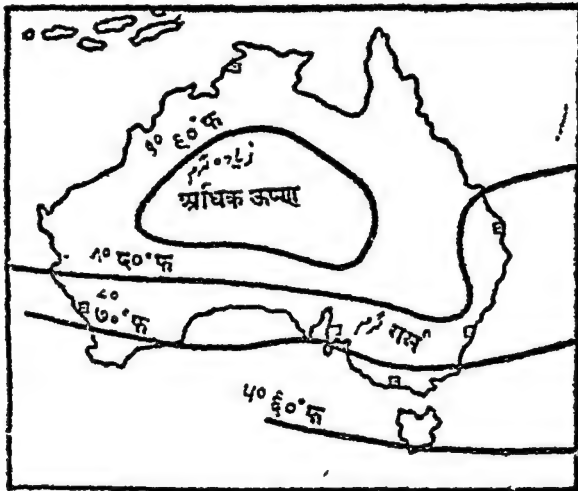
जनवरी का ताप-क्रम
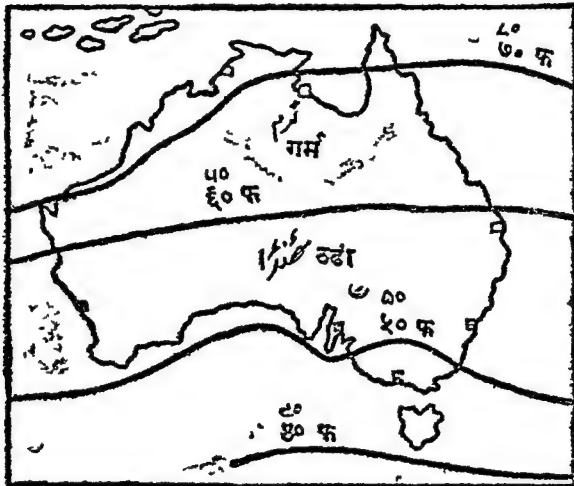
जुलाई का ताप-क्रम

तुम आस्ट्रेलिया की ऋतु- परिवर्तनका अनुमान कर सकते हो।

गर्मी के दिनों में सारे पूर्वी तट पर दक्षिणी-पूर्वी ट्रेड हवाओं से वर्षा होती है और उत्तर व पश्चिम में हिन्द महासागर से मानसूनी हवायें आती हैं जो उत्तरी आस्ट्रेलिया में वर्षा करती हैं। क्या तुम इन हवाओं के चलने का कारण बता सकते हो? उत्तरी-पश्चिमी आस्ट्रेलिया में हवा का दबाव कम होने के कारण विषुवत रेखा के
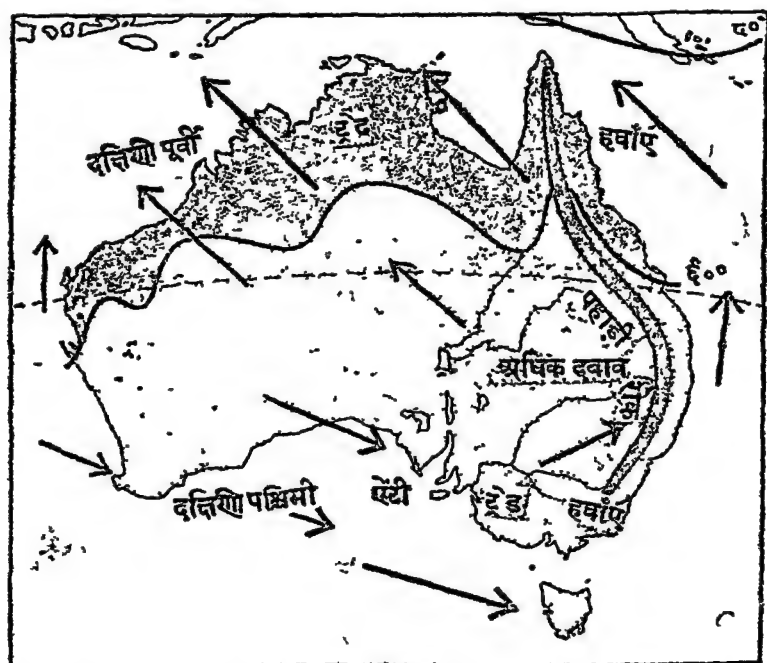
गर्मी की दशा

आस पास तक की हवायें खिंच आती हैं और समुद्र से भाप उड़ाकर वर्षा करती हैं। वास्तव में यह हवा एशिया की शीत ऋतु की मान-सून हवा है जो विषुवत रेखा को पार करने के पश्चात् अपनी दिशा

बदल देती है। जाड़ों में दक्षिणी-पश्चिमी तथा दक्षिणी-पूर्वी आस्ट्रे-

जाड़े की दशा
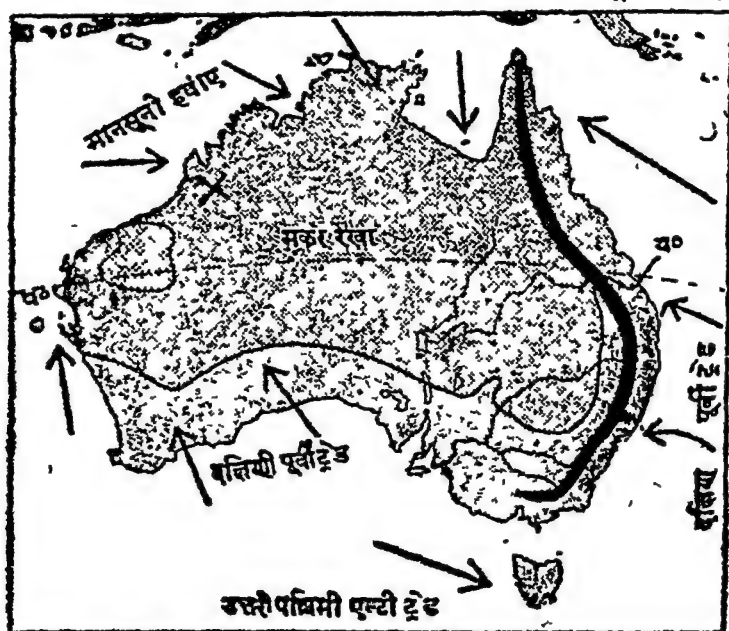
लिया और टसमानियाँ में वर्षा होती है। गर्मियों में ये भाग सूखे रह जाते हैं इसका कारण बताओ। तुम पढ़ चुके हो कि मकर रेखा की शान्त हवाओं की पट्टी गर्मियों में ४५ अंश दक्षिणी अक्षांस पर पहुँच जाती है और इन प्रदेशों में दक्षिणी-पूर्वी खुश्क हवायें चलती हैं इस लिये वर्षा नहीं होती। परन्तु जाड़ों में यह भी खिसक कर लग भग २४ अंश दक्षिणी अक्षांस पर पहुंच जाती है। इस कारण इन प्रदेशों में पश्चिमी हवाओं से अधिक वर्षा होती है।

आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर पूर्वी आस्ट्रेलिया की गर्म सामुद्रिक

ग्रार ग्रौर पश्चिमी तट पर पश्चिम को सर्द सामुद्रिक धार बहती है।
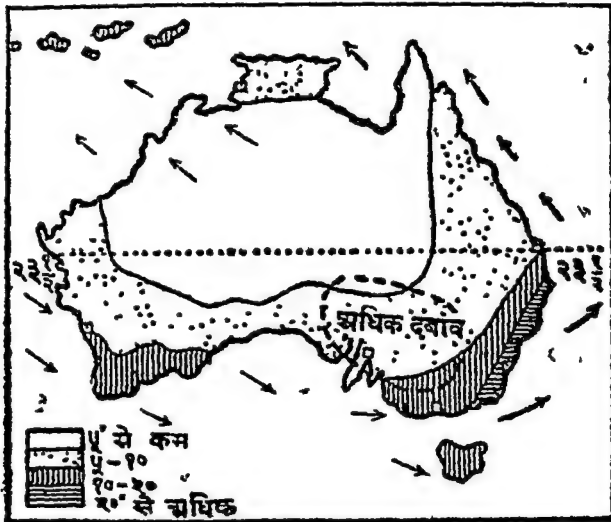
गर्मी की वर्षा
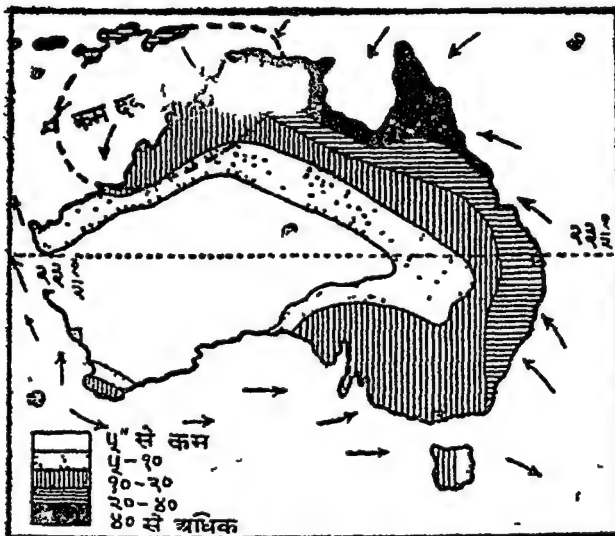
जाड़ों की वर्षा

अतः पश्चिमी तट सूखा रेगिस्तान और पूर्वी तट गर्म व तर रहता है। 'डिवाइडिङ्ग' पर्वत की श्रेणियों के पश्चिमी ढालों पर कभी कभी वर्षा बहुत कम होती है। घास सूख जाती है और लाखों भेड़ें तथा मवेशी मर जाते हैं।

वनस्पति आस्ट्रेलिया के पहाड़ी, उत्तरी मानसूनी प्रदेश में 'जरा' 'करी' और 'यूकेलिप्टस' के उपयोगी जङ्गल हैं। वृक्ष विशेष कर लम्बे होते हैं और उनकी पत्तियाँ कड़ी तथा चमड़े की भांति चमचोड़ होती हैं तथा धूप में सीधी खड़ी रहती हैं। इनकी लकड़ी भी बहुत कड़ी होती है जिससे बड़े बड़े शहतीर बनाये जाते हैं और रेगिस्तानी भागों में इनके टुकड़े बिछा कर सड़क बनाई जाती है। गर्म तटों पर नारियल अधिक होता है।

कृषि सम्बन्धी फस्लें खान खोदने के अतिरिक्त आस्ट्रेलिया के उत्तरी मानसूनी प्रदेश में शक्कर, धान, मक्का और तम्बाकू होती है। 'कुइन्सलैण्ड' के दक्षिणी भाग में रुई पैदा करने का प्रयत्न किया जा रहा है। दक्षिणी-पश्चिमी आस्ट्रेलिया, विक्टोरिया और 'न्यु साउथ वेल्स' में गेहूँ अधिक पैदा होता है। दक्षिण के रूमी जल-वायु के प्रदेश में फल अधिक होते हैं जो अन्य देशों को भेजे जाते हैं। यहाँ शराब भी बनाई जाती है। आस्ट्रेलिया ने अभी तक शिल्पकारी में उन्नति नहीं कर पाई है। इस कारण यहाँ के निवासी अपनी आवश्यक वस्तुयें, जैसे ऊनी व सूती

कपड़ा, मशीनें, बिसातखाने का सामान इत्यादि इङ्गलैन्ड से मँगाते हैं। पूर्वी भाग में मवेशी और भेड़ों के चराई के मैदान बहुत हैं। खुश्क ढालों पर छोटी छोटी घास बहुत पैदा होती है जहाँ एक एक किसान एक एक लाख भेड़ों का गल्ला रखता है।

आस्ट्रेलिया में एक किसान की भेड़ें

आस्ट्रेलिया की भेड़ें 'मेरनो' नस्ल की होती हैं। पहिले पहल यहाँ केवल थोड़ी सी मेरीनो भेड़ें स्पेन देश से लाई गई थीं। इन्हीं भेड़ों से अब करोड़ों भेड़ें पाली जा रहीं हैं जिनकी चिकनी और नर्म ऊन आस्ट्रेलिया का मुख्य धन है। यहाँ से माँस और खाल भी बाहर को भेजो जाती हैं। गोश्त बर्फ में दबा कर और खास तरह की ठंडी गाड़ियों में भर कर इङ्गलैन्ड को भेजा जाता है। यहाँ के घोड़े बहुत मजबूत होते हैं। हिन्दुस्तान की फौजों में भी घोड़े बारबरदारी और तोपखाने खींचने के काम में आते हैं। इन घोड़ों को वैलर इसलिये कहते हैं कि ये घोड़े 'न्यू साउथवेल्स' में होते हैं। मरु प्रदेश

में ऊँट भी अधिकता से पाये जाते हैं परन्तु ये सब जानवर बाहर से लाये गये हैं।

पशु आस्ट्रेलिया के आदि पशुओं में 'एमू' 'लायरबर्ड' 'प्लैटी पस' और 'कङ्गारू' बड़े विचित्र पशु हैं। कङ्गारू एक चौपाया है परन्तु मनुष्यों की भाँति प्रायः दो पैरों से चलता है और अपनी दुम के सहारे बैठ जाता है। इसके पेट में नाभि के स्थान पर एक थैली होती है जिसमें वह अपना बच्चा रख लेता है। 'प्लैटी पस' की चोंच तो बत्तख की भाँतिहोती है और शेष शरीर खर्गोश का सा। इसके पाँव

कारूङ्ग

बतख के पञ्जों के समान झिल्लीदार होते हैं और यह पशु चौपाया होते हुयेभी अंडा देता है। 'लायर-बर्ड' की पूँछ बीनबाजे के तारों की तरह होती है जो देखने में बड़ी सुन्दर मालूम होती है। 'एमू' के शरीर पर छोटे छोटे पर होते हैं और सारस के समान यह एक बड़ी चिड़िया होती है। यह उड़ नहीं सकती परन्तु बहुत तेज़ दौड़ सकती है।
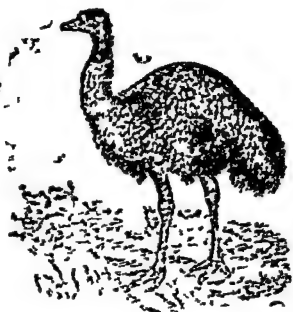
एमू

निवासी

आस्ट्रेलिया के प्राचीन निवासी अब कहीं कहीं पाये जाते हैं। आस्ट्रेलिया और टस्मानियां में तो अब उनका नाम भी नहीं रह गया है। हाँ न्यू ज़ीलैन्ड में आदि निवासी अब भी मिलते हैं जो सभ्य हो गये हैं। दक्षिणी पश्चिमी आस्ट्रेलिया

आस्ट्रेलिया के आदि निवासी

की जन संख्या बहुत घनी है। क्या तुम इसका कारण बता सकते हो?

गर्म मानसूनी प्रदेश ने व्यापार, शिल्प और खान खोदने में अभी तक विशेष उन्नति नहीं की है। इसलिये यहाँ आबादी भी घनी नहीं है। तुम को स्मरण रखना चाहिये कि आस्ट्रेलिया की आबादी का अर्द्ध से अधिक भाग 'मेलबोर्न', 'सिडनी', 'ब्रिस्बेन', 'एडीलेड' और 'पर्थ' में बसा हुआ है। शेष भाग खनिज प्रान्तों तथा

घास के मैदानों में। यहाँ की जन संख्या ६० लाख है और सब निवासी अङ्गरेज हैं।
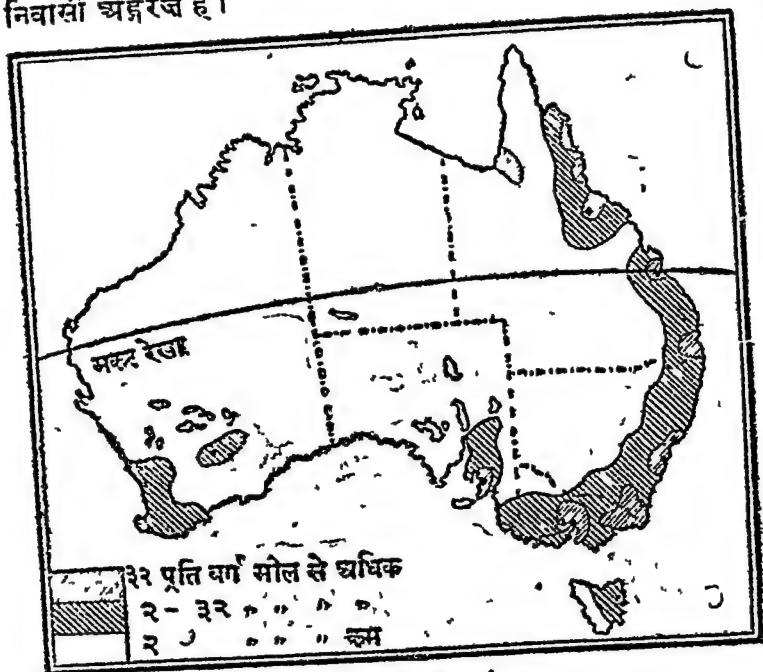
आस्ट्रेलिया की जन संख्या

शासन प्रबन्ध आस्ट्रेलिया ब्रिटिश सम्राज्य का एक भाग है। यहाँ का गवर्नर जनरल सम्राट की ओर से पांच वर्ष के लिये नियत किया जाता है। आस्ट्रेलिया की पार्लियामेंट मेल्बोर्न में बैठती है। सिडनी के पीछे 'कैनबेरा' नगर स्थित है जो आस्ट्रेलिया की राजधानी है। आस्ट्रेलिया में निम्नलिखित राजनैतिक विभाग हैं इनमें से प्रत्येक विभाग अपने भीतरी शासन में स्वाधीन एवं स्वतन्त्र है :—

राजनैतिक विभाग	राजधानी
१. क्वीन्सलैन्ड	ब्रिस्बेन
२. न्यू साउथ वेल्स	सिडनी
३. विक्टोरिया	मेलबोर्न
४. पश्चिमी आस्ट्रेलिया	पर्थ
५. दक्षिणी आस्ट्रेलिया	एडीलेड
६. उत्तरी आस्ट्रेलिया	डारविन

नक़शे में आस्ट्रेलिया के राज्यों की सीमा सीधी रेखाओं से इस लिये दिखाई गई हैं कि आस्ट्रेलिया एक नया महाद्वीप है। यहां की (कामन वेल्थ) गवर्नमेन्ट जनता के हाथ में है। इसलिये सुविधा के विचार से अक्षांस और देशान्तर रेखाओं के समानान्तर रेखायें खींच-कर प्रत्येक राज्य की सीमा नियत कर दी गई है।

रेलें आस्ट्रेलिया में अभी तक काफी रेलें नहीं बन सकीं हैं। देश की प्राकृतिक अवस्था और पूर्वी पर्वतों की श्रेणियाँ इसका कारण हैं। दक्षिणी तट की रेलवे आस्ट्रेलिया की सब से बड़ी रेल है जो पर्थ, कूलगार्डी, कालगूर्ली, एडीलेड, मेलबोर्न सिडनी और न्यूकैसिल को मिलाती हुई ब्रिस्बेन के दक्षिण तक चली गई है। ब्रिस्बेन से एक दूसरी रेल राखम्पटन और चारटर्स टावर को जाती है। बहुधा छोटी छोटी रेल की शाखें बन्दरगाहों से मुल्क के भीतरी भाग में खनिज प्रदेशों तक जाती हैं। पोर्ट आगस्टा से पोर्ट डारविन तक महाद्वीप आस्ट्रेलिया के आर पार तार की एक लाइन

२

बनी हुई है और 'एलिस स्प्रिङ्ग' तक रेल भी बन चुकी है। अब इसका पोर्ट डारविन से आने वाली रेल से मिला देने पर विचार हो रहा है।
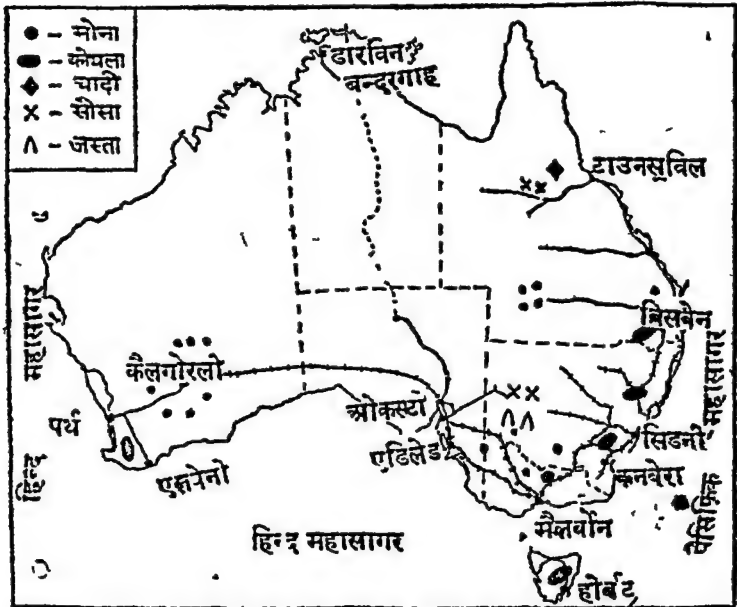
आस्ट्रेलिया की रेलें और खनिज पदार्थ

सामुद्रिक मार्ग

'फ्रीमेन्टिल' बन्दरगाह जो पर्थ के समीप स्थित है आस्ट्रेलिया का बम्बई कहा जा सकता है। यहाँ एशिया, यूरोप और अफ्रीका की डाक उतारी जाती है तथा पूर्वी भागों में रेल द्वारा भेजी जाती है। प्रायः ये जहाज आस्ट्रेलिया के दक्षिण में होकर गुजरते हैं। उत्तरी सामुद्रिक मार्ग मूँगे की चट्टानों और महाद्वीप के बीच में होकर जाता है। मूँगे की चट्टानों की स्थिति के कारण जहाजों को इस मार्ग में भय रहता है और

रात्रि के समय उनको रुकना पड़ता है। जब से नहर पनामा खुल गई है न्यूजीलेन्ड के जहाज प्रायः इसी मार्ग से इङ्गलैन्ड को जाते हैं; क्योंकि इस मार्ग से जाने में ख़र्च कम होता है और आस्ट्रेलिया जानेवालों को सिडनी का बन्दरगाह बहुत पास पड़ता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—आस्ट्रेलिया को तुम किन किन प्राकृतिक भागों में बाँट सकते हो?

२—आस्ट्रेलिया की जल-वायु के विषय में तुम क्या जानते हो?

३—आस्ट्रेलिया की कृषि उपज बताओ और यह भी बताओ कि वहाँ के रहने वालों के मुख्य उद्यम क्या हैं?

४—आस्ट्रेलिया के जीव जन्तुओं में क्या विशेषता पाई जाती है?

५—आस्ट्रेलिया में रेलें कहाँ कहाँ बनाई गई हैं?

६—पनामा नहर के खुल जाने से आस्ट्रेलिया को आने वाले जहाज़ों के लिये क्या सुविधा हो गई है?

७—आस्ट्रेलिया का एक सादा नक्शा बनाओ और उसमें निम्नाङ्कित बातें दिखाओ:—

(क) मुख्य पर्वत श्रेणियाँ।

(ख) वह भाग जहाँ पश्चिमी हवाओं से वर्षा होती है।

(ग) ऊन पैदा करने वाले प्रदेश।

(घ) सोने की खानें।

(ङ) मुख्य मुख्य रेलें।

३ आस्ट्रेलिया के प्राकृतिक रीजन्स (भूखण्ड) तथा राजनैतिक भाग

१. आस्ट्रेलिया का उत्तरी भाग—यह भाग गर्म और तर है। समुद्र तट पर मानसूनी जङ्गल और मङ्ग्री दलदल पाई जाती है। परन्तु भीतरी भाग में केवल मानसूनी जंगल स्थित हैं जो धीरे धीरे लम्बी घास के मैदान (सवाना) में परिवर्तित हो जाते हैं इस कारण क्वीन्सलैन्ड में गल्ले बानी (भेड़ें चराने) का बहुत सुभीता है। एक एक चरवाहा कई कई हजार मवेशी पालता है। यहाँ की गायें एक एक दिन में एक मन तक दूध देती हैं और दिन में कई बार दुही जाती हैं। समुद्र तट पर वर्षा अधिक होती है। शक्कर, चावल, मक्का और गर्म तर रीजन के फल खूब पैदा हो सकते हैं। आबादी कम होने के कारण पैदावार भी कम होती है। पर्वती प्रदेश में 'चारटर्स टावर' 'और मान्टमोर्गा' सोना और तांबे के खनिज केन्द्र हैं। पश्चिमी मैदान के तर भागों में मवेशी और खुश्क भाग में भेड़ें पाली जाती हैं। दक्षिण में जहाँ पाताल तोड़ कुए हैं वहाँ गेहूँ पैदा होता है। यहाँ का सब से बड़ा नगर और बन्दरगाह राखम्पटन है। इस रीजन में उत्तरी आस्ट्रेलिया तथा पश्चिमी आस्ट्रेलिया प्रान्त के उत्तरी भाग भी स्थित हैं परन्तु यह प्रान्त अभी तक बेकार है।

२. शीतोष्ण घास का मैदान (ग्याहिस्तान)—यह 'मरें' और 'डार्लिङ्ग नदियों' के बेसिन का उत्तरी भाग है। यहाँ पर्वतों के पश्चिमी ढालों पर थोड़ी बहुत वर्षा हो जाती है और वृक्ष पाये जाते हैं। ज्यों ज्यों हम पश्चिम की ओर बढ़ते जाते हैं खुश्क मरु-भूमि दिखाई देने लगती है। इस रीजन में आस्ट्रेलिया के धनी राज्य न्यू साउथ वेल्स और क्वीन्सलैन्ड का दक्षिणी भाग स्थित है। क्वीन्सलैन्ड के तट पर

आस्ट्रेलिया का प्राकृतिक भूखंड

मक्का अधिक होती है और मवेशी पाले जाते हैं। सिडनी यहाँ की राजधानी है जो उत्तर में न्यूकैसिल के कोयले की खान और पश्चिम में बैथर्स्ट के सोने की खानों से रेल द्वारा मिला हुआ है। सिडनी से एक रेल दक्षिण को मेलबोर्न तक गई है। पोर्ट जैक्सन इसका बन्दर-

गाह है। न्यूसाउथ वेल्स और दक्षिणी आस्ट्रेलिया प्रान्त की सीमा पर 'ब्रोकेनहिल' (टूटी हुई पहाड़ी) पर चांदी, सीसा, और ताँबे की खाने हैं। इन खानों की पैदावार 'एडीलेड और पिरी' के बन्दरगाहों से वाहर को भेजी जाती है।

३. गर्म मरुस्थल—यह आस्ट्रेलिया के मध्य और पश्चिमी भाग में स्थित है। इस भूखन्ड में एक प्रकार की नशीली घास और नमकीन झाड़ियाँ होती हैं। यह रीजन विल्कुल उजाड़ और वीरान है।

४. रूम सागरीय जल-वायु का रीजन—यह दक्षिणी-पश्चिमी समुद्र तट, दक्षिण तट और विक्टोरिया में पाया जाता है इस भूखण्ड में पश्चिमी विक्टोरिया' और पश्चिमी आस्ट्रेलिया प्रान्त का दक्षिण-पश्चिमी भाग स्थित है।

विक्टोरिया प्रान्त को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं:—

(क) उत्तरी मैदान जिसमें फूलों के बाग़ और गेहूँ के खेत अधिकता से पाये जाते हैं। यहाँ हजारो भेड़ें चरती हैं जिनका माँस और ऊन बाहर को भेजा जाता है।

(ख) मध्य पहाड़ी भाग जिसमें वहु-मूल्य लकड़ी के वन हैं। 'वालरात' और 'विन्डिगो' की प्रसिद्ध सोने की खानें इसी पहाड़ी देश में स्थित हैं।

(ग) दक्षिणी चौड़ी घाटी जिसमें दूध और मक्खन के वड़े वड़े कारखाने हैं। यह भाग भी अत्यन्त उपजाऊ है। 'जीलोंग' तथा 'मेलबोर्न' यहाँ के मुख्य वन्दरगाह हैं। 'पोर्टफिलिप'-इनका वन्दगाह है। मेलबोर्न अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण बड़ा प्रसिद्ध वन्दरगाह

हो गया है। इसका हारबर एक प्राकृतिक बन्दरगाह है। उत्तरी पर्वतों में होकर 'बालरात' और विन्डिगो से आने वाली रेलें यहाँ मिलती हैं।

५. टस्मानियाँ का द्वीप—यह आस्ट्रेलिया महाद्वीप के दक्षिण पश्चिम के कोने में स्थित है। इस द्वीप को बास जल डमरू मध्य आस्ट्रेलिया से पृथक करता है। इसका जल-वायु इङ्गलैन्ड के समान है। पश्चिमी हवाओं के मार्ग में स्थित होने के कारण यहाँ सदा वर्षा होती रहती है। मध्यवर्ती भाग पहाड़ी है जिसके पश्चिमी ढालों पर घने बन हैं। नदियों की तंग उपजाऊ घाटियों में फलों के बाग लगे हैं। होबार्ड यहाँ का मुख्य बन्दरगाह और राजधानी है। द्वीप के उत्तरी-पूर्वी कोने में ताँबा, चाँदी, सीसा सोना इत्यादि निकलता है।

६. शर्कीलियन रीजन—यह न्यू साउथ वेल्स के तट पर पाया जाता है। गर्मियों में यहाँ ट्रेड हवाओं से वर्षा होती है। पहाड़ों पर पश्चिमी हवाओं से कुछ वर्षा हो जाती है। बहुधा लोग इस रीजन को चायना रीजन के नाम के पुकारते हैं। परन्तु न तो यहाँ चीन की भाँति मानसूनी वर्षा होती है और न चीन के समान जाड़े का मौसम ही होता है। यहाँ की मुख्य प्राकृतिक बनस्पति युकेलिप्टस के जङ्गल हैं जो सदैव हरे रहते हैं। इसलिये इस भूखंड का नाम यदि 'ईस्ट्रेलियन' अर्थात् 'शर्कीलियन' रीजन रक्खा जाय तो अनुचित न होगा, क्योंकि इस नाम से इस रीजन के पूर्वी आस्ट्रेलिया में स्थित होने का पता चलता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—आस्ट्रेलिया को किन किन प्राकृतिक रीजन्स में विभाजित कर सकते हो, इनमें से किसी एक रीजन का हाल वर्णन करो ?

२—न्यू साउथ वेल्स के तट पर किस प्रकार की जल-वायु पाई जाती है इसको 'चीनी' जल-वायु का प्रदेश के नाम से क्यों नहीं पुकार सकते ? तुम्हारी राय में इसका उचित नाम क्या होना चाहिये ?

३— विक्टोरिया से कौन कौन सी वस्तुयें बाहर को जाती हैं ?

४—टस्मानियाँ द्वीप की प्राकृतिक दशा, जल-वायु और उपज का संक्षिप्त वर्णन करो ?

५—आस्ट्रेलिया के कौन से भाग में रूम सागरीय जल-वायु पाई जाती है ?

६—आस्ट्रेलिया का एक सादा नकशा बनाओ और उसमें मुख्य मुख्य रीजन्स की हद्दें दिखाओ। इसी नकशे में डारविन, पर्थ, एडीलेड, सिडनी, न्यूकेसिल, कूलगार्डी, और ब्रिस्बेन भी दिखाओ।

४ न्यूज़ी लैन्ड

दक्षिणी द्वीप की प्राकृतिक दशा, जल-वायु और उपज

नक़शे में देख कर न्यूज़ीलैन्ड द्वीप समूह की स्थिति,तट तथा प्राकृतिक दशा वर्णन करो। इस उपनिवेश में छोटे छोटे द्वीप सम्मिलित हैं। इनमें उत्तरी व दक्षिणी द्वीप वर्णन करने योग्य हैं। दक्षिणी द्वीप में 'दक्षिणी ऐल्प्स' नामक पहाड़ समुद्र तट के समीप स्थित है। पश्चिमी तटस्थ तंग पट्टी में पश्चिमी हवाओं से अधिक वर्षा होती है और जल-वायु सर्द सम शीतोष्ण है। पहाड़ों पर जंगल अधिक पाये जाते हैं। पहाड़ों के पीछे स्थित होने के कारण पूर्वी भाग में वर्षा कम होती है। यहां छोटी छोटी घास और मक्का अधिक पैदा होती है। यहाँ भेड़ों के झुंड के झुंड चरते हैं। उपजाऊ मौतदिल घाटियों में गेहूँ और जौ की काश्त होती है। बन्दरगाह 'डुनेडिन' और वेस्टपोर्ट के समीप सोना और कोयला पाया जाता है। उत्तर के शीतोष्ण मैदान का मुख्य नगर क्राइस्ट चर्च है, जिस के बन्दरगाह लिटिलटन से बर्फ में दबा हुआ माँस, ऊन और मक्खन विलायत को जाता है।

उत्तर द्वीप की प्राकृतिक दशा, जल-वायु और उपज

इस द्वीप में पर्वत समुद्र तट के समीप स्थित हैं और मैदान पश्चिमी तट पर। द्वीप के मध्य भाग में ज्वालामुखी पर्वत है और भूमि उपजाऊ है। उत्तरी भाग में रूम सागरीय
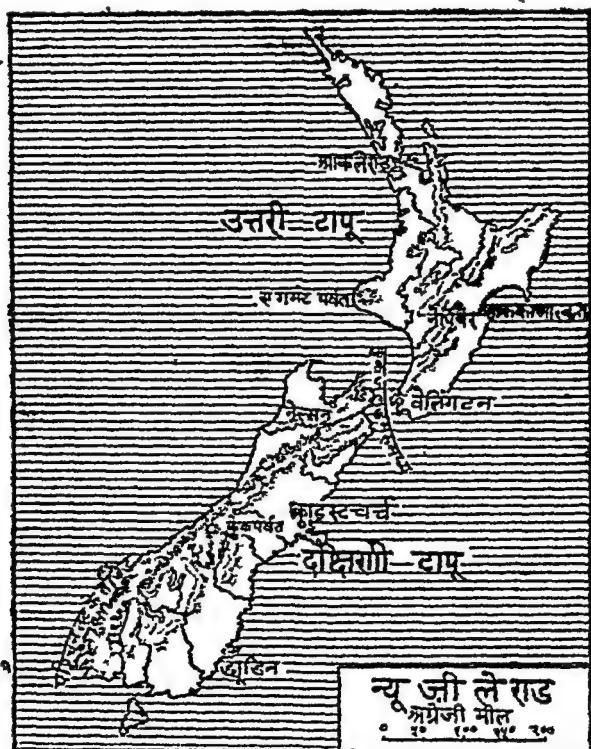
जल-वायु पाई जाती है। यहाँ मवेशियों के लिये लम्बी लम्बी घास उगती है। इस लिये यहाँ का मुख्य उद्यम मक्खन और पनीर बनाना

है। प्राचीन समय में मावरी लोग गैसरों की गर्म भूमि पर अपनी हांडियां रख कर खाना पका लेते थे। अब ये लोग सभ्य हो गये हैं।

गैसर

उत्तरी भाग में सोना भी पाया जाता है। आर्कलैंड का बन्दरगाह एक पतले थलसंयोजक पर स्थित है जिसके दोनों ओर जहाज ठहर सकते हैं। द्वीप के दक्षिण में वेलिङ्गटन का मैदान है। वेलिङ्गटन बन्दरगाह से मक्खन और पनीर बाहर को भेजा जाता है। यह बन्दरगाह 'कुक' जल संयोजक पर स्थित है। दोनों द्वीपों के बीच में स्थित होने, के कारण इस उपनिवेश की राजधानी बन गया है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—न्यूज़ीलैन्ड की मुख्य उपज बताओ ?

२—वेलङ्गिटन की भौगोलिक विशेषता के विषय में तुम क्या जानते हो ?

३—प्राकृतिक दशा, जल-वायु और उपज की दृष्टि से उत्तरी और दक्षिणी द्वीपों की तुलना करो।

४—मावरी लोग कौन हैं और इनके विषय में तुम क्या जानते हो ?

५—न्यूज़ीलैन्ड को किन किन प्राकृतिक भागों में बांट सकते हो ?

२—दक्षिणी अमेरीका

महाद्वीप दक्षिणी अमेरीका की विशेषतायें

[१]

प्रश्न—नई दुनिया में कौन कौन से महाद्वीप शामिल हैं ? इन देशों का नाम नई दुनियाँ क्यों पड गया है ? अपनी किताब में दिये हुये नकशों को देखो और बताओ कि नई दुनियाँ के महाद्वीप किन किन अक्षांशोंमें स्थित हैं ? नक्शे में दिये हुए पैमाने के हिसाब से उनकी लम्बाई चौड़ाई बताओ।

नई दुनियाँ

यदि तुम अपनी किताब में दिये हुये नई दुनियाँ के महाद्वीपों के नक़शों को देखोगे तो तुमको मालूम हो जायगा कि जिस प्रकार यूरेशिया के दोनों महाद्वीप एक ही भूखंड के दो हिस्से हैं उसी प्रकार नई दुनियाँ भी वास्तव में एक ही खंड है।

दोनों महाद्वीपों की पहाड़ी श्रेणियां परस्पर सम्मिलित हैं और नई दुनियां के समस्त पश्चिमी तट पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैली हुई हैं। दोनों के ढाल, दोनों के प्लेटो, दोनों की नदियाँ, मैदान और समुद्र तट लगभग एक ही प्रकृति के हैं। केवल अन्तर इतना है कि उत्तरी अमरीका ऊंचे अक्षांशों में और दक्षिणी अमेरीका नीचे

अक्षांशो में चौड़ा है। दक्षिणी अमेरीका के चौड़े हिस्से में होकर विषुवत रेखा और उत्तरी अमेरीका चौड़े हिस्से में हो कर उत्तरी ध्रुव वृत्त निकलते हैं। दक्षिणी अमेरीका का उत्तरी चौड़ा भाग उष्ण कटिबन्ध और ट्रेड हवाओं के भूखंड में स्थित है और उत्तरी अमरीका का बर्फ़ीले भूखंड में। उत्तरी अमेरीका के पूर्वी तट विषुवतीय

भारत और दक्षिणी अमेरीका की तुलना

धारा के सामने पड़ते हैं परन्तु दक्षिणी अमेरीका के पूर्वी तट पर यह धारा टेढ़ी और तिर्छी होकर किनारे किनारे बहती है। इन सब बातों ने

दोनों महाद्वीपों की प्राकृतिक दशा और तटों की अवस्था में अन्तर पैदा कर दिया है और दूरवर्ती समुद्रों में स्थित होने के कारण एक दूसरे से भिन्न मालूम होता है।

दक्षिणी अमेरीका की विशेषतायें

तुम अपनी किताब में दिये हुये दक्षिणी अमेरीका के नक़शे को देख कर इस महाद्वीप की स्थित को मालूम कर सकते हो। आस्ट्रेलिया की तरह यह महाद्वीप भी दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। इसलिये यहां जून और जुलाई के महीनों में सर्दी की, दिसम्बर और जनवरी में गर्मी की ऋतु होती है इसके पश्चिमी तट पर पहाड़ों की श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण तक चली गई हैं। आस्ट्रेलिया की तरह इस महाद्वीप के पूर्वी समुद्र तट के समीप मूंगे की चट्टानें हैं। परन्तु यह चट्टानें "टवैरियर रीफ़" की तरह लम्बी नहीं हैं। इन चट्टानों और अन्य स्थली भागों के बीच में आ जाने के कारण विषुवतीय गर्म धारा दो भागों में विभक्त हो जाती है जो महाद्वीप के उत्तरी और पूर्वी तटों को घिस घिस कर महाद्वीप को त्रिकोणाकार बना देती है। अब से लग भग ५०० वर्ष पहिले यूरोप के माझियों में अमेरीका के असीम धन की चर्चा होती थी। सोने और चाँदी के शहर तथा गाँव के किस्से और कहानियाँ प्रचलित थीं। धन के लालच ने उत्साह पूर्ण माझियों की कार्य्य तत्परता को और भी बढ़ाया। उन्होंने इस देश को ढूँढ़ कर धन प्राप्त करने का विचार किया। इनमें से 'फ्रांन्सिस्को पिज्ज़ारो और मैगेलन ने इन प्रदेशों की खोज लगाकर बड़ा यश पाया। पुर्तगाल और स्पेन

(इस्पानिया) के वीर सिपाहियों तथा मांझियों ने दूर दूर की यात्रा करके इन प्रदेशों को ढूंढ़ा और उनको जीत कर अपने राज्य में मिला लिया तथा स्वयं गवर्नर के अधिकार प्राप्त करके राज्य करने लगे। धीरे धीरे पुर्तगाल और स्पेन के निवासी इन देशों में बसने लगे और हारी हुई जातियों के साथ शादी ब्याह करने लगे। ३०० वर्ष के परिश्रम के बाद यूरोपीय व्यापार, व्यवसाय और शासन प्रणाली ने जोर पकड़ा। इसके बाद दक्षिणी अमेरीका में प्रजातन्त्र (स्वतन्त्र) राज्य स्थापित हो गये।

अमेरीका के आदि निवासी 'इन्काज़', 'गाउचू' और 'अरूकानी' इत्यादि नामों से पुकारे जाते थे। इनकी सभ्यता तथा उन्नति के चिन्ह अर्थात् मकान और सड़कें इत्यादि अब तक मौजूद हैं। इनसे ज्ञात होता है कि ये लोग आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैन्ड के प्राचीन निवासियों की तरह जंगली और असभ्य न थे। इन लोगों में मकान बनाना, सोने चांदी का उपयोग और घोड़े की सवारी का बड़ा रिवाज था। ये लोग बड़े वीर, लड़ाकू और स्वाभिमानी पुरुष थे। जब इस्पानियों ने इन पर आक्रमण किया तो उनसे वीरता के साथ लड़े और अपनी जातीय ऐक्यता का प्रमाण दिया।

तट और द्वीप

तुम पढ़ चुके हो कि दक्षिणी अमेरीका के समुद्र तट प्रायः सीधे और सपाट हैं। आओ इस महाद्वीप के चारों ओर समुद्र तट की यात्रा करें और उसकी प्रकृति का अध्ययन करें। हम अपनी यात्रा नहर पनामा के पूर्वी फाटक से प्रारम्भ करेंगे। सन् १९१३ से पहिले पनामा एक थल-

संयोजक था और एक नीची पहाड़ी इसमें स्थित थी जो दक्षिणी और उत्तरी अमेरीका के पहाड़ों को मिलाती थी। कहीं कहीं इसकी
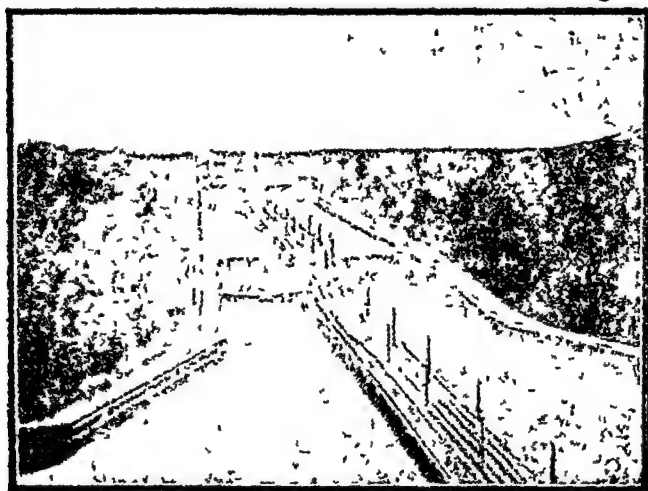
पनामा नहर

ऊंची भूमि में झीलें स्थित थीं। थल संयोजक पनामा का धरातल समुद्र तल से लग भग १५०० फ़ीट ऊँचा था।

सन् १९१४ में बहुत सा धन व्यय करके इन झीलों को मिला दिया गया और 'कोलन' नगर से पनामा तक ३६ मील चौड़ी नहर बना दी गई। नहर तो झीलों के बीच अटलान्टिक महासागर से पैसिफ़िक महासागर तक बन गई है। परन्तु भिन्न भिन्न ऊँचाई पर झीलों की स्थिति होने के कारण नीची धरातल से ऊची धरातल पर पानी का बहना और जहाजों का चढ़ना असम्भव था इसलिये इस

नहर में स्थान स्थान पर 'लाक्स' अर्थात् ताले बना दिये गये, जो हौज की तरह होते हैं। जब जहाज़ को नीची धरातल से ऊँची धरातल

'पनामा नहर के लाक्स'
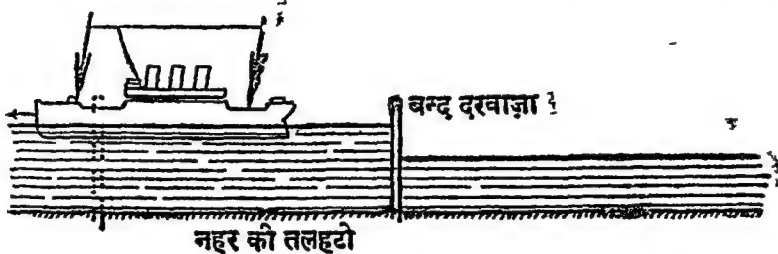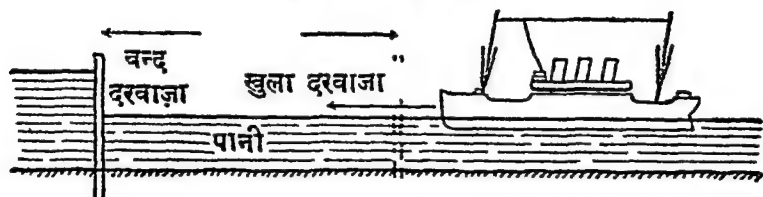
पर ले जाना होता है तो जहाज़ को 'लाक' के भीतर लेकर नीचे हौज़ का फाटक बन्द कर दिया जाता है और ऊँचे हौज़ का फाटक खोल कर नीचे वाले हौज़ को पानी से इतना भर लेते हैं कि दोनों के पानी की सतह एक हो जाती है। इस प्रकार जहाज़ नीचे वाले हौज़ से ऊँचे हौज़ तक चढ़ा लिये जाते हैं।

जब जहाज़ को ऊँचे हौज़ से नीचे के हौज़ में लाना होता है तो

पहिले नीचे हौज के पानी की सतह ऊपर वाले हौज़ के पानी के बराबर कर दीजाती है और जहाज को नीचे हौज़ तक ले आते हैं। इसके पश्चात् ऊँचे हौज का फाटक बन्द कर दिया जाता है और नीचे हौज का फाटक खोल देते हैं। पानी धीरे धीरे उतर कर नीचे वाले हौज की असली सतह पर आ जाता है और जहाज़ ऊँचे हौज़ से नीचे हौज़ में उतर आता है। इस प्रकार पनामा के मार्ग से साल में सहस्त्रों व्यापारिक जहाज़ अटलान्टिक तथा पैसिफिक महासागरों के बीच आते जाते हैं। तुम इसकी उपयोगिता के विषय में आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड के सम्बन्ध मे बहुत कुछ पढ़ चुके हो। अब तुम बताओ कि इस नहर से यूरोप और अमेरीका की रियासतों को पैसिफिक के द्वीपों और बन्दरगाहों के साथ व्यापार करने में कितनी सुगमता हो गई है। नक़शे में दूरियां नाप कर बताओ।

पश्चिमी तट की यात्रा

दक्षिणी अमेरीका के समस्त पश्चिमी समुद्र तट के पीछे ऐन्डीज पर्वत फैले हुये हैं। तट ही पर पीरू नामक ठंडे पानी की धारा बहती है। पीछे की पहाड़ी दीवार में ऐसे मार्ग तथा द्वार बहुत कम हैं जो पश्चिमी समुद्र तट को पूर्वी मैदानों से मिला सकें। 'चिलो' के मध्य तट के अतिरिक्त सारा पश्चिमी तट निर्धन है। इसका अधिकांश भाग रेगिस्तानी और उजाड़ है। इस तट पर खाड़ियां भी बहुत कम हैं। इसलिये सुरक्षित बन्दरगाह भी नहीं हैं। ऐन्डीज के उत्तरी अर्द्ध-भाग में चाँदी और तांबा निकलता है। इसलिये चांदी लादने और खनिज प्रदेशों तक उनकी आवश्यक वस्तुएं

पहुँचाने के लिए बहुत से बन्दरगाह बन गये हैं। 'गोआ या कुइल' पर इसी नाम का एक बन्दरगाह स्थित है जो रेल द्वारा अपनी पीछे की खानों और चरागाहों से मिला हुआ है। बन्दरगाह 'एलिक' से 'बुलीविया' तक रेल जाती है। बुलीविया का सिन्कोना, रबड़, कोको और चाँदी इस बन्दरगाह से लादी जाती है इसी बन्दरगाह से चिली के 'अटाकामा' नामक रेगिस्तान का शोरा और सामुद्रिक पक्षियों की बीट अर्थात् 'गोआनो' लादा जाता है। इसके दक्षिण में एक छोटा सी खाड़ी पर ऐन्टाफ़गस्टा स्थित है। जहाँ से शोरे के मैदान में होती हुई पटोसी के चाँदी को खानों तक रेल जाती है। इस लिये रेगिस्तानी तट पर स्थित होते हुये भी यह बन्दरगाह अधिक धनी है।

'वालपरेसो' मध्य चिली की राजधानी और इस तट का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। यहाँ से 'उसपलाटा' दर्रे में होती हुई एक रेल 'बुइना सायस' तक जाती है। इसलिये तुम इसके धन तथा व्यापार का अनुमान कर सकते हो। इस समुद्र तट पर केवल यही एक बन्दर ऐसा है जो उपजाऊ तट पर स्थित है। इस कारण इसका नाम "वाल-परेसो' अर्थात् स्वर्ग की घाटी रक्खा गया है। चिली का दक्षिणी तट टूटा फूटा भी है और सुरक्षित 'फियोर्डज' भी हैं। परन्तु 'पीरू' की ठंडी धारा के कारण जल-वायु इतनी सर्द है कि जङ्गलों के अतिरिक्त कुछ भी पैदा नहीं होता, इसलिये उजाड़ और बेकार पड़ा रहता है।

इस महाद्वीप की दक्षिणी नोक पर बहुत से छोटे छोटे द्वीप स्थित हैं जो बर्फ से ढके रहते हैं। इनमें सबसे बड़ा द्वीप 'टेरा डे

अर्थात् अग्नि की भूमि है। जिसको 'मैगलन' नामक जल संयोजक महाद्वीप से अलग करता है। यहाँ की जलवायु बहुत ठंडी है परन्तु सुरक्षित घाटियों में भेड़ें पाली जाती हैं जब माझियों ने पहिले पहल इस द्वीप पर पदार्पण किया तो उन्होंने यहाँ के निवासियो को जलती हुई मशालें हाथ में लेकर घर से बाहर फिरते हुये देखा था। सम्भव है कि यह लोग शीत के कारण जलती हुई आग हाथ में रखते हों। इसी कारण यह द्वीप आज तक 'अग्नि की भूमि' के नाम से प्रसिद्ध है। मैगलन जल-संयोजक कप्तान 'मैगलन' के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। उसके जहाज इस जल संयोजक को बर्फ और चट्टानों में फँस कर नष्ट होगये थे। इस जल-संयोजक के पूर्व में 'फ़ाकलैंड' द्वीप समूह स्थित है जो ब्रिटिश साम्राज्य का एक भाग है। यहाँ लोग बहुधा भेड़ें पालते हैं और कठिनता से अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

पूर्वी तट की यात्रा पूर्वी तट का दक्षिणी अर्द्ध-भाग मैदानी है जो उत्तर में 'यूरुगुये', 'पैरागुये' और 'पराना' नदियों के मैदानों से मिला हुआ है। दक्षिण में 'पाटागोनिया' का तट अधिक उजाड़ है। इस भाग में मिट्टी के तेल के सोते अधिक हैं परन्तु शीत के कारण वहाँ स्थायी आबादी नहीं हो सकती इसके पश्चात् हम बाहिया ब्लान्का बन्दर पर पहुँचते हैं जो एक खाड़ी पर स्थित है। इस बन्दर के पीछे गेहूँ और माँस पैदा करने वाले प्रदेश स्थित हैं। अतः गेहूँ और माँस यहाँ से लादा जाता है।

'पैरागुये' और 'पराना' का बेसिन दक्षिणी अमरीका का अत्यन्त सभ्य और उपजाऊ मैदान है। जहाँ ऊन, मांस, चमड़ा,

मक्खन, पनीर, गेहूँ, शक्कर फल इत्यादि अधिक पैदा होते हैं। यद्यपि इस भाग में यूरोप की तरह शिल्प और व्यापार ने उन्नति नहीं की है किन्तु इनके चिन्ह दिखाई देने लगे हैं। इस तट के प्रसिद्ध बन्दर 'मोन्टीविडियो, और बुइना सायस' हैं। जो प्लाट नामक खाड़ी के दोनों ओर स्थित हैं। इन बन्दरों के उपजाऊ हिन्टरलैन्ड से इनके व्यापार का अनुमान किया जा सकता है।

'प्लाट' बेसिन के आगे चलकर हमको 'ब्राजील' देश का अत्यन्त लम्बा तट मिलता है। 'रायोडी जीनरा तक का तट अधिक-तर ऊँचा है और अपने पीछे के पहाड़ों तथा पठारों से सुरक्षित है। इस लिये इस तट पर अधिक व्यापार नहीं होता। इस बन्दर क पीछे पहाड़ों को काट कर कई रेलें सेनफ्रान्सिस्को' और 'पराना नदियों के बेसिन तक बना दी गई हैं। इस बन्दर की हिन्टरलैन्ड की उपज कहवा' रबड़, लकड़ी इत्यादि यहां रेलों द्वारा आती है और बाहर को भेजी जाती है।

इसके आगे चल कर तट की प्रकृति में फिर परिवर्तन हो जाता है। 'रायोडी जीनरो' से महाद्वीप के पूर्वी कोने तक नीचे मैदान की एक पतली पट्टी समुद्र तट के किनारे किनारे चली गई है। जिसके पीछे 'ब्राजील' का प्लेटो स्थित है। 'सेनफ्रान्सिस्को' नदी की घाटी और बन्दरगाह 'बाहिया' के उत्तरी बड़े मैदान बहुत उपजाऊ हैं और रेलों से मिले हुये हैं। इस बन्दर से कोको, शक्कर, कहवा इत्यादि लादे जाते हैं। 'परनामब्यूको' इस तट का उत्तरी बन्दरगाह है। जिसके हिन्टरलैन्ड में शक्कर और रुई अधिक पैदा होती है जो इस

बन्दरगाह से लादी जाती है।

महाद्वीप के पूर्वी कोने पर पहुंच कर हमको एक अनोखी बात दिखाई देती है। इस स्थान से तीन सामुद्रिक धारायें चलती हुई दृष्टिगोचर होती हैं जिनमें से पहली उत्तर को दूसरी दक्षिण और तीसरी पूरब को जाती है। कारण यह है कि विषुवतीय गर्म धारा मूँगे की

मूँगे का बना हुआ द्वीप

चट्टानों और स्थल से टकराकर पीछे हटती है। इसका कुछ भाग पूर्वी तट और कुछ उत्तरी तट के किनारे किनारे बहने लगता है।

उत्तरी तट की यात्रा

इस महाद्वीप के उत्तरी तट का अधिक भाग नीचा और मैदानी है जो अत्यन्त उपजाऊ है। यहां की गर्म तर जल-वायु में कोको, रबड़, शक्कर और चावल खूब होता है। बहुत सी नदियां इसमें होकर बहती हैं, जिनका

हाल तुम आगे चलकर पढ़ोगे। इस समुद्र तट की वर्तमान दशा उत्तरी विषुवतीय धारा, नदियों के बहाव और काट छांट के कारण हो गई है। बन्दरगाह 'बेलिम' पारा नदी का मुहाने पर स्थित है। यह रबड़ का मुख्य बन्दरगाह है। पारा नदी का मुहाना 'आमेजन' नदी के मुहाने से मिला हुआ है। इसलिये इन नदियों के द्वारा जंगली भाग के भीतर आना जाना होता है। आमेजन का मुहाना बहुत चौड़ा है और इसका मैला पानी समुद्र में बहुत दूर तक दिखाई देता है। आगे चलकर हमको 'डच' लोगों का 'पैरामरीबो' बन्दर और
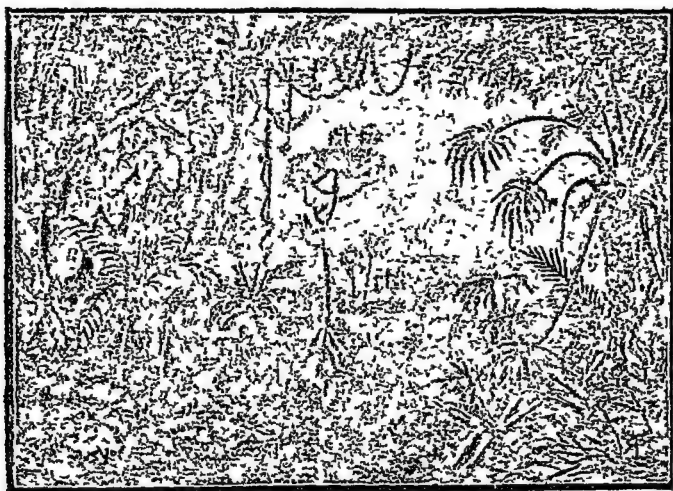
आमेजन नदी का दृश्य

अँग्रेजों की 'जार्जटाउन' मिलेगा। ये दोनों बन्दर नदियों के मुहानों पर स्थित हैं और कहवा, शक्कर तथा चावल की बड़ी मंडियाँ हैं।

ओरीनोको नदी के डेल्टे के ठीक सामने 'ट्रिनी डाड' नामक द्वीप स्थित है जो अँग्रेजी व्यापारिक स्थान है। 'ओरीनोको' का उपजाऊ

घाटी के कारण ट्रिनीडाड का व्यापार बहुत बढ़ गया है। यहाँ बहुत से हिन्दुस्तानी कुली शक्कर, धान और कोको के खेतों में काम करते हैं। इस द्वीप में 'ऐस्फाल्ट' अर्थात् कोलतार की एक झील है जिस पर हम चल सकते हैं। यह ऐस्फाल्ट अच्छी और पक्की सड़कों पर जमाया जाता है। हिन्दुस्तान के बड़े बड़े शहरों में बहुधा चिकनी और पक्की सड़कें इसी की बनाई गई हैं। 'माराकैबो' खाड़ी पर इसी नाम का एक बन्दरगाह स्थित है। इसके पीछे मिट्टी का तेल, चमड़ा, मांस, मक्खन, कोको, क़हवा इत्यादि गर्म प्रदेशों में पैदा होने वाली वस्तुयें लगाई जाती हैं। 'कारेबियन' सागर में सीप और मोती निकाले जाते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—दक्षिणी अमेरीका का आकार तिकोना क्यों है?

२—इसके आकार से उत्तरी अमेरीका के आकार की तुलना करो और समानता अथवा विभिन्नता का कारण बताओ?

३—दक्षिणी अमेरीका का पश्चिमी तट पूर्वी तट की अपेक्षा बहुत ज्यादा बेकार है इसका क्या कारण है?

४—यदि हम जार्जटाउन से मान्टीविडियो तक दक्षिणी अमेरीका के तट पर यात्रा करें तो हमको कौन कौन सी मुख्य नदियां एवं बन्दरगाह मिलेंगे और यह भी बताओ कि इनमें सबसे अधिक व्यापारिक नदियां और बन्दरगाह कौन कौन से हैं?

६

दक्षिणी अमेरीका की प्राकृतिक दशा, उपज और निवासियों के व्यवसाय

प्राकृतिक दशा समुद्र तट की यात्रा के पाठ में तुमने दक्षिणी अमेरीका के भीतरी भागों का भी कुछ हाल पढ़ा है। अब तुम प्राकृतिक नकशे को देख कर यहाँ की प्राकृतिक दशा का निरीक्षण कर सकते हो। महाद्वीप के पश्चिमी तट पर ऐन्डीज़ पहाड़ स्थित हैं। ये हिमालय पहाड़ की तरह शिकनदार पहाड़ों की श्रेणियाँ हैं और उत्तर से दक्षिण तक ५००० मील लम्बे चले गये हैं। उत्तर में इनकी तीन शाखायें हैं। जिनमे से दो तो 'माराकैबो' की खाड़ी के दोनों ओर उत्तर-दक्षिण को फैली हुई हैं और तीसरी उत्तरी अमेरीका के पहाड़ों से जा मिली है जिनको पनामा और कोलन के बीच में काट कर पनामा नहर बनाई गई है।

१. **ऐन्डीज पहाड़ों के बीच का भाग**—यह भाग १५००० फीट से भी अधिक ऊँचा है। शहर 'क्विटो' जो 'इक्वेडोर' राज्य की राजधानी है ठीक विषुवत रेखा पर स्थित है। परन्तु १०००० फीट की ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यहाँ की जल-वायु अत्यन्त प्रिय और सम है। 'क्विटो' के दक्षिण-पूर्व में 'चिम्बोरैजो' और 'कोटापैक्सी' के

ज्वालामुखी पर्वतों की चोटियां हैं जिनकी ऊँचाई लगभग २०००० फीट है। दक्षिण में एक ऐसी चोटी 'अकन केगुआ' है। तुम इसको नकशे में देख सकते हो। इस पहाड़ी प्रदेश के बीच के भाग

दक्षिणी अमेरीका का प्राकृतिक नक्शा

में जहाँ यह बहुत चौड़ा है 'टिटी काका' इत्यादि खारी पानी की झीलें हैं। इस भाग का पानी बाहर को वह कर नहीं निकलता। 'इक्वेडोर' 'पीरू', 'बुलेविया' और 'चिली' के पहाड़ी भागों में चांदी, सीसा, सोना

और तांबा बहुत निकलता है। कोयला पीरू और दक्षिणी 'ब्राज़ील' में निकलता है। लोहा भी कहीं कहीं पाया जाता है, परन्तु लोहा और कोयला कम होने के कारण इस देश के शिल्प तथा कला कौशल सम्बन्धी क्रान्ति की आशा नहीं पाई जाती। मिट्टी का तेल 'पाटा गोनिया' और 'वेनेजूला' में पाया जाता है।

२. दक्षिणी अमेरीका का उत्तरी मैदान — जिसको ब्राजील और ऐन्डोज़ पहाड़ दक्षिणी मैदान से पृथक करते हैं, यह तीन भागों में बाँटा गया है :—

(अ) आमेज़न नदी की घाटी जिसमें रबड़ के घने जंगल हैं।

(ब) ओरीनीको नदी का गर्म मैदान जहाँ लम्बी लम्बी घास होती है।

(स) काका नदी का बेसिन जो इन दोनों के अपेक्षा अधिक खुश्क है और कोको तथा क़हवा पैदा करने वाला भाग है।

'आमेज़न' और 'ओरीनीको' की घाटियों के बीच में उत्तरी पहाड़ स्थित हैं जहाँ सोना मिलता है। 'ब्राजील' और दक्षिणी हिन्दुस्तान के पुराने पहाड़ों की तरह यह पहाड़ भी बहुत पुराने हैं। 'काका' नदी के बेसिन में चांदी और इसके पूर्व में मिट्टी का तेल निकलता है।

३. ब्राज़ील के पहाड़—ये महाद्वीप के पूर्वी तट पर स्थित हैं। उत्तर में ब्राज़ील प्लेटो का ढाल धीरे धीरे आमेज़न के मैदान से जा मिला है। यह पुरानी चट्टानों का बना हुआ प्लेटो है, इसमें सोना

और क़ीमती पत्थर निकलते हैं। दक्षिण में कोयला भी निकाला जाता है।

४. दक्षिणी मैदान—इसमें 'युरूगुये', 'पैरागुये' और 'पराना' नदियाँ बहती हैं। यह भाग दक्षिणी अमेरीका में अत्यन्त उपजाऊ और मालदार है। खेती और पशुपालन (गल्ला) आदि के लिये बड़ा उपयोगी है। इस मैदान की दक्षिणी नोंक 'पाटागोनिया' तक चली गई है। जिसकी सर्द और बर्फ़ीली जल-वायु का वर्णन तुम पहिले पढ़ चुके हो।

जल-वायु

दक्षिणी अमेरीका लगभग ६ अंश उत्तरी अक्षांस से ५४ अंश दक्षिणी अक्षांश तक फैला हुआ है इसलिये यहाँ कई तरह की जल-वायु पाई जाती है। विपुवत रेखा इसके उत्तरी चौड़े भाग में होकर जाती है। इसलिये गर्मी की ऋतु (अर्थात् जनवरी) में आमेज़न नदी के दक्षिण में लगभग 'पाटागोनिया' तक महाद्वीप के अधिक भाग का ताप क्रम ८० अंश फ० हो जाता है। परन्तु जाड़ों (अर्थात् जुलाई) में बहुत थोड़ा सा उत्तरी

दक्षिणी अमेरीका का प्राकृतिक भूखंड

भाग इतना गर्म होता है, क्या तुम इसका कारण बता सकते हो ? ऊष्ण कटि बन्ध में स्थित होने के कारण और गर्म सामुद्रिक धाराओं के प्रभाव से लगभग दो-तिहाई महाद्वीप की जल-वायु गर्म रहती है। दक्षिण के मैदानों की जल वायु सम है और 'पाटागोनिया' अत्यन्त ठंडा रहता है। पश्चिमी तट की जल-वायु साधारणतः गर्म व खुश्क है। परन्तु मध्य 'चिली' में रूमी जल-वायु पाई जाती है और उसके दक्षिण में सर्द जल-वायु का प्रदेश है।

वर्षा ऐन्डीज पर्वतों की ऊंची श्रेणियां वर्षा लाने वाली ट्रेड हवाओं को पश्चिमी तट तक नहीं पहुँचने देतीं। अतः दोनों ट्रेड हवायें पूर्वी मैदान को तर रखती हैं। परन्तु वर्षा न होने के कारण
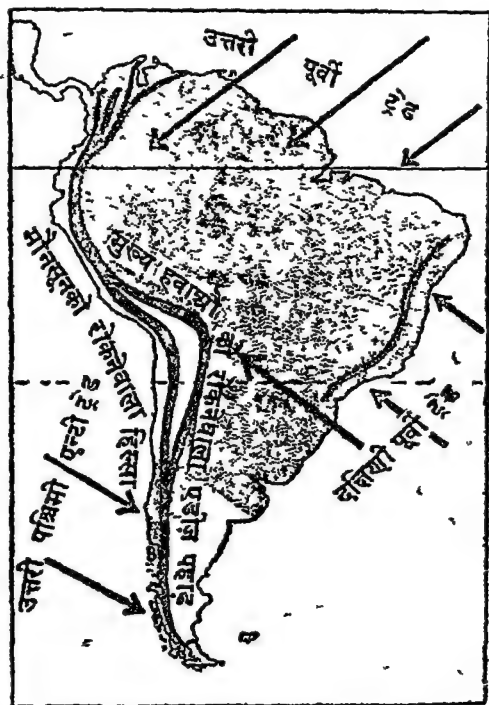
दक्षिणी अमेरीका के पहाड़ और हवा

पश्चिमी तट खुश्क रेगिस्तान हो गया है। इसके अतिरिक्त पीरू नामक ठंडी सामुद्रिक धारा का भी इस तट पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गर्मी के दिनों में 'काका' नदी की घाटी और जाड़ों में 'सेन।

फ्रान्सिस्को' नदी की घाटी खुश्क रहती है। क्योंकि भिन्न भिन्न ऋतुओं में हवाओं की दशा बदलती रहती है। तुम हवाओं के नक़्शे में हवाओं की दशा और प्राकृतिक नक़्शे में उन पहाड़ों की
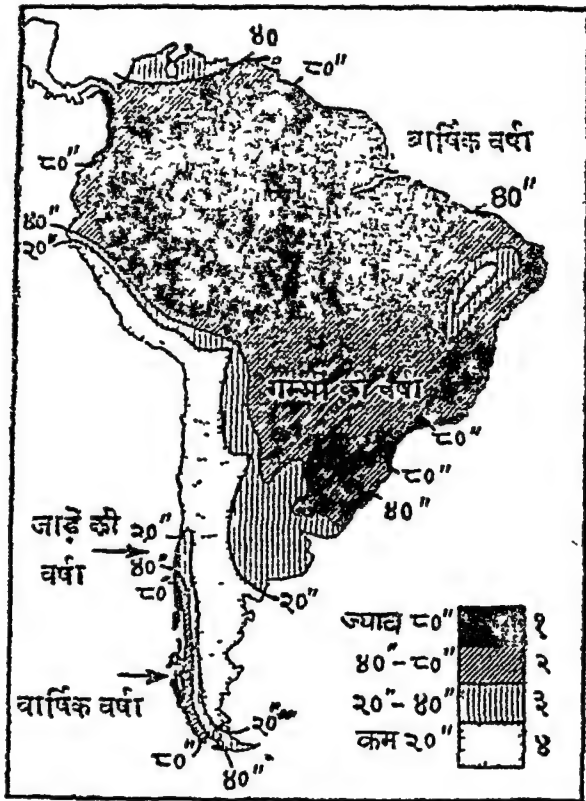
दक्षिणी अमेरीका की वार्षिक वर्षा

दशा देख सकते हो जिससे वे सुरक्षित रहते हैं। यही दो बातें वर्षा पर प्रभाव डाला करती हैं। महाद्वीप का दक्षिणी तिहाई भाग ऐन्टी-ट्रेड (उत्तरी-पश्चिमी विरुद्ध) हवाओं का भाग है। इसलिये इस

भाग में 'ऐन्डीज़' के पश्चिम में वर्षा होती है और पाटागोनिया सर्द। रेगिस्तान और उजाड़ हो जाता है।

तुमने आस्ट्रेलिया के पाठ में रूमी जल-वायु का हाल पढ़ा है। ऐसी जल-वायु वहाँ पाई जाती है जहाँ ट्रेड और ऐन्टी-ट्रेड हवाओं की पट्टियाँ मिलती हैं। गर्मी के मौसम (जनवरी) में सूरज मकर रेखा पर चमकता है। इसलिये शान्त हवाओं की पट्टी कुछ दक्षिण को हट जाती है और खुश्क ट्रेड हवाओं का भाग दक्षिण को बढ़ जाता है। जाड़े के मौसम (जुलाई में शान्त हवाओं) की पट्टी उत्तर को खिसक जाती है और जिस भाग में पहिले ख़ुश्क ट्रेड हवायें ऐन्डीज़ पहाड़ से उतर कर चलती थीं अब उसमें पश्चिमी तर हवायें चलने लगती हैं। इसलिये चिली का मध्य भाग रूमी जल-वायु का प्रदेश हो गया है। यहाँ गर्मी का मौसम गर्म और खुश्क रहता है परन्तु जाड़ों में वर्षा होती है और ऋतु सम रहती है।

आमेज़न नदी के उत्तर में जाड़ों में भी वर्षा अधिक होती है, क्योंकि यह भाग इस मौसम में भी बहुत गर्म रहता है। यहाँ हवा का दबाव अटलान्टिक महासागर की अपेक्षा कम रहता है। इस कारण इस भाग में तेज़ सामुद्रिक हवायें चलती हैं और वर्षा लाती हैं। यही कारण है कि आमेज़न नदी में दोनों ही मौसमों में बाढ़ आया करती है।

वनस्पति

तुम जानते हो कि वनस्पति सदैव जल-वायु तथा वर्षा पर निर्भर होती है। दक्षिणी अमेरीका में आमेज़न नदी का गर्म और तर बेसिन घने विषुवतीय जंगलों से ढका

हुआ है जिनको 'सेल्वाज़' कहते हैं। ऐसे जङ्गलों का हाल तुम एशिया और आस्ट्रेलिया के भूगोल में भी पढ़ चुके हो। इन घने जङ्गलों के अन्दर आना बहुत कठिन है। 'आमेजन', 'नीगरो' और 'मेडिरा' इत्यादि नदियों के द्वारा इस जङ्गल के भीतरी भागों में आना जाना होसकता है। यहाँ की विशेष उपज रवड़, महोगनी और आबनूस इत्यादि की लकड़ी है। इस भाग में 'मनाउस' और 'बोर्बा' रवड़ के गोदाम हैं। बन्दरगाह 'बेलिम' (पारा) से बहुत सी रवड़ बाहर को भेजी जाती है।

रवड़ के जङ्गल

यहाँ के निवासी रवड़ के पेड़ में छेद कर देते हैं और उसके नीचे एक बर्तन रख देते हैं जिसमें पेड़ का रस इकट्ठा होता रहता है।

फिर यह रस बड़े बड़े कढ़ाओं में डालकर पकाया जाता है और
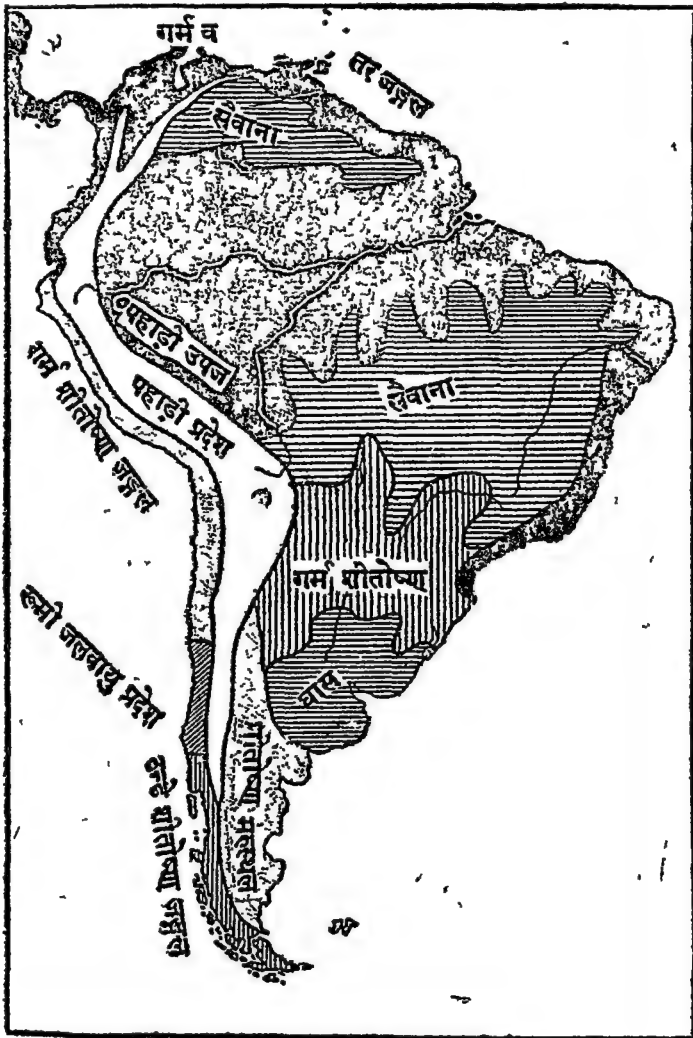
दक्षिणी अमरीका की बनस्पति

सुलगते हुये डंडों से खूब घोंटा जाता है। घोंटते घोंटते जब यह

खूब गाढ़ा और ठोस हो जाता है तो उसके गोले बना लेते हैं। यह कच्चा रबड़ शिल्प प्रधान देशों को भेज दी जाती है, जहाँ इसके मोटर और बाइसिकिल के टायर, नल, पेटियाँ, मश्कें और खिलौने इत्यादि बनाये जाते हैं। 'ओरीनीको' नदी की घाटी में घास के गर्म मैदान 'लेनोस' स्थित हैं जिनमें लम्बी लम्बी घास होती है। इसलिये मवेशी चराना यहाँ का मुख्य उद्यम है। सेल्वाज के किनारे और ब्राज़ील तथा 'गायना' के पाठारों पर भी घास के मैदान पाये जाते हैं। 'ब्राज़ील' प्लेटो के उत्तर में 'कैम्पास' और 'पराना पैरागुये' के मैदान में 'पैम्पास' नामक घास के मैदान हैं। ऐन्डीज़ के पहाड़ी भागों में सिन्कोना के वृक्ष बहुत उगते हैं। तुम पहले पढ़ चुके हो कि इस वृक्ष की जन्म-भूमि 'ऐन्डीज़' पहाड़ है। एक कहावत है कि एक यूरोपियन गवर्नर की बीबी लेडी सिन्कोन ने उसको उपयोगी जान कर इस बात का प्रयत्न किया था कि यह अमरीका की औषधि पुरानी दुनियाँ में भी पैदा होने लगे। अतः सिन्डकोना (लेडी सिन्कन) के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। दक्षिणी अमरीका के मरु-स्थल में बहुत कम वनस्पति उगती है और जो उगती भी है वह बेकार होती है।

खेती दक्षिणी अमेरीका का अधिक भाग, जैसा कि तुम पढ़ चुके हो विपुवतीय जङ्गलों और घास के प्रदेशों से घिरा हुआ है। इस कारण ऐसा भाग बहुत कम है जहाँ खेती होती है। यद्यपि अमेरीका एक नया देश है और उसकी उन्नति केवल पिछले तीन सौ वर्ष के प्रयत्नों का फल है तो भी यहाँ की खेती ने बहुत उन्नति करली है। 'यूरुगुये' और 'पैरागुये' के मैदान में गेहूँ, बादल

और शक्कर .खूब पैदा होती है। फल भी उगाये जाते हैं और रूई भी पैदा होती है। चिलो के रूमी जल-वायु का प्रदेश गेहूँ और फलों के लिये प्रसिद्ध है। उत्तरी तटों तथा नदियों की घाटियों में शक्कर व चावल और 'कोलम्बिया', 'ब्राजील और 'इक्विडोर' में क़हवा तथा कोको अधिक पैदा होता है। मक्का और ज्वार की तरह के मोटे अनाज जङ्गलों और मरु-स्थलों को छोड़ कर सारे महाद्वीप में .खूब पैदा होते हैं।
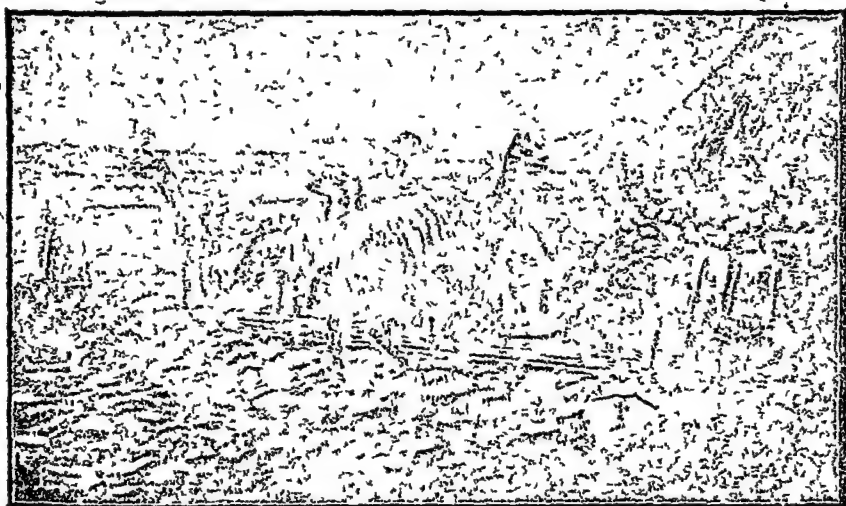
लामा

पशु

पशु पालन यहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम है इसलिये पैरागुये और पराना के बेसिन, चिली के दक्षिणी भाग और पीरू में मवेशी और भेड़ों के बड़े बड़े गल्ले चराये जाते हैं। 'ओरीनिको' के बेसिन की लम्बी लम्बी घास में केवल

मवेशी चराये जाते हैं, क्योंकि यह घास भेड़ों के काम की नहीं होती। ये भाग अपने ऊन, मांस और मक्खन के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ की भेड़ें अधिकतर स्पेन की 'मेरीनो' नस्ल की होती हैं। गायें पहिले तो हिन्दुस्तान से मगाई गई थीं मगर अब इन गायों का पालन पोषण इस प्रकार होता है कि एक एक गाय दिन भर में एक एक मन दूध देती है और दिन में कई बार दूध दुहा जाता है। ऐन्डोज पहाड़ों के मध्य में लामा नामक एक पशु होता है जिसका मुंह ऊट का सा होता है और शेष शरीर भेड़ का सा। यह पशु बोझा ढोने के काम आता है। अल्पका और विकूना का ऊन काम में लाया जाता है। आस्ट्रेलिया की तरह यहां भी कई कोई विचित्र पशु पाये जाते हैं। 'बो ा' एक प्रकार का बहुत लम्बा और मोटा साँप होता है जो

विकूना

बहुधा पेड़ों से लटक कर बड़े बड़े जङ्गली पशुओं को लपेट लेता है और दबा कर मार डालता है। 'ऐन्ट ईटर' या च्यूंटी खाने वाला

एक चोपाया होता है जो अपनी पतली और लम्बी जिह्वा से कीड़ों को चाट लेता है। जंगलों में बहुधा बन्दर ऐसे होते हैं जो अपनी लम्बी दुम से वृक्षों की शाखायें पकड़ कर झूलते रहते हैं और छलांग मार कर दूर दूर के वृक्षों तक पहुँच जाते हैं। हाथी की जगह यहाँ 'टपीर' जानवर होता है जिसका मुह छछूंदर की तरह और बाकी सारा शरीर हाथी की तरह होता है।

अमरीका के बन्दर

निवासी दक्षिणी अमरीका के आदि निवासी जैसा कि तुम पढ़ चुके हो सभ्य थे। परन्तु अब इनकी नस्ले समाप्त हो गई हैं और पुर्तगाली तथा हस्पानवी नस्लों के साथ सम्मिलित हो गई हैं। हाँ कहीं कहीं जंगलों में पुराने असभ्य अमरीकन लोग दिखाई देते हैं। ब्राजील में पुर्तगाली और शेष भाग में हस्पानवी भाषा प्रचलित है। इससे पता चलता है कि पूर्वी भागों में पुर्तगाली और पश्चिम तथा उत्तर में हस्पानवी लोग बसे थे। वर्तमान काल में अन्य यूरोपीय मनुष्य विशेष कर इटली वाले दक्षिणी मैदान में आ बसे हैं। ब्राज़ील का पूर्वी-दक्षिणी

तट, चिली का मध्य भाग और प्लाट खाड़ी के समीप का प्रदेश घना आबाद है। बताओ कि इसका क्या कारण है?

शासन-प्रणाली 'ब्रिटिश', 'फ्रान्सीसी' तथा 'डच', 'गायना' और 'ब्रिटिश ट्रिनीडाड' को छोड़ कर दक्षिणी अमरीका के सब राज्य स्वतन्त्र और प्रजातन्त्र राज्य हैं। अपने नक़्शे में तुम दक्षिणी अमरीका के राजनैतिक विभागों को देख सकते हो।

रेलें तथा सामुद्रिक मार्ग दक्षिणी अमरीका में केवल 'अर्जन्टीना' एक ऐसा देश है जिसमें रेलें बनाई जा सकती हैं और उनकी उन्नति हो सकती है। तुम नक़्शे में देख सकते हो कि 'बुइना सायर्स' और 'मान्टीविडियो' से 'रायोडी जीनरो' 'वालपरैसो,' 'सान्टाफे' और 'असनशन' तक रेलें गई हैं। जो आगे चल कर 'बोलेविया' में 'पटोसी' और 'लापाज़' की खानों तक चली गई हैं। पश्चिमी तट पर समस्त चिली में उत्तर से दक्षिण तक एक रेल जाती है। ब्राज़ील में रायोडी जीनरो का हिन्टरलैन्ड उन्नति कर रहा है इसलिये इस भाग में भी बहुत सी रेलें हैं। शेष भागों में खानों और उपजाऊ मैदानों का माल बन्दगाह तक लाने को रेलें बनाई गई हैं। तुम ऐसी रेल अपने नक़्शे में देख सकते हो।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—ऐन्डीज़ पहाड़ों ने दक्षिणी अमरीका की जलवायु पर क्या प्रभाव डाला है?

२—तुम इस महाद्वीप को बनस्पति के आधार पर कौन कौन रीजन्स में बांट सकते हो ?

३—आमेज़न नदी और उसके बेसिन का हाल बताओ ?

४—क्या कारण है कि आमेज़न नदी में जाड़ों और गर्मी दोनों ऋतुओं में बाढ़ आती रहती है ?

५—दक्षिणी अमेरीका की जल-वायु पर स्थायी हवाओं और सामुद्रिक धाराओं का क्या प्रभाव पड़ता है ?

६—सेनफ्रांसिस्को नदी की घाटी जाड़ों में क्यों खुश्क रहती है ?

७—फाका नदी की घाटी में गर्मी की ऋतु में कम वर्षा होने का क्या कारण है ?

८—महाद्वीप दक्षिणी अमरीका के कौन से भाग में रूम-सागरीय जल-वायु पाई जाती है और क्यों ?

६ दक्षिणी अमरीका के रीजन्स तथा राजनैतिक भाग

हम दक्षिणी अमरीका की प्राकृतिक दशा जल-वायु और वनस्पति का हाल पढ़ चुके हैं। इनकी सहायता से अब हम दक्षिणी अमरीका को नीचे लिखे मुख्य प्राकृतिक रीजन्स में बाँट सकते हैं।

१. पैसिफिक तट के प्राकृतिक रीजन्स :—

(अ) उत्तरी पहाड़ी प्रदेश जो दक्षिण में विषुवतरेखा तक चला गया है और जिसमें 'कोलम्बिया', इक्विडोर और पीरू के पहाड़ी भाग स्थित हैं।

(ब) पीरू का तटीय मैदान और चिली का उत्तरी भाग गर्म मरु-स्थल है। इस प्रदेश में मरु स्थल की धरातल पर शोरे की तह जम जाती है और वर्षा न होने के कारण यह शोरा घुल कर न तो पानी के साथ बहता है और न भूमि के भीतर ही जा सकता है। यहाँ सामुद्रिक चिड़ियों की बीट (गोआना) भी होती है जो शोरे की तरह खाद के काम आती है। इस भूखंड निवासियों का यही उद्यम है कि इनको एकत्रित करें और यही व्यापार है कि इनको बेचकर आवश्यक वस्तुयें खरीदें।

बो लि वि या
दक्षिणी अमेरिका
राजनीतिक

(स) रूम सागरीय जल-वायु का भूखंड 'वालपैरेसो' के चारों ओर स्थित है।

(द) ठंडे मोतदिल जङ्गलों का भूखंड दक्षिणी चिली में स्थित है। इसकी लकड़ी अभी ज्यादा काम में नहीं आती।

२. ऐन्डीज़ पर्वतों की श्रेणियाँ :—

(अ) उत्तरी ऐन्डोज़ की श्रेणियों को 'मैन्डेलीना' और 'काका' नदियों की घाटियाँ पृथक करती हैं। यह भूखंड गर्मियों में खुश्क रहता है और जाड़ों में तर। इस कारण यहाँ की वनस्पति पास पड़ोस के देश से भिन्न है। यह भाग 'कोलम्बिया' राज्य में स्थित है, यहाँ की जल-वायु विषुवतीय है। नदियों की घाटियों में कोको, शक्कर, रुई, केला और नारियल अधिक पैदा होता है। पहाड़ों के ढालों पर क़हवा तथा मक्का और अधिक ऊँचाई पर गेहूँ पैदा होता है। परन्तु १०००० फोट से अधिक ऊँचाई पर कुछ पैदा नहीं होता। 'कार्टेजीना' बन्दरगाह के द्वारा 'कोलम्बिया' और अमरीका संयुक्त राज्य के बीच व्यापार होता है। देश के भीतरी भाग में वगोटा स्थित है जो कोलम्बिया की राजधानी है।

(ब) ऐन्डीज का मध्य भाग राँगा, चाँदी आदि के लिये प्रसिद्ध है। परन्तु यहाँ की वायु इतनी हलकी है कि वहीं के निवासी खानें खोद सकते हैं। इसलिये खान खोदने का काम उन्नति पर नहीं है। इस भूखण्ड में 'मोलेन्डो' (पीरू) 'एरीका और 'ऐन्टाफगस्टा' (चिली) के द्वारा व्यापार होता है। यद्यपि पोरू एक रेगिस्तान है परन्तु उसके पश्चिमी तट पर सिंचाई हो सकती है। अतः यहाँ रुई और

शक्कर पैदा होने लगी है। 'लीमा' यहाँ की राजधानी है जो बन्दर-गाह कैलाओ से मिला हुआ है। 'मोलेन्डो' यहाँ का दूसरा मुख्य बन्दरगाह है जो 'बोलीविया' की खनिज लादता है।

(स) दक्षिण ऐन्डीज़ पर ठंडे प्रदेशों के जङ्गल पाये जाते हैं।

३. मध्य के मैदान :—

(अ) 'ओरीनीको' के बेसिन में लम्बी लम्बी घास अधिक पैदा होती है जिसके कारण यह भाग लैनोस के नाम से पुकारा जाता है। यहाँ कोको और शक्कर की खेती अधिक होती है।

(ब) आमेज़न के बेसिन में गर्म व तर जल-वायु होने के कारण घने विषुवतीय जङ्गल हैं। यहाँ साल भर वर्षा होती है। रबड़ यहाँ की मुख्य उपज है, परन्तु रबड़ निकालने का ढंग खराब होने के कारण रबड़ के वृक्ष नष्ट होते जा रहे हैं। यहाँ तक कि मलाया और सीलोन के लगाये हुये रबड़ के बगीचे यहाँ से अधिक रबड़ पैदा करने लगे हैं।

(स) पराना और पैरागुये का बेसिन दो भागों में बाँटा जा सकता है :—

(१) उत्तरी भाग में जङ्गल है और जंगलों के दक्षिण में लम्बी लम्बी घास के मैदान हैं। यहाँ लाखों ढोर चरते हैं। इन भागों में मक्का और शक्कर खूब होती है।

(२) दक्षिणी-भाग में छोटी छोटी घास के मैदान हैं जिनमें लाखों भेड़ें पाली जाती हैं। इस मैदान की खास पैदावार गेहूँ है।

(द) पाटागोनिया मरु-स्थल के उत्तरी भाग में भेड़ें पाली जाती हैं किन्तु दक्षिणी भाग उजाड़ है।

४. पूर्वी पठार :—

(अ) गायना और विनेहज़ूला के पठारों की जल-वायु ख़राब है। यहाँ जंगल बहुत हैं और बहु-मूल्य पदार्थों की खानें अधिक पाई जाती हैं। परन्तु अभी वह खानें खोदी नहीं जातीं।

(ब) ब्राज़ील के पठार का भाग पुरानी कड़ी चट्टानों का बना हुआ है और बहु-मूल्य पदार्थों की खानों से भरा पड़ा है। इसके तटों की भूमि बड़ी उपजाऊ है जिसमें कहवा गन्ना और कहीं कहीं रुई की पैदावार अधिकता से होती है।

मुख्य राजनैतिक भाग

पैरागुये पराना और यूरुगुये के बेसिन में तीन प्रजातन्त्र राज्य स्थित हैं (१) अर्जन्टीना (२) पैरागुये (३) यूरुगुये के प्रजा-तन्त्र राज्य।

१. अर्जन्टीना—दक्षिणी अमरीका का सबसे अधिक उप-जाऊ देश है। यहाँ का जल-वायु सम है जिसमें गेहूँ खूब पैदा होता है। उत्तरी भाग में जंगल अधिक पाये जाते हैं। माटे (चाय) और शक्कर भी होती है। नीचे भागों में पैम्पास (छोटी घास के मैदान) हैं जहाँ ढोर और भेड़ें पाली जाती हैं। जिनका मक्खन और गोश्त ठंडी किराचियों में भर कर बाहर भेजा जाता है। यहाँ से चमड़ा भी बाहर को जाता है। गेहूँ यहाँ की मुख्य उपज है। नक़्शे में बुइनासायर्स

(राजधानी) से भिन्न भिन्न दिशाओं को जाने वाली रेलें देखो और बताओ कि ये रेलें इस बन्दगाह तक क्या क्या वस्तुयें लाती हैं। इस राज्य के पश्चिमी भाग में फल होते हैं किन्तु यहाँ शराब कम बनाई जाती है। नक़शे में 'टयूकोमान' शक्कर की मंडी और शराब की मंडी 'मेनडोजा' ढूंढ़ो। यह देश अपनी उपज के बदले में कोयला, तेल और आवश्यक वस्तुयें यूरोप से मंगाता है। 'पाटागोनियां' भी अर्जन्टीना का भाग है। यहाँ खानेको नामी भेड़ होती है जिसकी खाल के डेरे और कपड़े बनाये जाते हैं। पाटागोनियाँ में मिट्टी के तेल के चश्मे और खानें भी हैं, परन्तु इनसे अभी अधिक लाभ नहीं उठाया जाता। यहाँ प्रजातन्त्र राज्य है और इटालियन, पुर्तगाली हस्पानवी और अमरिका के ग़ाक्चू लोगों की मिश्रित आबादी है। यह देश प्रतिदिन उन्नति कर रहा है और यहाँ की आबादी बढ़ती जाती है।

२, पैरागुये—ब्राज़ील और अर्जन्टीना के बीच पराना पैरागुये के द्वावे में स्थित है। यहाँ लम्बी घास अधिकता से पैदा होती है। अतः ढोर चराना यहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम है। 'ब्राज़ील'की चाय (माटे) यहाँ अधिक पैदा होती है जिसको दक्षिणी अमेरीका के लोग बड़े चाव से पीते हैं। पैरागुये नदी के किनारे 'असनशन' नगर स्थित है जो यहाँ का मुख्य शहर और व्यापारिक बन्दरगाह है। यहाँ के निवासी अमरीकन और हस्पानवी मिश्रित नस्ल के हैं।

३, यूरूगुये का प्रजातन्त्र राज्य—एक छोटा सा प्रजातन्त्र राज्य 'प्लाट' की खाड़ी पर स्थित है। यह भी मक्का और घास पैदा करने वाला देश है। अतः मांस, ऊन और खालें यहाँ की मुख्य उपज

हैं। 'मान्टीविडियो' यहाँ की राजधानी और मुख्य बन्दरगाह है। नक़शे में देख कर बताओ कि इस बन्दरगाह का हिन्टरलैण्ड (व्यापारिक क्षेत्र) कहाँ तक फैला है और यहाँ किन किन वस्तुओं का व्यापार होता है।
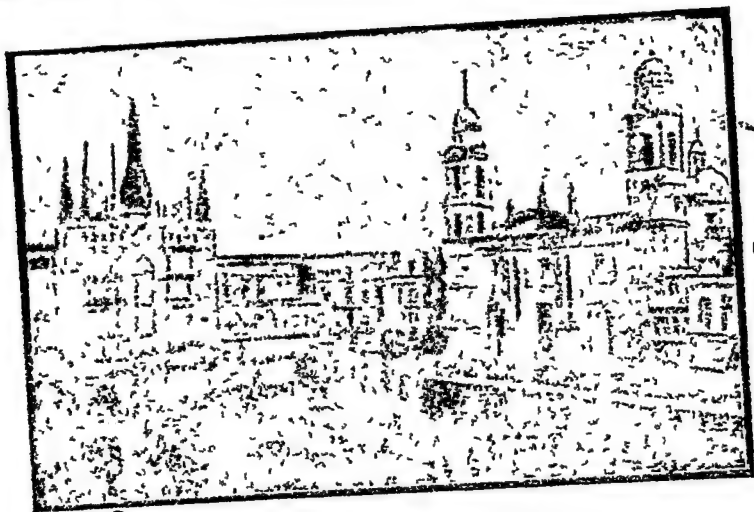
मान्टीविडियो

'चिली' के तीन प्राकृतिक रीजन्स हैं :—

(१) अटाकामा का गर्म मरु स्थल (२) रूमी भूखण्ड और (३) मौतदिल जंगल। तुम इन सब रीजन्स की विशेषतायें, वनस्पति और उपज का हाल पढ़ चुके हो। अब तुम बताओ कि चिली के इन भूखण्डों में क्या उपज होती है।

नक़शे में नाप कर देखो कि चिली की लम्बाई २५०० मील और चौड़ाई सिर्फ २०० मील है, इसमें तीन भिन्न भिन्न रीजन्स कैसे आते

हैं। इस कारण भिन्न भिन्न रीजन्स के निवासियों के व्यवसाय और उद्यम भी भिन्न भिन्न हैं। उत्तरी भाग अटाकामा में शोरा, ताँबा और चाँदी पाई जाती है। इस भाग में 'इकुइक' और 'इरोका' प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं। चिली का रूमी भाग अत्यन्त घना आबाद है और सब से अधिक कृषि प्रधान तथा व्यापारिक देश है। यहाँ की मुख्य पैदावार गेहूँ, जो, शराब और रूमो जल-वायु के फल हैं। घास के मैदानों में भेड़ें अधिकता से पाली जाती हैं। यहाँ शिल्पकारी अधिक नहीं होती, इस कारण कपड़े, मशीनें और आवश्यक वस्तुयें अमरीका संयुक्तप्रदेश, इंगलिस्तान, जर्मनी और फ्रांस से आती हैं। "सैन्टि-यागो' यहाँ की राजधानी है और 'वालपैरैसो' मुख्य बन्दरगाह है। तुम इस बन्दरगाह से जाने वाली रेलें अपने नक्शे में देखो और इसकी व्यापारिक अवस्था का अनुमान करो। चिली का दक्षिणी भाग अभी तक उन्नत्ति नहीं कर स॰ ा है। आशा है कि इसके जगलों की लकड़ी काम में लाई जा सकेगी। आज कल इस भूखड के मौतदिल घास के मैदानों मे केवल भेड़ें चराई जाती हैं।

ब्राजील—दक्षिणी अमरीका का सब से बड़ा राज्य है और इसका क्षेत्रफल भारतवर्ष से दूना है। इसमें कई प्राकृतिक रीजन्स स्थित हैं:—

१. **अमेजन का बेसिन**—जो विषुवतीय, रबड़ के जंगलों से ढका हुआ है। आमेजन, नीगरो मडोरा और पारा नदियों का हाल तुम [illegible] चुके हो। यह भी पढ़ चुके हो कि पारा इस भाग की रबड़

का मुख्य निकास है। 'मनाओस' और 'बोर्वा' रबड़ इकट्ठा करने के मुख्य गोदाम हैं।

२. ब्राजील के पठार—इसने इस समय तक प्रायः अधिक उन्नति नहीं का है। परन्तु यहाँ की मिट्टी अधिक उपजाऊ है और बहुत सी खाने हैं, जिनका अभी तक पूरा ज्ञान भी प्राप्त नहीं हो सका है। उत्तर की जल-वायु विषुवतीय है और दक्षिण की सम। जल-वायु के अनुसार यहां का पैदावार और फस्लें भी भिन्न भिन्न हैं। उत्तर में मक्का, रुई, शक्कर, रबड़ और कोको पैदा होता है। साओपाला' से चारों ओर कहवा बहुत होता है और कुछ रुई भी पैदा हो जाती है। पराना और पैरागुये के बेसिन में अधिकतर ढोर चराये जाते हैं और एक प्रकार की चाय जो मोट कहलाती है अधिकता से होती है। ब्राज़ील' एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र राज्य है। यहाँ के निवासी प्रायः पुर्त्तगाली हैं और पुर्त्तगाली भाषा बोलते हैं। इस राज्य के मुख्य नगर तुम पढ़ चुके हो। अब तुम नकशे में देख कर उनकी भौगोलिक स्थिति की विशेषतायें बताओ और यह भी बताओ कि मुख्य मुख्य बन्दरगाह कौन कौन से हैं और वे भीतरी देश में रेलों द्वारा किन किन शहरों से मिले हुये हैं? यहाँ की उपज क्या है और वे बन्दरगाह किन किन वस्तुओं का व्यापार करते हैं?

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—निम्न लिखित भागों की भौगोलिक दशा पर संक्षिप्त वृत्तान्त लिखोः—

ब्रिटिश गायना, मध्य चिली, बोलीविया पैम्पास और कांगो नदी की घाटी।

२—नीचे लिखे हुए शहरों की स्थिति और विशेषता पर एक छोटा निबन्ध लिखो :—

इरीका, वेलिम, लीमा, रायो-डि-जीन-रो और बुइना सायर्स ।

३—दक्षिणी अमरीका में निम्नलिखित वस्तुयें कहाँ कहाँ पैदा होती और क्यों ?

रबड़, सिनकोना, गेहूं, चाँदी, कहवा, माँस और खालें ।

४—दक्षिणी अमरीका में सबसे अधिक उन्नति शील कौन सा राज्य उसकी उन्नति के क्या कारण हैं ?

५—दक्षिणी अमरीका में गेहूँ की खेती और भेड़ तथा ढोर किन किन स में उन्नति कर रहे हैं और क्यों ? संक्षेप में लिखो ।

६—दक्षिणी अमरीका में मरु-स्थल कहाँ कहाँ पाये जाते हैं और क्यं वहाँ की मुख्य सम्पत्ति और निवासियों के मुख्य उद्यम क्या हैं ?

७—यदि हम बुइना सायर्स से वालपरैसो तक रेल की यात्रा करें कौन कौन से प्रसिद्ध रीजन्स में होकर जाना पड़ेगा ? प्रत्येक की भौगोलिक अवस्था और मनुष्यों के उद्यम का संक्षिप्त हाल करो ?

८ ३—उत्तरी अमरीका

महाद्वीप उत्तरी अमरीका की विशेषतायें

[२]

उत्तरी अमरीका के नक़शे में देख कर मालूम करो कि उत्तरी अमरीका किन किन अक्षांशों में फैला हुआ है। नक़शे में दिये हुये पैमाने की सहायता से इसकी लम्बाई और चौड़ाई बताओ।

क्षेत्र फल के विचार से उत्तरी अमरीका, एशिया और अफ्रीका से तो छोटा है परन्तु शेष महाद्वीपों से बड़ा है। जन संख्या सारे महाद्वीप में घनी नहीं है। यहाँ बहुत सी भूमि बेकार पड़ी रहती है। परन्तु इन बातों के होने पर भी संसार के सबसे अधिक धनी देशों में इसकी गिनती है। यहां के निवासी यूरोपीय नस्लों की सन्तान हैं और अत्यन्त सभ्य तथा शिक्षित हैं। यहाँ लोहा, कोयला और मिट्टी का तेल बहुत निकाला जाता है। चाँदी, सोना, ताँबा इत्यादि धातुओं की अधिकता है। हजारों मील लम्बे नई भूमि के उपजाऊ मैदान हैं। यहाँ के निवासी स्वतन्त्र हैं और अपनी खेती, शिल्प तथा व्यापार की उन्नति बिना दूसरों की सहायता के कर सकते हैं। अतः संसार

में यही एक ऐसा महाद्वीप है जिसने शिल्प तथा व्यापार में समान उन्नति कर ली है।

इस महाद्वीप का आकार भी दक्षिणी अमरीका की तरह तिकोना है, परन्तु इसका अधिक चौड़ा भाग ऊँचे अक्षांशों पर स्थित है। यहां जिन अक्षांसों में टुन्ड्रा स्थित है उन्हीं अक्षांशों में एशिया के टैगा (ठंडे जङ्गल) स्थित हैं। इसके उत्तर अथवा मध्य में कोई ऐसा पर्वत

भारत और उत्तरी अमरीका की तुलना

नहीं जो उत्तरी सर्द बर्फीली हवाओं (ब्लिजर्ड हवाओं) को रोक

सके। अतः जाड़ों में कर्क रेखा के उत्तर का सारा उत्तरी अमरीका अधिक ठंडा हो जाता है। मौसमों में यहाँ तक परिवर्तन होता है कि किसान समाचार पत्रों में मौसम के परिवर्तन का हाल पढ़ कर अपनी फस्लों को बोते व काटते हैं।

क्या तुमने कभी विचार किया है कि जिस प्रकार हम पृथ्वी पर खड़े हुये हैं उसी प्रकार नई दुनियाँ के निवासी इसी दुनियाँ के धरातल पर खड़े हैं। हमारे पैर और उनके पैर पृथ्वी के दोनों ओर एक दूसरे के विरुद्ध जमे हुये रक्खे हैं। जब तुम्हारे यहाँ सुबह होता है तब उनके यहाँ शाम होती है और जब तुम्हारे यहाँ दिन होता है तब उनके यहाँ रात होती है। तुम इस पुस्तक के कवर पर दिये हुये चित्र से यह बात अच्छी तरह समझ सकते हो।

अमरीका की ये कुछ विशेषतायें हैं। यदि तुम विचार करो तो इनके अतिरिक्त और बहुत सी ऐसी बातें सोच सकते हो। तुम पढ़ चुके हो कि अब से ५०० वर्ष पहिले नई दुनियाँ का कोई नाम भी न जानता था। तुम यह भी पढ़ चुके हो कि प्राचीन समय में यूरोप के व्यापारियों ने भारतवर्ष से व्यापार करने की इच्छा से सामुद्रिक मार्ग ढूँढ़ने का प्रयत्न किया; परन्तु वे या तो भयानक समुद्रों में पहुँच कर डूब गये अथवा थक कर बैठ रहे और भारतवर्ष के ढूँढ़ने का विचार छोड़ बैठे। आखिरकार इटली के एक माझी ने जिसका नाम क्रिस्टोफर कोलम्बस था, स्पेन के राजा से प्रार्थना की कि उसको भारतवर्ष का मार्ग ढूँढ़ने की आज्ञा दी जाय और इस यात्रा के लिये एक जहाज और आवश्यक सामान दिये जाँय। उसकी प्रार्थना

स्वीकार हो गई और कोलम्बस भारतवर्ष की खोज में पश्चिम की ओर एटलांटिक महासागर में रवाना हो गया। कई महीनों की यात्रा के पश्चात् और बहुत सी कठिनाइयाँ झेल कर कोलम्बस उन द्वीपों में पहुँचा जो उत्तरी अमरीका के प्रायद्वीप फ्लोरिडा के समीप स्थित हैं और उसने यहाँ स्पेन का झंडा गाड़ दिया।

उत्तरी अमरीका के 'अज्टेक्स' लोग दक्षिणी अमेरीका के 'इन्काज' नामक जाति की भांति सभ्य और धनी थे। इन लोगों से संकेत द्वारा रीत व्यवहार आरम्भ हुआ; परन्तु अंत में उनको अपने अधीन करके उनके धन पर अपना अधिकार जमा लिया। कोलम्बस ने इस देश को भारतवर्ष और यहाँ के निवासियों को भारतवासी समझा। परन्तु जब १४९८ ई० में पुर्तगाली माझी वास्कोडिगामा ने भारतवर्ष का पता लगा लिया तो यह भ्रम दूर हो गया। इसी समय से उन द्वीपों को जो नई दुनियां में दोनों के बीच स्थित हैं। पश्चिम द्वीप समूह और वहाँ के निवासियों को जिनका रंग ताँबे की तरह लाल था 'रेड इन्डियन' (लाल हिन्दुस्तानी) कहने लगे।

धीरे धीरे इस महाद्वीप के उत्तरी भाग में फ्रॉन्सीसी, अँगरेज तथा जर्मन और दक्षिणी भाग में स्पेन और पुर्तगाल की जातियों ने अपना अधिकार कर लिया। अंत में स्वतन्त्रता के युद्ध के पश्चात् उत्तरी भाग दो भागों में विभाजित हो गया। पहिला कैनेडा बृटिश साम्राज्य का एक उपनिवेश बन गया, दूसरा अमरीका के संयुक्त राज्य के नाम से स्वतन्त्र हो गया। दक्षिणी भाग 'मेक्सिको' में स्पेन और पुर्तगाल के लोगों ने स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये जो आज तक

मौजूद हैं। तुम इन राज्यों को अपने नक़शे में देख सकते हो।

तट और द्वीप नक़शे में देख कर इस महाद्वीप के तीनों तटों की नेचर (प्राकृतिक दशा) पर ध्यान दो। देखने से स्पष्ट मालूम होता है कि उत्तरी अमरीका के समुद्र तट, दक्षिणी अमरीका और आस्ट्रेलिया की अपेक्षा अधिक कटे हुये हैं, परन्तु यूरोप के समुद्र तटों से कम कटे हैं।

इस महाद्वीप का उत्तरी तट सब से अधिक कटा है। बहुत से द्वीप तट के समीप स्थित हैं। यदि यह तट सम शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित होता तो इसमें अच्छे अच्छे सुरक्षित बन्दरगाह होते और व्यापार में यूरोप के तटों की बराबरी करता। इस तट के बड़े बड़े द्वीपों, खाड़ियों और जलसं ।जक के नाम नक़शे में देख कर पढ़ो। इन सब के नाम उन माझियों और राजाओं के नाम पर रक्खे गये हैं जिन्होंने इनकी खोज लगाने में अधिक समय और धन खर्च किया है। इस तट पर 'ग्रीन लैन्ड' सब से बड़ा द्वीप है। सन् १४९२ ई० के पहिले उत्तरी यूरोप के 'डेन्स्, नार्वेजियन' (नार्वे के लोग) लोगों ने इस द्वीप का पता लगा लिया था। 'एरिक-दि-रेड' नामक एक मनुष्य ने अमरीका का पता भी दिया था, परन्तु बहुत कम लोगों में अगम्य और बर्फीले समुद्रों में कष्ट झेलने का साहस होता था। अतः उन्होंने लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिये इस द्वीप का नाम ग्रीनलैन्ड (हरी भरी भूमि) रक्खा था। वास्तव में यह द्वीप बरफ की एक मोटी तह से ढका हुआ है और टुन्ड्रा का एक भाग है। इस द्वीप के दक्षिण में सील और टुन्ड्रा के समूर वाले जानवर

सफ़ेद रीछ, 'वालरस़' इत्यादि का शिकार होता है। ग्रीनलैन्ड और मंशद्वीप के बीच बेलिन की खाड़ी और डेविस् जलसंयोजक स्थित हैं, जिनमें होकर ठंडे पानी की एक धार (लैब्रेडोर) बहती है जो दक्षिण में आकर गल्फ स्ट्रीम नामक गर्म धार से मिल जाता है। इस धार के साथ साथ ठडे समुद्रों की मछलियाँ बह आती हैं। अतः द्वीप न्यू-फाउन्ड लैन्ड (नई खोजी हुई भूमि) के पश्चिम में ग्रान्डबैंक नामक मछलियों के शिकार खेलने का स्थान है। इस ठडी धारा के कारण

वालरस के झुण्ड

लैब्रडोर का तट वर्फ़ीला हो गया है और द्वीप न्यू फ़ाउन्डलैन्ड की जल-वायु गर्म और ठंडी धारों के मिलने से कोहरेदार हो जाती है। पहिले इन समुद्रों में बर्फ के बड़े बड़े टुकड़े (आइसबर्ग) पानी की धार के साथ बह आते थे और कोहरे के कारण जहाजों के मल्लाहों को दिखाई नहीं देते थे जिनसे जहाज टकरा कर डूब जाते थे। इस दुर्घटना से बचने के लिये नावों का एक बेड़ा नियत कर दिया गया है जो इस समुद्र को आइसबर्ग से साफ़ रखता है। जब कोई

भयानक आइसवर्ग दिखाई देता है तो उसको शीघ्र बारूद से उड़ा-कर तोड़ दिया जाता है।

उत्तरी तट के मध्य भाग में हडसन नामक एक बहुत बड़ी खाड़ी स्थित है जिसके मुखपर 'वेफिन' और 'साउथम्पटन' इत्यादि द्वीप स्थित हैं। ये द्वीप इस खाड़ी को ग्रीनलैन्ड से आने वाली ठंडी धार के प्रभाव

आइसवर्ग

से बचाते हैं। खाड़ी का दक्षिणी अर्द्ध भाग उत्तरी अमरीका के सर्द जंगलों (टैगा) में दूर तक चला गया है। इसलिये इस तट पर प्राचीन काल से समूर वाले जानवरों की खाल का व्यापार होता चला आया है। नेलसन बन्दरगाह इस भाग का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। जहाँ से कैनेडा के मध्यभाग के जंगलों की लकड़ी, समूर, गेहूँ इत्यादि इङ्गलिस्तान को भेजा जाता है; परन्तु जाड़ों में यह बन्दरगाह बन्द रहता है।

पश्चिमी तट उत्तरी अमरीका का पश्चिमी तट दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी तट के समान उत्तर से दक्षिण तक 'कार्डेलरा' पहाड़ों से सुरक्षित रहता है। इस तट के भी कई भाग किये जा सकते हैं जिनकी नेचर (प्रकृति) एक दूसरे से भिन्न है :—

१, **उत्तरी भाग**—जो वानकोवर द्वीप से अलास्का प्रायद्वीप तक चला गया है। ठंडी धार के प्रभाव से यह तट कटा तथा उजाड़ दिखाई देता है और ठंडे जंगलों से ढका हुआ है। उत्तर में अल्यूशियन द्वीपों की एक पंक्ति प्रायद्वीप अलास्का से प्रायद्वीप 'कमस्चटका' (एशिया) तक चली गई है और दक्षिण में 'सिटका' 'क्वीन चार्लट' और 'वानकोवर' द्वीप स्थित हैं, जिनके चारों ओर मछली पकड़ी जाती है। सिटका द्वीप के पास सील मछली का शिकार होता है और इसके उत्तर में महाद्वीप के भीतरी भाग में सोने की खाने हैं।

सील

क्वीनचालर्ट द्वीप के पीछे 'प्रिन्सरोपार्ट' का प्रसिद्ध बन्दरगाह है जहाँ से एक रेल महाद्वीप को पार करती हुई अटलान्टिक महासागर के तट तक चली गई है। अब तुम समझ गये होगे कि यद्यपि यह तट उजाड़ है परन्तु बिलकुल बेकार नहीं है।

२, **मध्य भाग**—इस तट का मध्य भाग जो वानकोवर द्वीप से सेन्फ्रान्सिस्को बन्दरगाह के दक्षिण तक चला गया है अत्यन्त उपजाऊ

है। यह सम शीतोष्ण और रूम सागरीय जल-वायु का प्रदेश है तथा खेती के योग्य है। यहाँ गेहूँ और फल अधिक पैदा होते हैं। इस तट के पीछे के पहाड़ों में चाँदी और सोना अधिक निकलता है। बन्दरगाह सेन्फ्रान्सिस्को और 'लास ऐन्जलोज' के पीछे मिट्टी का तेल भी पाया जाता है। 'फ्रेज़र' 'कोलम्बिया' नदियों और समुद्र के तट पर मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। यह बड़ा उन्नति शाली और व्यापारी तट है। तुम नक़शे में बन्दरगाह वानकोवर से बन्दरगाह लास एन्जलोज तक जाने वाली तटीय रेल देख सकते हो और यह भी देख सकते हो कि वानकोवर और सेन्फ्रान्सिस्को से बड़ी बड़ी रेलें महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली गई हैं। तट से दूर हवाई द्वीप समूह स्थित हैं जो ज्वालामुखी से निकले हुए लावा इत्यादि से बने हैं। यहाँ गन्ना अधिक पैदा होता है।

३. केलीफोर्नियाँ प्रायद्वीप—इसके तट चिली के उत्तरी भाग की तरह उजाड़ हैं। कहीं कहीं सोना भी पाया जाता है। केलीफोर्नियाँ की खाड़ी में सीप और मोती का शिकार होता है।

४. कालोराडो—इस नदी से लेकर दक्षिण के सारे तट पर खेती होती है। मेक्सिको की ताँबा, सोना और चाँदी की खानें, मिट्टी के तेल के सोते, रुई और रबड़ पैदा करने वाले प्रदेश बन्दरगाह 'कोलिमा' और 'अकापालको' से मिले हुये हैं।

उत्तरी अमरीका का पूर्वी तट सबसे अधिक व्यापारी और मालदार है। उत्तरी अर्द्ध-भाग तो पीछे के मालदार, शिल्प, खनिज तथा कृषि प्रधान प्रदेशों के कारण यूरोप की बराबरी कर सकता है,

परन्तु दक्षिणी अर्द्ध-भाग ऐसा नहीं है। महाद्वीप के उत्तरी पूर्वी कोने पर सेन्ट लारेन्स नदी बहती है जिसके द्वारा कैनेडा के भीतरी भाग का व्यापार होता है। इस नदी में होकर ठंडे जंगलों की लकड़ी समूर और सम जल-वायु वाले प्रदेशों का गेहूँ, मांस व चमड़ा तथा झीलों के किनारे स्थित शिल्प प्रधान जिलों की बनी हुई चीजें व खनिज पदार्थ इङ्गलिस्तान के भिन्न भिन्न भागों को भेजे जाते हैं। लैब्रेडोर नामक ठंडी धारा और सर्द हवाओं के प्रभाव से सेन्ट लारेन्स नदी जाड़ों में बरफ से जम जाती है। इस ऋतु में माल का आना जाना इस नदी से नहीं होता किन्तु रेलों द्वारा भेजा जाता है। इस लिये 'क्वेबेक' और 'माण्ट्रियाल' के दरियाई बन्दरगाह बन्द हो जाते हैं। इन दोनों के स्थान पर बन्दरगाह 'सेन्ट जान' से जो प्राय-द्वीप नोवास्कोशिया के पीछे फिन्डी की खाड़ी में स्थित है कैनेडा का व्यापार होता है। 'हैलीफैक्स' इस प्राय-द्वीप का दूसरा प्रसिद्ध बन्दरगाह है जो प्राय-द्वीप के दूसरी ओर खुले समुद्र पर स्थित है। इस खाड़ी में न्यू 'फाउन्डलैन्ड', 'केप ब्रिटेन' और 'प्रिन्स एडवर्ड' नामक द्वीप स्थित हैं जो अपनी कृषि, खनिज तथा जंगली उपज के लिये प्रसिद्ध हैं। इन द्वीपों की स्थिति के कारण 'सेन्ट लारेन्स' नदी का दहाना बहुत सुरक्षित रहता है। न्यू फाउन्डलैन्ड द्वीप में उपयोगी लकड़ी के जंगल और कोयले की खानें हैं। तटों पर मछली का शिकार होता है। तुमने 'दमा' रोग की प्रसिद्ध औषधि 'काडलिवर आयल' (मछली का तेल) का नाम सुना होगा। यह 'काड' नामक मछली का तेल होता है जो यहाँ अधिक पाई जाती है। इस द्वीप

का मुख्य बन्दरगाह और राजधानी 'सेन्टजान्स' है। 'फिन्डी' की खाड़ी से 'चसापीक' की खाड़ी तक अमरीका के संयुक्त-राज्यों का अत्यन्त उन्नतिशील और व्यापारिक तट है। संसार के बड़े बड़े चाँदी, सोने, मोटर मशीनों तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के बाजार इसी तट पर स्थित हैं। इसमें 'बोस्टन' 'न्यूयार्क','फिलेडेल्फिया, बाल्टीमोर' और 'वाशिंगटन' के संसार प्रसिद्ध शिल्प प्रधान नगर तथा व्यापारिक बन्दरगाह हैं। न्यूयार्क अमरीका का सबसे अच्छा और प्राकृतिक बन्दर-

न्यूयार्क
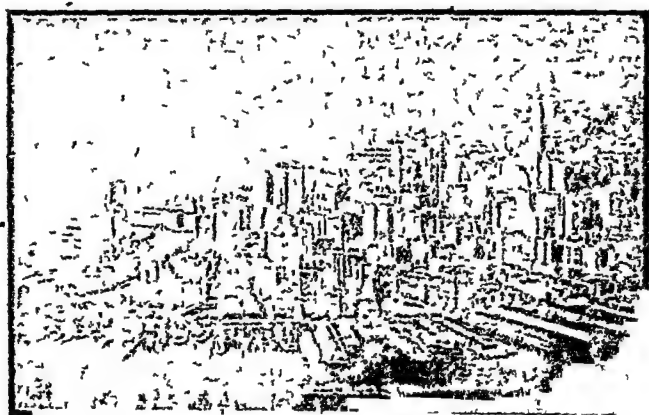
गाह है। इसके सामने तट के समानान्तर 'लाङ्ग' नामक एक लम्बा द्वीप स्थित है इस कारण द्वीप और महाद्वीप के बीच चौड़ा और सुरक्षित बन्दरगाह है जहां संसार भर के सहस्त्रों व्यापारिक जहाज आकर रुक सकते हैं। सिंगापुर और हाँगकाँग की तरह यह बन्दरगाह भी द्वीप और महाद्वीप दोनों ही पर स्थित है। यहाँ से उत्तर, पूरब और दक्षिण

को लम्बी लम्बी रेलें सारे महाद्वीप में जाकर वृक्षों की शाखाओं की तरह फैल गई हैं। हम अमरीका के संयुक्तराज्यों के समस्त शिल्प तथा खनिज प्रधान देश को इस बन्दरगाह का हिन्टर लैन्ड कह सकते हैं। यद्यपि इस तट के पीछे 'एपीलोशियन' पहाड़ स्थित हैं तथापि नदियों की घाटियों और दर्रों में होकर रेलों का आना जाना हो सकता है। ये पहाड़ियाँ अपने लोहे और कोयले की खानों तथा मिट्टी
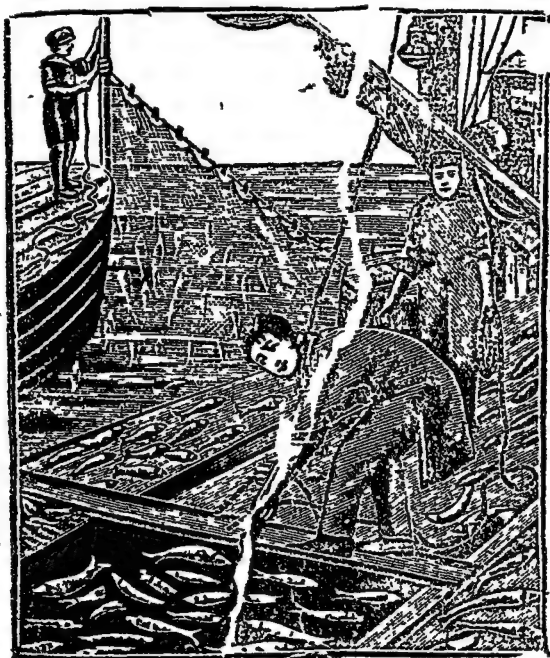
मछली का शिकार

के तेल के कारण तट के शिल्प और व्यापार को बढ़ा देती हैं। इससे आगे चलकर प्रायद्वीप फ्लोरिडा के उस पार तक खेती के योग्य भूमि

पाई जाती है। परन्तु फ्लोरिडा का दक्षिणी भाग खेतो के योग्य नहीं है। इसके दक्षिण में मछली और स्पंज का शिकार होता है। इस भाग की मुख्य उपज तम्बाकू और रुई उपरोक्त बड़े बड़े बन्दरगाहों से अथवा बन्दरगाह न्यू आरलीन्स से लादा जाती है जो मेक्सिको की खाड़ी का मुख्य बन्दरगाह है और मिसीसिपी तथा मिसौरी नदियों के डेल्टे पर स्थित है। न्यूआरलीन्स की लगभग वही विशेषता है जो कलकत्ते की। इसका एक कारण तो यह है कि न्यूआरलीन्स चावल और शक्कर पैदा करने वाले उपजाऊ प्रदेश में स्थित है। दूसरा कारण यह है कि 'मिसीसिपी' 'मिसौरी', 'ओहायो' इत्यादि नदियों के दरियाई मार्गों तथा रेलों द्वारा संयुक्तराज्यों के उपजाऊ भीतरी प्रदेशों से मिला हुआ है। इस बन्दरगाह के हिन्टरलैन्ड में रुई, तम्बाकू, मक्का, गेहूँ, गोश्त, चमड़ा, लोहा, कोयला मिट्टी का तेल और सोना अधिक पैदा होता है। अतः अपनी व्यापारिक स्थिति के कारण अद्वितीय है। न्यूआर-लीन्स के पश्चिम में एक छोटी सी खाड़ी पर 'गाल्वेस्टन' बन्दरगाह स्थित है जिसके हिन्टरलैन्ड में गन्ना रुई, चावल पैदा करने वाले उपजाऊ प्रदेश, मिट्टी के तेल के सोते तथा कोयले की खाने हैं।

इसके आगे इस महाद्वीप का सारा तट गर्म व तर है और उपरोक्त तट के समान शिल्प व्यापार में उन्नति शाली नहीं है परन्तु खेती खूब होती है। ग्रान्डो नदी संयुक्तराज्यों को मेक्सिको से पृथक करती है, अर्थात् यह नदी उन्नति शाली और उन्नति हीन प्रदेशों के बीच की सीमा है। 'टामपीको' और 'वेराक्रूज़' मेक्सिको के मुख्य बन्दरगाह हैं जो कृषि तथा खनिज प्रदेशों से रेल द्वारा मिले हुये हैं।

बहु-मूल्य पत्थर, सोना, चाँदी, मिट्टी का तेल, ताँबा, राँगा, शक्कर, रुई, रबड़ इत्यादि बाहर को भेजे जाते हैं। इन दोनों में बेराक्रूज़' प्राचीन बन्दरगाह है परन्तु यहाँ की जल-वायु अस्वस्थ होने के कारण 'टामपीको' जो इसके उत्तर में है अधिक उन्नति कर रहा है।

मेक्सिको की खाड़ी के मुहाने पर 'क्यूबा,' 'हेटी' 'जमैका' इत्यादि द्वीप स्थित हैं जो पश्चिमी द्वीप समूह के नाम से पुकारे जाते हैं। इनकी जल वायु गर्म और तर है। इसलिये शक्कर, तम्बाकू, केला रुई कहवा, चावल और कोको खूब पैदा होता है। क्यूबा में लोहा और हेटी में कोयला भी पाया जाता है। 'हवाना' क्यूबा की, 'किंगस्टन' जमैका की और 'सानडुमिंगो' हेटी की राजधानी और मुख्य बन्दरगाह हैं। यहाँ के तट कटे हुए और द्वीपों के तट व्यापारिक नावों और जहाजों से भरे रहते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—उत्तरी अमरीका के समुद्र तट की तुलना दक्षिणी अमरीका के समुद्र तट से करो ?

२—उत्तरी अमरीका के पूर्वी और पश्चिमी समुद्र तट में क्या भेद है ?

३—उत्तरी अमरीका के उत्तरी तट की भौगोलिक विशेषतायें बताओ ?

४—इस महाद्वीप के पूर्वी तट की उन्नति के कारण बताओ ? मुख्य शिल्पप्रधान नगर कौन कौन से हैं और वे क्यों प्रसिद्ध हैं ?

५—उत्तरी अमरीका का ख़ाका बनाकर उसमें नीचे लिखी हुई चीज़ें दिखाओ—

(क) पूर्वी तट की खाड़ियाँ तथा बन्दरगाह।

(ख) कोहरा और बरफ़ के पहाड़ का स्थान।

(ग) मछली पकड़ने और मोती निकालने के स्थान।

(घ) पश्चिमी द्वीप समूह।

६ उत्तरी अमरीका के प्राकृतिक धन और निवासियों के व्यवसाय

प्राकृतिक दशा भूमि की बनावट के विचार से उत्तरी अमरीका को हम तीन मुख्य भागों में बाँट सकते है। (१) पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश (२) मध्यवर्ती मैदान (३) पूर्वी पठारी प्रदेश।

१. पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश—राकी पर्वतों की श्रेणियाँ हिमालय पर्वतों की भांति शिकनदार नहीं हैं। पश्चिमी तट के समीप 'कोस्ट रेञ्ज' (तटीय पर्वत) और राकी पर्वत इस पहाड़ी प्रदेश की पश्चिमी सीमा पर स्थित हैं। इन पहाड़ों की श्रेणियाँ उत्तर में पास पास नहीं हैं। मध्य भाग में इन दोनों के बीच विशाल प्लेटो स्थित हैं, परन्तु दक्षिण में ये दोनों मिलकर एक पहाड़ हो गये हैं जो 'मेक्सिको' में 'माडरे' अथवा 'सियरी माडरे' पर्वतों के नाम से प्रसिद्ध हैं। तट के निकटवर्ती पर्वत कम ऊँचे हैं और ज्यों ज्यों तट से भीतर की ओर बढ़ते हैं ये पर्वत ऊंचे होते जाते हैं। पूर्वी मैदान से पश्चिमी तट तक बहुत सी रेलें इन पहाड़ों से होकर जाती हैं और पर्वतों के खनिज पदार्थ इकट्ठा करती हैं। 'राकी' पर्वतों में

सोना, चाँदी, ताँबा, कोयला और लोहा पाया जाता है। मध्य प्लेटो के नीचे भागों में एक खारी पानी की झील है जो 'साल्टलेक' (नमकीन झील) के नाम से प्रसिद्ध है। इस झील के दक्षिणी पूर्वी कोने पर 'साल्टलेक सिटी' (नमकीन झील का नगर) खानों की खुदाई का

उत्तरी अमरीका का प्राकृतिक नक़्शा

केन्द्र है, जहाँ कोयला, लोहा और सोना निकलता है। इस नगर के पूर्व में 'डेनवर' भी इसके समान ही दूसरा केन्द्र है। 'नवादा' पर्वतों

की घाटियों में मिट्टी का तेल अधिक निकाला जाता है।
प्रदेश के उत्तरी भाग में 'कोलम्बिया' और 'फ्रेज़र' नदियों
पाई जाती हैं और बड़ी बड़ी मछली डिब्बों में भर कर बा
जाती हैं। उत्तर में 'यूकान' नदी की घाटी में 'क्लोनडाइक
सोने की खाने हैं और 'बोस्टन नगर' खान खोदने का
लड़को! तुमको आश्चर्य होगा कि यह नगर उजाड़ बर्फिस्ता
गया है जहाँ मनुष्य अपनी आवश्यकता की वस्तुयें सरलता
नहीं कर सकता। 'कालोराडो' नदी ने अपने पेटे में गह
घाटियाँ काट डाली हैं। इसकी घाटी में भी खनिज पदार्थ
से पाये जाते हैं।

२. मध्यवर्ती प्रदेश—राकी पर्वतों से 'अप्लेचियन
तक फैले हुये है और पश्चिम से पूर्व की ओर धीरे धीरे ढा
गये हैं। भूमि अधिकतर चौरस है किन्तु समुद्र की लहरों क
ऊँची नीची होती जाती है। इस कारण इस मैदान को
(लुढ़कते हुये) मैदान कहते हैं। यह उत्तरी अमरीका का
अच्छा कृपि प्रधान और पशु पालनेवाला प्रदेश है। यहाँ प्रत्ये
कई कई मील लम्बे गेहूँ और मक्का के खेत रखता है जो
मशीन से जोते बोये, काटे और मीजे जाते हैं। असंख्य ढो
भेड़ों के झुंड घास के मैदानों में चराये जाते हैं। इस
'रांचिङ्ग' कहते हैं। चरवाहे घोड़ों पर सवार होकर अपने कु
सहायता से इनकी रक्षा करते हैं।

इस मैदान के उत्तर में नीची भूमि है जिसका ढाल

खाड़ी की ओर है। इस भाग में 'सस्कचवान', 'नेलसन,' 'अलबनी' इत्यादि उपयोगी नदियाँ बहती हैं। इन नदियों में ठंडे जंगलों की लकड़ी काट कर डाल दी जाती है और दहानों बन्दरगाहों पर निकाल ली जाती है। पुनः जहाजों में भर कर बाहर को भेज दी जाती है। अमरीका की सभी नदियाँ नावें चलाने के काम आती हैं
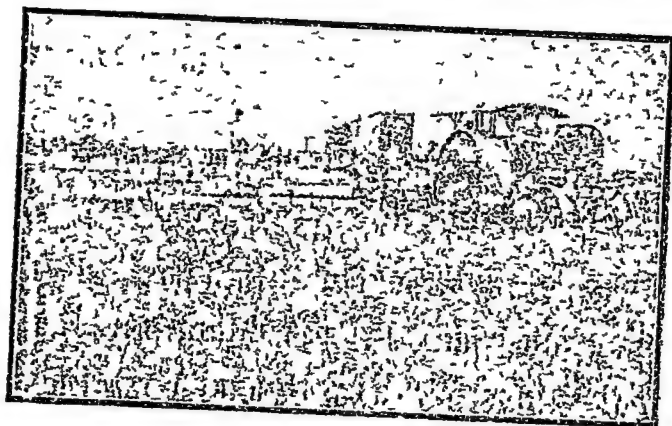
ट्रेक्टर द्वारा खेती

लिये इनमें होकर समूर, चमड़ा और गेहूँ का व्यापार होता है। जो नदी बहुत सी मीठे पानी की झीलों में होकर उत्तर व चम को बहती है और साइबेरिया की नदियों की भांति अधिक गी नहीं है। 'सेन्टलारेंस' नदी उत्तर व पूर्व को बहती है इसका तुम पहिले पढ़ चुके हो। इन नदियों के बहाव से इस भाग की के ढाल का अनुमान कर सकते हो।

'मिसीसिपी', 'मिसूरी', 'ओहायो', 'अरकनसास' और 'ग्रांडो'

नदियों से इस मैदान के दक्षिणी भाग का पता चलता है। ये भिन्न भिन्न अक्षांसों में बहती हैं जहाँ जल-वायु की विभिन्नता के कारण भिन्न भिन्न वस्तुयें पैदा होती हैं। इन नदियों के मार्ग इस मैदान के व्यापार के लिये बड़े लाभ दायक हैं और सूखे स्थानों में सिंचाई के काम आते हैं।

इस मैदान के उत्तरी भाग में 'ओह्रायो' नदी के उद्गम से मेकेन्जी नदी के मुहाने तक बहुत सी मीठे पानी की झीलें हैं। 'ओन्टैरियो', 'ईरी', 'ह्यूरन', मिचीगन', 'सुपीरियर' 'ग्रेटलेक्स' (बड़ी झीलें) के नाम से पुकारी जाती हैं। इनको तुम अपने नक़शे म देख सकते हो। इनके अतिरिक्त 'विनीपेग', 'अथाबासका', 'ग्रेटस्लेव' इत्यादि झीलें बहुधा नदियों से मिली हुई हैं और वह सब आने जाने के मार्ग बनाती हैं। 'ग्रेटलेक्स' में तो भली भांति जहाज चलाये जाते हैं और मछली का शिकार होता है। इन झीलों के चारों ओर लोहे, कोयले, तांबे निकल, मिट्टी के तेल चाँदी और सोने की खानें हैं। गेहूँ अधिक पैदा होता है और भेड़ों तथा ढोरों के गल्ले के गल्ले चराये जाते हैं। इन सब बातों से अनुमान होता है कि ये झीलें कितनी उपयोगी हैं। तुम अपने नक़शे में 'पोर्टार्थर', डयूलथ' 'शिकागो', 'डेटराय' बफैलो और टोरान्टो इत्यादि प्रसिद्ध बन्दरगाह देख सकते हो जो इन्हीं झीलों पर स्थित हैं।

सेन्टलारस नदी जिसके विषय में तुम पढ़ चुके हो, इन्हीं झीलों में होकर बहती है। 'ईरी' तथा 'ओन्टैरियो' झीलों के बीच में लगभग १६० फ़ीट की ऊँचाई से ९०० गज़ चौड़ी धार के रूप में नीचे

गिरती है, इसको 'नियागरा प्रपात' कहते हैं। गिरते हुये पानी की शक्ति से बिजली पैदा की जाती है जो निकटवर्ती शिल्प-प्रधान प्रदेश में काम आती है। इस बिजली से बड़े बड़े कारखाने, रेलें और ट्राम गाड़ियाँ चलाई जाती हैं तथा रोशनी की जाती है। निकट ही ताँबा अधिक निकलता है जिसका प्रयोग बिजली पैदा करने में अधिक होता है। अतः इन झीलों के समीप बिजली का शिल्प अत्यन्त उन्नति कर गया है। 'नियागरा' नदी के पश्चिम में 'ईरी' और 'ओन्टैरियो झीलों के बीच जहाज़ों के आने जाने के लिये 'वेलैन्ड' नामक नहर बना दी गई है। इस प्रकार जहाज़ नियागरा प्रपात से बचकर सब झीलों में आते जाते हैं।

इन झीलों की स्थिति के कारण अमरीका को बड़ी झीलों का भूमि कहने लगे हैं। झीलों की उत्पत्ति के विषय में कहा जाता है कि अब से करोड़ों वर्ष पहिले इन सब झीलों के स्थान पर एक बहुत भारी बर्फ का ढेर जमा था। पृथ्वी ने अपनी न्यूटेशन गति के कारण अपनी धुरी के झुकाव को इस प्रकार बदला कि उत्तरी गोलार्द्ध पहिले की अपेक्षा सूर्य के अधिक समीप हो गया और ये सब ग्लेशियर पिघल कर नदियो और झीलों के रूप में परिवर्तित हो गये। उत्तरी पठारो की चट्टानें और उनके ऊपर के बहाव के चिन्ह इस बात के प्रमाण हैं।

२. पूर्वी पठारी प्रदेश अर्थात् अप्लेचियन—ये पुरानी चट्टानों के बने हुये पहाड़ हैं जो मध्यवर्ती मैदान को तटीय मैदान से पृथक करते हैं। परन्तु ये नीची पहाड़ियाँ आने जाने के मार्गों तथा व्यापार

में रुकावट नहीं डालतीं। 'न्यूयार्क', 'फिलेडेल्फिया', 'बाल्टीमोर', वाशिंगटन इत्यादि बन्दरगाहों और शिल्पकेन्द्रों से नीची पहाड़ियों और घाटियों में होकर मध्यवर्ती मैदान तक रेलें जाती हैं।

अपने नक़्शे में तुम शिकागो से गुजरने वाली 'नैशनल पैसिफिक रेलवे' और 'यूनियन पैसिफिक रेलवे' देख सकते हो। दक्षिण में 'दक्षिणी पैसिफिक रेलवे' न्यूआरलींस में होकर गुज़रती है। और मध्य भाग में 'अटलान्टिक पैसिफिक रेलवे' गुज़रती है। हडसन नदी पर 'न्यूयार्क', 'सस्केहाना' पर 'बाल्टीमोर, 'पोटोमैक' पर 'वाशिंगटन' और 'डलावियर' पर 'फिलेडेल्फिया' स्थित हैं। ये नदियाँ इतनी छोटी हैं कि साधारण नकशों में इनका दिखाना कठिन है, परन्तु इनकी उपयोगिता का अनुमान इस बात से कर सकते हो कि इनके बन्दरगाहों की उत्पत्ति तथा शिल्प और व्यापार की उन्नति इन्हीं नदियों की घाटियों से हुई है। जिनमें होकर आना जाना हो सकता है और बड़ी बड़ी रेलें महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली जाती हैं।

'सेन्टलारेंस' नदी 'अप्लेचियन' प्लेटो को लैब्रेडोर के 'लारेंशियन' (लारेंस के) प्लेटो से पृथक करता है। तुम पढ़ चुके हो कि यह भाग ठंडे जंगलों से ढका हुआ है। यहाँ समूरदार जानवरों के शिकार और जंगलों की लकड़ी के अतिरिक्त कुछ भी पैदा नहीं होता, अतः यह भाग उजाड़ है।

उत्तरी अमरीका के पठारों के वर्णन के साथ साथ ग्रीनलैन्ड का वर्णन करना भी आवश्यक है। यह एक वर्फ़ से ढका हुआ प्रदेश

है। केवल दक्षिणी भाग में शिकारगाहें हैं, जहाँ सील का शिका होता है।

जल-वायु उत्तरी अमरीका बहुत बड़ा महाद्वीप है और लग भग ८ अंश उत्तरी अक्षाँस से ७० अंश उत्त अक्षाँस तक फैला हुआ है। अतः स्पष्ट विदित है कि यहाँ भी एशिय की भाँति उत्तरी भाग में (१) टुण्ड्रा (२) टैगा की तरह ठंडे प्रदेश
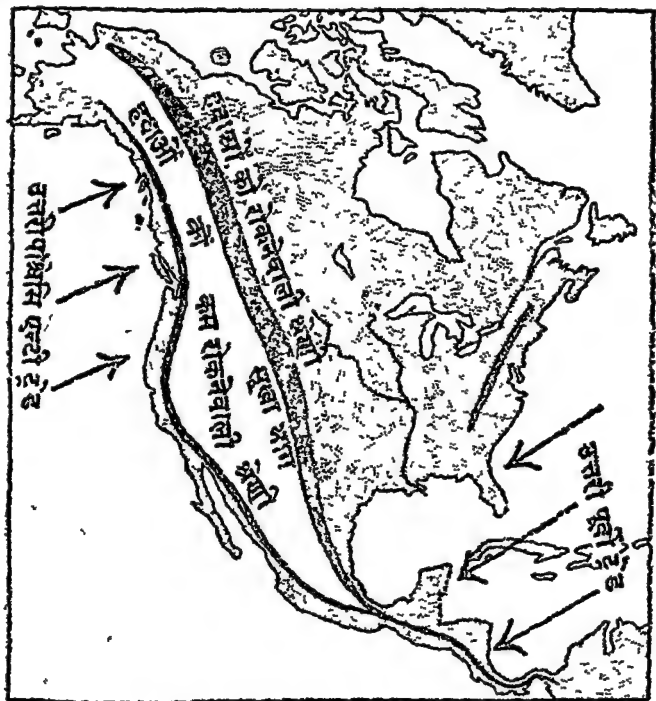
उत्तरी अमरीका के पहाड़ और हवा

की पट्टियाँ होंगी और (३) दक्षिण में विषुवतीय तथा गर्म व तर जल-वायु के प्रदेश होंगे।

(४) 'सेन्फ्रांसिस्को' से उत्तर का सारा तट दक्षिणी-पश्चिमी स्थायी (एन्टीट्रेड) हवाओं के मार्ग में स्थित है और तट के पीछे 'कार्डेलरा' पर्वत स्थित हैं। इस लिये गर्म व तर हवाओं के कारण यह प्रदेश सदैव सर्द-शीतोष्ण और तर रहता है।

उत्तरी अमरीका में जुलाई का ताप क्रम

(५) कार्डेलरा पर्वत के मध्य चौड़े प्लेटो में जिसके दोनों ओर ऊँची ऊँची पहाड़ों की श्रेणियाँ हैं, सदैव वर्षा की कमी के कारण जल-वायु कड़ी रहती है। इसलिये 'कोलोराडो' की घाटी के दोनों ओर और दूर तक उजाड़ मरु-स्थल हैं।

(६) 'सेन्फ्रांसिस्को' के चारों ओर रूम-सागरीय जल-वायु का प्रदेश पाया जाता है तुम पढ़ ही चुके हो कि शान्त हवा की पट्टी जाड़ों में ४०-४५ और गर्मियों में २५-३० अंश अक्षांस में होती हैं। इस कारण इन अक्षांसों में गर्मी की ऋतु में खुश्क ट्रेड हवायें और जाड़े की ऋतु में तीव्र पश्चिमी हवायें चलती हैं। जिससे ग्रीष्मकाल खुश्क और शीतकाल शीतोष्ण एवं तर रहता है।

उत्तरी अमरीका में जनवरी का ताप क्रम

(७) अमरीका के संयुक्त राज्य का एक तिहाई पूर्वी भाग जो 'न्यू फाउन्डलैन्ड' से 'मेक्सिको' की खाड़ी तक स्थित है। यहाँ साल

भर वर्षा होती है। इस भाग की जल-वायु गर्मी में गर्म और सर्दी में सर्द रहती है। यहाँ तक कि गर्मियों में 'न्यूयार्क' (४१ अंश अक्षांस) 'बम्बई' (१८ अंश अक्षांस) की भांति गर्म रहता है। परन्तु जाड़ों में इतना सर्द हो जाता है कि ताप क्रम ३२ अंश फ० (जिस अंश पर पानी जमने लगता है) तक पहुंच जाता है। गर्मी और सर्दी में परिवर्तन होने के कारण हवा के दबाव में अन्तर होता रहता है। अतः पूर्वी तटों पर भयानक तूफान आते हैं जिनको 'टानडो' और 'हराकेन' कहते हैं। इसी वर्ष तूफान के कारण 'गालवेस्टन' बन्दरगाह के बहुत से भवन नष्ट हो गये। रेलों की किराचियां दूर दूर तक उड़ गईं और व्यापारिक नावें तथा जहाज़ टूट गये और जान व माल को बहुत हानि पहुंची।

(८) उत्तरी अमरीका के मध्यवर्ती मैदान में दोनों ऋतुओं में बड़ा अन्तर रहता है। जाड़ों में उत्तरी अर्द्ध से अधिक भाग का ताप क्रम ३२ अंश फ० से भी नीचा हो जाता है। इस ऋतु में अत्यन्त शीत के कारण महाद्वीप के उत्तरी तथा मध्य भाग में हवा का दबाव अधिक हो जाता है। इस लिये 'मिसीसिपी' नदी के डेल्टे के उत्तर तक 'बरजर्ड' नामक सर्द बर्फीली हवायें चला करती हैं। इस ऋतु में टुण्ड्रा से पैसिफिक तट तक सारा मध्य भाग खुश्क रहता है, परन्तु गर्मियों में यह भाग इतना अधिक गर्म हो जाता है कि उत्तरी 'मेक्सिको' का ताप क्रम ८० फ० और महाद्वीप का आधे से अधिक दक्षिणी भाग अत्यन्त गर्म (७० अंश फ०) रहता है अतः स्पष्ट है कि इस भाग में हवा का दबाव कम रहता है और अटलांटिक

महासागर की गर्म व तर हवायें समस्त अमरीका में खूब वर्षा लाती हैं। किन्तु पर्वतों का सुरक्षित मध्य भाग और उत्तरी पश्चिमी सर्द भाग खुश्क रहता है।

(९) तुमको यह भी याद रखना चाहिये कि गर्मियों में 'यूकेटन' के पश्चिम में प्रशान्त महासागर के तट पर दक्षिणी-पश्चिमी मानसून
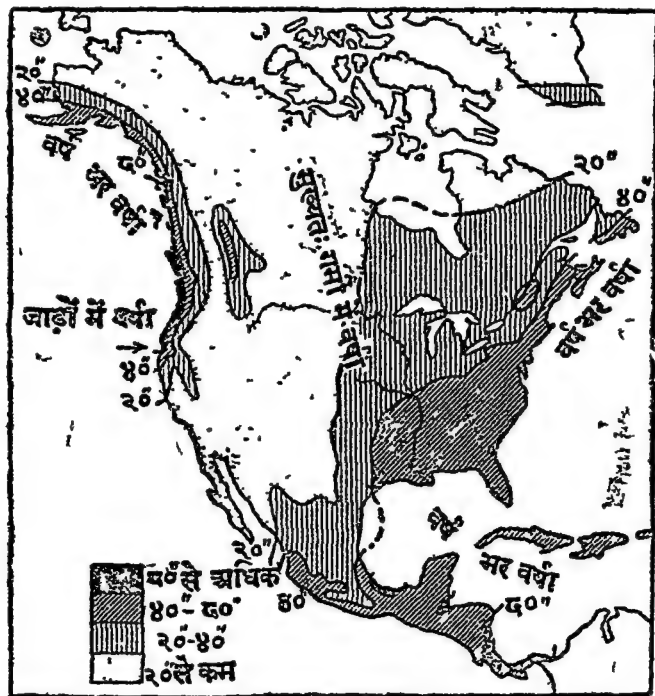
उत्तरी अमरीका की वार्षिक वर्षा

हवायें वर्षा लाती हैं। परन्तु जाड़े में उत्तरी खुश्क हवाओं के कारण सूखे रहते हैं। तुम इनकी तुलना हिन्दुस्तान की मानसूनों से कर सकते हो।

उपज और व्यवसाय तुम पहिले पढ़ चुके हो कि किसी देश की प्राकृतिक बनस्पति उस देश की जल-वायु पर निर्भर होती है और निवासियों के व्यवसाय उस देश की जल-वायु तथा प्राकृतिक धन के अधीन होते हैं। इन भौगोलिक नियमों को अपने सामने रख कर तुम उत्तरी अमरीका के शिल्प तथा व्यापार की उन्नति का रहस्य मालूम कर सकते हो।

१—उत्तरी तट 'अलास्का' से 'लैब्रेडोर' तक सर्द टुन्ड्रा की वर्फ़िस्तानी पट्टी स्थित है। इस भाग में कहीं कहीं एशिया की भाँति एस्किमो की बस्तियाँ हैं। इनके रहन सहन और व्यवसाय के विषय में जो कुछ तुम पढ़ चुके हो दुहराओ। यहां काई और लिचन के अतिरिक्त कुछ पैदा नहीं हो सकता।

२—नुकीले पत्तों वाले सर्द जंगल टुण्ड्रा के दक्षिण में पूर्व से पश्चिम को चले गये हैं। इसलिये 'लम्बरिंग' (लट्ठे काटना) कैनेडा का एक मुख्य उद्यम है। जाड़े के दिनों में जब समस्त भूमि बर्फ़ से जम कर कड़ी हो जाती है तब लट्ठे काटने वाले लट्ठों को काट काट कर नदी के पेटे में डाल देते हैं। बर्फ़ पर यह लट्ठे बड़ी आसानी से फिसल जाते हैं और उनके ढोने में कठिनता नहीं होती। जब नदी पिघलती और बहती है तब लट्ठे भी नदी के साथ बह आते हैं और मुहाने पर निकाल लिये जाते हैं। इन जंगलों में अधिकतर चीड़ के समान वृक्ष जैसे बर्च, सनोवर, देवदार सिदार इत्यादि पाये जाते हैं जिनकी लकड़ी भूरी और हल्की होती है सर्द जंगल 'राकी' के उत्तरी भागों में अधिक पाये जाते हैं और दक्षिण में केवल [illegible]

स्थानों पर पाये जाते हैं जहाँ वर्षा होती है। ऐसे जंगल प्रायः अप्लेचियन प र्तों के ऊँचे भागों में भी होते हैं।

उत्तरी अमरीका की बनस्पति

३—पतझड़ करने वाले सर्द शीतोष्ण जल-वायु के जंगल पश्चिमी तट के उत्तरी भाग में और संयुक्त राज्य के उत्तरी पश्चिमी भाग।

में राकी पर्वतों पर मिलते हैं। इन जंगलों में सदा बहार वाले वृक्ष भी पाये जाते हैं। यहाँ 'सीकोइया' और 'डगलसफ़र' नामक वृक्ष पाये जाते हैं जो सौ सौ फीट से अधिक ऊँचे और दस दस फीट से अधिक मोटे होते हैं।

४—इस महाद्वीप के सम शीतोष्ण घास के मैदान प्रेरीज' के नाम से प्रसिद्ध हैं और राकी पर्वत के पूर्व में फैले हुये हैं ज्यों ज्यों पूर्व से पश्चिम को जाते हैं प्रेरीज सूखते जाते हैं। यह मैदान संयुक्त राज्य के मध्य भाग तथा दक्षिणी पश्चिमी 'कैनेडा' में पाये जाते हैं। प्रेरीज का मुख्य व्यवसाय 'रांचिङ्ग' (गल्लावानी) है जिसका हाल तुम पहिले भी पढ़ चुके हो। यहाँ ढोर अधिक पाले जाते हैं और एक एक गल्ले में कई कई हज़ार जानवर होते हैं दूसरा मुख्य पेशा गेहूँ और मक्का की खेती करना है। मक्का बहुधा सुअरों के चारे के लिये पैदा की जाती है। सुअर का गोश्त यहाँ के निवासियों का अति प्रिय भोजन है।

५—रूम सागरीय जल-वायु के प्रदेश में लम्बी मोटी जड़ों वाले वृक्ष उगते हैं जिनकी पत्तियाँ कड़ी तथा चमचोड़ होती हैं और गर्म व खुश्क ऋतु सहन कर सकती हैं। यहाँ गेहूँ, सेव, नाशपाती, नारंगी, जैतून इत्यादि अधिक पैदा होते हैं। इसलिये तुम समझ सकते हो कि इस प्रदेश का मुख्य व्यवसाय फलों, अचार एवं मुरब्बों का व्यापार और कृषि हो सकती है।

६—राकी पहाड़ के मध्यवर्ती चौड़े प्लेटो मरु-स्थल और कहीं अर्द्ध मरु-स्थल प्रदेश हैं। ये प्रदेश संयुक्त राज्य के दक्षिणी-पश्चिमी

ग्रौर मेक्सिको के उत्तरी भाग में पाये जाते हैं।

७—संयुक्त राज्य के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में गर्म-शीतोष्ण प्रदेश स्थित हैं जो उत्तर की ओर ठंडे होते गये हैं। इसलिये इस प्रदेश में शक्कर, चावल, रुई, तम्बाकू और मक्का खूब होती है।

८—गर्म व तर सदा वहार जंगल मध्य अमरीका और पश्चिमी द्वीप समूह में पाये जाते हैं। यहाँ गर्म-तर जल-वायु में पैदा होने वाली वस्तुयें जैसे सन, तम्बाकू, शक्कर, कोको कहवा केला, अननास, नारंगी इत्यादि अधिकता से पाये जाते हैं।

उत्तरी अमरीका के आदि-निवासी 'रेड इन्डियन' अपना जीवन अधिकतर शिकार पर व्यतीत करते हैं और मक्का, आलू, तम्बाकू, कोको, सिन्कोना और क़हवा का प्रयोग भी करते हैं। ये वस्तुयें पुरानी दुनियां को इसी महाद्वीप से मिली हैं और इस महाद्वीप को गेहूँ, जौ, चावल, गन्ना रुई और फल इत्यादि पुरानी दुनियाँ से भेजे गये थे जो अब वहां अधिकता से पैदा होते हैं। बताओ कि गेहूँ, मक्का, शक्कर और तम्बाकू इस महाद्वीप के किन किन भागों में बोई जाती है और वहां उनके पैदा होने का क्या कारण है।

पशु

'रेड इन्डियन' लोगों के पास सवारी और बारबरदारी के जानवर भी न थे। ये नई बस्तियां बसाने वालों के साथ साथ पहुँचाये गये थे। 'प्रेरीज़' के घास के मैदान (विशेष कर पश्चिमी भाग जहां मक्का अधिक होती है) मवेशी और भेड़ों के मुख्य प्रदेश हो गये हैं। पहिले यहाँ एक प्रकार का जङ्गली बैल जिसको 'बिसान' कहते हैं बहुत पाया जाता था। परन्तु अब इसकी

नस्ल पूर्णतया जाती रही है। इस मैदान में बड़े बड़े 'रांञ्चेज' बनाये जाते हैं जिनमें हजारों गाय, बैल, घोड़े, भेड़ें और सुअर पाले जाते हैं। राञ्चेज़ के समीप ही मांस, चमड़े, दूध, मक्खन इत्यादि के कारखानें खुल गये हैं। अतः 'शिकागो' दुनियां की प्रसिद्ध मांस की मंडी है।
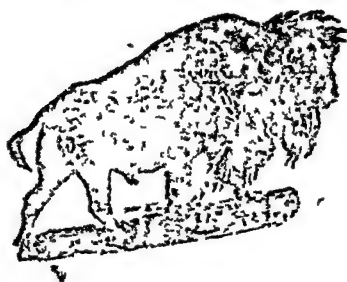
विसान

अन्य प्रदेशों के जानवरों का हाल तुम पहिले भी पढ़ चुके हो।

टुन्ड्रा में रेनडियर, सफेद रीछ, लोमड़ी खरगोश और गिलहरी की शक्ल के जानवर पाये जाते हैं। छोटे छोटे जानवर जाल से पकड़े जाते हैं ताकि उनकी समूर बिगड़ न जाय। बारह सिंघे की भांति एक जंगली जानवर का शिकार होता है जिसको 'मूस' कहते हैं। ठंडे समुद्रों के किनारे सील, ह्वेल और वालरस का शिकार होता है। इनके अतिरिक्त 'ग्रांड बैंक्स में 'काड,, 'कोलम्बिया तथा फ्रेजर नदियों में 'सामन' और 'हेरिङ्ग' नामक मछलियाँ पकड़ी जाती हैं और डिब्बों में भर दी जाती हैं। डिब्बों की हवा निकाल दी जाती है और उनके मुह रांग से बन्द करके दूर दूर के बाजारों में भेज दी जाती हैं।
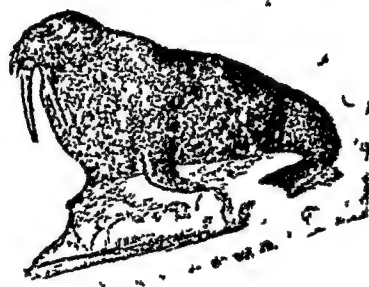
वालरस

निवासी अमरीका के असली निवासी 'रेड इन्डियन' अब बहुत कम रह गये हैं। ये लोग या तो जङ्गलों में मारे मारे फिरते हैं या देश के किसी भीतरी भाग में रहते हैं जो

अमरीका के आदि निवासी (रेड इन्डियन)

उनके रहने के लिये नियत कर दिया गया है। यूरोपियन लोगों ने जब उत्तरी अमरीका में नई बस्तियाँ बसाई तो भूमि को साफ करने और गर्म व तर भागों के खेतों में काम करने के लिये अफ्रीका के हब्शी गुलामों को खरीद खरीद कर मँगवाया और उनसे पशुओं को

तरह काम लिया। जब स्वतन्त्रता का युग आरम्भ हुआ तो ये हब्शी भी छोड़ दिये गये और इन्होंने इस भूमि को अपना देश बना लिया। इनकी जन संख्या कम है, प्रायः ये लोग युक्त राज्य के गन्ना और रुई पैदा करने वाले प्रदेशों तथा पश्चिमी द्वीप समूह में पाये जाते हैं जहाँ खेती की जोताई का काम घोड़ों से भी लिया जाता है।
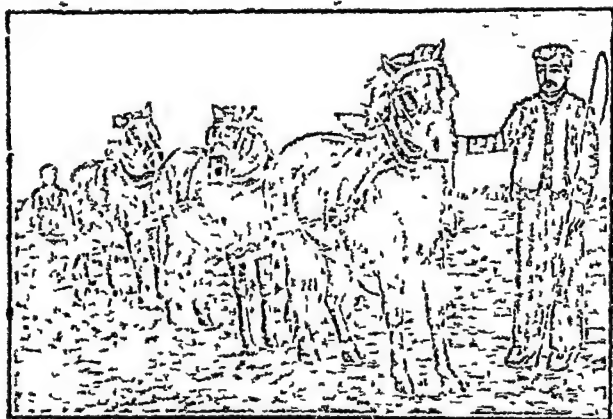
घोड़ों से खेत जोतना

कुछ अंग्रेज और फ्रांसीसी न्यू फाउन्डलैन्ड, उत्तरी पूर्वी तटों (न्यू इङ्गलैन्ड) और कैनेडा में बस गये। अतः 'क्वेबेक' के निवासियों की भाषा फ्रांसीसी है। कुछ अंग्रेज, जर्मन, फ्रांसीसी और इतालवी (इटली) के रहने वाले 'मिसीसिपी मिसूरी' के मैदान में बस गये। धीरे धीरे इन लोगों की नस्लें और भाषायें मिल जुल गईं। ये लोग अब अंग्रेजी भाषा बोलते हैं। मध्य अमरीका अर्थात् 'मेक्सिको' में स्पेन वालों ने अपना अधिकार जमाया। पहाड़ों और नदियों के नाम

इस बात का प्रमाण देते हैं।

जन संख्या का भौगोलिक नियम यह है कि वह उन स्थानों में उन्नति करती है जहाँ की जल-वायु स्वास्थ्य-वर्द्धक एवं भूमि उपजाऊ होती है और व्यापार तथा आने जाने का सुभीता हो। इस कारण उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट का शिल्प, व्यापार खनिज और कृषि-प्रधान प्रदेश बहुत घना बसा है। ज्यों ज्यों हम पूर्व से पश्चिम को बढ़ेंगे आबादी कम होती जावेगी। अब तुम बताओ कि अमरीका के कौन कौन से भाग शिल्प, कृषि और खनिजों में अधिक उन्नति कर रहे हैं तथा उनकी आबादी की तुलना करो।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—उत्तरी अमरीका के पहाड़ों के नाम नकशे में देखो। ये पहाड़ महाद्वीप की जल-वायु पर क्या प्रभाव डालते हैं?

२—उत्तरी अमरीका की बड़ी बड़ी झीलों के नाम बताओ ये झीलें किस प्रकार बन गईं?

३—महाद्वीप के मध्यवर्ती मैदान में किस ओर से और किस मौसम में वर्षा होती है?

४—उत्तरी अमरीका की जल-वायु का संक्षिप्त वर्णन करो?

५—इस महाद्वीप की बनस्पति तथा जल-वायु में क्या सम्बन्ध है?

६—उत्तरी अमरीका के नक्शे मे इस महाद्वीप के बनस्पति-विभाग दिखाओ?

१० उत्तरी अमरीका के राजनैतिक भाग तथा रीजन्स

१. कैनेडा का उपनिवेश—यह बृटिश साम्राज्य का एक भाग है परन्तु भीतरी प्रबन्ध और शासन में स्वतन्त्र है। आस्ट्रेलिया की तरह यहाँ भी बृटिश सम्राट का नियत किया हुआ गवर्नर पाँच साल तक शासन करता है और इसके बाद बदल दिया जाता है।

२. संयुक्त राज्य—यह स्वतन्त्रता के युद्ध के पश्चात् (सन् १८७५ ई०) बृटिश अधिकार से निकल गया। अब यहाँ प्रजा-तन्त्र राज स्थापित है। समस्त राज्य कई छोटे छोटे राज्यों से मिल कर बना है जो अपने भीतरी शासन प्रबन्ध में बिलकुल स्वतन्त्र हैं। प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधि केन्द्रीय शासन के लिये एक सभा चुन लेते हैं। इस सभा के ऊपर एक प्रेसीडेन्ट होता है जो पाँच साल तक शासन प्रबन्ध देखता है। इस राज्य के अधीन 'अलासका' 'क्यूबा' और 'पोर्टोरिको' द्वीप हैं। पनामा नहर के दोनों ओर की भूमि पर भी संयुक्त राज्य का अधिकार है।

३. मेक्सिको—संयुक्त राज्य के दक्षिण में प्रजातन्त्र राज्य है।

इसकी राजनैतिक दशा संतोष जनक नहीं है। बहुधा राज्य विद्रोह और बलवे होते रहते हैं।

४. मध्य अमरीका—यह मेक्सिको के दक्षिणी भाग में है। इसमें छः स्वतन्त्र राज्य और बृटिश 'हान्डूराज' स्थित है। 'जमैका' ट्रिनिडाड और पश्चिमी द्वीप समूह के बहुत से द्वीप बृटिश साम्राज्य के भाग हैं। तुम इनको अपने नक़शे में देख सकते हो।

कैनेडा का उपनिवेश

(अ) राकी प्रदेश तथा पश्चिमी तट—यह रीजन मुख्यतः बृटिश कोलम्बिया प्रान्त में स्थित है। सारा देश पहाड़ी और कैनेडा के अन्य भागों से भिन्न है। 'नार्वे' (यूरोप) की भाँति इसके तट पर भी 'फियोर्डज़' और द्वीप हैं। इनमें 'वानकोवर' और 'सिटका' के बड़े द्वीप हैं देश के भीतरी भाग में कोस्टरेन्ज़ (तटीय पर्वत) स्थित है जिसके पीछे कोलम्बिया के पठार हैं। राकी पर्वत इन पठारों को शेष कैनेडा से पृथक करता है।

प्रशान्त महासागर से आने वाली तर ऐन्टीट्रेड हवायें और दक्षिण व पूर्व से आने वाली सामुद्रिक गर्म धार के कारण यहाँ की जल-वायु सम रहती है। तटों पर सदैव वर्षा अधिक होती है। अतः कोलम्बिया की जल वायु इङ्गलैन्ड की जल-वायु के समान रहती है। पहाड़ों पर सर्द जंगल हैं जिनमें 'डगलस', 'फर' इत्यादि वृक्ष अधिकता से पाये जाते हैं और लम्बरिंग यहाँ का मुख्य उद्यम है।

बहुत से भागों में खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। 'क्लानडाइक' के खनिज प्रधान क्षेत्र में 'डासन' नगर इसी कारण अधिक प्रसिद्ध हो

उत्तरी अमेरिका
दक्षिणी अमेरिका
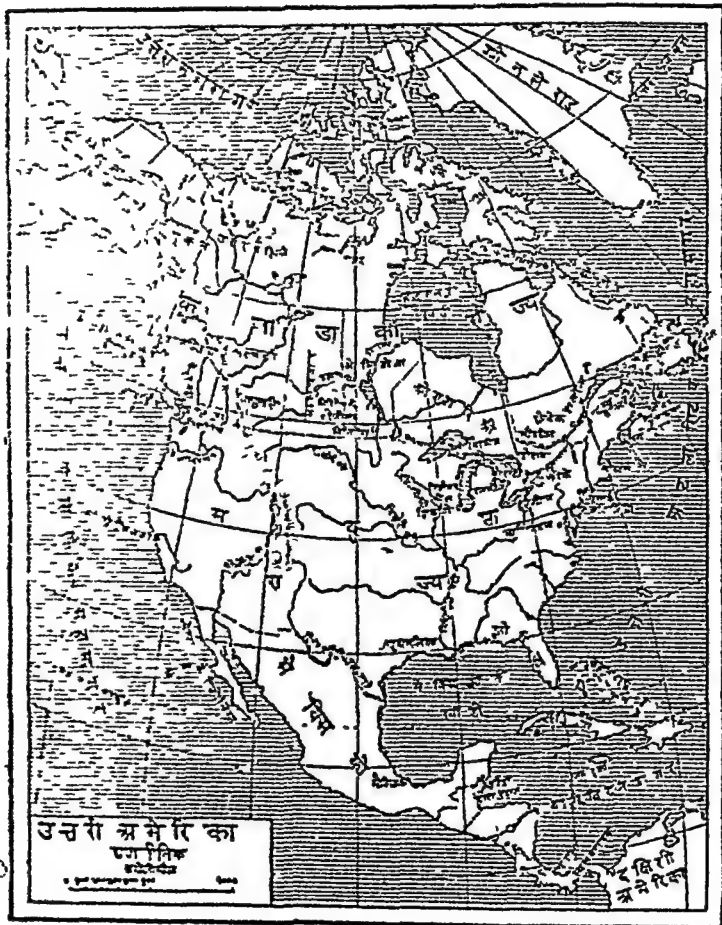
गया है। 'फ्रेजर नदी के मुहाने पर 'सामन' नामक मछली पकड़ी जाती है जो संसार के सभी देशों को भेजी जाती है। सील, ह्वेल और अन्य मछलियों का शिकार समस्त तटपर होता है। कोलम्बिया की दक्षिणी सुरक्षित घाटियों मे फलों के बाग़ हैं जिनमें सेव, अंगूर नाशपाती और शफतालू अधिक पैदा होते हैं।

'कैनेडियन पैसिफिक रेलवे' वानकोवर से ेजर नदी की घाटी और दर्रा किकिङ्गहार्स में होकर विनीपेग' 'मान्ट्रियाऊ', 'क्वेबेक' और 'हेलीफैक्स' को मिलाती है। 'कैनेडियन नेशनल रेलवे' 'प्रिन्स-रूपर्ट' से दर्रा 'यलोहेड' में होकर विनीपेग, क्वेबेक और 'न्युब्रिन्सविक' तक जाती है। ये बड़ी बड़ी रेलें हैं जो प्रशान्त महासागर से अटलांटिक महासागर तक चली गई हैं। अपने नक़शे में देख कर इन रेलों के प्रसिद्ध स्टेशन मालूम करो। 'प्रिन्सरूपर्ट' मछली पकड़ने का मुख्य केन्द्र है और 'वानकोवर' मुख्य बन्दरगाह है, जिसके द्वारा चीन और जापान से व्यापार होता है।

(ब) उत्तरी शीत प्रदेश—जिसमें टुण्ड्रा और ठंडे जंगल स्थित हैं। उत्तरी महासागर के किनारे किनारे टुण्ड्रा की पट्टी है और इसके दक्षिण में 'अलासका' है। 'लैब्रेडोर' तक ठंडे जंगल हैं जो 'ग्रेटलेक्स' के दक्षिणी तटों तक फैले हुये हैं। पहिले यहाँ जंगली जानवरों को पकड़ कर समूर का व्यापार होता था परन्तु अब यह जानवर पाले जाते हैं और इनसे समूर प्राप्त की जाती है। लम्बरिंग (लकड़ी-काटना) यहाँ का दूसरा मुख्य उद्यम है। यह लकड़ी मकानों के अतिरिक्त कागज़ बनाने के भी काम आती है।

इस प्रदेश में 'सडवरी' के चारों ओर जो ह्यूरन झील के उत्तर में स्थित है, तांबा, निकिल और लोहे की संसार-प्रसिद्ध खानें हैं। निकिल एक उपयोगी धातु होती है जिसकी हमारे देश में इकन्नियाँ बनती हैं। कहावत है कि अमरीका को तांबे की खानों को ढूँढ़ने वाला एक सुअर था। तुम जानते हो कि सुअर बहुधा भूमि खोद कर बैठा करते हैं। अतः इसने भूमि को खोद कर लोगों को खान की स्थिति का पता बता दिया। 'सडबरी' के उत्तर में 'कोवाल्ट' में चांदी बहुत निकलती है और सोने इत्यादि की भी खानें पाई जाती हैं।

'न्यू फाउन्डलैण्ड' जिसका हाल तुम पढ़ चुके हो इसी प्रदेश में स्थित है। इसकी मुख्य उपज काड मछली लोहा, कोयला और जंगल की लकड़ी है। नकशे में देखकर इसकी राजधानी 'सेन्टजान' मालूम करो।

(स) प्रेरीज प्रदेश—कैनेडा मे प्रेरीज ग्रेटलेक्स (बड़ी झीलों) से लेकर राकी पर्वत तक फैले हुये हैं और ज्यों ज्यों पूर्व से पश्चिम को जाते हैं इस प्रदेश की ऊँचाई बढ़ती जाती है तथा वर्षा कम होती जाती है। यहाँ तक कि दक्षिण-पूर्वी भाग में बिना सिंचाई के खेती नहीं हो सकती।

कैनेडा मे 'विनीपेग' गेहूँ की मुख्य मंडी है। इसके चारों ओर किसी समय एक झील स्थित थी जो अब सूख गई है। भूमि तर है पर कभी कभी मामूली वर्षा हो जाती है इसलिये गेहूँ बहुत पैदा होता है यह भाग संसार के अधिक गेहूँ पैदा करने वाले प्रदेशों में गिना जाता है। बन्दरगाह 'विनीपेग' में बड़े ऊँचे 'एलीवेटर' हैं जिनमें

अनाज जमा कर लिया जाता है और फिर टीन का एक बम्बा लगा कर सीधा जहाजों में लाद दिया जाता है। न तो बोरियों की आवश्यकता होती है और न कुलियों की। गेहूँ बम्बों में होकर इस प्रकार गिरता है मानों पानी का एक मोटा नाला चल रहा हो।

इस प्रदेश के पश्चिम में वर्षा कम होती है। इस कारण गेहूँ की खेती भी धीरे धीरे कम होती जाती है। खुश्क भागों में 'रांचिङ्ग' बड़ी उन्नति पर है। इस प्रदेश के उत्तरी भाग की जल-वायु सर्द और भूमि खराब है। उसमें राई, काला जौ और जई बोई जाती है। गेहूँ ऐसी जल-वायु और भूमि में पैदा नहीं हो सकता। यहाँ सुअर, मुर्गी और भेड़ें भी अधिकता से पाली जाती हैं। 'कालगारी' नगर रांचिङ्ग का केन्द्र है। 'रेजिना' कैनेडियन पैसिफिक रेलवे का प्रसिद्ध स्टेशन है।

(द) सेन्ट लारेन्स नदी का वेसिन तथा अटलान्टिक तट—सेन्ट लारेन्स नदी के दोनों ओर की नीची भूमि तथा 'ओन्टैरियो' और ईरी झीलों के बीच का प्रायद्वीप, कैनेडा का दूसरा उपजाऊ प्रदेश है। इसी प्रदेश में 'नोवास्कोशिया' और 'प्रिन्स एडवर्ड' द्वीप को भी सम्मिलित कर लेना चाहिये। तुम प्रायद्वीप अमरीका की जल-वायु के विषय में पढ़ चुके हो। अब तुम स्वयं इस प्रदेश की जल-वायु ज्ञात करो। यहाँ खेती और गल्लाबानी दोनों साथ साथ होते हैं। गेहूँ, ओट जई, काला जौ और आलू अधिकता से पैदा होता है। ओट जानवरों के चारे के लिये उगाया जाता है। इस भाग में प्रेरीज की अपेक्षा गाय, बैल, भेड़, सुअर और मुर्गियाँ दूनी संख्या में पाली जाती हैं।

'सेन्ट लारेन्स' नदी जाड़ों में तीन या चार मास के लिये बर्फ से ढक जाती है। इस कारण 'क्वेबेक और मान्ट्रीयाल' के बन्दरगाह इस ऋतु में बन्द रहते हैं। परन्तु 'हेलीफैक्स' और सेन्टजान के बन्दरगाह वर्ष पर्यन्त खुले रहते हैं। क्योंकि (१) नदी का मीठा पानी समुद्र के खारी पानी की अपेक्षा शीघ्र जम जाता है और (२) समुद्र से गर्म सामुद्रिक धार का भी प्रभाव पड़ता है। कैनेडा का शिल्प प्रधान प्रदेश भी इसी नदी के बेसिन में स्थित है। 'आटावा' कैनेडा की राजधानी है। 'आंटावा' नदी पर स्थित होने के कारण यहाँ काग़ज और लकड़ी के बड़े बड़े कारखाने हैं जो जङ्गल से लाई हुई लकड़ी और नदी के पानी से बनाई हुई बिजली से चलते हैं। 'मान्ट्रीयाल' यहाँ का सबसे बड़ा नगर है और बड़े बड़े जहाज यहाँ तक आते जाते हैं। यहाँ से छोटे छोटे स्टीमर 'ग्रेटलेक्स' को माल ले जाते हैं। 'क्वेबेक' में चमड़े और रुई का सामान बनता है। ओन्टैरियो झील के उत्तरी तट पर 'टोरन्टो' नगर स्थित है। जहाँ कपड़े और लोहे के कारखाने हैं जो पानी से बनाई हुई बिजली से चलाये जाते हैं। संयुक्त राज्य के निकट स्थित होने के कारण इस भाग में मोटर गाड़ियाँ बनाने का शिल्प अधिक उन्नति कर रहा है। अब कैनेडा की गणना संसार के प्रसिद्ध शिल्प प्रधान देशों में होने लगी है। 'हेलीफैक्स' ट्रान्स-कैनेडियन रेलवे का अन्तिम स्टेशन है।

संयुक्त राज्य

संयुक्त राज्य संसार का बड़ा धनवान् राज्य है। इस राज्य ने शिल्पकारी, व्यापार और कृषि में एक समान उन्नति की है। इसका

क्षेत्र फल भारतवर्ष के क्षेत्र से दुगना होगा परन्तु जन संख्या केवल एक तिहाई है। इस राज्य के सात प्राकृतिक भाग हो सकते हैं।

(अ) उत्तरी पश्चिमी तट—इसकी नेचर (प्रकृति) वास्तव में 'कोलम्बिया' प्लेटो की भाँति है जो इसके उत्तर में स्थित है। यहाँ पहाड़ों पर 'कोलम्बिया' की भाँति 'डगलसफर' और घाटियों में फल होते हैं। यहाँ का जल-वायु इङ्गलैण्ड के जल-वायु के समान है। 'सीटिल' इसी तट का प्रसिद्ध बन्दरगाह है जो 'अलास्का' और प्रशान्त महासागर के पार वाले देशों से व्यापार करता है तथा पहाड़ों के पूर्वीय मैदानों से रेल द्वारा मिला हुआ है।

(ब) रूम सागरीय जल-वायु का प्रदेश—'सेन्फ्रांसिस्को' के आस पास केलीफ़ोर्नियाँ राज्य में स्थित है। 'केलीफार्नियां' की घाटी दो नदियों से सींची जाती है और अत्यन्त उपजाऊ है। यहाँ फल और गेहूँ पैदा होते हैं। 'साक्रामिन्टो' नदी पर इसी नाम का एक प्रसिद्ध नगर स्थित है 'यूनियन पैसिफ़िक रेलवे' 'सेन्फ्रांसिस्को' से पहाड़ों को काट कर 'साक्रामिन्टो', 'साल्टलेक सिटी', 'शिकागो' और 'फ़िलेडेल्फ़िया' को जाती है। दक्षिण में 'लास एन्जलीज़' के आस पास मिट्टी के तेल के सोते हैं जहाँ भारतवर्ष की अपेक्षा चालीस गुना अधिक तेल निकाला जाता है। वर्तमान काल में यह नगर 'बाइस्कोप' की शिल्पकारी का केन्द्र बन गया है और 'सेन्फ्रांसिस्को' से बड़ा हो गया है।

(स) राकी प्लेटो प्रदेश—'सियरानिवादा' और राकी पर्वतों के बीच 'शुष्क प्लेटो' स्थित है। इन पठारों का उत्तरी भाग 'स्नेक'

तथा 'कोलम्बिया' नदियों से सींचा जाता है। इसकी भूमि काली और लावा की बनी हुई है। इस प्रदेश में गेहूँ पैदा होता है और मवेशी चरते हैं। मध्य भाग में 'यूटाह' का प्लेटो स्थित है। यहाँ की 'साल्टलेक' और 'और साल्टलेक सिटी' कृषि और खान खोदने का केन्द्र बन गया है। यहाँ 'बीट' और शक्कर अधिक पैदा होती है। दक्षिण में 'कालोराडो' का प्लेटो अत्यन्त खुश्क है। नदी ने गहरी गहरी घाटियाँ नर्म चट्टानों को काट कर बना डाली हैं। वर्षा न होने के कारण नदी के दोनों ओर ऊंची ऊँची कगारें खड़ी हो जाती हैं और नदी का पानी कई सौ फीट नीचे पर दिखाई देता है। अमरीका के संयुक्त राज्य का यह मुख्य खनिज प्रधान देश है। राज्य का अधिकांश 'सोना' चाँदी' ताँबा' सीसा इसी प्रदेश में खोदा जाता है। पश्चिमी तट पर कोयला भी पाया जाता है।

(द) मध्यवर्ती मरु प्रदेश—'कनेडा' के 'प्रेरी रीजन' की भांति संयुक्त राज्य का पश्चिमी भाग कुछ खुश्क है और पूर्वी भाग तर। घास की कमी के कारण पश्चिमी भाग में ढोर इधर उधर चराये जाते हैं। परन्तु जहाँ कहीं घास अच्छी उगती है गोश्त के लिये ढोर मोटे किये जाते हैं। 'गालवेस्टन' बन्दर के पीछे 'टेक्सास' में अच्छी राञ्चेज़ हैं। इस भाग में सोना, लोहा और कोयला पाया जाता है। अतः 'डेन्वर' और उसके दक्षिण में 'पब्लियो' और 'सान्टाफे' खान खोदने के केन्द्र हैं।

पूर्व का तर भाग 'मिसोसिपी 'ओहायो 'कनसास इत्यादि नदियों में सींचा जाता है। यहाँ गर्मियों में गर्मी और जाड़ों में सर्दी

पड़ती है। वर्षा उचित परिमाण में होती है तथा भूमि उपजाऊ है। इस कारण यह भाग एक अच्छा कृषि प्रधान देश हो गया है। उत्तरी भाग में जिनकी जल-वायु सम रहती है, गेहूँ और दक्षिणी गर्म भाग

शिकागो का बाज़ार

में मक्का रुई शक्कर इत्यादि पैदा की जाती है। मक्का अधिकतर पशुओं के चारे के लिये पैदा की जाती है जिसको खाकर जानवर मोटे हो जाते हैं और उनका माँस स्वादिष्ट हो जाता है। 'मियापोलिस', 'शिकागो' और 'सेन्टलूइस' में आटा पीसा जाता है। सेन्टलूइस दरियाई-

बन्दरगाह है यहाँ तक बड़े बड़े जहाज आ सकते हैं। इसके चारों ओर मक्का पैदा होती है इसलिये ढोर, भेड़ें और सुअर पाले जाते हैं। इनको मोटा करके 'शिकागो' और कन्सास सिटी की पशु-वध शालाओं में काटा जाता है। ये दोनों नगर मांस की संसार प्रसिद्ध मंडियां हैं। कोयला, लोहा और मिट्टी का तेल भी अधिकता से निकलता है। 'इलियानाय' और 'मिचीगन' नामक राज्यों में कोयला और 'ओहायो' 'इलियानाय' 'कन्सास' तथा सुपोरियर झील के पश्चिम में लोहे की खानें हैं। यह लोहा 'डोलिथ' बन्दरगाह से झीलों के उन दूसरे बन्दरगाहों को भेज दिया जाता है जहाँ कोयला मिल सकता है। याद रक्खो कि कोयले की ढुलाई में व्यय अधिक होता है इसलिये लोहे को कोयले के पास ले जाना पड़ता है। 'मिलवाकी', 'शिकागो', मिचीगन झील पर और 'क्लीवलैन्ड' ईरी झील पर लोहे के बड़े बड़े शिल्प प्रधान नगर हैं। जहाँ मशीनें, एञ्जिन और आवश्यकता की छोटी छोटी सहस्रों वस्तुयें बनाई जाती हैं। 'सिनसिनाटी' में रेलें बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। 'डेटराय' में फोर्ड कम्पनी के मोटर के कारखाने हैं। इनके अतिरिक्त पहाड़ों पर अन्य धातुयें और जंगली लकड़ी भी पैदा होती है। नदियों के पानी से बिजली पैदा की जाती है जो मिलों और कारखानों में प्रयोग की जाती है।

(य) दक्षिणी-पूर्वी प्रदेश—इस प्रदेश में 'मेक्सिको' की खाड़ी के आस पास की नीची भूमि और अटलान्टिक महासागर के तटीय मैदान सम्मिलित हैं। यहाँ वर्षा अच्छी होती है और समुद्र के प्रभाव से जल-वायु गर्म शीतोष्ण रहती है। वर्षा अधिकतर गर्मी की ऋतु में

होती है। भीतरी प्रदेशों की तरह सर्दी भी कड़ी नहीं होती। ऐसी वर्षा और जल-वायु के कारण रुई अधिक पैदा होती है। यहाँ की रुई नर्म और लम्बे रेशे वाली होती है तथा भारतवर्ष की रुई की अपेक्षा अच्छी होती है। मेनचेस्टर और 'लिवरपूल' के कारखाने इसी रुई का प्रयोग करते हैं। यहाँ गन्ना, चावल तम्बाकू और मक्का भी पैदा होती है। इस प्रदेश के मुख्य बन्दरगाह 'न्यूआरलियन्स' और 'गालबेस्टन' हैं जहाँ से रुई बाहर को जाती है। 'फ्लोरेडा' प्रायद्वीप में रुई नहीं बोई जाती। यह मनोहर प्रदेश अपनी जल-वायु के लिये प्रसिद्ध है। प्रायद्वीप के सिरे पर मियामी नामक प्रसिद्ध नगर स्थित है। जहाँ मनुष्य बहुधा सैर को आया करते हैं।

(र) अप्लेचियन प्रदेश—यह पर्वतों और पठारों का रीजन है। जो ईरी और ओन्टैरियो झीलों से दक्षिण-पश्चिम में फैला हुआ है। उत्तरी भाग में यह पहाड़ एटलान्टिक महासागर के तट के समीप तक फैले हुये हैं। परन्तु दक्षिण में इन पर्वतों और समुद्र के बीच में चौड़ा तटीय मैदान स्थित है। संयुक्त राज्य की लगभग एक तिहाई जन संख्या इसी भाग में पाई जाती है। भूमि अधिकतर पथरीली और कृषि के योग्य नहीं है। परन्तु सुरक्षित घाटियों में खेती, गल्लाबानी, मक्खन, पनीर बनाना इत्यादि के व्यवसाय हो सकते हैं। इस भाग में कोयला अधिक पाया जाता है। केवल पेन्सिलवानियाँ में इतना कोयला निकलता है जितना कि सारे इङ्गलैन्ड में। इसका कुछ भाग तो 'ग्रेटलेक्स' के मार्ग से कैनेडा को और शेष 'डेलावियर', 'ससकेहाना' और 'पाटोमैक' नदियों के मार्ग से 'फिलेडेल्फिया',

'बाल्टीमोर' तथा 'वाशिंगटन' के बन्दरगाहों को भेज दिया जाता है। जहाँ रेलों जहाज़ो और अनेकों मिलों के काम आता है। कोयले की खानों के निकट लोहे और फ़ौलाद के कारखाने हैं। जिनमें पहिले तो स्थानीय खानों का कच्चा लोहा काम में लाया जाता था, परन्तु अब सुपीरियर झील के पश्चिम की खानों से आता है। 'पट्स-बर्ग' 'क्लीवलैन्ड' और 'बफ़ैलो' में लोहे के बड़े बड़े कारखाने हैं।

फ़िलेडेल्फ़िया में ऊनी कपड़े बुने जाते हैं। 'न्यूयार्क' 'न्यूजर्सी' 'पैन्सिलवानियाँ' के राज्यों में रेशम का कपड़ा बनता है और ये पहाड़ी जगलों की लकड़ी से काग़ज़ बनाया जाता है।

(ल) न्यू इङ्गलैन्ड—यह कैनेडा के मैरीटाइम (सामुद्रिक प्रान्त) के समीप स्थित है। अमरीका मे नई बस्तियाँ बसाने वाले पहिले पहल इसी स्थान पर बसे थे। अतः इङ्गलैण्ड की तरह यहाँ भी खेती और गल्लेबानी साथ साथ होती है अर्थात् किसान अपने खेतों के समीप भेड़ें और मवेशी भी पालता है। समुद्र के किनारे मछली का शिकार होता है। बहुत सी शिल्पकारियाँ जो यूरोपवालों के साथ आई उन्नति कर गईं। तर जल-वायु में कपड़ा बुनना सबसे पहिले आरम्भ हुआ और ऊन का सामान किताबें काग़ज चाकू उस्तरे बर्तन इत्यादि भाँति भाँति की शिल्पकारियो का जन्म पीछे हुआ। पानी और पानी से बनाई हुई बिजली की अधिकता हो गई। नोवास्कोशिया और पेन्सिलवानियां से कोयला मँगाया जा सकता था। लोहा भी थोड़ा बहुत समीप ही में पाया जाता था। अतः यह भाग शीघ्र ही शिल्प-प्रधान प्रदेश हो गया। सयुक्त राज्य का दो तिहाई रुई का सामान

'फालरिवर', 'मेनचेस्टर' और 'प्राविडेन्स' इत्यादि नगरों में बनता है। 'बोस्टन' अमरीका की ऊन और चमड़े की बड़ी मंडी है।

अलास्का—यह संयुक्त राज्य का एक क्रय प्रदेश था। यहाँ 'यूकान' नदी की घाटी में तांबा और सोना निकलता है, बस इसी से इसकी विशेषता है। अन्यथा शेष भाग उजाड़ और बर्फ़िस्तान है। 'स्कागवे' अलास्का का मुख्य बन्दरगाह है जहाँ के एक रेल देश के भीतरी भाग को जाती है। तट के किनारे मछली और सील का शिकार होता है।

संयुक्त राज्य का व्यापार लगभग इङ्गलैण्ड के समान है और बाहर से अधिकतर वह कच्चा माल खरीदा जाता है जो अमरीका से अधिक गर्म जल-वायु में पैदा होता है। जैसे शक्कर, कहवा, रबड़, जूट और रेशम इत्यादि। यहां से कृषि पैदावार और मशीनों से बनी हुई वस्तुयें बाहर को भेजी जाती हैं। सबसे अधिक रुई भेजी जाती है जिसको इङ्गलेन्ड, फ्रांस और जर्मनी खरीदता है। हिन्दुस्तान से चमड़ा, लाख, मेंगानीज़, अबरक, अंडी, मसाले, चाय और जूट जाती है। इनके बदले में लोहा, मिट्टी का तेल, लोहे और फ़ौलाद की वस्तुय मशीनें, मोटर इत्यादि संयुक्त राज्य से हिन्दुस्तान में आती हैं।

व्यापार की उन्नति के साथ आने जाने के मार्ग भी उन्नति करते हैं। अतः यहाँ की नदियों और नहरों में आने-जाने के अच्छे मार्ग हैं जो बन्दरगाहों को भीतरी स्थानों से मिलाते हैं। 'सुपीरियर' और ह्यूरान झीलों के बीच 'सू' नहर है। नहर वेलैण्ड का हाल तुम

पहिले पढ़ चुके हो जो ईरी और ओन्टेरियो के बीच बनाई गई है। नहर ईरी हडसन नदी और ईरी झील को मिलाती है। रेलें भी यहाँ अधिक हैं। तुम अपने एलटस में कम से कम चार बड़ी रेलें देख सकते हो, जो महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक आती जाती हैं।

मेक्सिको

मेक्सिको प्रजातन्त्र राज्य के तीन प्राकृतिक भाग हैं :—

(अ) पूर्वी और पश्चिमीय तटीय मैदान।

(ब) प्लेटो और ढाल।

(स) मध्यवर्ती पर्वत जो राकी पर्वतों के दक्षिणी भाग हैं। 'केलीफोर्निया' प्रायद्वीप एक खुश्क मरु-स्थल और पहाड़ी है, परन्तु 'यूकाटान' प्रायद्वीप इस मैदान का एक भाग है।

इस राज्य के बीचों बीच में होकर कर्क रेखा गुज़रती है। मध्यवर्ती पहाड़ी श्रेणियों के पूर्व में लगभग पूरे वर्ष उत्तरी पूर्वी ट्रेड हवाओं से वर्षा होती है। पश्चिमी तट जाड़ों में खुश्क रहता है तथा भीतरी भाग की गर्मी के कारण हवाओं की गति बदल जाती है और मानसूनी अवस्था पैदा हो जाती है। यहां की जल-वायु दकन प्रायद्वीप के समान मानसूनी और शीतोष्ण कही जा सकती है, परन्तु ऊँचे पहाड़ों पर सर्दी होती है पर्वत श्रेणियों से सुरक्षित होने के कारण मध्यवर्ती प्लेटो की जल-वायु कड़ी है। यहाँ की जन-संख्या लगभग १४ लाख है। निवासी अधिकतर 'हस्पानवी' (स्पेन की) और अमरीकन जाति के हैं। स्थाई राज्य और सुशासन न होने के कारण प्रतिदिन बलवे, राज विद्रोह और क्रान्ति होती रहती है।

मैदान में गन्ना, रबड़, तम्बाकू, रुई, कोको, केला, नारङ्गी, अनन्नास और आम अधिकता से पैदा होते हैं। पहाड़ी ढालों पर क़हवा और मक्का पैदा होती है जो यहाँ के निवासियों का भोजन है। प्लेटो पर वर्षा कम होती है इसलिये सिंचाई की आवश्यकता रहती है सिंचित भागों में गेहूँ, मक्का और रुई पैदा होती है। संसार की

मिट्टी के तेल के सोते

[...]ल चांदी का अर्द्ध-भाग मेक्सिको के मध्यवर्ती खानों से आता है। [...]ट्टी का तेल, ताँबा, सोना और कोयला भी निकलता है। पहाड़ों [...] जंगल हैं जिनसे लकड़ी अधिक मिलती है। प्लेटो के ढालों पर

मवेशी चराये जाते हैं।किन्तु भी कम पाई जाती हैं।

नगर मेक्सिको यहाँ की राजधानी है और प्लेटो के खनिज प्रधान भाग में स्थित है। 'टाम्पीको' और वेराक्रूज' मुख्य बन्दरगाह हैं। टाम्पीको मे मिट्टी का तेल लादा जाता है और वेराक्रूज में रुई के कपड़े बुनने के कारखाने हैं।

मध्य अमरीका

उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के मध्य में छोटे छोटे प्रजातन्त्र राज्य स्थित हैं जो 'हांडोराज' के नाम से प्रसिद्ध हैं। तुम इन राज्यों के नाम नक़शे में देख कर मालूम कर सकते हो। इनकी प्राकृतिक दशा एवं वर्षा मेक्सिको के समान है। अर्थात् हम इस भाग को भी दो रीजन्स में विभाजित कर सकते हैं :—

(अ) मध्य का पहाड़ी प्लेटो।

(ब) दोनों ओर के तटीय मैदान।

पश्चिमी तट पर पूर्वी तट की अपेक्षा गर्मियों में वर्षा अधिक होती है। परन्तु जाड़े में खुश्क रहता है और वायु में मानसूनी अवस्था उत्पन्न हो जाती है। यहाँ की वर्षा और उपज भी मेक्सिको के समान है। दक्षिणी-पश्चिमी किनारे पर सीप आर मोतों का शिकार होता है। तांबा, सोना, चांदी भी पाई जाती है और व्यापार कम है इसलिये रेलें भी कम हैं। पनामा नहर के खुल जाने से समुद्र-मार्ग से आने जाने में बड़ा सुभीता और व्यापार की उन्नति हो गई है।

पश्चिमी द्वीप समूह का कुछ वर्णन पहिले भी पढ़ चुके हो। इन द्वीपों के नाम तुम अपने एटलस में देख सकते हो, इनमें 'क्यूबा'

सबसे बड़ा है। क्यूबा का प्रजातन्त्र राज्य संयुक्तराज्य की रक्षा में है। हवाना इसकी राजधानी है। शक्कर तथा तम्बाकू का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। 'किङ्गस्टन' ब्रिटिश जमैका की राजधानी है जो शक्कर, केला, मदिरा (शराब) और क़हवा का प्रसिद्ध व्यापारिक बन्दरगाह है। 'पोर्टोरिको' द्वीप संयुक्त राज्य के अधीन है। 'हेटी' में हबशियों का प्रजातन्त्र राज्य है।

बहुत से छोटे छोटे द्वीप अँगरेज़ों के अधीन हैं लगभग सब द्वीपों में गर्म त्रिषुवतीय जल-वायु और पैदावार पाई जाती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—कैनेडा को किन किन प्राकृतिक रीजन्स में बाँट सकते हो? जलवायु, उपज तथा वनस्पति की दृष्टि से हर रीजन का हाल बताओ?

२—संयुक्त राज्य की महिमा इतनी क्यों बढ़ गई है तथा संयुक्त राज्य के पूर्वी खंड का चीन से मुक़ाबला करो?

३—एशिया का कौन देश कैनेडा की तरह है और टुंड्रा में कौन कौन लोग रहते हैं तथा उनकी रहन सहन कैसी है?

४—'लम्बरिंग' और 'रांञ्चिंग' किसे कहते हैं?

५—न्यू फाउन्डलैंड से बंकोवर जाने में कौन कौन वर्णन देख पड़ेंगे?

६—उत्तरी अमरीका के किन किन भागों में (१) सालभर लगातार वर्षा (२) केवल गर्मी के मौसम में (३) केवल जाड़ों में वर्षा होती है।

७—यदि तुम उत्तरी अमरीका में बसने जाओ तो तुम अपने रहने के लिये कौन सा भाग पसन्द करोगे, और क्या

४—अफ्रीका

महाद्वीप अफ्रीका की विशेषतायें

तुम पहिले पढ़ चुके हो कि महाद्वीप अफ्रीका, दक्षिणी भारत और आस्ट्रेलिया किसी काल में एक ही महाद्वीप के भाग थे, जो पृथ्वी के भीतर की कम्पन शक्ति के कारण पृथक हो गये हैं। यह भी तुम पढ़ चुके हो कि प्राचीन काल में इस महाद्वीप के उत्तर में मिस्र का सभ्य राज्य स्थित था जो एशिया और यूरोप के भिन्न भिन्न देशों से व्यापारिक सम्बन्ध रखता था। 'काहिरा' और 'एलेक्जेन्ड्रिया' के प्रसिद्ध व्यापारिक बाजारों में स्वेज़ नामक थल-संयोजक (जो अब काट कर नहर स्वेज़ बना दी गई है) के मार्ग से एशिया के कारवां आते जाते थे और रूम, यूनान की बादबानी नावें रूम सागर के मार्ग से व्यापार करती थीं। परन्तु इसके होते हुये भी 'सहारा मरु-स्थल' और उसके दक्षिण में समस्त अफ्रीका महाद्वीप का किसी को कुछ हाल मालूम न था। आश्चर्य की बात है कि पन्द्रहवीं शताब्दी में लोगों ने दूर-दूर की यात्रा करके नई दुनियाँ का पता लगाया और उसे आबाद किया, किन्तु अफ्रीका महाद्वीप के इस बड़े प्रदेश का जिसकी लम्बाई चौड़ाई चार पाँच हज़ार मील से कम नहीं, किसी को ध्यान न आया

और भीतरी अफ्रीका में अब भी बहुत सी जंगली और मरु-स्थली प्रदेश ऐसा है जहां तक मनुष्य व सभ्यता नहीं पहुँच पाई है। क्या तुम सोच सकते हो कि इसका क्या कारण हो सकता है? नक़शे को देख कर तुम समझ सकते हो कि रूम सागर और अज्ञात अफ्रीका के
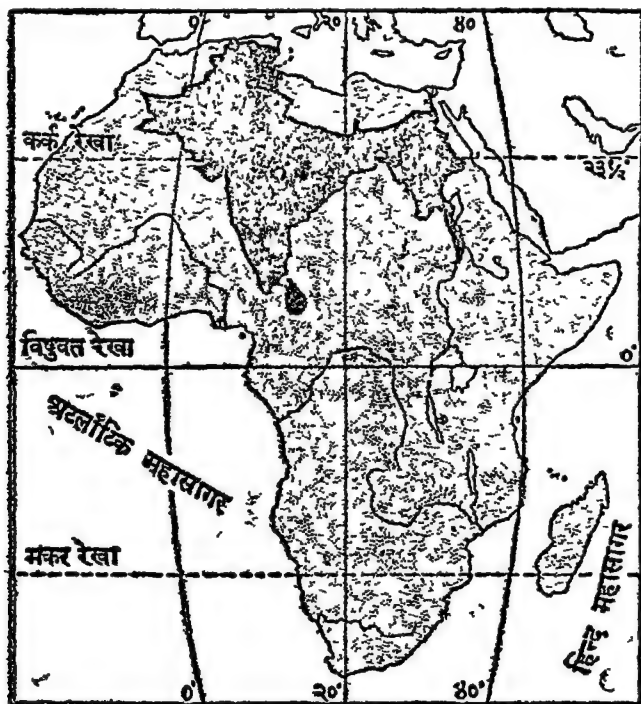
भारत और महाद्वीप अफ्रीका की तुलना

मध्य सहारा का दुर्गम मरु-स्थल स्थित था। समुद्रतट अधिकतर सपाट और ऊँचा था जिसमें बादबानी नावों के ठहरने के लिये आसानी न थी। नील इत्यादि नदियों में झरनों के कारण देश के भीतर आना जाना असम्भव था। तटीय स्थानों की गर्म और तर

जलवायु रोग वर्द्धक थी। अधिकांश तटों पर पर्वत और प्लेटो स्थित थे जो देश के भीतरी ओर ऊँचे होते गये थे और जंगलों से ढके हुये थे। जिनमें असंख्य भयानक जंगली पशु रहते थे। मलेरिया के मच्छर और टिसीटिमी नामक विषैली मक्खियाँ बहुत थीं। सभ्य आबादी कहीं भी न थी। जंगली खूंखार जातियाँ बाहर वालों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करती थीं। इस कारण यात्री और मांझी भयानक कहानियां सुना सुना कर लोगों को इस ओर ध्यान न देने की शिक्षा दिया करते थे। इसलिये बहुत समय तक महाद्वीप अफ्रीका अन्धकार में रहा, अन्त में पन्द्रहवीं शताब्दी में भारतवर्ष की खोज हुई तब महाद्वीप अफ्रीका का भी पता लगा। सत्रहवीं और अठारवीं शताब्दी में 'स्टैनली' और 'लिविंग्स्टन' इत्यादि खोजने वाले यात्रियों ने बड़े बड़े कष्ट उठाकर और दुर्घटनायें सहकर महाद्वीप के भीतरी भागों की यात्रा की और पता लगाया। धीरे धीरे व्यापारिक सम्बन्ध उत्पन्न हुये और महाद्वीप पर यूरोप की भिन्न भिन्न जातियों ने अधिकार जमा लिया। इंगलैन्ड निवासियों ने दक्षिणी पठारों की प्रिय जलवायु में अपनी नई बस्तियां बसा लीं जो आजकल बड़ी उन्नति शील हैं।

समुद्र तट तुम अफ्रीका के प्राकृतिक नक़्शे में देखकर उसके तटों की दशा का अनुमान कर सकते हो। समस्त तट सीधे और सपाट हैं, कहीं भी ऐसी खाड़ियाँ और द्वीप नहीं हैं जिनमें सुरक्षित बन्दरगाह बनाये जा सकें। तटों पर साधारणतः तंग नीचे मैदान हैं जिनके पीछे ऊँचे पठार और पहाड़ों की श्रेणियाँ स्थित हैं जो जंगली जानवरों की जागीरें हैं। नदियाँ भी झाने

जाने योग्य नहीं हैं। अतः तुम देखोगे कि इस महाद्वीप के तटों पर बहुत कम बन्दरगाह हैं।

रूम सागर के तट पर प्रचीन काल से सभ्य जातियाँ आबाद हैं यहाँ नील नदी के डेल्टे पर 'काहिरा' और 'स्कन्द्रिया' के प्राचीन और प्रसिद्ध बन्दरगाह स्थित हैं। ये बन्दरगाह पश्चिम में 'सीरिया' अनातूलिया के उपजाऊ भागों से और दक्षिण में नील की व्यापारिक और कृषि-प्रधान घाटियों से रेलों द्वारा मिले हुये हैं।
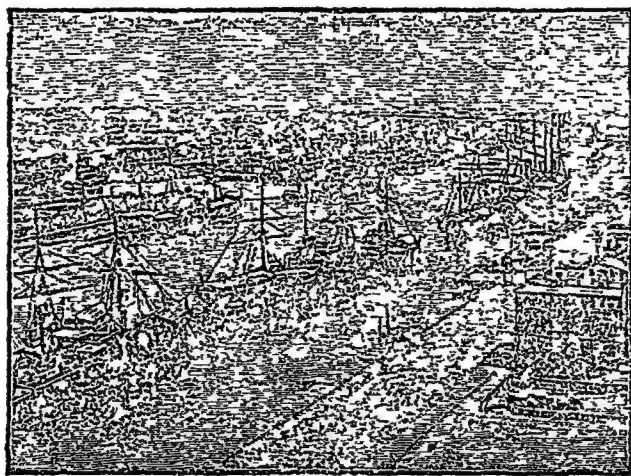
स्वेज नहर

बन्दरगाहों की भौगोलिक स्थिति को अच्छी तरह देखना चाहिये, क्योंकि इसी बात पर उनकी उन्नति निर्भर होती है। बन्दरगाह स्कन्द्रिया जो डेल्टे के बाईं ओर स्थित है नदी की लाई हुई मिट्टी से खराब हो जाता है। स्वेज नहर के खुल जाने के कारण इन बन्दर-

गाहों का व्यापार और प्रधानता विशेष बढ़ गई है। क्योंकि वह यूरोप से हिन्दुस्तान को आने जाने वाले जहाजी मार्ग के समीप स्थित है। हाल ही में 'काहिरा' में हवाई जहाजों का स्टेशन बनाया गया है।

उत्तरी तट के बीचों बीच में 'सिदरा' और 'कैबीज़' नामक खाड़ियों के मध्य बन्दरगाह 'ट्रिपोली' स्थित है जहाँ से खजूर और खुरमा लादा जाता है। महाद्वीप की उत्तरी नाक बोन नामक अन्तरीप के समीप फ्रांसीसी बन्दरगाह 'ट्यूनिस' स्थित है, जहाँ से रूमी
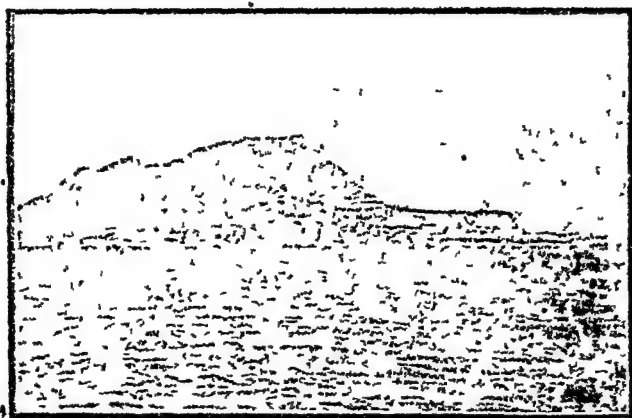
जिबराल्टर जल संयोजक का दृश्य

प्रदेश की पैदावार विशेष कर जैतून और (काग) कार्क जाता है जिससे बोतलों की डाट इत्यादि बनाई जाती हैं। ट्यूनिस से टान्जियर तक समस्त तट रूमी जल-वायु के भाग में स्थित है। जिस पर अलजियर्स, स्यूटा टान्जियर के बन्दरगाह स्थित हैं। अलजियर्स खनिज

पदार्थ रुई और रूमी प्रदेश की उपज का बन्दर है। स्पेन वालों का बन्दरगाह स्यूटा, जिबरालटर नामक जल-संयोजक पर स्थित है और अपनी स्थानीय विशेषता के कारण अधिक प्रसिद्ध है। जल-संयोजक के दूसरी ओर यूरोप की भूमि पर तुम अंग्रेजी बन्दरगाह जिबरालटर देख सकते हो और इन दोनों की तुलना कर सकते हो। टान्जियर से वर्ड नामक अन्तरीप तक जो इस महाद्वीप की पश्चिमी नोक है समस्त तट कुछ विशेष प्रधानता नहीं रखता, क्योंकि इसके पीछे सहारा का मरुस्थल स्थित है। बन्दरगाह 'राबर्ट', 'मुगाडोर' और 'कासाब्लाङ्का' के पीछे मराकुस के चरागाह और नखलिस्तान स्थित हैं। राबर्ट के दाहिनी ओर रेलों की सड़कें भीतरी भागों में जाती हैं, जिनसे इसकी प्रधानता का पता चलता है। मध्य तट के समीप स्पेन के अधिकार में 'कनारी द्वीप' और कुछ दूरी पर पुर्तगाल के 'मडीरा' और 'अजोर्स' नामक द्वीप स्थित हैं, जो शराब और फलों का व्यापार करते हैं। 'केपवर्ड' नामी पुर्तगाली द्वीप वर्ड नामक अन्तरीप के समीप स्थित है।

वर्ड अन्तरीप से 'बियाफरा' खाड़ी के आगे तक समस्त तट गर्म विषुवतीय और मानसूनी भागों में होने के कारण अधिक उपजाऊ है, परन्तु रोग बर्द्धक जल-वायु होने के कारण अधिक आबाद नहीं है। वर्ड अन्तरीप के ठीक दक्षिण में 'गैम्बिया' नदी के मुहाने पर रबड़ का अङ्गरेजी बन्दरगाह बैथर्स्ट स्थित है। इसके आगे 'आइवरी कोस्ट' (गज-दन्तीय तट), 'गोल्ड कोस्ट' (स्वर्ण तट) नामक 'बृटिश उपनिवेश', 'बृटिश नाइजीरिया' और फ्रांसीसी विषुवतीय अफ्रीका के

सभी देशों में केला, कहवा, रबड़, शक्कर, कोको, तम्बाकू, नारियल व तेल वाला ताड़, हाथी दांत तथा चमड़ा अधिकता से पैदा होता है और सोना भी पाया जाता है। रोग वर्द्धक जल वायु होते हुये भी इस तट पर 'फ्रीटाउन', 'मोनरोविया', 'अक्करा' और 'लैगास' के व्यापारिक बन्दरगाह स्थित हैं। तट के समीप ही ब्याफरा खाड़ी में स्पेन और पुर्तगाल के द्वीप 'फरननडोपो' और 'साउटामें' इत्यादि स्थित हैं, परन्तु ये ऐसे द्वीप नहीं है जिनकी सहायता से समुद्र तट पर सुरक्षित बन्दरगाह बन सकें।

नाइजीरिया नदी के मध्य भाग में 'राजा' नगर के आगे कई झरने हैं जिनके कारण बहुत दिनों तक इस नदी में आना जाना न हो सका। इसके अतिरिक्त नदी के डेल्टा को जल-वायु रोग वर्द्धक थी, जिसके कारण इस नदी के मुहाने पर कोई बड़ा बन्दरगाह न बन सका। नाइजीरिया की भांति 'कान्गो' भी झरनों से भरा पड़ा है। अतः यह आने जाने का साधारण मार्ग नहीं है। परन्तु अब ऐसे भागों मे रेलें बना दी गई हैं और नदी के भाग इन रेलों की सहायता से देश के भीतरी भागों में दूरदूर तक काम में आते हैं। 'कान्गो' नदी पर 'धोमा' और 'बनान' प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं जो कान्गो बेसिन को मुख्य उपज हाथी दांत, रबड़, कहवा, लकड़ी और तेल वाला ताड़ बाहर को भेजते हैं। नदी के मुहाने से कुछ दक्षिण को पुर्तगाली बन्दर 'लुआण्डा' स्थित है जो रुई और रबड़ का बन्दरगाह है। इससे दक्षिण का समस्त तट निर्धन और मरुस्थली है। अटलांटिक महासागर में समुद्र तट से बहुत दूर 'सेण्ट हेलीना' और असन्शन

नामक दो बृटिश द्वीप हैं। ये द्वीप वास्तव में ज्वालामुखी पहाड़ों की चोटियाँ हैं। तुम पढ़ चुके हो कि वह द्वीप जो समुद्र तट से बहुत दूर होते हैं और जो महाद्वीप से भूमि और बनस्पति इत्यादि में भिन्न होते हैं सामुद्रिक द्वीप कहलाते हैं। अब तुम बताओ कि स्थली द्वीप कैसे होते हैं ?

पश्चिमी तट का अन्तिम और सबसे बड़ा बन्दरगाह 'केपटाउन' (अन्तरीप का नगर) है जो आशा अन्तरीप के पीछे स्थित है।
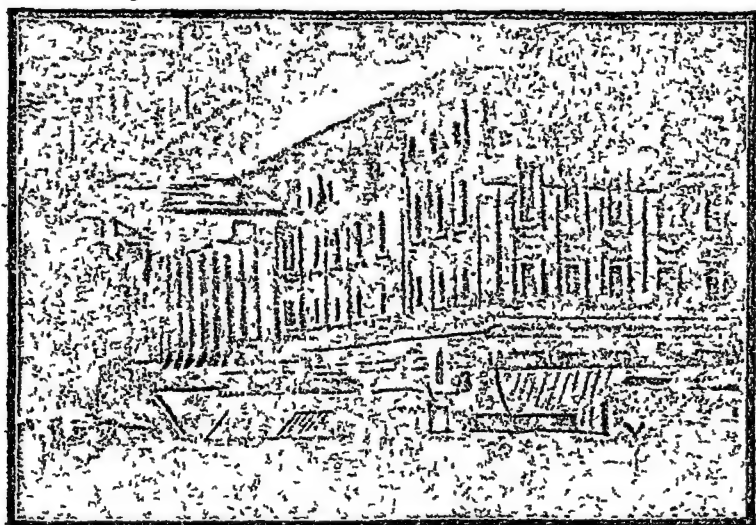
केपटाउन

जिसका हारबर प्राकृतिक है और इसका हिण्टरलैंड ताँबा, सोना, जवाहरात, ऊन, चमड़ा और फलों की उपज के कारण अधिक मालदार है। बन्दरगाह से गेहूँ के उपजाऊ व अच्छे खेतों और खानों

तक रेलें जाती हैं। यह दक्षिणी अफ्रीका के उपनिवेश की राजधानी है। केपटाउन के पूर्व में एक छोटी सी खाड़ी पर 'पोर्ट एलिजबेथ' स्थित है। इसकी प्रधानता भी लगभग वैसी ही है जैसी केपटाउन की। पोर्ट एलिजबेथ और पोर्ट डरबन (नेटाल) के पीछे ऊपर लिखित उपज के अतिरिक्त कोयला और लोहा भी पाया जाता है। यहाँ से बहुत सा कोयला हिन्दुस्तान को जाता है।

महाद्वीप के दक्षिण पूर्व में फ्रांसीसी द्वीप 'मेडेगास्कर' स्थित है यह बड़ा मालदार द्वीप है। इसके मध्य में लम्बी लम्बी पर्वत श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण को चली गई हैं। ये पर्वत द्वीप के पूर्वी तट से अधिक निकट हैं। मकर रेखा के ऊपर स्थित होने कारण गर्मियों (जनवरी) में हर जगह खूब वर्षा होती है। परन्तु जाड़ों (जुलाई) में केवल पूर्वी भाग में पानी बरसता है तथा जल-वायु गर्म-तर किन्तु एक सी रहती है। अब यहां की उपज तुम खुद बता सकते हो। कोको, नारियल, कहवा, केला, शक्कर, रुई, चावल, तम्बाकू यहाँ की मुख्य उपज है। पश्चिम की ओर ढोर पाले जाते हैं अतः खालों का व्यापार होता है और सोना भी खोदा जाता है। 'अण्टाना नरीवो' यहाँ की राजधानी और 'टमाटावे' बन्दरगाह हैं। ये दोनों रेलों से मिले हुये हैं। मेडेगास्कर के पूर्व मे फ्रान्सीसी द्वीप 'रय़ूनियन' और बृटिश द्वीप 'मारीशस' स्थित हैं और दोनों शक्कर के लिए प्रसिद्ध हैं।

इस महाद्वीप का पूर्वी दो तिहाई तट 'मुम्वासा' और पोर्ट 'एलिज़-बेथ' के मध्य मानसूनी प्रदेश में स्थित है और व्यापारिक प्रधानता रखता है। उत्तरी एक तिहाई भाग खुश्क और बेकार है। दक्षिणी भाग में

डेलागोवा और सोफला की खाड़ियों में बन्दरगाह लारेंज़ो मारक्किस और 'वीरा' स्थित हैं। ये दोनों रेलों के द्वारा भीतरी चरागाह कृषि प्रधान मैदानों और खानों से मिले हुये हैं। अब तुम विचार कर सकते हो कि ये कितने उपयोगी होंगे 'किलिमेन' जेम्बज़ी नदी के मुहाने
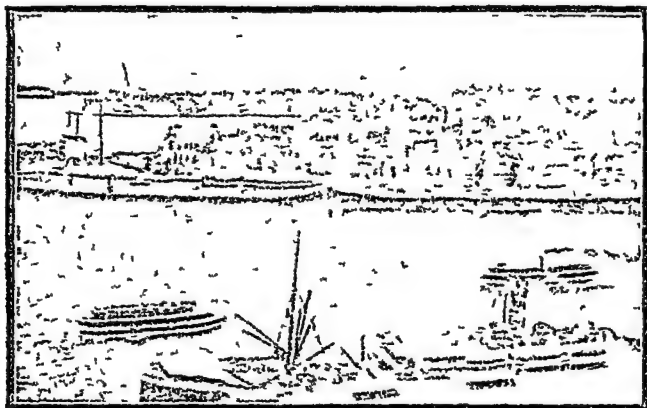
बीरा बन्दरगाह

पर स्थित है इसके पीछे जंगलों से रबड़ और हाथी दांत प्राप्त होता है। झील 'नियासा' के पश्चिम में रुई पैदा होती है। 'मुज़ाम्बीक़' अपने नाम के जल-संयोजक पर रबड़ का बन्दरगाह है। 'दारुस्लाम' टंगैनीका उपनिवेश का मुख्य बन्दरगाह है। यहाँ से एक रेल टंगैनीका झील के किनारे किगोमा तक चली जाती है। यहाँ से भी अन्य बन्दर-गाहों की भांति रबड़, नारियल, हाथी दाँत और चमड़ा बाहर को जाता है। 'जंजीबार' के बन्दरगाह से नारियल और लौंग लादी जाती है। 'कीनिया' उपनिवेश को मुम्बासा का बन्दर उतना ही उप-

योगी है जितना दारुस्लाम टंगैनीका उपनिवेश को। कीनिया में झील विक्टोरिया के किनारे सोना, हाथी दाँत, रुई और रबड़ अधिकता से होती है। इस भाग की उपज रेलों द्वारा मुम्बासा तक पहुँचा दी जाती है और फिर वहाँ से जहाजों पर लाद कर बाहर को भेजी जाती है।"

लालसागर का तट अधिकतर पहाड़ी और मरु-स्थली है। यहाँ की जल-वायु गर्म और खुश्क है इसलिये उपजाऊ और मालदार नहीं है। जल संयोजक 'बाबुलमन्दब' और नहर 'स्वेज' के मध्य मिस्री सूडान का बन्दरगाह 'स्वाकिन' स्थित है। यहाँ सीपी और मोती निकाले जाते हैं तथा इसके उत्तर में कुछ सोना भी पाया जाता है। निकटवर्ती मरु-स्थल प्रदेशों में एक प्रकार का गोंद अधिक पैदा होता है। बन्दरगाह से 'बरबर', 'हालफा' और 'खारतूम' तक रेलें गई हैं जिनसे इस बन्दरगाह की उपयोगिता का अनुमान हो सकता है।

प्राकृतिक दशा

धरातल और भूमि की बनावट में अफ्रीका आस्ट्रेलिया से अधिक मिलता जुलता है। समस्त महाद्वीप ठोस प्लेटो और पहाड़ों से घिरा हुआ है। तटीय मैदान बहुत पतले हैं और नदियों की बनाई हुई तंग घाटियों से मिले हुये हैं। तुम अपने प्राकृतिक नक़्शों में नील, नाइजर, सेनेगाल गेम्बिया, जिम्बज़ी, लिम्पोपो, काङ्गो और आरेञ्ज नदियों की घाटियों को देख सकते हो। ऐसा मालूम होता है कि नील और काङ्गो नदियों ने इस प्लेटो को दो भागों में बाँट दिया है। पश्चिमी भाग के प्लेटो अधिकतर नीचे और पूर्वी भाग के ऊँचे हैं। प्लेटो के किनारों पर

ऊँची ऊँची पहाड़ियाँ स्थित हैं। तुम नक़शे में 'न्यूवेल्ड', 'ड्रेकिंज्ञबर्ग 'मटापो' 'लिविंग्स्टन' 'क्लीमनजरो' 'अबोसीनियाँ' पहाड़ों को देख सकते हो। ये सब के सब एक ही सीध में चले गये हैं। बहुधा स्थान पर तटीय मैदानों से भीतर की ओर जाते हुये सीढ़ियों की भाँति कई प्लेटो मिलते हैं जिनको कैरूज़ कहते हैं। ये कैरूज़ नक़शे में तुम न्यूवेल्ड पहाड़ों के दक्षिण में देख सकते हो। यह समस्त पहाड़ी भाग ज्वाला मुखी से निकले हुये लावा का बना हुआ है। मानों एक बड़े उद्गार के पश्चात् पृथ्वी का लावा निकल कर इस समस्त महाद्वीप पर फैल गया है जिसके ऊपर नदियों ने अपनी घाटियाँ बनाली हैं। तुम इन नदियां को अपने नक़शे में देख सकते हो। नियासा, बंगव्यूलो म्यूरो, टंगानीका, विक्टोरिया, रूडाल्फ और टाना इत्यादि झीलों को भी देखो। ये दक्षिण से उत्तर तक एक ही श्रेणी में चली गई हैं मानों ये सबकी सब इस प्लेटो की 'रिफ्टवैली' (शिगाफ़दार घाटी) में बन गई हैं। लाल सागर, मुर्दार सागर, झीलवान, उर्मियाँ, कास्पियन, अरल, बाल्कश और ओबी की खाड़ी सबके सब इस घाटी में पैदा हो गये हैं। मरु-स्थल सहारा की झील 'चड' और कालाहारी की झील 'नगामो' अफ्रीका की अन्य झीलों के विरुद्ध खारी हैं। बताओ इसका क्या कारण है?

ऊँचे प्लेटों की एक शाखा उत्तर के नीचे प्लेटुओं के ऊपर सहारा के मध्य तक जाकर टसीली प्लेटो से मिल जाती है। दूसरी शाखा ने काङ्गो नदी को चारों ओर से घेर लिया है और काङ्गो नदी ने दक्षिण पश्चिम के कोने पर इसको काट कर अपना मार्ग बना लिया है।

पूर्वी प्लेटो के किनारे पर फ्यूटाजालान नामक पवत स्थित है जहाँ से सिनेगाल, गैम्बिया और नाइजीरिया नामक नदियाँ निकलती हैं। उत्तर में अटलस पर्वतों की श्रेणियाँ हैं। अटलस पर्वत वास्तव में यूरोप के एल्प्स पर्वतों के अन्तिम भाग हैं जिनको रूमसागर ने पृथक कर दिया है। ये पहाड़ नये तथा शिकनदार हैं और अफ्रीका के मध्य प्लेटो की श्रेणियाँ नहीं हैं। अटलस की श्रेणियों के मध्य बहुधा खारी पानी की झीलें पाई जाती हैं जिनको शाट्स कहते हैं।

खनिज पदार्थ तुम पढ़ चुके हो कि ज्वालामुखी पहाड़ों की चट्टानों में धातुयें प्रायः पाई जाती हैं। क्योंकि यह पिघल कर पृथ्वी के भीतर के लावा के साथ निकल जाती हैं और धरातल पर जम जाती हैं। तुम यह भी जानते हो कि कोयला और मिट्टी का तेल पानी के बनाये हुये कत्तलों मे पाया जाता है क्योंकि यह दोनो प्राचीन दबे हुये वनस्पति और पशुओं से उत्पन्न होते हैं। जो बहुधा शिकनदार पहाड़ों और प्लेटुओं के किनारों पर निकलते हैं। अफ्रीका में मिट्टी का तेल लिम्पोपो नदी की घाटी में निकलता है तथा टान्जियर और केपटाउन के पीछे भी पाया जाता है। तांबा दक्षिणी अफ्रीका और काङ्गो के बेसिन में, सोना दक्षिणी अफ्रीका के पूर्वी तट और गिनी कोस्ट पर, थोड़ा बहुत लाल सागर के तट पर, स्वाकिन के उत्तर में और झील विक्टोरिया के इर्द गिर्द पाया जाता है। कोयला दक्षिणी और मध्य अफ्रीका की झीलों एवं नदियों के पेटों में पाया जाता है। विशेष कर ट्रांसवाल, आरेञ्ज, फ्रीस्टेट और नेटाल में अधिकता से खोदा जाता है। अलजीरिया के

अटलस पहाड़ों में भी कोयला और तांबा निकलता है।

नदियाँ अफ्रीका की नदियाँ प्रायः ऊँचे पहाड़ों से निकल कर बहुत दूर तक चपटे और इकसार प्लेटो पर बहती हैं; किन्तु जब नीचे मैदानों मे जाती हैं तो उनको नीचे प्लेटुओं पर इस प्रकार उतरना पड़ता है जैसे मेह का पानी जीने की सीढ़ियों पर से नीचे को गिरता है अतः अफ्रीका की प्रायः नदियों में झरने पाये जाते हैं। ये नदियाँ आदि से अन्त तक तो आने जाने के योग्य नहीं हैं परन्तु भिन्न भिन्न भागों के अधिकतर हिस्सों में नावें चलाने के काम आती हैं।

नील नदी को देखो इसमें शहर असुवाँन से शहर खरतूम तक (जो सफेद नील और नीले नील के सङ्गम पर स्थित है) छै झरने हैं। मध्य भाग में अधिकांश स्थानों पर नरकुल और बेंत इत्यादि ने नदी का मार्ग आने जाने के योग्य नहीं रक्खा है। फिर भी तुम यह देख कर आश्चर्य करोगे कि इस नदी के किनारे हलफा, बरबर, खरतूम इत्यादि प्रसिद्ध व्यापारिक शहर उत्पन्न हो गये हैं। नक़शे में देख कर बताओ कि खरतूम और हलफा के मध्य रेल बनाये जाने का क्या मुख्य लाभ है। राबा के उत्तर में नाइजर नदी है जिसमे मगर और हिपापोटामस (दरियाई घोड़ा) बहुत पाये जाते हैं जिनसे यह नदी बहुत खतरनाक है। इसमें भी झरने हैं
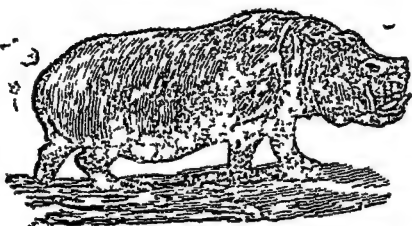
हिपापोटामस

परन्तु इसके किनारे टिम्बकटू, राबा इत्यादि प्रसिद्ध व्यापारिक नगर हैं। कान्गो नदी अफ्रीका की बड़ी प्रसिद्ध नदी है यह आमेज़न की भाँति दोनों ऋतुओं में पानी से भरी रहती है। जब विषुवत रेखा के उत्तर में वर्षा होती है तो इसकी उत्तरी सहायक नदियाँ बहुत सा पानी लाकर इसमें डाल देती हैं और जब दक्षिण में वर्षा होती है तो

विक्टोरिया प्रपात

दक्षिणी सहायक नदियाँ वर्षा का पानी लाकर इसे भर देती हैं; परन्तु पानी की अधिकता के होते हुये भी इस नदी में कई स्थानों पर झरने हैं और नदी में नावों का चलना कठिन है। इसलिये व्यापार में सुगमता के लिये इसके मुहाने के निकट बोमा से 'ल्यूपोल्डविल' तक रेल की एक लाइन बना दी गई है और जहाँ नदी के द्वारा आना

जाना नहीं हो सकता वहाँ रेल के द्वारा होता है। जेम्बजी का विक्टोरिया नामक झरना तो लगभग ३५० फीट की ऊँचाई से गिरता है। उसके पानी के गिरने का शब्द कई मील तक सुनाई पड़ता है और दूर से देखने में पानी दूध के झागों की तरह सफेद और सुन्दर मालूम होता है। जेम्बजी के किनारे पर 'टीटी' प्रसिद्ध नगर और 'कोलिमेन' प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

तुम अपने नक़शे में उन नदियों के निकलने और गिरने के स्थानों को अच्छी तरह देखो और इस बात के समझने का प्रयत्न करो कि इन नदियों के कौन कौन से भाग हैं। हर भाग में नदी मनुष्य के किस किस काम में आती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—अफ्रीका को अन्ध-महाद्वीप क्यों कहते हैं?

२—अफ्रीका की नदियाँ आने जाने के योग्य हैं या नहीं? यदि नहीं तो क्यों?

३—नील, काङ्गो, नाइजर नदियों में से किसी एक का संक्षिप्त हाल बताओ और यह भी बताओ कि वह मनुष्य के लिये किस प्रकार उपयोगी है?

४—अफ्रीका की नदियों के मार्गों को किस प्रकार उपयोगी बनाया गया है तथा किसी नदी का उदाहरण देकर समझाओ?

५—काङ्गो नदी और आमेज़न नदी के बेसिनो की तुलना करो?

६—अफ्रीका के पूर्वी तट के बारे में तुम क्या जानते हो? तुम्हारी राय में इस तट का कौन सा भाग सबसे अधिक मालदार है कारण सहित बताओ?

७—अफ्रीका में मीठे और खारी पानी की झीलें कहाँ कहाँ पाई जाती हैं और उनमें से चार मुख्य झीलों का संक्षिप्त हाल बताओ ?

८—अफ्रीका की प्राकृतिक दशा के बारे में तुम क्या जानते हो ?

अफ्रीका की जल-वायु, बनस्पति, पशु और निवासियों के उद्यम

जल-वायु

किसी स्थान की जल-वायु के अध्ययन के लिये हमको कौन कौन से भौगोलिक नियम ध्यान में रखना आवश्यक है और उनमें से कौन कौन से नियम अफ्रीका की जल-वायु मालूम करने के काम में लाना चाहिये ? आओ आज इस विषय पर विचार करें।

तुम अपना नकशा देखकर यह मालूम कर सकते हो कि महाद्वीप अफ्रीका लगभग ३७ अंश उत्तर अक्षांश और ३५ अंश दक्षिण अक्षांश के मध्य फैला हुआ है। विषुवत रेखा इसके बीच में होकर गई है जहाँ अत्यन्त वर्षा होती है यह बात स्पष्ट है कि इसका अधिकतर भाग उष्ण कटिबन्ध में स्थित है और शीतोष्ण कटिबन्ध में बहुत कम। अतः यह महाद्वीप गर्म कहा जा सकता है। परन्तु पिछले पाठ में तुमने पढ़ा है कि अफ्रीका के दक्षिण और पूर्वी प्लेटो अधिक ऊँचे हैं। इसलिए इस महाद्वीप के ऊँचे प्लेटुओं की जल-वायु ठंडी रहती है। यही कारण है कि कीनियां, टंगैनिका और दक्षिणी अफ्रीका की आरोग्य-वर्धक जल-वायु में अंग्रेजों ने अपनी नई बस्तियाँ बसाई हैं।

अन्य महाद्वीपों के समान अफ्रीका में भी कर्क और मकर रेखाओं की शान्त हवाओं की पट्टियों में सहारा और कालाहारी के मरु-स्थल स्थित हैं। कारण यह है कि इस पट्टी में हवा का दबाव अधिक होता है और हवायें ऊपर से पृथ्वी के धरातल पर उतर कर गर्म और खुश्क हो जाती हैं जिससे वर्षा नहीं होती। कड़ी जल-वायु के कारण इस भाग की चट्टानें टूट कर चूर चूर हो जाती हैं और मरु-स्थल बन जाते हैं। सहारा और कालाहारी में जो हवायें चलती हैं वे खुश्क होती हैं। इसलिये दिन में अत्यन्त गर्मी और रात में कड़ी सर्दी होती है। कर्क रेखा के उत्तर और मकर रेखा के दक्षिण में शान्त हवाओं की पट्टियां होती हैं जो गर्म और सर्द मौसमों में उत्तर और दक्षिण की ओर खिसकती रहती हैं। इन भागों में गर्मियों में खुश्क ट्रेड हवायें और जाड़ों में दक्षिणी-पश्चिमी और उत्तरी-पश्चिमी तर हवायें चलती हैं। इस कारण यहाँ की जल-वायु 'रूमी' हो जाती है। अतः अफ्रीका में अटलस पर्वत और आशा अन्तरीप के भूखंडों में रूमी जल-वायु पाई जाती है।

अफ्रीका के रीजन्स

सूर्य कभी कर्क और कभी मकर रेखा पर सीधी किरणें डालता है इसलिये अफ्रीका की वर्षा दो बातों पर निर्भर है :—

(१) उत्तरी और दक्षिणी अफ्रीका में ऋतुओं का परिवर्तन।

(२) उत्तरी और दक्षिणी अफ्रीका के ताप क्रम में लौट-फेर।

इसलिये हम अफ्रीका को जल-वायु के विचार से पांच रीजन्स में विभाजित कर सकते हैं :—

१. विषुवतीय जल-वायु का रीजन—साधारणतः सूर्य की किरणें विषुवत रेखा के १० अंश उत्तर और १० अंश दक्षिण लम्ब-रूप में पड़ती हैं। इस भाग की भाप गर्म होकर ऊपर को उठती और फैलती है तथा ऊपर पहुँच कर यह वायु ठंडी हो जाती है। वायु के ठंडी हो जाने के कारण वर्षा हो जाती है। अतः इस भाग में साल भर वर्षा होती है। विषुवत रेखा के दोनों ओर स्थित होने के कारण हम इस रीजन को विषुवतीय जल-वायु का भूखण्ड कहते हैं।

२. सुडानी जल-वायु का रीजन—जुलाई में जब सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर सीधी पड़ती हैं तो सहारा का मरुस्थल अत्यन्त गर्म हो जाता है। इसके ऊपर की हवा गर्म होकर हल्की हो जाती है और हवा का दबाव कम हो जाता है। अतः अटलांटिक और हिन्द महासागर के ऊपर की हवा इस ओर चलने लगती है। काङ्गो, अबीसीनियाँ और कैमरून पर्वतों के कारण 'अबसीनियाँ' तथा 'सुडान' में वर्षा हो जाती है। जनवरी में इस भाग में महाद्वीप एशिया की ओर से सर्द और खुश्क ट्रेड हवायें चलती हैं इसलिये वर्षा नहीं होती। यह भाग लगभग १० अंश उत्तर और २० अंश उत्तर के मध्य स्थित है, चूँकि ऐसी जल-वायु सुडान में पाई जाती है इसलिये हम इसको सुडानी जल-वायु कहते हैं।

ऐसी जल-वायु विषुवत रेखा के दूसरी ओर १० अंश दक्षिण और २० अंश दक्षिण के मध्य भी पाई जाती है। जनवरी के महीने में मकर रेखा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं और हिन्द महासागर की दक्षिणी पूर्वी ट्रेड हवायें जिम्बज़ी नदी के बेसिन में घुस आती हैं

इसलिये वर्षा भी होती है और गर्मी भी। जाड़े (जुलाई) में यहाँ वर्षा नहीं होती क्योंकि हवा का दबाव इस भाग में अधिक हो जाने के कारण हवायें इस भाग से चारों ओर को चलने लगती हैं।

३. गर्म खुश्क मरु-स्थली रीजन—खुश्क मरु-स्थली जल-वायु सहारा और कालाहारी के मरु-स्थलों में पाई जाती है। मरु-स्थल सहारा में जुलाई के महीने में हिन्द महासागर की हवा अबीसीनियाँ पर और अटलाँटिक महासागर की हवा काङ्गो और कैमरून पर्वतों पर पानी बरसाती है। किन्तु भीतरी सहारा में पहुंच कर गर्मी के कारण और भी खुश्क हो जाती है। जनवरी में खुश्क ट्रेड हवायें महाद्वीप एशिया के ऊपर होकर आती हैं इसलिये दोनों ऋतुओं में वर्षा नहीं होती।

ऐसी जल-वायु कालाहारी मरु-स्थल में पाई जाती है। यहाँ हिन्द महासागर की दक्षिणी पूर्वी ट्रेड हवायें चलती हैं जो ड्रेकिन्सबर्ग पर्वतों से टकरा कर पहाड़ों के पूर्व में पानी बरसा देती हैं। परन्तु जब आगे बढ़ती हैं तो पहाड़ों से नीचे उतर कर खुश्क हो जाती हैं इसलिये यह भाग खुश्क रहता है।

४. रूम सागरीय जल-वायु का रीजन—जुलाई में अटलस रीजन में उत्तरी-पूर्वी ट्रेड हवायें चलती हैं क्योंकि सूरज की सीधी किरणें कर्क रेखा पर पड़ती हैं और शान्त हवाओं की पट्टी ४५ अंश उत्तर को खिसक जाती है किन्तु जब जनवरी आती है तो सूर्य मकर रेखा पर सीधी किरणें डालने लगता है और यह पट्टी २४ अंश उत्तर अक्षांस पर वापिस आ जाती है। अतः अटलस रीजन में दक्षिणी

पश्चिमी हवाय अटलांटिक महासागर के ऊपर चल कर वर्षा लाती हैं। ऐसी जल-वायु आशा अन्तरोप के निकटवर्ती प्रदेश में भी पाई जाती है।

५. सम जल-वायु का रीजन—शीतोष्ण घास के मैदानों की जल-वायु दक्षिणी अफ्रीका के पठारों पर मिलती है। इन पठारों की जल-वायु मैदानों की अपेक्षा ठंडी होती है। यदि ये पठार इतने ऊँचे न होते तो इनकी जल-वायु भी इतनी ठंडी न होती।

वनस्पति अफ्रीका की जल-वायु के अनुसार विषवत रेखा के उत्तर और दक्षिण में समान प्रकृति के वनस्पति-प्रदेश पाये जाते हैं। जिनके भाग और नाम निम्न प्रकार हैं:—

१. गर्म तर विषुवतीय जंगल—काङ्गो-बेसिन, गिनी-तट, मेडेगास्कर द्वीप और अफ्रीका का पूर्वी तट जो कर्क और विषुवत रेखाओं के मध्य स्थित है अत्यन्त गर्म व तर रहते हैं तथा सदैव घने विषुवतीय जंगलों से ढके रहते हैं। ये घने जंगल आमेजन की घाटी और पूर्वी द्वीप समूह में भी पाये जाते हैं। इनका हाल तुम कई बार पढ़ चुके हो, अच्छा जो कुछ तुमने पढ़ा है उसको दुहराओ। यहां आबनूस, रबड़, महोगनी और ताड़ के ऊँचे ऊँचे सदा बहार वृक्ष अधिक पैदा होते हैं। सदा बहार बेलें जिनमें चटकीले रंग के फूल आते हैं इन वृक्षों के चारों ओर लटकी रहती हैं। भूमि पर छोटे छोटे वृक्ष और भांति भाँति की घास उगती है। यहां तरी बहुत रहती है जिसके कारण भूमि और वृक्षों के तने भी रंगीन फूलदार काई से ढक जाते हैं। ये जंगल अत्यन्त दुर्गम और अन्धकार मय होते हैं।

अफ्रीका की वार्षिक वर्षा

१. = वर्षा २० इञ्च से कम
२. = ,, २० ,, से ४० इञ्च तक
३. = ,, ४० ,, से ६० ,,
४. = ,, ६० ,, से १२० ,,
५. = ,, १२० ,, से ज्यादा
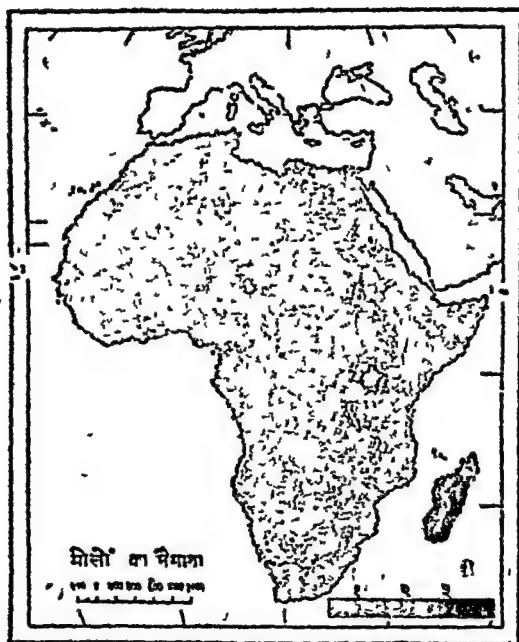
अफ्रीका की वनस्पति

१. गर्म मरु-स्थल, जहाँ कहीं कहीं नख़लिस्तान हैं और जिनके किनारों पर थोड़ी घास पाई जाती है।

२. घास से भरी जमीन, जहाँ कहीं कहीं ख़ास कर नदियों के किनारों पर जङ्गली पेड़ भी हैं।

३. घने जङ्गल।

अतः इनके भीतरी भागों में कीड़े, ज़हरीले साँपों और बिच्छुओं के अतिरिक्त कोई जानवर रहना पसन्द नहीं करता। किन्तु बन-मानुष

बनमानुष

कुत्ते की शक्ल के, छोटी पूँछ वाले बेबून और भांति भांति के बन्दर तथा सुन्दर रंग बिरंगे पक्षी अधिकतर वृक्षों ही पर रहते हैं और पृथ्वी पर नहीं उतरते। जहां जंगल काट कर भूमि साफ करली है वहां केला, कोको, कहवा, शकरकन्द, मूँगफली इत्यादि की खेती होती है। कांङ्गो की घाटी में हबशी जाति के बौने मनुष्य रहते हैं जो अधिक तर शिकार, मछलियों, जंगली जानवरों और फलों पर जीवन निर्वाह करते हैं। प्रायः ये लोग हाथियों का शिकार करके कई गावों को नेवता दे देते हैं और खूब खाते पीते तथा नाचते गाते हैं। इनमें सभ्यता का अंश भी नहीं है, साधारणतः ये लोग नंगे रहते हैं केवल कमर के चारों ओर घास की बुनी हुई चटाई अथवा कपड़े को बाँध लेते हैं।
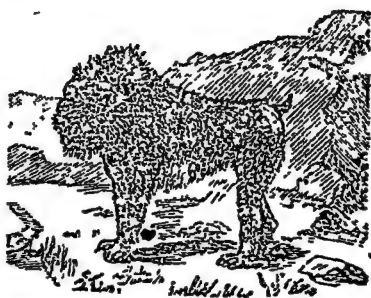
बेबून

२. सवाना (लम्बी घास के मैदान)—विपुवतीय रोजंन के उत्तर और दक्षिण में ऐसे गर्म-सम जल-वायु के भूखण्ड पाये जाते हैं जिनमें केवल गर्मी की ऋतु में वर्षा होती है। कम वर्षा और अधिक गर्मी के कारण यहाँ लम्बी लम्बी घास होती है अतः इसको सवाना प्रदेश भी कहते हैं। यह भाग पश्चिम में अटलांटिक समुद्र तट से पूर्व मे अबीसीनियाँ तक फैला हुआ है। उत्तर में नाइजर और अतबारा नदियों की घटियों तथा झील चाड की नीची भूमि तक फैला हुआ है। घास के कारण यहाँ हिरन, ज़ेबरा, ज़राफ, गेंडे इत्यादि अधिकता से पाये जाते हैं, जिनके शिकार को शेर बबर जंगल और घास के मैदानों में घूमा करते हैं। यहाँ शुतुर्मुर्ग और इसी तरह के बड़े बड़े पत्ती भी मिलते हैं। यहाँ के निवसी सुडानी हवशी, कांगो के हवशियो से अधिक बलवान, लम्बे, चौड़े और सभ्य होते हैं। ये अधिकतर गल्लाबानी करते हैं। जहाँ पानी मिल सकता है वहाँ मक्का, बाजरा, कपास और केले की खेती करते हैं।
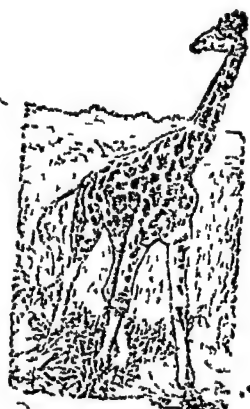
ज़राफ

शेर बबर

३. मरु-स्थल—तुम पढ़ चुके हो कि साधारणतया हवा के

अधिक दबाव वाली पट्टियों में मरु-स्थल पाये जाते हैं। अफ्रीका में सहारा और कालाहारी दो रेगिस्तान हैं जिनमें से सहारा सवाना के उत्तर में महाद्वीप के आर पार पूर्व से पश्चिम तक चला गया है। तुम इस मरु-

अफ्रीका का गैंडा

स्थल का प्रसिद्ध नीचा भाग चाड बेसिन और बड़े बड़े नखलिस्तान
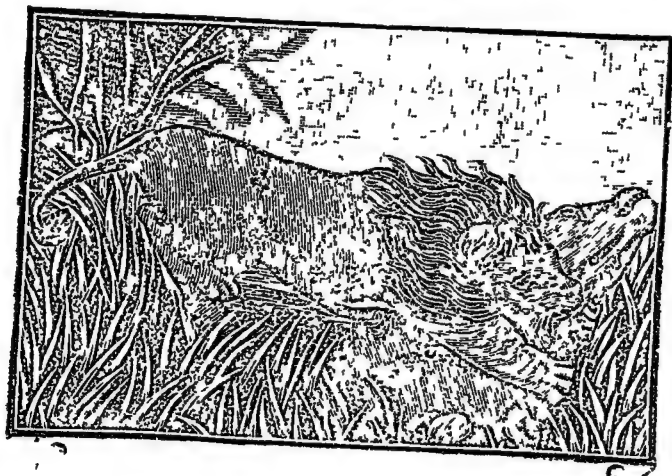
जङ्गल में शेर बबर का शिकार पर झपटना

अपने नक़शे में देख सकते हो। मरु-स्थल में कोई अधिक उपयोगी वनस्पति नहीं होती। केवल कांटेदार झाड़ियाँ (बबूल या नागफनी) होती है जिनकी पत्तियाँ कड़ी होती हैं और अपने भीतर पानी को जमा रख सकती हैं या जिनकी जड़ें लम्बी होती हैं जो अधिक

गहराई से नमी प्राप्त कर सकती हैं ; किन्तु जहाँ सोते आदि होते हैं वहाँ नखलिस्तान पैदा हो जाते हैं जिनमें ज्वार, बाजरा की खेती होती है और खजूर पैदा होते हैं। जानवरों को थोड़ी सी घास भी मिल-जाती है। अतः ऊँट, भेड़, बकरी अधिकतर चराये जाते हैं।

अफ्रीका का ऊँट

नील नदी की घाटी को वास्तव में मरु-स्थल सहारा का एक नखलिस्तान ही कहना चाहिए। इसके दोनों किनारों पर कपास, गन्ना, रुई और गेहूँ पैदा होता है। परन्तु सींचे हुये क्षेत्र के बाहर दोनों ओर खुश्क रेगिस्तान स्थित हैं। अफ्रीका के दक्षिण का मरु-स्थली भाग कालाहारी के नाम से प्रसिद्ध है। कालाहारी की प्रकृति और विशेषतायें सहारा मरु-स्थल से मिलती जुलती हैं। सहारा के चाड बेसिन की तरह इस मरु-स्थल में झील निगामी के आस पास एक नीचा प्रदेश है, जिसमें छोटी छोटी नदियाँ बहती हैं।
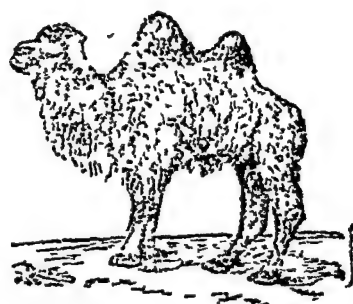
बकरी

गर्म-शीतोष्ण घास के मैदान—कालाहारी मरुस्थल के पूर्व में हिन्द महासागर से आने वाली ट्रेड हवायें वर्षा लाती हैं।

इस लिये मरु-स्थल से लेकर समुद्र-तट के निकट तक गर्म और शीतोष्ण जल-वायु पाई जाती है। इस भाग में गर्म शीतोष्ण घास के

अफ्रीका में ज़ेवरा का झुण्ड
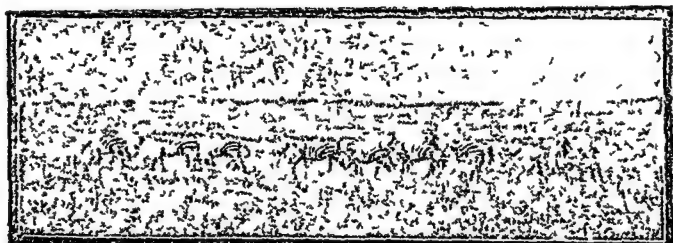
मैदान हैं जिनमें ढोर और भेड़ें पाली जाती हैं अतः खेती भी होती है और मोटे अनाज पैदा होते हैं।

आशा अन्तरीप में शुतुर्मुर्ग की गल्लेबानी

४. गर्म शीतोष्ण जंगल—गर्म-शीतोष्ण घास के मैदान के

पूर्व में समुद्र-तट पर गर्म-शीतोष्ण जंगल पाये जाते हैं क्योंकि यहाँ वर्षा अधिक होती है।

६. रूम सागरीय जल-वायु के प्रदेश—जहाँ जाड़ों में वर्षा होती है और गर्मियों में खुश्की रहती है, ऐसे प्रदेश उत्तरी-पश्चिमी और दक्षिणी पश्चिमी तटों पर पाये जाते हैं। तुम्हें याद रखना चाहिये कि अटलस रीजन जनवरी में और आशा अन्तरीप के भाग में जुलाई में वर्षा होती है। जहाँ की मुख्य उपज गेहूँ, मक्का और रूमी जल-वायु के फल हैं तथा पहाड़ों पर भेड़ें पाली जाती हैं। आशा अन्तरीप के भाग में पहले शुतुर्मुर्ग अधिक पाले जाते थे जिनके पर टोपियाँ इत्यादि बनाने के काम में आते थे, किन्तु अब यह व्यापार कम होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—प्राकृतिक वनस्पति के विचार से अफ्रीका को किन किन भागों में विभाजित कर सकते हो और प्रत्येक भाग की जल-वायु का संक्षिप्त वर्णन करो ?

२—अफ्रीका के दक्षिण पश्चिम में मरु-स्थल क्यों स्थित हैं ?

३—अफ्रीका के वे भाग बताओ जहाँ केवल गर्मी या जाड़ों में वर्षा होती है ?

४—अफ्रीका की जल-वायु का संक्षिप्त वर्णन करो।

५—अफ्रीका के नक्शे में नीचे लिखी बातें बताओ :—

(क) कर्क रेखा, मकर रेखा, विषुवत रेखा ?

(ख) नील, नाइजर, कांगो और ज़िम्बजी।

(ग) सहारा और बड़े जङ्गलों के चिन्ह ।

(घ) रूम सागरीय जल-वायु प्रदेश ।

(ङ) शीतोष्ण घास के मैदान और गर्म-तर विषुवतीय जङ्गल ।

अफ्रीका के प्राकृतिक रीजन्स तथा राजनैतिक भाग

अफ्रीका के प्राकृतिक रीजन्स और राजनैतिक भागों के नक़शों की तुलना करो और देखो कि कौन कौन से देश किस किस प्राकृतिक भाग में स्थित हैं। ऐसा करने से तुमको यहाँ की भोगोलिक दशा मालूम करने में सुविधा होगी।

१. विषुवतीय गर्म-तर रीजन के देश

इस रीजन में बेलज़ियन-काङ्गो, फ्रान्सीसी विषुवतोय अफ्रीका, और गिनी कोस्ट के भिन्न भिन्न यूरोपियन राज्य सम्मिलित हैं।

बेलजियन-काङ्गो मध्य अफ्रीका में हजार डेढ़ हजार फुट ऊँचाई का एक प्लेटो है जो चारों ओर से ऊँचे ऊंचे प्लेटुओं से घिरा हुआ है। इस नीचे प्लेटो में कांगो नदी दक्षिण से उत्तर को बहती है और स्टैनली फाल्स पर विषुवत रेखा को पार करती है। अन्त में पश्चिम और दक्षिण की ओर बहती हुई ऊँचे प्लेटो को काटकर अटलांटिक महासागर में गिरती है। विषुवत रेखा के दोनों ओर से आने वाली नदियां इसको सारे वर्ष पानी से भरा रखती हैं। जब विषुवत रेखा के उत्तर में गर्मी और

बरसात की ऋतु होती है तो उत्तरी सहायक नदियाँ पानी लाती है और जब दक्षिण में गर्मी तथा बरसात होती है तो दक्षिणी। कांगो नदी अधिकांश भाग में आने जाने के काम की है किन्तु जहाँ झरने हैं वहां नहीं। नदी के मुहाने के पास स्टैनली कुंड ढूँढ़ो और देखो कि 'कांगो' और 'ल्यूपोल्डविल' तक रेल बनाकर दरियाई रास्ते को किस तरह पूरा किया गया है। तुम यहाँ की जल-वायु और पैदावार का हाल पहिले पढ़ चुके हो एक बार उसे फिर दुहराओ।

याद रक्खो यहाँ की मुख्य उपज हाथी दाँत और कहवा है। रबड़ अब कम पैदा होता है क्योंकि लालची लोगों ने रबड़ के लिए इन वृक्षों को काट कर नष्ट कर डाला है। ताड़ का फल और तेल अधिकता से बाहर को भेजा जाता है, जहाँ इससे सुगन्धित साबुन और सिर में डालने के तेल बनाये जाते हैं। किसी किसी वृक्ष से 'कोपाल' नामक गोंद अर्थात् वार्निश निकाली जाती है। देश के दक्षिण में 'कटङ्गा' के प्लेटो पर 'एलजबेथ विल' पर तांबे की खाने हैं जो दारुस्सलाम और बीरा से रेल द्वारा मिली हुई हैं।

गिनी कोस्ट इस पर बृटिश नाइजीरिया, गोल्ड कोस्ट उपनिवेश और बहुत सी फ्रान्सीसी रियासतें स्थित हैं जिनको तुम अपने नक्शे में देख सकते हो। इस समस्त भाग में नीचे तटीय मैदान और उसके पीछे प्लेटो स्थित हैं। जल-वायु गर्म-तर और मानसूनी है तथा मैदान की जल-वायु रोग वर्द्धक है। इसी कारण यह भाग कभी सफेद जातियों की कब्र के नाम से प्रसिद्ध था। तटीय मैदान की मुख्य उपज महोगनी, आबनूस, ताड़ का तेल, रबड़, कोको

और कोला (सुपारी) है और प्लेटो पर खेती होती है तथा ज्वार, मक्का, धान और कहीं कहीं रुई पैदा होती है। गोल्ड कोस्ट और नाइजीरिया में सोना खोदा जाता है। इस समुद्र तट के प्रसिद्ध बन्दरगाह 'फ्रीटाउन' 'सेकोंडी', 'लैगोस' हैं जिनसे भीतरी देश में रेलें जाती हैं और माल लादा जाता है।

२. सुडान अर्थात् गर्म-शीतोष्ण घास (सवाना) के प्रदेश:—

नील नदी जिस प्रकार हिन्दुस्तान में सिन्ध प्रान्त का उपजाऊ होना इन्डस नदी पर निर्भर है उसी प्रकार अफ्रीका में मिस्र नील नदी के कारण हरा भरा है। यदि ये दोनों नदियाँ न होतीं तो ये दोनों भाग उजाड़ मरु-स्थल होते। नील नदी संसार की सबसे बड़ी नदियों में गिनी जाती है। सफेद नील विक्टोरिया झील से निकलती है जो विषुवत रेखा पर स्थित है। यह झील अफ्रीका के मध्य प्लेटो में है, जहाँ लगभग सर्वत्र वर्षा होता रहती है। सफेद नील विक्टोरिया से निकल कर बहुत से झरने बनाती हुई उत्तर में 'बहरुल-गिजाल' नदी के मैदान में बहती है। इस चपटे मैदान में बहरुल-गिजाल के अतिरिक्त बहुत सी छोटी छोटी नदियाँ आकर इस नदी में मिल जाती हैं और सफेद नील आगे बढ़ कर 'खरतूम' के स्थान पर नील अज़रक (नीला) से मिल जाती है। सफेद नील बहरुल-गिज़ाल के मैदान में एक हजार मील आने जाने के काम आती है। परन्तु खरतूम से आगे असुआन तक यह छै स्थान पर ऊंचे प्लेटुओं से नीचे उतरती है और नावें चलाने के काम की नहीं है।

नील अरज़क में भी आना जाना होता है। यह नदी अबीसीनियाँ पहाड़ों की एक झील से निकलती है। अबीसीनियाँ पर्वत पर गर्मी की ऋतु में बर्फ़ पिघलती है और अधिक वर्षा होती है। अतः नील अरज़क में जुलाई और अगस्त में बहुधा बाढ़ आ जाती है। बाढ़ का पानी असुवाँन डाम द्वारा रोक लिया जाता है और आवश्यकता के समय सिंचाई के काम में लाया जाता है। नदी की लाई हुई मिट्टी से मिस्र की भूमि अधिक उपजाऊ हो गई है। इसलिए प्रायः कहा जाता कि मिस्र नील नदी का पुरष्कार है।

नील सफ़ेद और नील अरज़क दोनों ही बड़ी काम की नदियाँ हैं। दोनों सुडान के दरियाई रास्ते हैं और दोनों सुडान तथा मिस्र की उन्नति के कारण हैं।

ऐंग्लो-इजिप्शियन सुडान

यह बृटिश साम्राज्य का एक नया उन्नतिशील प्रदेश है। इसका क्षेत्र फल हिन्दुस्तान से आधा होगा, किन्तु यहाँ की आबादी केवल ६० लाख है। दरिया बरार जमीन उपजाऊ है और रुई खूब पैदा होती है। आशा की जाती है कि एक दिन सुडान भारतवर्ष से अच्छी और अधिक रुई पैदा कर सकेगा। सन् १९२५ ई० में शहर खारतूम के दक्षिण पूर्व में नील अरज़क पर सेनार डाम बनवाया गया है और बाढ़ का पानी इस डाम में रोक कर कपास की सिंचाई के काम में लाया जाता है। खारतूम यहाँ का मुख्य नगर है और नील नामक नदियों के संगम पर स्थित है। यहाँ से एक रेल हलफ़ा तक जाती है जो नील के टूटे हुये दरियाई रास्ते को जोड़ती है। दूसरी

रेल पोर्ट सुडान तक जाती है। पोर्ट सुडान लाल सागर पर बन्दरगाह है। यहाँ से रुई, गोंद और ज्वार बाहर को जाती है और छोटी छोटी आवश्यक वस्तुयें अन्दर आती हैं। 'बरबर' अतबारा और नील नदी के संगम पर व्यापारिक नगर है।
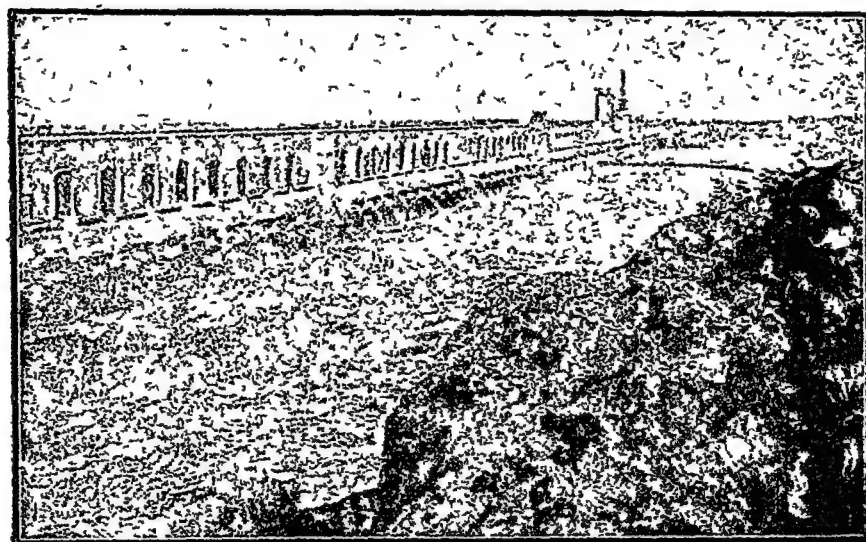
सेनार डाम

अबीसीनियाँ एक पहाड़ी प्रदेश है और अत्यन्त अवनति शील देश है। यहाँ के ईसाई निवासी अधिकतर ऊंटों, भेड़ों और बकरियों के चरवाहे हैं। अबीसीनियाँ की राजधानी 'ऐलिड अबाबा' मध्य देश में स्थित है। और उत्तर पूर्व में बाबुल-मन्दब जल-संयोजक के फ्रांन्सीसी बन्दरगाह जिबूटी से रेल द्वारा मिला हुआ है।

मिस्र

एक स्वतन्त्र देश है और लगभग दकन के बराबर है। उसके मध्य में नील नदी की १० मील चौड़ी घाटी उत्तर से दक्षिण तक चली गई है और उसके दोनों ओर ऊंची ऊंची चट्टानें खड़ी हैं। नदी की घाटी और डेल्टे के उपजाऊ होने का अनुमान तुम इस प्रकार कर सकते हो कि भारतवर्ष की अच्छी से अच्छी भूमि में ६०० आदमी प्रति वर्ग मील से अधिक आबाद
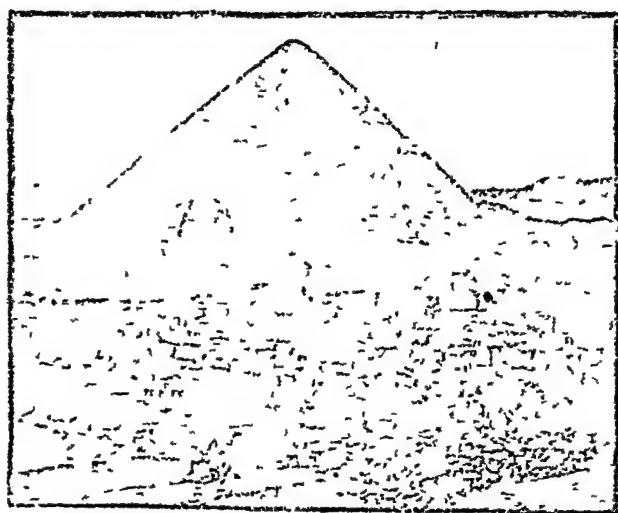
मिश्र के पिरामिड

नहीं हैं, किन्तु यहाँ की आबादी लगभग १००० आदमी प्रति वर्ग मील है। जाड़ों के समय डेल्टे में हलकी वर्षा हो जाती है और नहरों से भी सिंचाई होती है। ऊपरी घाटी में असुवाँन डाम की नहरों से सिंचाई होती है। मिस्र की मुख्य उपज रुई है। यह रुई हिन्दुस्तानी

रूई से अधिक अच्छी होती है। मक्का, गेहूँ, जौ और दालें भी पैदा होती हैं शक्कर और चावल कम होता है। 'काहरा' यहाँ की राजधानी और मुख्य बन्दरगाह है जो डेल्टा के आगे सिरे पर बसा हुआ है। इसके निकट प्राचीन राजाओं के स्मृति चिन्ह महल और पिरामिड हैं। पिरामिड नामक समाधि भवन में प्राचीन राजाओं की लाशें अभी रक्खी हुई हैं और बिगड़ी नहीं हैं।

'स्केन्ड्रिया' यहाँ का प्रसिद्ध बन्दरगाह है जहाँ से कच्ची रुई और बिनौला बाहर को जाता है। कोयला, लकड़ी, रुई का कपड़ा, लोहे और फौलाद की वस्तुयें बाहर से आती हैं इन शहरों से आने जाने वाली रेलें तुम अपने नक़शे में देख सकते हो।

पूर्वी अफ्रीका इसमें युगांडा, कीनियां टंगैनीका और न्यासालैन्ड की बृटिश नौ आबादियां और पुर्तगाली पूर्वी अफ्रीका की नौ आबादी सवाना या सुडानी जल-वायु के भाग में स्थित हैं। पूर्वी अफ्रीका के दो प्राकृतिक भाग किये जा सकते हैं।

(१) तटीय मैदान जो ऊँचे प्लेटों और समुद्र के मध्य स्थित है।
(२) ऊँचे प्लेटो।

पूर्वी अफ्रीका की कुल पुर्तगाली नौ-आबादी तटीय मैदान में स्थित हैं। यहाँ गन्ना, रबड़ और नारियल अधिक पैदा होता है। कीनियां का आधा भाग मैदान में और आधा प्लेटो पर स्थित है, परन्तु शेष तीन नौ-आबादियां ऊँचे प्लेटुओं पर स्थित हैं।

तटीय मैदान गर्म तर और रोग वर्धक हैं, जहां विषुवतीय जंगल बहुत पाये जाते हैं। समुद्र तट पर नारियल खूब उगता है तथा शक्कर

और रबड़ अच्छी तरह हो सकती है।

'लारेन्जो मार्किस' यद्यपि एक पुर्तगाली बन्दरगाह है तथापि रेलों द्वारा 'ट्रान्सवाल' की अंगरेजी नौ-आबादी से मिला हुआ है। अतः इसकी व्यापारिक मंडी है। इसी प्रकार बीरा का पुर्तगाली बन्दर न्यासालैण्ड और रोडेशिया की उपज लादता है। दारुस्सलाम का बन्दरगाह और ज़ेन्ज़ीबार का द्वीप 'टंगेनीका की मंडियां हैं और नारियल तथा मशाले इत्यादि बाहर को भेजती हैं। मुम्बासा कीनियों की उपज के निकास का फाटक है। नैरोबी कीनियों की राजधानी है। तुम इन बन्दरगाहों का हाल पहिले भी पढ़ चुके हो। अच्छा अब तुम इस प्रदेश की खनिज, जंगली, कृषि सम्बन्धी और पशुओं से पैदा होने वाली पैदावारें बताओ और यह भी बताओ कि वह कहां कहां से बाहर को जाती हैं। ये उपनिवेश अभी नये हैं और आशा की जाती है कि भविष्य में विशेष उन्नति कर सकेंगे। क्या तुम बता सकते हो कि इनके आगामी उन्नति के क्या कारण हैं? याद रक्खो युगान्डा, कीनिया और न्यासालैन्ड की मुख्य उपज हाथी दांत रबड़ और रुई है। कहीं कहीं थोड़ा बहुत गेहूँ, कहवा, चाय और कोको भी पैदा किया जाता है। पहाड़ों पर तांबा, सोना और कोयला भी निकलता है।

३, मरुस्थली प्रदेश :—

सहारा का मरुस्थल फ्रांस के अधिकार में है। इस प्रदेश में बड़े बड़े रेतीले मैदान और कड़ी नंगी चट्टानें स्थित हैं जहाँ कुछ भी पैदा नहीं होता। कहीं कहीं नीची भूमि में सोतों की सहायता से नखलि-

स्तान बन गये हैं जहां खजूर, मक्का, ज्वार और घास पैदा होती है। रूम-सागरीय तटों और मरु-स्थल के दक्षिणी किनारे पर व्यापारिक नगर स्थित हैं जहां अरब के कारवां 'सवाना' और रूमी प्रदेश का माल बेचते हैं। 'टिम्बकटू' नाइजर नदी पर स्थित है। यहाँ नखलिस्तान 'टूवाट' और मराकेश के कारवां तिजारत को आते हैं। उत्तरी

अफ्रीका के प्राचीन निवासी जङ्गली)

नाइजीरिया में 'कानो' और झील 'चाड' पर 'कोकावा' कारखानों के ति .ारती स्थान हैं।

दक्षिणी अफ्रीका का 'काला हारी' मरु-स्थल बिल्कुल उजाड़ और अनुपयोगी है। इसमें कहीं कहीं प्राचीन अफ्रीका की जातियों के मनुष्य अपने ढोर डगर चराते घूमते हैं।

४. रूम सागरी जल-वायु के प्रदेश :—

अफ्रीका में दो भाग ऐसे हैं जहाँ रूमी जल-वायु पाई जाती है। उनमें से पहिला तो उत्तर-पश्चिम में अटलस पर्वतों के निकट स्थित है और दूसरा दक्षिण-पश्चिम में 'न्यूवेल्ड' पर्वत और 'कैरून' के दक्षिण में स्थित है जिसका हाल तुम दक्षिणी अफ्रीका के पाठ में पढ़ोगे।

रूमी राज्य या बारबरी स्टेटस्

अफ्रीका का वह भाग है जिसमें रूमी जल-वायु पाई जाती है। ट्यूनिस, अलजीरिया और मुराको (मराकश) के राज्य स्थित हैं अटलस पर्वतों की श्रेणियां इस भाग के आरपार पूरब से पश्चिम को अटलांटिक समुद्र तट से रूम सागर के तट तक चली गई हैं।

इस प्रदेश के तीन प्राकृतिक भाग किये जा सकते हैं :—

(१) तटीय पट्टियां (२) अटलस पर्वतों की श्रेणियों के मध्य का प्लेटो (३) सहारा की ओर के पठार।

ट्यूनिस

यह फ्रांसीसी राज्य के अधिकार में है। प्राकृतिक दशानुसार यह अलजीरिया ही का पूर्वी भाग है। उस रियासत में उत्तरी तटीय मैदान और मध्य के प्लेटो तो तंग हैं, परन्तु दक्षिणी नीचे मैदान कुछ चौड़े हैं जिनमें शोत' या खारी पानी की छोटी छोटी झीलें हैं। ये झीलें गरमी के मौसम में सूख जाती हैं और भेड़ों बकरियों के चरने के लिए वहां घास उग आती है, परन्तु जाड़ों में वर्षा होती है और इनमें पानी भर जाता है।

तुम जानते ही हो कि यह रूमी प्रदेश है। यहाँ की मुख्य उपज

गेहूँ, जो, नारंगी और जैतून है। समुद्र तट पर लाल मूँगा पाया जाता है। प्लेटुओं पर भेड़ें चराई जाती हैं। और यहाँ की उपज फ्रांस को जाती है। ट्यूनिस यहाँ का मुख्य बन्दरगाह है जहाँ से रेलें भीतरी देश को जाती हैं इनके द्वारा ऊन व चमड़ा बन्दरगाह तक लाया जाता है और फ्रांस को भेज दिया जाता है। इस नगर के समीप कार्थेज के खंडहर और स्मृति चिन्ह हैं। अब से दो हजार वर्ष पहिले यह प्राचीन रोम का एक मुख्य नगर था मगर अब नष्ट हो गया है।

रियासत अल्जीरिया यह रियासत खेती, शिल्प और व्यापार में बड़ा उन्नति शाली देश है। इसका उत्तरीय मैदान जिसको 'टेल' कहते हैं अत्यन्त उपजाऊ और मानदार है, परन्तु यहां सिंचाई की आवश्यकता होती है। गेहूँ, जो, नारंगी आलू, जैतून और अंगूर अधिक पैदा होते हैं। पहाड़ों पर चीड़, देवदार, कार्क और शाबलूत के जंगल हैं। ऊँचे भागों में भेड़ों के चरने योग्य चरागाहें हैं। अल्जियर्स में शराब और ऊन का व्यापार होता है।

मध्य भाग अर्थात् 'शोत का प्लेटो' जिसमें छोटी छोटी झीलें स्थित हैं बहुत गरीब है। ट्यूनिस की 'शोत' के समान यह झीलें भी गर्मी में सूख जाती हैं और उनमें घास उग आता है तथा जाड़ों की वर्षा से भर जाती हैं। यहाँ भेड़ें और बकरियाँ अधिक चराई जाती हैं। 'अलफा' नामक घास कागज़ बनाने के काम आती है। यह प्रदेश खानों की उपज के विचार से भी बड़ा धनाढ्य है। यहाँ मिट्टी का तेल, ताँबा, सीसा, लोहा और कुछ कोयला भी खोदा जाता है। समुद्र तट पर लाल मूँगा और मछलियों का शिकार होता है। सहारा की

ओर के प्लेटुओं पर कई नखलिस्तान हैं जहाँ फ्रांसीसी लोगों ने पाताल तोड़ कुयें खोद कर ज़मीन को सींचकर उपजाऊ बना लिया है। यहाँ खजूर अधिकता से होता है। अलजीरिया विशेषकर फ्रांस से व्यापार करता है और मदिरा, तम्बाकू भेड़ तथा गेहूँ, बाहर को भेजता है। अपने लिए बनी हुई आवश्यक वस्तुएँ बाहर से मँगाता है।

मरक्को यह एक मुसलमानी रियासत है परन्तु अब फ्रांस के निरीक्षण में है। उत्तर में स्यूटा स्पेन वालों का बन्दरगाह है और शेष का कुछ थोड़ा सा भाग इस्पानवी लोगों के निरीक्षण में है। परन्तु टान्जियर यहां का स्वतन्त्र बन्दरगाह है जहाँ संसार की सब जातियाँ व्यापार कर सकती हैं। तटीय मैदानों की पट्टी अत्यन्त उपजाऊ है जहाँ मक्का, जौ और गेहूँ खूब होता है। ढोर अधिकता से चराये जाते हैं। रूमी जल-वायु के फूलों को भी अधिक पैदावार होती है। मरक्को की आधी आबादी इसी भाग में रहती है। 'फेज' और 'मराकश जो ऊँचे भाग में स्थित हैं प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र हैं। मरक्को के मध्य प्लेटो में जङ्गलों के अतिरिक्त इस भाग में कुछ भी नहीं होता। जङ्गलों में कार्क, शाहबलूत, चीड़ इत्यादि वृक्ष अधिकता से होते हैं। यहाँ से अंडे गेहूँ और जौ बाहर को भेजे जाते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका की रियासतों का यूनियन

इससे पहिले कि तुम दक्षिणी अफ्रीका की रियासतों का विस्तृत वृत्तान्त पढ़ो, तुमको चाहिये कि तुम उन प्रारम्भिक बातों को दुहरा लो जो तुम उनके सम्बन्ध में पहिले पढ़ चुके हो। तुम पढ़ चुके हो कि इस प्रदेश के दो प्राकृतिक भाग हो सकते हैं :—

(१) तटीय मैदान (२) भीतरी प्लेटो ।

तटीय मैदान ऊँचे प्लेटो और समुद्र के मध्य स्थित हैं। ये मैदान गंगा के मैदान की तरह चपटे और एक से नहीं हैं; किन्तु ऊंचे प्लेटो धीरे-धीरे सीढ़ियाँ बनाते हुये नीचे होते गये हैं और अन्त में समुद्र तट की पतली पट्टी से मिल गये हैं। अतः इस तटीय मैदान के भी दो भाग हैं। (१) वह चपटे और एकसार तटीय मैदान की पट्टी जो समुद्र के किनारे पर स्थित है और (२) भिन्न भिन्न ऊँचाई की कई सीढ़ियाँ जो तटीय मैदान के ऊँचे प्लेटो और तटीय मैदान के मध्य स्थित हैं। इन सीढ़ियों को केपकालानी (अन्तरीप उपनिवेश) में 'कैरूज' कहते हैं और नैटाल में मध्य प्रदेश या मिडलैन्ड कहते हैं।

इस यूनियन का दक्षिणी पश्चिमी कोना पश्चिमी हवाओं से वर्षा पाता है और गर्मियों में खुश्क रहता है इसलिए यहाँ की जलवायु रूम सागरीय है। दक्षिण अफ्रीका का शेष भाग दक्षिणी-पूर्वी ट्रेड हवाओं के रास्ते में स्थित है। इसलिये ऊँचे प्लेटो के किनारे दक्षिणी-पूर्वी भाग में अधिक वर्षा होती है और 'ड्रेकिन्सबर्ग' पर्वतों के पीछे ऊँचे पठार खुश्क रह जाते हैं मानों ये पठार 'दकन के प्लेटो' की तरह वर्षा-छाया के देश हैं।

अब हम दक्षिणी अफ्रीका को निम्न लिखित भागों में बाँट सकते हैं:—

(१) रूमी भूखण्ड (२) कैरूज का भूखण्ड (३) पूर्वी तट और ऊँचे भूखण्डों की सीढ़ियां (४) घास के प्लेटो अर्थात् 'वेल्ड' (५) ऊँचे प्लेटो के मरु-स्थली अथवा अर्ध मरु-स्थली प्रदेश और

खुश्क पश्चिमी तट।

१, रूमी भूखण्ड—केपटाउन के चारों ओर रूमी जल-वायु का प्रदेश है। इस भाग में भौगोलिक नियमानुसार गेहूँ, जौ और रूमी जल-वायु के फल, अङ्गूर, नारंगी, आडू इत्यादि पैदा होते हैं। यहां के निवासियों के मुख्य उद्यम शराब खींचना अचार, मुरब्बा बनाना और उनको हवा से सुरक्षित डिब्बों में भरना है। रूमी प्रदेश का तटीय मैदान पश्चिम में अधिक चौड़ा है और ज्यों ज्यों पूरब को जाते हैं यह मैदान तंग होता जाता है। वास्तव में इस तटीय पट्टी को मैदान कहना ठीक नहीं, क्योंकि इसमें नंगे पर्वत और उपजाऊ घाटियाँ भी स्थित हैं।

केपटाउन का बन्दरगाह 'टेबिल' नामक खाड़ी में स्थित है। इसका हारबर बहुत बड़ा और सुरक्षित है। यहाँ आस्ट्रेलिया और हिन्दुस्तान को जाने वाले जहाज कोयला पानी लेते हैं। अधिकतर जहाज स्वेज नहर में होकर जाते हैं, परन्तु बहुधा जहाजों को स्वेज के कर से बचने के लिए केपटाउन के रास्ते से जाना पड़ता है। दूसरा प्रसिद्ध बन्दर 'पोर्ट एलाज़ेबेथ' है जो केपटाउन के पूरब में स्थित है। यहाँ गर्मियों में भी वर्षा होता है, इसलिये हम इसको रूमी प्रदेश में सम्मिलित नहीं कर सकते।

२, कैरूज का भूखण्ड—रूमी भाग और ऊँचे प्लेटुओं के मध्य दो मुख्य घाटियाँ हैं जो 'ग्रेट कैरू' और 'लिटिल कैरू' के नाम से प्रसिद्ध हैं। यहाँ वर्षा कम होता है और मैदान की अपेक्षा जल-वायु ठंडा होती है। 'ऊडशान' शुतुर्मुर्ग पालने का केन्द्र है। पहिले इस नगर के

चारों ओर शुतुर्मुर्गों के गल्ले पाले जाते थे। तुम अपने नक्शे में केपटाउन के किम्बरली, जोहान्सबर्ग, बुलावियो, साल्सबरी और बीरा जाने वाली रेलों को ढूँढ़ो।

३. **पूर्वी तट और ऊँचे भूखण्डों की सीढ़ियाँ**—इस तटीय भाग में गर्मी की ऋतु (जनवरी) में दक्षिण-पूर्वी ट्रेड हवावों से वर्षा होती है। यहां की प्राकृतिक बनस्पति शीतोष्ण जंगल हैं। शक्कर, तम्बाकू, मक्का और ज्वार की खेती होती है। इस प्रदेश में अधिकतर हबशी लोग आबाद हैं। बहुत से हिन्दुस्तानी भी आकर बस गये हैं, तुम यहाँ की जल-वायु और पैदावार को हिन्दुस्तान के तर भागों की जल-वायु और पैदावार से तुलना कर सकते हो। 'ईस्ट लन्दन' (पूर्वी-लन्दन) और 'डरबन' यहाँ के मुख्य बन्दरगाह हैं जहाँ बहुत से यूरोपियन भी रहते हैं।

दक्षिणी पूर्वी ऊँची भूमि में दक्षिणी पूर्वी तटीय मैदान और ऊँचे पठारों के किनारों के मध्य नैटाल उपनिवेश का अधिक भाग सम्मिलित है जिसके बहुत से भाग जंगलों से ढके हुये हैं। इन जंगलो की लकड़ी घास के मैदानों के लिये काटी जाती है क्योंकि वहाँ वृक्ष पैदा नहीं होते। अच्छी वर्षा, शीतोष्ण अक्षांस और सामुद्रिक निकटता से यहाँ की जल-वायु गर्म व शीतोष्ण रहती है। इसलिये नैटाल में शक्कर, चावल, चाय, अनन्नास इत्यादि अधिकता से पैदा होते हैं यही कारण है कि नैटाल को दक्षिणी अफ्रीका का बाग़ कहते हैं यहाँ मक्का की खेती अच्छी होती है जो यहाँ के हब्शी निवासियों का मुख्य भोजन है। अधिकतर लोग गल्ला बानी करते हैं और ढोर

तथा भेड़ चराते हैं। न्यू केसिल के निकट कोयला खोदा जाता है जो पोर्ट डरवन से वम्बई को लादा जाता है। पीटर मैरिङ्गसवर्ग यहां का मुख्य नगर है।

४. घास के प्लेटो अर्थात् 'वेल्ड'—दक्षिणी अफ्रीका के प्लेटो का पूर्वी आधा भाग वेल्ड से ढका हुआ है। इसमें कैप उपनिवेश का
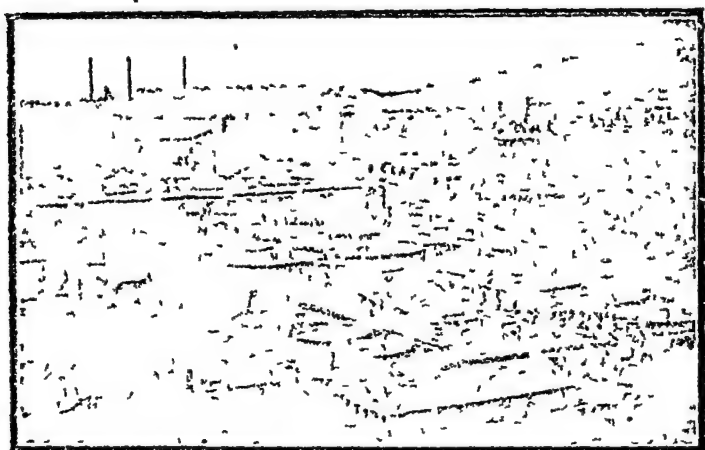
जोहान्सवर्ग

अधिकतर भाग ओरेन्ज फ्री स्टेट और ट्रान्सवाल शामिल हैं। इस उपनिवेश में ज्यों ज्यों पूरव से पच्छिम को ओर जाते हैं जल-वायु खुश्क मिलती है। यहाँ तक कि घास का प्रदेश धीरे धीरे मरु-स्थल में वदल जाता है। यहाँ का मुख्य उद्यम गल्लावानी है। भेड़ें अधिक पाली जाती हैं और उच्च श्रेणी का ऊन होता है जो इङ्गलिस्तान को भेज दिया जाता है। यहाँ की कृषि सम्बन्धी मुख्य उपज मक्का है जो

बाहर भेजी जाती है। पूर्वी भागों की तर जल-वायु में जहां मक्का होती है ढोर पाले जाते हैं। यह वेल्ड खनिजों से परिपूर्ण हैं। जोहान्सबर्ग में सोना निकलता है। जितना सोना समस्त संसार में प्रतिवर्ष पैदा होता है उसका आधा केवल जोहान्सबर्ग की खानों से निकलता है। जोहान्सबर्ग के निकट ही कोयला भी खोदा जाता है जो 'लारेन्जो मार्किस' बन्दरगाह से हिन्दुस्तान को लादा जाता है। वेल्ड की पश्चिमी सीमा पर 'किम्बरली' नगर स्थित है। किम्बरली मे ससार प्रसिद्ध हीरे की खाने हैं। इसके अतिरिक्त पास पड़ोस के अन्य स्थानों में भी हीरे निकलते हैं। प्रिटोरिया भी हीरे की खानों के लिये प्रसिद्ध है। 'जोहान्सबर्ग' और 'प्रिटोरिया' ट्रान्सवाल उपनिवेश के मुख्य नगर हैं और खेती तथा खानो की खुदाई के केन्द्र हैं। 'ब्लोइम फ़ोन्टीन' ओरेन्ज फ्री स्टेट का मुख्य नगर है।

ट्रान्सवाल के उत्तर में यह वेल्ड धीरे धीरे उत्तर को ढालू होते गये हैं और 'लिम्पोपो' नदी की घाटी से जा मिले हैं। कम ऊँचाई के कारण इनकी जल-वायु गर्म व तर है, यहाँ तक की लिम्पोपो नदी के किनारों पर रोग-वर्धक हो गई है। प्रिटोरिया के आस पास मक्का अधिक पैदा होती है। तम्बाकू, रुई और फल भी उगाये जाते हैं। इस प्रदेश की प्राकृतिक वनस्पति घास नहीं किन्तु झाड़ियाँ समझना चाहिये।

५. ऊँचे प्लेटो के मरु-स्थली और अर्ध मरु-स्थली प्रदेश— वेल्ड के पश्चिम में 'कालाहारी' के मरु-स्थली और अर्ध मरु-स्थली भाग स्थित हैं जो पश्चिमी तट तक चले गये हैं। अतः दक्षिणी

अफ्रीका के पठारों का आधा पश्चिमी भाग बहुत कम आबाद है और 'वचुवाना लैन्ड' के चरवाहे अपनी भेड़ बकरियों के गल्ले इधर उधर चराते फिरते हैं। जब अच्छी वर्षा हो जाती है तब ज्वार और मक्का पैदा होता है वरना नहीं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि एशिया के स्टेप्स की तरह यह प्रदेश भी धीरे धीरे खुश्क होता जा रहा है। यहाँ बहुत सी खारी झीलें हैं जो साल के अधिकतर भाग में सूखी रहती हैं। पश्चिमी तट का मुख्य बन्दर 'वाल्फिशवे' है परंतु वह अधिक उपयोगी नहीं है।

रोडेशिया उत्तरी और दक्षिणी रोडेशिया के दो उपनिवेश दक्षिणी अफ्रीका के ऊँचे प्लेटो पर स्थित हैं और 'जेम्बजी' नदी उनके बीच में बहती है। दक्षिणी रोडेडिया को सीमा पर थोड़ी दूर तक 'लिम्पोपो' नदी बहती है। इन नदियों की घाटी में नीचे भाग स्थित हैं। यहाँ की भूमि में खेती, गल्लावानी और फलों की अधिक पैदावार होती है। अतः ये उपनिवेश बड़ी उन्नति कर रहे हैं। दक्षिणी उपनिवेश उत्तरी की अपेक्षा अधिक उन्नति शाली हैं तथा यहाँ सोने और कोयले की खानें हैं ढोरों तथा डंगरों के असंख्य 'राँञ्जेज' हैं और मक्का व तम्बाकू खूब पैदा होती है। 'बुलावियो', साल्सबरी यहाँ के मुख्य नगर हैं जो पुर्तगाली बन्दर गाह 'वीरा' से रेलों द्वारा मिले हुये हैं। 'बुलावियो' से एक रेल दक्षिण की ओर किम्बरली और 'केपटाउन' को जाती है। उत्तर में वेल्जियम काङ्गो की खानों के केन्द्र हैं और 'एलीजबेथ विल' के आगे तक चली गई हैं।

उत्तरी रोडेशिया 'बेल्जियम काङ्गो' के खनिज प्रधान भाग 'कटङ्गा' को कोयला और खाने पीने की चीजें भेजता है। इस उपनिवेश के अधिक भागों में चिची नामक मक्खी बहुत होती है। ये मक्खियाँ बिषैली होती हैं और इनके काटने से ढोर डंगर तथा घोड़े मर जाते हैं। अतः उत्तरी रोडेशिया की उन्नति इन मक्खियों द्वारा रुकी हुई है।

अङ्गोला काङ्गो नदी के अन्तिम भाग के दक्षिण में पुर्तगालो पश्चिमी अफ्रीका की रियासत स्थित है जिसको अङ्गोला भी कहते हैं। इस रियासत के मध्य के ऊँचे पठार दक्षिणी अफ्रीका के बड़े पठारों से मिले हुये हैं मानों ये प्लेटो भी इन्हीं पठारों के भाग हैं। अङ्गोला का ढाल अधिकतर उत्तर को है और दक्षिण को बहुत कम। प्लेटो पर घास खूब पैदा होता है और राञ्चिंग की उन्नति सम्भव है, परन्तु अभी इस रियासत ने उन्नति-मार्ग में पैर भी नहीं रक्खा है। 'लोआण्डा' और 'बेंगूला' यहाँ के मुख्य बन्दरगाह हैं। इनसे भीतरी देश में रेलें जाती हैं। अङ्गोला की मुख्य उपज रुई, रबड़ और जंगल की लकड़ी है। बेंगूला से जाने वाली रेल 'कटङ्गा' और उत्तरी रोडेशिया से मिलाई जा रही है। अतः बेंगूला शीघ्र ही इस प्रदेश का प्रसिद्ध बन्दरगाह हो जायगा।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—महाद्वीप अफ्रीका के प्राकृतिक रीजन्स बताओ ?

२—अफ्रीका के कौन कौन से भाग कम आबाद हैं और क्यों ?

३—अफ्रीका के किन किन प्रदेशों में यूरोप निवासी रहने लगे हैं और क्यों

४—अफ्रीका के वह भाग वताओ जिनकी उन्नति खनिज प्रधान प्रदेश से हो गई है ?

५—उद्गम से समुद्र तक नील नदी का पथ वयान करो ?

६—खरतूम की स्थिति ऐसी उपयोगी क्यों है ?

७—मिश्री सूडान को अंग्रेज़ी राज्य से क्या क्या लाभ हुये ?

८—केपटाउन में जाड़ों में और नैटाल में गर्मी में वर्षा होती है क्यों ?

९—नैटाल को दक्षिणी अफ्रीका का बाग क्यों कहते हैं ?

१०—केपटाउन, डर्बन, किम्बर्ले, मोम्बासा, टिम्बकटू और ख़रतूम के विषय में तुम क्या जानते हो ?

महाद्वीप अफ्रीका की आबादी और आने जाने के मार्ग

तुम जानते हो कि एक देश की प्राकृतिक दशा उसकी आबादी की सभ्यता, रीति, व्यवहार और व्यवसाय पर बड़ा प्रभाव डालती है। अतः अफ्रीका में सहारा मरु-स्थल ने बहुत दिनों तक उत्तरीय रक्खा। अफ्रीका के निवासियों को दक्षिणी अफ्रीका के निवासियों से पृथक पहिले उत्तर में अरब तथा मिश्र की मुसलमान जातियाँ और दक्षिण में काले हबशी अधिक आबाद रहे। धीरे धीरे यूरोप की जातियों ने अच्छी जमीनों पर अधिकार कर लिया और प्राचीन हबशी निवासी जंगलों और रेगिस्तानों की ओर भाग गये। अतः काङ्गो में अब भी बौने हबशी (पिगमी) आबाद हैं। बुशमेन कालाहारी मरु-स्थल के समीप रहते हैं इनके अतिरिक्त 'जूलू', 'बन्टू' इत्यादि जातियाँ भिन्न भिन्न भागों में पाई जाती हैं परन्तु उनकी आबादी बहुत कम है।

अफ्रीका में घनी आबादी के भाग, 'नील नदी की घाटी', अटलस रीजन', 'गिनीकोस्ट' और दक्षिणी पूर्वी अफ्रीका के तटीय राज्य हैं। अँग्रेजी उपनिवेशों में थोड़े बहुत हिन्दुस्तानी व्यापारी और मज-

दूर भी रहते हैं जिनकी सहायता से ये उपनिवेश स्थापित हुये हैं। इन उपनिवेशों में रंगीन जातियों को आबाद होने की आज्ञा नहीं है इसलिये आबादी धीरे धीरे बढ़ रही है। तुम अफ्रीका के भिन्न-भिन्न प्रदेशों की आबादी का अन्दाजा उनके शहरों और बन्दरगाहों की संख्या से कर सकते हो, क्योंकि जो देश कला-कौशल और व्यापार में अधिक उन्नति करता है वहीं आबादी भी बढ़ती है। अफ्रीका के

नाइज़र नदी का दृश्य

उपनिवेशों ने वाणिज्य तथा गल्लेबानी, खेती, खाने खोदना और व्यापार करना अपना मुख्य उद्यम बना लिया है अपनी पैदावार को बेच कर मातृ-भूमि इंगलिस्तान की बनी हुई वस्तुयें खरीदते हैं। कपड़े, मशीनें, बिसातखाना और आवश्यक वस्तुयें खुद नहीं बनाते अतः यहाँ जापान और इंगलिस्तान की तरह बहुत बड़े बड़े कारखाने

नहीं हैं जिनमें हज़ारों आदमी काम कर सकें और न यहाँ बड़े बड़े कला-कौशल के केन्द्र हैं। एक देश की रेलें भी इस बात का पता देती हैं कि वह कला-कौशल और व्यापार में कितनी उन्नति कर चुका है। उन्नति-शाली देशों में आने जाने और माल ढोने के लिये रेलों और पानी के रास्तों की विशेष आवश्यकता होती है। आओ आज अफ्रीका की रेलों का अध्ययन करें।

तुम पढ़ चुके हो कि अफ्रीका में अधिकतर दरियाई रास्तों के द्वारा आना जाना होता है। नील, काङ्गो, नाइजर, जेमबजी, लिम्पोपो शारी इत्यादि नदियों में हज़ारों मील तक नावें आ जा सकती हैं। जिन भागों में झरने स्थित हैं और नावें नहीं चल सकतीं, वहाँ रेलों द्वारा दरियाई रास्ते को पूरा किया गया है। अब तुम उन रेलों का अध्ययन कर सकते हो जो अफ्रीका की व्यापारिक और व्यवसायी उन्नति के लिये बनानी पड़ी हैं। कई वर्ष हुये कि 'सेसिल रोड्स' नामक एक व्यक्ति ने आशा अंतरीप से क़ाहिरा नगर तक रेल बनाये जाने की सम्पति प्रकट की थी। किसी सीमा तक केप से कैरो तक (Cape to Cairo) रेलवे बनाने की स्कीम का मन्तव्य पूरा हो चुका है। परन्तु अब भी अफ्रीका का बहुत सा पहाड़ी और जंगली भाग ऐसा शेष है जहाँ रेल बनाना सरल नहीं है।

उत्तर में रेलों और नील नदी के द्वारा 'सूदान' तक आना जाना हो सकता है। परन्तु 'सूदान' में नील नदी का मार्ग बहुत से स्थानों पर आने जाने के योग्य नहीं और जंगली भागों में कुलियों द्वारा आना जाना होता है। दक्षिण में केपटाउन से 'किम्बरली', 'बुला-

वियो,' 'एलीजबेथ-विल' में होती हुई काङ्गो नदी की घाटी में दूर तक रेल बन गई है। अब इस रेल को विषुवत रेखा पार झीलों के उत्तर में होते हुये नील के दो दाहिने किनारे पर ले जाकर 'खरतूम' वाली रेल से मिला देने का प्रबन्ध हो रहा है। एक यह भी स्कीम है कि 'रोडेशिया' की रेल को टंगेनीका और विक्टोरिया झीलों के पूरब में ले जाकर नील नदी की घाटी की रेल से मिला दिया जाय। 'बैंगूल' से एक रेल एलीजबेथ विल तक बनाई जा रही है जो उत्तरी रोडेशिया की रेलों से मिला दी जायगी। तुम अपने नक़शे में 'लैगोस', 'वालफ़िशके', 'केपटाउन', 'पोर्ट एलीजबेथ', 'डरबन', 'लारेन्जो', 'मारकिस', 'बीरा', 'दारुस्सलाम' और 'मोम्बासा', बन्दरगाहों से भीतरी प्रदेश में जाने वाली रेलों को देख सकते हो और उनसे भिन्न भिन्न भागों के व्यापार का अनुमान कर सकते हो।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—महाद्वीप अफ़्रीका के आने जाने के मार्ग के विषय में तुम क्या जानते हो?

२—दक्षिणी अफ्रीका में रेलें अधिक क्यों बनी हैं?

३—'केप टु-कैरो' रेलवे बनाये जाने की स्कीम कहाँ तक सफल हुई है?

४—'कांगो, नील' और नाइजर नदियाँ व्यापार के लिये किस प्रकार उपयोगी बनाई गई हैं?

५—अफ्रीका के किन किन प्रदेशों में नई रेलें बन रहीं हैं और यह भी बताओ कि उनके बन जाने से वहाँ के व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

५—यूरोप

महाद्वीप यूरोप की विशेषतायें

तुम एशिया के पाठ में पढ़ चुके हो कि यूरोप महाद्वीप भौगोलिक दृष्टि से देखने में एशिया महाद्वीपका एक भाग प्रतीत होता है। एशिया के टुंड्रा, उत्तरी मैदान, मध्यस्थ पर्वत और दक्षिणी प्लेटो बहुत सी बातों में समान हैं। यूरोप की भिन्न भिन्न जातियाँ भी एशिया की आर्य्य जाति की सन्तान हैं। इन सब बातों के होते हुये भी यूरोप का महाद्वीप बहुत सी बातों में अनोखा है।

अपने ग्लोब और यूरोप के प्राकृतिक नक़शे को देखो। इस महाद्वीप का क्षेत्रफल तो आस्ट्रलिया के अतिरिक्त सभी महाद्वीपों से कम है परन्तु समुद्र तट सबसे अधिक लम्बे और टूटे फूटे हैं। बहुत सी खाड़ियाँ और सागर स्थल के भीतर दूर तक चले गये हैं। और भीतरी भाग के प्रदेश भी समुद्र तट से अधिक दूर नहीं हैं। सामुद्रिक प्रभाव से समस्त महाद्वीप के निवासी, बलवान, साहसी और परिश्रमी हो गये हैं। अतः यूरोप की सभी जातियाँ सभ्य, मालदार और उन्नतिशाली हैं।

यद्यपि यूरोप में आस्ट्रेलिया के समान सोना व चाँदी नहीं पाई जाती, हिन्दुस्तान और मिश्र के समान गेहूँ, चावल, रुई और गन्ने की बहु-मूल्य उपज नहीं होती तो भी यूरोप के लोहे और कोयले से बनी हुई मशीनें, चाँदी और सोने के मोल बिकती हैं। महाद्वीप के भीतर और समुद्र तटों पर बहुत से बन्दर और व्यापारिक

भारत और महाद्वीप यूरोप की तुलना

व व्यवसायी केन्द्र बन गये हैं। नगर अधिक हैं और देहात कम। आबादी बहुत घनी है। ये सब बातें हैं जो और महाद्वीपों में नहीं पाई जातीं।

गर्म पानी की सामुद्रिक धारायें दूसरे महाद्वीपों के तटों पर भी

बहती हैं परन्तु इनसे जो लाभ यूरोप को होता है वह किसी को प्राप्त नहीं होता। यूरोप में आर्कटिक वृत्त (सुमेर रेखा) से उत्तर के भाग एशिया और उत्तरी अमरीका की अपेक्षा अधिक शीतोष्ण रहते हैं। यूरोप की जल-वायु अधिकतर मौतदिल और प्रिय है जिसके कारण लोग हर मौसम में परिश्रम कर सकते हैं। यदि तुम ग्लोब में थल-गोलार्द्ध पर दृष्टि डालोगे तो तुमको ज्ञात होगा कि यूरोप महाद्वीप सब महाद्वीपों के बीच में स्थित है। अतः सामुद्रिक व्यापार में सभी महाद्वीपों से लाभ उठाता है। ये केवल थोड़ी सी विशेषतायें हैं जो हमने तुमको बताई हैं। जब तुम यूरोप का भूगोल पढ़ोगे तो तुमको बहुत सी ऐसी बातें मालूम होंगी।

समुद्र तट और द्वीप यूरोप महाद्वीप केवल तीन तरफ समुद्रों से घिरा हुआ है और इसके पूरब में एशिया का महाद्वीप है। यद्यपि यूरोप के उत्तर में एशिया और उत्तरी अमरीका के समान बर्फीला उत्तरी महासागर स्थित है और यूरोप के उत्तरी तट पर भी टुण्ड्रा की पट्टी है तो भी एशिया और उत्तरी अमरीका की अपेक्षा यूरोप में बहुत थोड़ा सा ऐसा तट है जो बिल्कुल बेकार है। नकशे में देखकर तुम सफेद सागर ढूँढ़ सकते हो। आर-केन्जिल का बन्दरगाह डाइना नदी के सफेद सागर के पूर्वी तट पर स्थित है। वहाँ से एक रेल दक्षिण में मास्को तक जाती है और ट्रांस-साइबेरियन रेलवे समझो जाती है। इस नदी और रेल ने आर-केन्जिल को व्यापारिक प्रधानता दे दी हैं। यहाँ से लकड़ी और समूर बाहर भेजा जाता है।

अटलांटिक महासागर इसके जहाजी मार्गों को नक्शे में देखो, इनसे पश्चिमी यूरोप के तटीय प्रदेशों के व्यापार का अनुमान हो सकता है। लिवरपूल, लंदन, हम्बर्ग, लिस्बन, बन्दरगाहों से सैकड़ों जहाज संसार के दूर दूर देशों को जाते और व्यापार करते हैं। इस समुद्र के कई छोटे छोटे बाजू हैं जिनके तटों पर जगत प्रसिद्ध बन्दरगाह स्थित हैं। ये बन्दरगाह भीतरी व्यापारिक क्षेत्र की उपज के निकास हैं। सूती ऊनी कपड़े बड़े बड़े जहाज और इन्जनों से लेकर सुई तथा आलपीन तक यहाँ बनती हैं। यानी हर प्रकार का लोहा तथा फौलाद का सामान, बिसात खाना, शराब, सिगरेट इत्यादि यहाँ बनाई जाती हैं। यों समझना चाहिये कि अटलांटिक महासागर यूरोप, अफ्रीका और अमरीका इत्यादि के मध्य एक बहुत बड़ा व्यापारिक बाजार है।

१. नार्वे का समुद्र तट—इस तट पर हामरफेस्ट यूरोप का सबसे उत्तरी शहर और बन्दरगाह है। यहाँ लकड़ी और समूर का व्यापार होता है। 'बरजिन' मछली की शिकारगाह और सुन्दर बन्दरगाह है। नार्वे का समस्त तट कोलम्बिया और चिली के फियोर्डस की तरह बहुत कटा हुआ है। ऊँची तटीय चट्टानें, गहरी खाड़ियाँ और द्वीपों की पंक्तियाँ इस बात का पता देती हैं कि यह तट पृथ्वी की भीतरी कम्पन शक्ति के कारण समुद्र के नीचे डूब गया है। ऊँची पहाड़ियाँ तो खाड़ियों के बाजू और द्वीपों के आकार में दिखाई पड़ती हैं और गहरी घाटियों ने समुद्र में अधिकार जमा लिया है। यह तट अति उपयोगी नहीं है परन्तु मछली पकड़ने वाली सैकड़ों

नावें इन तटों पर प्रतिदिन दिखाई देती हैं। नक्शे में 'लाफ्टेन' द्वीप ढूँढ़ो और बताओ कि यहाँ की मुख्य उपज क्या है।

२. उत्तरी सागर तट—उत्तरी सागर वृटिश द्वीप, प्राय-द्वीप 'स्केन्डीनेविया' और महाद्वीप के मध्य स्थित है यह समुद्र बहुत उथला है। इसमें बाल्टिक और उत्तरी समुद्रों की ओर से सामुद्रिक धाराओं के साथ मछलियाँ आ जाती हैं अतः इसका मध्य भाग 'डागरवैङ्क' मछलियों की प्रसिद्ध शिकारगाह बन गया है। इस समुद्र तट पर वृटिश बन्दरगाह 'एडन्बरा', लंदन और हालैन्ड के आम्स-टर्डम, राटर्डम और जर्मनी के 'कील' और हम्बर्ग स्थित हैं। वास्तव में हम्बर्ग भीतरी प्रदेश में एल्ब नदी पर स्थित है, परन्तु इस नदी में बड़े बड़े जहाज आ जा सकते हैं और हम्बर्ग को उत्तरी सागर का बन्दर गाह कहा जा सकता है। प्रायद्वीप 'जटलैन्ड' और 'हालैन्ड' के तट के समीप छोटे छोटे द्वीपो की पंक्तियाँ हैं और 'ज्वीडरजी' उत्तरी सागर का एक बाजू है जो महाद्वीप के भीतर तक चला गया है। कई नदियाँ इस महासागर में आकर गिरती हैं। जिनके भीतर दूर तक जहाज आते जाते हैं।

३. बाल्टिक समुद्र तट—उत्तरी सागर और बाल्टिक सागर के मध्य 'स्कैगररैक' और 'कैटागेट' नामक समुद्र के चौड़े जल-संयोजक हैं। बाल्टिक सागर के पानी की धारा इनमें होकर उत्तरी सागर में प्रवेश करती है और यहाँ बहुधा तूफान आते रहते हैं। इसलिए जर्मन लोगों ने 'जटलैन्ट प्रायद्वीप' की पतली गर्दन को काट कर कील-नहर बना दी है। इस नहर से उत्तरी सागर और बाल्टिक

सागर के मध्य का रास्ता बहुत कम और आसान हो गया है। स्कैगर रैंक पर 'क्रिश्चियाना' (आस्लो) नार्वे की राजधानी और प्रसिद्ध बन्दरगाह है। जहाँ से दियासलाई, कागज और कागज बनाने का मसाला आता है। स्वीडन के बन्दरगाह 'गोटबर्ग' से जमा हुआ दूध आता है तथा बाल्टिक सागर में छोटे छोटे द्वीप 'जीलैन्ड', 'बोर्न होम', 'गारलैन्ड' और 'एलैन्ड' इत्यादि स्थित हैं। समुद्र तट अधिक तर रेतीले हैं और जल-वायु ठंडी रहती है। समुद्र जम जाने के कारण यहां तीन चार महीने के लिये आना जाना बन्द हो जाता है। अपने नकशे में यहाँ के मुख्य बन्दरगाह 'हेलिसङ्गफोर्स', 'लेनिन-ग्राड', 'रीगा', 'डैन्जिग', स्टेटिन को ढूँढ़ो और बताओ कि ये किन किन देशों के बन्दरगाह हैं।

अटलांटिक महासागर में बृटिश द्वीप समूह 'आयर्लैंड' और इनके समीप सैकड़ों द्वीप स्थित हैं। तुम इनमें मुख्य मुख्य अपने एट-लस में देख कर मालूम कर सकते हो। बृटिश के मुख्य 'पश्चिमो चन्दरगाह 'ग्लासगो', 'लिवरपूल' और मेनचेस्टर हैं। इंगलिश चैनेल के दोनों ओर बहुत से छोटे छोटे बन्दरगाह हैं जो महाद्वीप और बृटिश के मध्य तिजारती माल असबाब ढोते हैं। इनमें से बृटिश बन्दरगाह 'साउथम्पटन' और फ्रान्सीसी बन्दरगाह 'हावा' बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ से बड़े बड़े जहाज दूर दूर के देशों में व्यापार करने जाते हैं।

विस्के खाड़ी के तट पर 'नॉट' और 'बोर्डो' फ्रांसीसी शराब के बन्दरगाह हैं और स्पेन के तट पर 'सैन्टिनडर' और बिलबाव खान

खोदने के केन्द्र और व्यापारिक बन्दरगाह हैं। पुर्तगाल के तट पर 'लिसबन' और 'ओपार्टो' पुर्तगाली शराब (ब्रान्डी) के मुख्य बन्दरगाह हैं। यहाँ की शराब इङ्गलिस्तान के व्यापारी खरीद लेते हैं और फिर बोतलों में भर के समस्त संसार के देशों में भेजते हैं।

४. रूम सागर के तट—बन्दरगाह 'जिब्राल्टर' अपने ही नाम के एक जल-संयोजक पर स्थित है। यद्यपि यह स्पेन में है परन्तु बहुत अरसे से बृटिश अधिकार में चला आता है और रूम सागर की रक्षा करता है। रूम सागर के दो दरवाजे हैं। पहिला स्वेज जल-संयोजक दूसरा जिब्राल्टर जल संयोजक और चारों ओर से स्थल से घिरा हुआ तथा सुरक्षित है। बृटिश इन द्वारों को सुरक्षित करके रूम सागर के व्यापारिक रास्तों की पूरी रक्षा करता है। 'माल्टा', 'अदन', सिंगापूर', 'हॉंगकाङ्ग' इत्यादि बहुत से ऐसे बन्दरगाह हैं जो व्यापारिक केन्द्रों के अतिरिक्त बृटिश साम्राज्य की रक्षक चौकियाँ भी हैं। रूम सागर एक भीतरी समुद्र है और गर्म खुश्क भाग में स्थित है, इसलिये पानी के भाप बनने के कारण बहुत खारी हो गया है बाल्टिक सागर सबसे कम खारी है क्योंकि इसमें भाप नहीं बनती और बहुत सी नदियाँ अधिक पानी लाकर उसको भरती रहती हैं। रूम सागर में पानी की कमी रहती और अटलांटिक महासागर तथा मारमोरा सागर से सामुद्रिक धारायें बह कर आती हैं। अटलांटिक महासागर से बहुत सा नमक आकर रूम सागर में जमा होता रहता है। इस सागर के पश्चिमी भाग में लाल मूँगा और पूर्वी में स्पंज निकाला जाता है।

तुम अपने एटलस में रूम सागर के मुख्य द्वीप देख सकते हो। वैलियारिक द्वीप स्पेन का, सिसली और सारडीनियाँ इटली के और कार्सिका फ्रान्स का द्वीप है। सिसली और एलटस पर्वत के मध्य समुद्र की एक पतली सी गर्दन हैं यहाँ समुद्र वहुत उथला है। 'माल्टा', 'गोजो' और 'लिपारी' इत्यादि के द्वीप वास्तव में उन्हीं पहाड़ों के भाग हैं जो इटली, सिसली और उत्तरी अफ्रीका में स्थित हैं। इनके कम ऊँचे भाग समुद्र में डूब गये हैं और ऊँचे पहाड़ों की चोटियाँ द्वीप वन गई हैं। रूम सागर के इस भाग में 'वार्सीलोना' (स्पेन का) 'मार्सेल' (फ्रान्स का) और 'जेनुआ' (इटली का) मुख्य वन्दरगाह है। 'वार्सीलोना' रूमी जल-वायु के फलों की मंडी है। 'मार्सेल्स' फ्रान्सीसी रेशम और जेनुआ रुई के कपड़े के लिए प्रसिद्ध है। भारतवर्ष से इंगलिस्तान जाने वाले यात्री वहुधा 'ब्रिन्डिसी' में जहाज छोड़ देते हैं और रेल गाड़ी में सवार होकर 'कैले' में उतरते हैं तथा जल-संयोजक 'डोवर' को पार करके इङ्गलिस्तान पहुंच सकते हैं। इस तरह इन यात्रियों का वहुत सा समय वच जाता है और थका देने वाली सामुद्रिक यात्रा का कष्ट नहीं होता। एड्रियाटिक सागर के सिरे पर इटली का पुराना वन्दरगाह वेनिस स्थित है। यहाँ पत्थर के मकान पानी के भीतर वने हुए हैं और सड़कों की जगह नहरें हैं। प्राचीन काल में यह वहुत मालदार व्यापारिक स्थान था परन्तु अब उथला होने के कारण यहाँ इतना व्यापार नहीं है। इसके पूरब में 'ट्राईस्ट' का नवीन वन्दरगाह है जो यूरोप के महायुद्ध से पहिले आस्ट्रिया हंगरी का वन्दरगाह था, परन्तु अब यह स्वतन्त्र वन्दरगाह

है। यहां सभी जातियाँ व्यापार कर सकती हैं। यूनान सागर और एजियन सागर में भी डूबी हुई पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। इन समुद्रों के तट बहुत टूटे और उथले हैं। तुम नकशे में यहाँ के सैकड़ों द्वीप देख सकते हो। 'क्रीट' यूनान का द्वीप है। 'साइप्रस' और 'रोडूस' वृटिश के द्वीप हैं। 'कोरिन्थ' की खाड़ी में 'पटरास' का बन्दरगाह किसमिस और मुनक्के के लिये प्रसिद्ध है। एजीना की खाड़ी पर 'एथेन्स' और बन्दरगाह 'पिरियस' यूनान के प्रसिद्ध नगर हैं। एथेन्स के उत्तर में 'सलोनिका' बन्दर अपने ही नाम की खाड़ी पर स्थित है। यह वार्डर नदी की उपजाऊ घाटी का निकास है। पहिले यह तुर्की के अधिकार में था परन्तु यूरोप के बड़े युद्ध के पश्चात् यह यूनान के हाथ में आ गया है।

दर्रे-दानियल में होकर हम मारमोरा सागर में प्रवेश करते हैं और 'बास्फोरस' जल-संयोजक को पार करके काले सागर में पहुँच जाते हैं। इन दोनों पानी के रास्तों पर तुर्की के दो बन्दरगाह 'गैली-पोली' और 'कुस्तुन्तुनियां' स्थित हैं। तुम उनकी भौगोलिक महत्ता की तुलना जिब्रालटर और अदन से कर सकते हो। कुस्तुन्तुनियां एक व्यवसायी तथा व्यापारिक नगर है और प्राय-द्वीप बालकन की भीतरी रियासतों से रेलो द्वारा मिला हुआ है। यहाँ से रेशमी माल बाहर को जाता है।

५. काले सागर के तट—इस सागर पर 'ओडेसा' रूस के गेहूँ का बन्दरगाह और व्यवसायी केन्द्र है। 'सिवास्टपोल' प्रायद्वीप क्रीमिया के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। यह रेलों द्वारा भीतरी रूस से

मिला हुआ है। अजाफ सागर पर 'रास्टव' और कास्पियन
'अस्त्राखान' व्यवसायी और व्यापारिक बन्दरगाह हैं।

काले सागर के तट बहुधा कुहरे से अँधेरे और जाड़ों की वर्फी
उत्तरी हवाओं के कारण डेढ़ दो महीने वर्फ से ढके रहते है
कास्पियन सागर चारों ओर स्थल से घिरा हुआ है और रेलो द्वा
काले सागर से मिला हुआ है। इसके तटों पर एशिया और रूस
मध्य व्यापार होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—तुम कैसे जानते हो कि यूरोप, महाद्वीप एशिया का एक भाग है?

२—यूरोप और एशिया के तटों की परस्पर तुलना करो?

३—उत्तरी महासागर के बन्दरगाह 'हैमरफेस्ट' और 'मरमांसक' बर्फ
नहीं जमते इसका क्या कारण है?

४—'डागरवेङ्क' क्यों प्रसिद्ध है, तुम कैसे जानते हो कि किसी समय में व
एक खुश्की का भाग था?

५—यूरोप में किन देशों का तट समुद्र की सतह से नीचा है और समु
से देश को बचाने के लिये वहाँ के निवासियों ने क्या क्या उप
किये हैं?

६—'ग्लास्गो', 'हम्बर्ग', 'लिवरपूल', 'ट्रायण्डमेम', 'जिब्राल्टर' अ
'मार्सेल्ज़' की स्थिति तथा भौगोलिक विशेषता बताओ?

७—क्या कारण है कि रूम सागर बाल्टिक सागर से अधिक खारी है?

८—फियोर्ड किसे कहते हैं, कैसे बन जाते हैं, संसार में कहाँ कहाँ प
जाते हैं?

९—यूरोप में लालमूँगा, स्पंज और मछलियों के शिकारगाह कहाँ कहाँ स्थित हैं ?

१०—अटलांटिक सागर और रूम सागर की परस्पर तुलना करो ?

महाद्वीप यूरोप की प्राकृतिक दशा और खनिज पदार्थ

नीचा धरातल यूरोप के प्राकृतिक नकशे को देखो और मैदान, पठार तथा पहाड़ी प्रदेशों पर दृष्टि डालो। समुद्रों की गहराई देखो और विचार करो कि ये समुद्र तटों के निकट उथले क्यों हैं ? उथले समुद्रों से क्या लाभ या हानि होती है ?

प्राचीन काल में बृटिश द्वीप-समूह उत्तर में 'स्केन्डीनेविया' और दक्षिण में फ्रांस से मिले हुए थे। जहां आज उत्तरी सागर नामक उथला समुद्र स्थित है। यह समस्त भाग यूरोप के विस्तृत मैदान का एक भाग था। पृथ्वी के धँस जाने के कारण यह समस्त भाग समुद्र के नीचे डूब गया है और जहाँ पहिले नीचे मैदान थे वहाँ आज समुद्र लहरें मार रहा है। 'हालैन्ड' और 'बेलजियम' का उत्तरी तट अब भी समुद्र तल से नीचा है। यहाँ के पश्चिमी निवासियों ने पक्का बन्ध बाँध कर समुद्र के पानी को रोक रक्खा है। भीतरी प्रदेश का पानी कलों और पम्पों द्वारा समुद्र में फेंक दिया जाता है। लड़को ! क्या यह प्रकृति पर मनुष्य की भारी विजय का प्रमाण नहीं है। 'जुइडरजी' से प्राय-द्वीप जटलैन्ड तक फ्रिजियन द्वीप समूह

की एक पंक्ति समुद्र तट के समीप दूर तक चली गई है। इससे यह विदित होता है कि 'ज़ुइडरज़ी' समुद्र के चढ़ आने से पहिले 'हालैंड' की भूमि इन द्वीपों तक स्थित थी। समुद्र के घुस आने के बाद ऊँची ऊँची कड़ी चट्टानों के सिरे शेष रह गये और नीचा भाग पानी में डूब गया है।

समुद्र तल से नीचा भूखण्ड कास्पियन सागर के उत्तर में भी पाया जाता है। तुम पढ़ चुके हो कि अरल और कास्पियन सागर धीरे धीरे ख़ुश्क हो रहे हैं। एक दिन कास्पियन सागर बिल्कुल ख़ुश्क हो जायगा, परन्तु ऐसा एक दो वर्ष में नहीं हो सकता। इसको हज़ारों बल्कि लाखों वर्ष लगेंगे।

उत्तरी बड़े मैदान यूरोप का उत्तरी बड़ा मैदान महाद्वीप के दो तिहाई भाग में फैला हुआ है। यूराल पर्वत की नीची पहाड़ियाँ उसको एशिया के नीचे मैदानों से पृथक करती हैं। यूरोप के मध्य और दक्षिणी पर्वत, काला सागर और कास्पियन इस मैदान की दक्षिणी सीमा पर स्थित हैं। इस मैदान में कोई ऊँचा पहाड़ नहीं है जो आने जाने में रुकावट पैदा करे। मध्य रूस की 'बल्दाई' पहाड़ियाँ बहुत नीची हैं और उनमें होकर रेलें बन सकती हैं। तुम नक्शे में देख सकते हो कि यूरोप में अनेकों रेलें हर तरफ़ को दौड़ती हैं। उत्तरी फ्रांस, बेलजियम, हालैन्ड, जर्मनी, डेन-मार्क, पोलैन्ड, रूस और बाल्टिक सागर की तमाम रियासतें इस मैदान में स्थित हैं। पश्चिम में यह मैदान बहुत तंग हो गया है और समुद्र तथा पहाड़ों के मध्य स्थित है इसलिए इस भाग की जल-

यूरोप का प्राकृतिक नक्शा
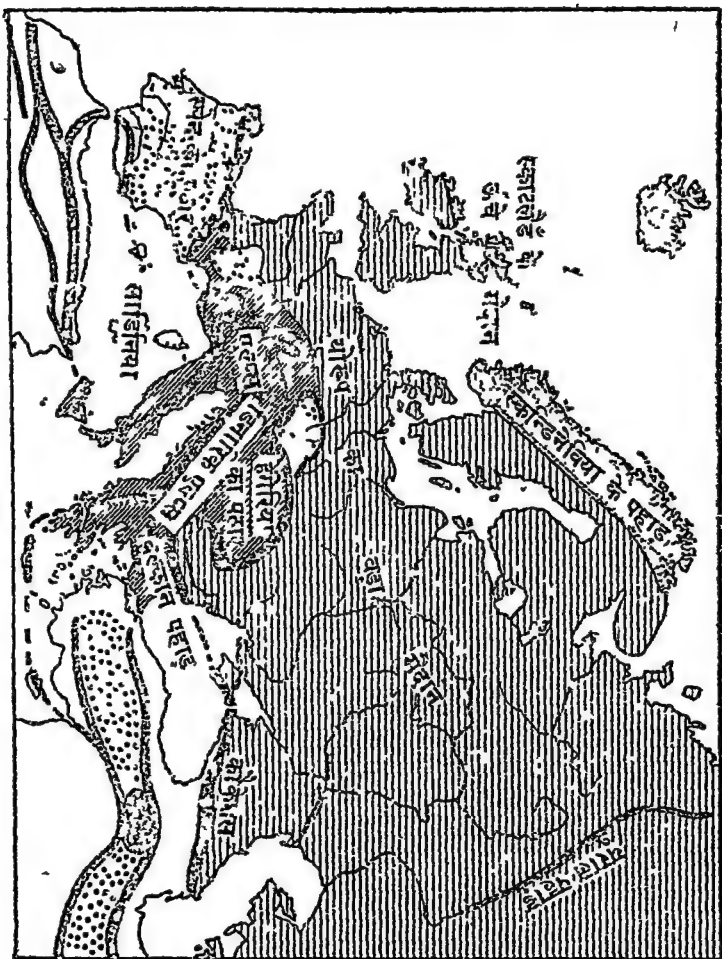
वायु शीतोष्ण है और गेहूँ, फल इत्यादि अधिकता से पैदा होते हैं। कोयला और लोहा अधिक निकलता है इसलिए यूरोप के बड़े बड़े शिल्प प्रधान नगर इसी भाग में स्थित हैं। इस भाग की आवादी बहुत घनी है और निवासियों का मुख्य उद्यम कला-कौशल है।

मैदान का पूर्वी भाग उत्तरी महासागर से काले सागर तक फैला हुआ है। इस विस्तृत भाग में टुन्ड्रा, ठंडे जङ्गल और स्टेप्स के मैदान स्थित हैं। समुद्र से बहुत दूर होने के कारण यहाँ की जल-वायु सख्त रहती है। यहाँ कतान, राई' चुकन्दर की शक्कर और गेहूँ अच्छा पैदा होता है। वल्दाई पहाड़ियो के दक्षिण में अजाफ सागर के उत्तर में यूराल पर्वतों पर खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। इस भाग के निवासी प्रायः किसान हैं। पिछले दश वर्ष से रूसी लोग कला कौशल की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं। इसलिये यहाँ कपड़ा बुना जाता है और लोहे तथा फौलाद की वस्तुएँ भी बनने लगीं हैं। इस मैदान की सारी नदियाँ बड़े काम की हैं। ये भूमि को उपजाऊ बनाती हैं, चक्कियाँ और मिलें चलाती हैं तथा रेल एवं सड़कों का काम करती हैं। प्रायः नदियों को नहरों से मिला दिया गया है और इस प्रकार अग्निबोट भीतरी देश में भी बड़े बड़े जहाजों पर माल लेकर लादती हैं और रेल, कुली या माल के ढोने की आवश्यकता नहीं होती, इससे खर्च भी कम होता है। रोन, गैरोन, लवायर, सीन, राइन, वेसर, एल्ब और ओडर सभी ऐसी नदियाँ हैं जो नहरों द्वारा मिली हुई हैं। पोलैन्ड और रूस में विस्चुला, डान, वाल्गा नीपर, नीस्टर इत्यादि में भी नावे चलती हैं। इन नदियों के किनारे बड़े बड़े व्यवसायी और

कृषि प्रधान केन्द्र स्थित हैं। 'ओनेगा' और 'वेनर' झीलें जो बाल्टिक-सागर के दोनों ओर स्थित हैं नहरों द्वारा बाल्टिक सागर से मिला दी गई हैं। क्या तुम बता सकते हो कि हिन्दुस्तान में ऐसी नहरें क्यों नहीं बनाई गई ?

मध्य यूरोप में 'डैन्यूब' नदी का बेसिन भी अत्यन्त विस्तृत है। यह 'आल्प्स', 'बालकन' और 'कारपेथियन' पर्वतों से घिरा हुआ है। इस बेसिन के दो भाग हैं। पहिला भाग 'आल्प्स' और कार-पेथियन पहाड़ो के मध्य स्थित है। दूसरा 'बालकन' 'ट्रान्सिल्वीनियन आल्प्स' और कालेसागर के मध्य स्थित हैं। 'ट्रान्सिल वोनियन आल्प्स' और 'बालकन' पहाड़ों के बीच एक पतला सा दर्रा 'आयरनगेट' हैं जिसमें होकर 'डेन्यूब' नदी बहती है। इस बेसिन का दक्षिणी भाग रूस के दक्षिणी मैदान से मिला हुआ है। यहाँ गेहूँ अधिक होता है। यहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम खेती है। उत्तरी अर्द्ध बेसिन में खेती और कला-कौशल ने साथ ही साथ एक समान उन्नति की है। इसलिये उत्तरी भाग दक्षिणी भाग की अपेक्षा अधिक सम्पत्ति-शाली और घना आबाद है।

आल्प्स पर्वतों के दक्षिण में 'पो' नदी का बेसिन या 'लोमबार्डी' का मैदान स्थित है। दक्षिणी अक्षांस में स्थित होने के कारण यहाँ की जल-वायु गर्म-शीतोष्ण है और यहाँ चावल ख़ूब पैदा होता है। रूमी जल-वायु के फल अधिक होते हैं और यहाँ शराब खींची जाती है। 'इटली' के निवासी कला-कौशल और खेती में एक समान उन्नति कर रहे हैं।

इन मैदानों के अतिरिक्त 'रोन', 'ईब्रो' ग्वाडलक्वीवर', 'मैरिटज़ा' और 'वार्डर' नदियों की घाटियों तथा तटीय मैदानों में रूमी जल-वायु की उपज अधिक होती है। खेती करना, फल उगाना, शराब खींचना व्यापार और अन्य व्यवसाय यहाँ के निवासियों के उद्यम हैं।

यूरोप के पर्वत मध्य यूरोप के पर्वत एशिया के पहाड़ों के समान नये और शिकनदार हैं। आल्प्स पहाड़ों की श्रेणियां हिमालय की भांति पूर्व-पश्चिम में फैली हुई हैं और उत्तरी यूरोप को दक्षिणी यूरोप से पृथक करती हैं। इससे यह न समझना चाहिये कि इन पर्वतों के कारण आना जाना नहीं हो सकता। इन पहाड़ों को काट कर कई स्थान पर सुरंगें बनाई गई हैं जिनमें होकर रेलगाड़ियाँ दौड़ती हैं। ये पहाड़ हिमालय की तरह बहुत ऊँचे नहीं हैं परन्तु ऊँचे अक्षांस में स्थित होने के कारण सदैव बर्फ से ढके रहते हैं। तुम आगे चल कर पढ़ोगे कि इन पहाड़ों ने यूरोप के उत्तरी और दक्षिणी भागों की जल-वायु पर कितना प्रभाव डाला है। पहाड़ी भागों मे 'जनेवा', 'न्यूचैटेल', 'ज्योरिख' और 'कान्सटेन्स' झीलें स्थित हैं, जिनके किनारे इन्हीं नामों के सुन्दर और प्रसिद्ध नगर बसे हुये हैं। 'राइन', डेन्यूब' और 'रोन' इत्यादि नदियाँ इन्हीं पर्वतों की बर्फ से पलती हैं। ऊँचे पहाड़ों पर चीड़ के जंगल हैं और शीतोष्ण घाटियों में चरागाह हैं इसीलिये यहाँ दूध की अधिकता है। तुमने बाज़ारों में 'स्विट्ज़रलैन्ड' के जमे हुये दूध और मक्खन के डिब्बे देखे होंगे। स्विट्ज़रलैन्ड में तेज नदियों और झरनों

के पानी से बिजली पैदा की जाती है और बिजली के द्वारा घड़ियों मशीनों और बहु-मूल्य कपड़ों के कारखाने तथा मिलें चलती हैं। यहां के निवासी बड़े कारीगर हैं।

पहाड़ों की जल-वायु अत्यन्त प्रिय है और दृश्य बड़े सुन्दर हैं। हजारो मनुष्य दूर दूर के देशों से इन सुन्दर दृश्यों को देखने आते हैं। प्रायः मनुष्य लकड़ी के जूते पहिन कर वर्फ की चपटी और एक सार चट्टान पर फिसलते और बाजी लगाते हैं। इस कारण स्विटज़रलैन्ड को यूरोप के खेल का मैदान कहते हैं।
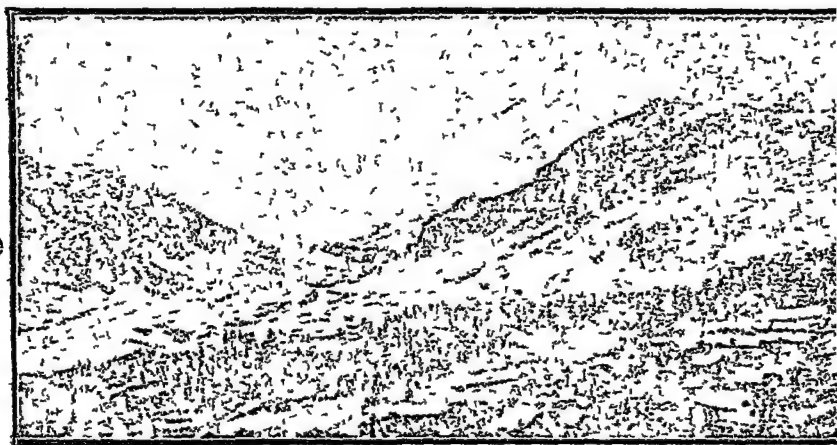
स्विटज़रलैन्ड की घाटी का दृश्य

अब तुम प्राकृतिक नकशे में इन पहाड़ों की श्रेणियां देख सकते हो। उत्तर में 'बुहोमियन फ़ारेस्ट', 'ब्लैक् फारेस्ट' 'वोज' और 'जूटा' नामक श्रेणियाँ कमान की तरह फैली हुई हैं, जो पूरब में कारपेथियन और पश्चिम में सेविनीज़ पर्वतों तक चले गये हैं। 'रोन' और 'मोच'

नदियों की घाटियां इनके मध्य में आ गई हैं। यदि ये घाटियां न होतीं तो ये तीनों श्रेणियां मिलकर एक हो जातीं। आल्प्स पर्वतों की एक श्रेणी इटली में 'पिनाइन' के नाम से प्रसिद्ध है जो टेढ़ी टेढ़ी उत्तर से दक्षिण तक चली गई है। अन्त में यही श्रेणी 'सिस्ली' और 'अटलस' रीजन में दिखाई देती है। दूसरी श्रेणी 'डिनारिक आल्प्स', 'एड्रियाटिक' सागर के किनारे किनारे दक्षिण पूरब को चली गई है और यूनान में 'पिन्डस' नामक पर्वत से मिल गई है। पूरब में 'बालकन' और 'रोडप' से मिल गई है। उत्तर में आहिनी दर्रे के पीछे ही 'ट्रान्सिलवीनियन आल्प्स' और 'कारपेथियन पहाड़' हैं। ये दोनों आल्प्स पर्वतों ही की श्रेणियां हैं। डेन्यूब नदी ने उनको काट कर अपना रास्ता बना लिया है।

प्राय-द्वीप स्कैन्डीनेविया और आइबेरिया के पर्वत प्राचीन हैं। उनमें शिकनदार श्रेणियां नहीं दिखाई देतीं, किन्तु कड़े पहाड़ों के सिरे घिस कर गोल और चौरस हो गये हैं। तुम इन पहाड़ों के ढालों को नकशे में देख सकते हो और यह अनुमान कर सकते हो कि इनकी नदियों से मनुष्य को क्या क्या लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

खनिज पदार्थ ये अधिकतर पहाड़ों और पठारों पर पाये जाते हैं और मैदान मे कम। क्या तुम इसका कारण बता सकते हो? यूरोप का महाद्वीप खनिज पदार्थ से भरा पड़ा है। 'कारपेथियन' पर चाँदी, सीसा, लोहा और ताँबा निकलता है। बृटिश द्वीप समूह, बेल्जियम, जर्मनी और उत्तरी फ्रांस मे लोहा और कोयला बहुत निकलता है जिसके कारण ये देश शिल्प और

कला-कौशल में दक्ष हो गये हैं। रूस, स्वीडन और स्पेन में अच्छा लोहा निकलता है परन्तु कोयला कम पाया जाता है। पारा आस्ट्रिया और स्पेन में निकलता है। यूराल पहाड़ पर सोना, तांबा इत्यादि अधिक होता है। 'रूमानिया', 'काफ' (काकेशस) पर्वत और पोलैंड में मिट्टी के तेल के सोते हैं। स्कैन्डीनेविया में तांबा और सिसली में गधक खोदी जाती है। इटली में करारा की संगमरमर की खानें समस्त संसार में प्रसिद्ध है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—यूरोप के मुख्य मुख्य प्राकृतिक भाग बताओ ?

२—तुम कैसे जानते हो कि स्काटलैन्ड के पहाड़ स्कैन्डीनेविया के पहाड़ों के ही भाग हैं ?

३—शिकनदार पहाड़ों में क्या क्या विशेषतयें होती हैं ? ऐसे पहाड़ यूरोप में कहाँ कहाँ पाये जाते हैं ?

४—आल्प्स पहाड़ की तुलना हिमालय पर्वत से करो ?

५—निम्नांकित के विषय में तुम क्या जानते हो :—
'मोन्टसेनिस' जूरा, लोम्बार्डी, वैलेचियन मैदान, जेनेवा, शेल्ड, मरसे और विसूवियस।

६—क्या कारण है कि यूरोप की लगभग सभी नदियाँ आने जाने के काम आती हैं।

७—यदि हम जिब्राल्टर से यूराल पर्वत के उत्तर तक हवाई जहाज़ में चढ़ कर यात्रा करें तो मार्ग में कौन कौन सी नदियाँ, पर्वत, झीलें, प्लेटो तथा मैदान मिलेंगे ?

८—यूराल, काफ, कार्पेथियन और स्कैन्डीनेविया के खनिज पदार्थ बताओ ?
९—कोयला और मिट्टी का तेल यूरोप में कहाँ कहाँ पाया जाता है ?

महाद्वीप यूरोप की जल-वायु, बनस्पति, उपज और निवासियों के व्यवसाय

शरद ऋतु की दशा नक़शे में देखकर मालूम करो कि यूरोप महाद्वीप किन किन अक्षांसों के बीच में स्थित है। इसके कौन कौन से भाग ऊँचे हैं ? कौन कौनसे भाग समुद्र के निकट हैं और यूरोप में हवायें किधर से चला करती हैं ? ऐसा करने से तुम यूरोप की जल-वायु आसानी से समझ सकोगे। जाड़े की ऋतु (जनवरी) में सूर्य की किरणें दक्षिणी गोलार्द्ध में सीधी पड़ती हैं जिसके कारण वहाँ गर्मी की ऋतु होती है और हवाओं की पट्टियाँ दक्षिण को खिसक जाती हैं। अतः जाड़ों में 'कर्क रेखा' की शान्त हवाओं की पट्टी सहारा मरु-स्थल के मध्य में होकर जाती है और दक्षिणी पश्चिमी ऐन्टी ट्रेड या पश्चिमी हवा अटलांटिक महासागर के ऊपर से महाद्वीप की ओर चलती है। क्या तुम बता सकते हो कि पश्चिमी यूरोप पर इस हवा का क्या प्रभाव पड़ता है ? इस ऋतु में पूर्वी यूरोप दो कारणों से बहुत ठंडा हो जाता है। प्रथम तो उत्तर की ओर से सर्द बर्फ़ीली हवायें काला सागर तक चला करती हैं दूसरे इस ठंडे भाग में हवा का दबाव अधिक हो जाता है। समुद्र की शीतोष्ण, तर और हल्की हवा इस भाग तक नहीं पहुंचती

तथा वर्षा नहीं होती। 'कारपेथियन' और 'स्कैन्डीनेविया' पहाड़ों से लेकर काफ़ (काकेशस) तथा यूराल पर्वत तक समस्त यूरोप की पूर्वी नदियाँ जम जाती हैं परन्तु पश्चिमी यूरोप (मौतदिल) शीतोष्ण रहता और वर्षा भी काफी हो जाती है। अपने एटलस में तुम शरद् ऋतु की ३२ अंश फ़० तापक्रम रेखा देखो और बताओ कि यह स्कैन्डीनेविया पर्वतों पर सीधी और महाद्वीप के मैदान में इतनी टेढ़ी क्यों है? तुम जानते हो कि इसके पश्चिम में गल्फस्ट्रीम ड्रिफ्ट नामक समुद्र की गर्म धारा और दक्षिणी पश्चिमी ऐन्टी ट्रेड का शीतोष्ण प्रभाव इस रेखा के पश्चिम के देशों पर पड़ता है परन्तु इसके पूर्व में नहीं पड़ता।

रूम सागर के तट पर दक्षिणी-पश्चिमी गर्म व तर हवायें चलती हैं और आल्प्स की सहायता से समस्त रूम सागरीय तट और आइबेरिया प्रायद्वीप में बर्षा करती हैं। अतः इस भाग को जल-वायु समान रहती है और केवल जाड़े की ऋतु में वर्षा होती है।

ग्रीष्म ऋतु की दशा इस ऋतु में सूर्य कर्क रेखा तक चढ़ आता है और शान्त हवाओं की पट्टी उत्तर को खिसक जाती है तथा मध्य यूरोप में होकर जाने लगती है। दक्षिणी यूरोप अर्थात् 'बालकन' प्राय द्वीप, 'इटली' और 'आइबेरिया' खुश्क ट्रेड विन्ड के भाग में आ जाते हैं और अधिक गर्म तथा खुश्क हो जाते हैं। इसलिये रूम सागर के तटों पर तो रूमी जल-वायु उत्पन्न हो जाती है परन्तु उत्तरी यूरोप में गर्मी की अधिकता से हवा का दबाव कम हो जाता है और अटलांटिक समुद्र की ओरसे गर्म-तर

यूरोप में जाड़े की दशा

यूरोप में गर्मी की दशा

हवायें साधारणतः चलती रहती हैं। इस ऋतु में हवायें यूराल पहाड़ तक घुसती चली गई हैं और इनके कारण समस्त उत्तरी यूरोप की जल-वायु शीतोष्ण हो जाती है। वर्षा भी होती है, परन्तु इन पश्चिमी हवाओं के मार्ग में कोई पहाड़ी श्रेणी ऐसी नहीं पड़ती जो इनको रोक कर अत्यन्त ठंडा कर देती और उनका तमाम पानी बरस जाता। इसलिये इस चौरस मैदान में ज्यों ज्यों ये हवायें पश्चिम की वर्षा करती गईं त्यों त्यों खुश्क होकर गर्म होती गईं। इस कारण समुद्र तट से ज्यों ज्यों हम पूर्व को जाते हैं ऋतु गर्म और खुश्क मिलती है।

अब हम जल-वायु के आधार पर यूरोप को पाँच भागों में बाँट सकते हैं :—

१. **उत्तरी पश्चिमी यूरोप**—इसमें बृटिश-द्वीप-समूह, 'नार्वे', 'डेन्मार्क', 'हालैन्ड', 'बेल्जियम' और 'फ्रांस' तथा आइबेरिया के उत्तरी भाग स्थित हैं जहाँ साल भर बराबर वर्षा होती है। शरद ऋतु में अत्यन्त सर्दी नहीं होती और ग्रीष्म ऋतु प्रिय तथा शीतोष्ण रहती है।

२. **उत्तरी पूर्वी यूरोप**—इसमें उत्तरी स्वीडन, उत्तरी रूस और फिन्लैन्ड स्थित हैं जो साल भर बराबर सर्द और खुश्क रहते हैं। तुम जानते हो कि इन भागों तक स्कैन्डीनेविया पहाड़ों के कारण समुद्र का प्रभाव नहीं पहुँचता। इसके अतिरिक्त यह ऊँचे अक्षांसों में स्थित है जहाँ टुन्ड्रा और चीड़ के जंगल हैं।

३. **मध्य यूरोप**—इसमें 'दक्षिणी-पूर्वी फ्राँस', 'जर्मनी', 'जीकोस्लोवेकिया', 'आस्ट्रिया', 'हँगरी', 'स्विटजरलैन्ड', 'युगो स्लाविया',

'रूमानिया', 'बलगेरिया', 'अलबानियाँ' और इटली का उत्तरी भाग स्थित है। यहाँ जाड़ों में सर्दी और गर्मियों में गर्मी खूब होती है तथा अधिकतर वर्षा गर्मियों में होती है।

४. **पूर्वी यूरोप**—इसमें बाल्टिक सागर की रियासतें, 'स्टोनियां' 'लटविया', 'लेथुनिया' और रूस का दक्षिणी अर्द्ध-भाग शामिल हैं। यहाँ गर्मियों में अधिक गर्मी और जाड़ों में कड़ाके की सर्दी पड़ती और वर्षा कम होती है। दक्षिणी पश्चिमी भाग की अपेक्षा उत्तरी पश्चिमी भाग में वर्षा अधिक होती है और अधिकतर गर्मियों में होती है।

५. **रूम सागरीय जल-वायु का प्रदेश**—जिसमें 'आइबेरिया' रूम सागर का तट अर्थात् 'स्पेन', और 'पुर्तगाल', फ्रांस का 'दक्षिणी तट' 'इटली' का दक्षिणी अर्द्ध-भाग और 'यूनान' तथा 'तुर्की' शामिल है। अच्छा बताओ कि इस प्रदेश की जल-वायु में क्या क्या विशेषतायें हैं।

प्राकृतिक रीजन्स और वनस्पति के प्रदेश

महाद्वीप यूरोप अत्यन्त घना आबाद है और जहाँ तक सम्भव था यूरोप के निवासी जमीन को साफ़ करके खेती व्यापार और मकान बनाने के काम में ले आये। इस कारण बहुत रीजन्स में अब प्राकृतिक वनस्पति नहीं पाई जाती, तो भी वे अपनी जल-वायु और प्राकृतिक वनस्पति के सम्बन्ध से पहिचाने जाते हैं। हम यूरोप को नीचे लिखे पाँच प्राकृतिक रीजन्स में विभाजित कर सकते हैं :—

१. 'टुन्ड्रा'—इसमें लिचिन और काई के सिवाय कुछ पैदा नहीं
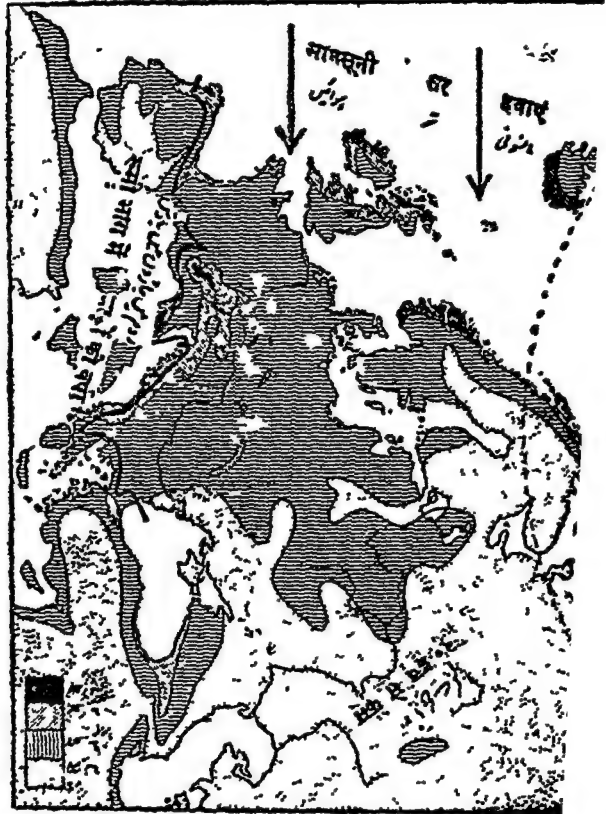
यूरोप की वार्षिक वर्षा

१. वर्षा ८० इञ्च से अधिक
२. वर्षा ४० इञ्च से ८० इञ्च तक
३. ,, २० ,, से ४० इञ्च तक
४. ,, २० ,, से कम

यूरोप की प्राकृतिक वनस्पति

होता यह भाग उत्तरी महासागर के तट और स्कैन्डीनेविया के पहाड़ों पर मिलता है।

२. 'चीड़ के जंगल'—'टैगा' जहाँ सनोवर' चीड़, वर्च इत्यादि ठंडो जल-वायु में उत्पन्न होने वाले वृक्ष पैदा होते हैं। ऐसा प्रदेश 'स्वीडन', 'फिनलैन्ड' 'नार्वे' तथा 'रूस' में पाया जाता है।

३. 'पतझड़ वाले जंगल'—इस भाग में स्वीडन और नार्वे के दक्षिणी सिरे, बृटिश द्वीप समूह, फ्रांस, जर्मनी, मध्य यूरोप और बाल्टिक सागर के तट की रियासतें शामिल हैं।

४. 'स्टेप्स'—'घास के मैदान' रूस के दक्षिणी भाग में कास्पियन और काला सागर के उत्तर-पूरब में स्थित है।

५. 'रूम सागरीय प्रदेश'—रूम के दक्षिणी तट पर स्थित हैं।

तुम इन प्राकृतिक रीजन्स का विस्तृत वर्णन एशिया के भूगोल में पढ़ चुके हो। तुमको चाहिये कि उसको अच्छी तरह दुहरा लो ताकि तुमको यूरोप का विस्तृत हाल पढ़ने में सहायता मिले।

प्राकृतिक उपज और निवासियों के व्यवसाय

१. 'टुन्ड्रा'—एशिया के टुन्ड्रा की भांति यूरोप में भी उत्तरी महासागर के किनारे टुंड्रा पाये जाते हैं। ये उजाड़ भाग हैं। लापलैन्ड के लैप्स अपने बारहसिंगों को लिये हुये फिरते रहते हैं। इनका धन कुत्ते और बारहसिंगे हैं। तुम पढ़ चुके हो कि इनका जीवन शिकार पर ही निर्भर रहता है और बारहसिंगे के दूध का प्रयोग करते हैं।

२. चीड़ के जंगल—'टैगा' की पट्टी तो एशिया में बहुत चौड़ी है मगर यूरोप में लोगों ने इनको साफ कर लिया है। क्योंकि वहां

लापलैन्ड के निवासी 'लैप्स'

जमीन की कमी है इसलिये गल्लाबानी तथा काश्तकारी करने लगे हैं। जल-वायु ठंडी होने के कारण यहाँ राई, जौ और अलसी होती है। अलसी के पौधे के रेशे निकाल कर कत्तान तैयार किया जाता है। जंगल की लकड़ी अब भी रूस का मुख्य धन है। स्वीडन और नार्वे में यही लकड़ी दियासलाई और कागज बनाने के काम में आती है। सफेद रीछ, लोमड़ी और भेड़िये इत्यादि का समूर, ऊन और चमड़ा टैगा का दूसरा मुख्य धन है।

समूरदार जानवर

३. पतझड़ वाले जंगल—यूरोप के मध्य भाग में एटलांटिक महासागर से यूराल पहाड़ तक खेत और चरागाह मिलते हैं। यह भाग वास्तव में पतझड़ वाले जंगलों का प्रदेश है। यहाँ की मुख्य पैदावार ऐश, बलूत और बच के समान वृक्ष हैं। इस भाग में तीन प्रकार की पैदावार होती है। (१) गेहूँ और जौ पश्चिम की शीतोष्ण जल-वायु में खूब पैदा होता है। ये फ्रांस, बेल्जियम और जर्मनी को मुख्य उपज हैं। (२) पूर्व में राई, मध्य भाग में चुकन्दर (जिसकी शक्कर बनाई जाती है। और अंगूर इत्यादि फल अधिकता से होते हैं। इस भाग में भी गल्लेबानी खूब होती है और ऊन तथा चमड़ा बाहर को भेजा जाता है। (३) बलदाई पहाड़ियों पर लोहा, कोयला और यूराल पर सोना, चांदी, कोयला, ताँबा इत्यादि अधिकता से निकलता है। फ्राँस, जर्मनी इङ्गलिस्तान, बेल्जियम, पोलैन्ड इत्यादि खनिज पदार्थ से भरे पड़े हैं। अतः ये शिल्प तथा व्यापार प्रधान देश हैं और पूर्वी भाग के अतिरिक्त इस भाग के निवासी अधिकतर शहरों और बन्दरगाहों में रहते हैं। यह भाग सबसे अधिक घना बसा हुआ है और इसका पश्चिमी भाग पूर्वी भाग से ज्यादा घना आबाद है। क्या तुम इसका कारण बता सकते हो ?

४. स्टेप्स—ये घास के मैदान स्टेप्स के सिलसिले हैं। ये कास्पियन तथा काले सागर के उत्तर में और रूस के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित हैं। कास्पियन के उत्तर में रूसी स्टेप्स के निवासी कौसेक भी एशिया के किरग़ीज जाति की तरह एक जगह बस्तियाँ बसा कर नहीं रहते। स्टेप्स का उत्तरी पश्चिमी भाग अत्यन्त ही

घना बसा हुआ है। यहाँ गेहूँ, शक्कर, कतान (अलसी) और रूमी जल-वायु के फल अधिकता से होते हैं। 'खरसान', 'उडेसा' गेहूँ की मंडिया हैं। अज़ाफ सागर के उत्तर में लोहा और कोयला निकाला जाता है। अतः खारको और कीव रूस के बड़े बड़े कृषि और शिल्प कारिक केन्द्र हो गये हैं।

५. रूम सागरीय प्रदेश—रूम सागर के तटों पर रूमी जल-वायु के फल अधिक होते हैं, अतः ओपार्टो और लिस्बन शराब के बन्दरगाह हैं। वैलेन्शिया रेशम और फलों का व्यापार करता है। मारसेलस रूम सागर का बहुत बड़ा और धनी बन्दरगाह है। यहाँ से फ्रांस का रेशमी कपड़ा और त्रिसातखाना बाहर को भेजा जाता है। रोम इटली की राजधानी है और व्यापारिक तथा व्यवसायी बन्दरगाह है। सालोनिका और एथेन्स में रेशमी कपड़ा तथा फलों का व्यापार होता है। कुस्तुनतुनियाँ बासफोरस जल-संयोजक पर रेशम के लिये प्रसिद्ध है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—यूरोप के पश्चिमी भाग के जल-वायु की तुलना पूर्वी भाग से करो ?
२—यूरोप में जाड़ों में कहाँ कहाँ वर्षा होती है ?
३—रूमी जल-वायु के क्या लक्षण होते हैं ? इसकी विशेषतायें बताओ ?
४—यूरोप में वे कौन कौन से भाग हैं जो जाड़ों में बर्फ़ से ढक जाते हैं ?
५—यूरोप में अन्य महाद्वीपों के समान मरु-स्थल क्यों नहीं पाये जाते ?
६—पूर्वी यूरोप में जाड़ों और गर्मियों में किस किस दिशा से हवायें चलती हैं और क्यों ? वे जल-वायु पर क्या प्रभाव डालती हैं ?

---

१. यूरोप के रीजन्स और राजनैतिक भाग

पिछले पाठ में हमने यूरोप के मुख्य रीजनों की साधारण विशेषतायें वर्णन की हैं। उनकी सहायता से हम इन रीजनों के देशों का विस्तृत वृतान्त सुगमता से अध्ययन कर सकते हैं। तुम जानते हो कि प्राकृतिक रीजन्स और राजनैतिक भागों की सीमा एक नहीं होती। अतः यूरोप के रीजन्स और राजनैतिक भागों के नक़शे की तुलना करके तुम यह बात देख सकते हो कि देश बहुधा एक से अधिक प्राकृतिक रीजनों में स्थित हैं। यूरोप का प्रत्येक राजनैतिक भाग अधिकतर किस प्राकृतिक भाग में स्थित है, इस बात को ध्यान में रखते हुये हम यूरोप के देशों को निम्नलिखित चार भागों में विभाजित करते हैं :—

१. उत्तरी पश्चिमी यूरोप के तर और शीतोष्ण देश—इसमें पुर्तगाल, बृटिश द्वीप समूह, फ्रांस, बेल्जियम, हालैन्ड, डेन्मार्क और नार्वे हैं।

२. उत्तरी और पूर्वी यूरोप के ठंडे देश—जहाँ वर्षा बहुत कम होती है। इसमें स्वीडन, रूस और बाल्टिक सागर की रियासतें हैं।

३. मध्य यूरोप के ठंडे देश—जहाँ कड़ी सर्दी होती है परन्तु

कड़ी गर्मी नहीं होती। इसमें 'पोलैन्ड', जर्मनी', 'स्विटज़रलैन्ड', 'आस्ट्रिया', 'हँगरी', 'ज़ीकोस्लोवेकिया', 'युगोस्लाविया', 'रोमानियाँ' और 'बलगेरिया' हैं।

४. रूमी जल-वायु के देश—इसमें 'स्पेन', 'पुर्त्तगाल', 'इटली', 'अलबानियाँ', 'यूनान' और 'तुर्की' हैं

उत्तरी पश्चिमी यूरोप के तर और शीतोष्ण देश

बृटिश द्वीप समूह

प्राकृतिक दशा और जल-वायु

ग्रेट ब्रिटेन के पर्वत अधिकतर उत्तर और पश्चिम में स्थित हैं और पूर्वी भाग मैदान हैं। आयरलैन्ड के मध्य में नीचा मैदान है और पहाड़ियाँ तथा ऊँची भूमि तटों के निकट स्थित है। तुम 'पेनाइन', 'कुम्ब्रियन', 'स्काटलैन्ड' के हाईलैन्ड नामक पर्वतीय प्रदेश को अपने एटलस में देख सकते हो। तुम यूरोप की जल-वायु का हाल पढ़ ही चुके हो। इसलिये बृटिश द्वीप समूह की जल-वायु तुम अपने आप मालूम कर सकते हो। पेनाइन पहाड़ मनुष्य की रीढ़ की हड्डी की तरह द्वीप के मध्य में उत्तर से दक्षिण को फैले हुये हैं। इसलिये उत्तरी अटलांटिक ड्रिफ्ट नामक सामुद्रिक गर्म धारा और दक्षिण पश्चिमी हवाओं के प्रभाव से पूर्वी भाग की अपेक्षा पश्चिमी भाग अधिक शीतोष्ण और तर रहता है। जाड़ों में पूर्वी भाग की अपेक्षा पश्चिमी भाग अधिक गर्म रहता है और गर्मियों में दक्षिणी भाग की अपेक्षा उत्तरी भाग अधिक सर्द रहता है। पश्चिमी भाग पर्वतीय है

इसलिये पश्चिम में अधिक वर्षा होती है और पूर्वी भाग में कम। यहाँ दक्कन के पूर्वी भाग की भांति 'वर्षा-छाँह' का चित्र पैदा हो जाता है। बृटिश द्वीप समूह में अधिकतर तूफान आते हैं। 'साइक्लोन' के साथ वर्षा आती है, परन्तु जब ऐन्टी साइक्लोन आता है तो ऋतु खुश्क रहती है। क्या तुम बता सकते हो कि इसका क्या कारण है?

भारत और बृटिश द्वीप समूह की तुलना

स्काटलैन्ड, इङ्गलैन्ड, वेल्स और आयरलैन्ड का संयुक्त बृटिश राज्य कला-कौशल और व्यापार में बड़ी महत्ता रखता है, इसलिये हम इनका हाल अलग अलग बतायेंगे।

स्काटलैन्ड

स्काटलैन्ड को हम तीन प्राकृतिक भागों में बाँट सकते हैं :—

१. उत्तर का पर्वतीय प्रदेश—जो 'स्कैन्डोनेविया' के प्राचीन पहाड़ों का एक भाग है। इन पहाड़ों के ढाल जङ्गलों से ढके हुये हैं

और घाटियों में चरागाह स्थित हैं। यहाँ की भूमि प्राचीन पहाड़ों के कणों से बनी है। यह उपजाऊ नहीं है इसलिये घाटियों में अच्छी घास भी नहीं हो सकती, किन्तु कहीं कहीं झाड़ियाँ और कड़ी घास के चकत्ते उगते हैं। इस प्रदेश का पूर्वी भाग पश्चिमी भाग से अधिक उपजाऊ है। यहाँ वर्षा कम होती है और गर्मी मौतदिल रहती है इसीलिये ओट और जौ अधिकता से पैदा होता है। स्काटलैन्ड जौ की शराब और ह्विस्की के लिये अधिक प्रसिद्ध है। इसके पूर्वी तट पर तुम छोटे छोटे बहुत से बन्दरगाह अपने एटलस में देख सकते हो। यह अधिकतर मछली के शिकार के केन्द्र हैं। अबरडीन माहीगीरी का केन्द्र है और ऊनी कपड़े के लिये प्रसिद्ध है।

२. दक्षिणी ऊँचे प्रदेश—इसमें नये शिकनदार पर्वत स्थित हैं। यहाँ घास अच्छी होती है और भेड़ें अधिक पाली जाती हैं। अतः 'ट्वीड' की घाटी में ट्वीड नामक मोटा कपड़ा अधिक बुना जाता है।

३. मिडलैन्ड की घाटी—स्काटलैन्ड के दोनों पर्वतीय भागों के मध्य में स्थित है। यह स्काटलैन्ड का सबसे अधिक मालदार घना आबाद भाग है यहाँ की भूमि खेती और गल्लेबानी के लिये अति उपयोगी है। पश्चिमी तर भाग में अधिकतर मवेशी चराये जाते हैं और इसलिये दूध मक्खन के अधिक कारखाने हैं। पूर्वी भाग में जहाँ की जल-वायु शीतोष्ण और वर्षा कम होती है गेहूँ पैदा होता है। इस घाटी के पूर्वी और पश्चिमी भागों में कोयले की खानें हैं जिनके निकट स्काटलैन्ड के शिल्प प्रधान जिले स्थित हैं।

एडम्बरा पूर्वी खानों का केन्द्र है। यहाँ लोहे का सामान अधिक

बनाया जाता है और उसके बन्दर लीथ से बहुत सा कोयला स्कैन्डीनेविया और बाल्टिक सागर के तटीय राज्यों को जाता है। एडम्बरा स्काटलैन्ड की राजधानी तथा शिक्षा का केन्द्र है। पश्चिमी तट पर 'क्लाइड' नदी की घाटी में एक दूसरी कोयले की खान पर ग्लासगो का बन्दरगाह स्थित है। इसके निकट ही लोहा भी निकलता है। यहाँ भी एडम्बरा की तरह लोहे और फ़ौलाद की चीजें बनाई जाती हैं। ग्लासगो में रेलें और जहाज बहुत बनाये जाते हैं। यहाँ लोहे की खानों से अब अच्छा लोहा प्राप्त नहीं होता, इसलिये लोहा स्वीडन से मंगाया जाता है। ग्लासगो की तर जल-वायु में रुई के कपड़े के कारखाने बन गये हैं। ऊनी कपड़ा भी बुना जाता है तथा दवा और साइन्स के यन्त्र भी बहुत बनते हैं। फोर्थ और क्लाइड नदियों को एक नहर द्वारा मिला दिया गया है जिसके द्वारा जहाज पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक आ जा सकते हैं। अब तुम इन दोनों बन्दरगाहों की भौगोलिक विशेषतायें बताओ तथा यह भी बताओ कि ये इतनी उन्नति क्यों कर गये हैं। 'टे' नदी पर डंडी स्थित है जहाँ जूट के कारखाने हैं। जूट हिन्दुस्तान से मगाया जाता है।

इङ्गलैन्ड

इङ्गलैन्ड को हम निम्नलिखित प्राकृतिक रीजन्स में विभाजित कर सकते हैं :—

१. झीलों का प्रदेश—यह भाग पुरानी कड़ी चट्टानों से बना है। 'विन्डर मियर' और 'डरवेन्ट वाटर' इत्यादि झीलों के आस

पास सुन्दर दृश्यों का प्रदेश स्थित है। जहाँ बहुधा लोग सैर और हवा खोरी को जाते हैं। पुरानी चट्टानों में भिन्न-भिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं और यहाँ लोहा अधिक निकलता है। अतः एक द्वीप के पीछे 'बैरो' में लोहे के जहाज़ बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं।

२. वेल्स—इसके उत्तरी भाग में पुरानी कड़ी चट्टानों के पर्वत स्थित हैं। यहाँ स्लेट का पत्थर अधिक निकलता है जो अधिकतर खपरैलें छाने के काम आता है। पहाड़ी चरागाहों पर प्रायः भेड़ें और घाटियों में मवेशी चराये जाते हैं और खेती कम होती है। अतः यह भाग बहुत घना आबाद नहीं है। वेल्स के दक्षिणी भाग की लाल भूमि में खेती और बाग़वानी अधिक होती है। यहाँ फल 'सेव' पैदा होते हैं और 'हाप' पैदा किया जाता है जिसकी मदिरा बनती है। इसी भाग में वेल्स की प्रसिद्ध लोहे की खानें स्थित हैं, इसलिये यह भाग शिल्प प्रधान हो गया है। यहाँ लोहा स्पेन से और रांगा मलाया से मंगाया जाता है। अतः स्वान्सी में कनस्टर और टीन बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। तांबा और मिट्टी का तेल बाहर से मंगाकर साफ किया जाता है। कारडिफ़ और न्यूपोर्ट इत्यादि शिल्प प्रधान और व्यवसायी बन्दरगाह तुम अपने एटलस में में देख सकते हो।

३. डेवान और कार्नवाल—इसमें पहिले तांबा और रांगा अधिक निकलता था, परन्तु अब नहीं निकलता है। 'काउलीन' अर्थात् चीनी मिट्टी अधिक खोदी जाती है और मध्य इङ्गलैन्ड के

कारखानों को भेज दी जाती है। जहाँ इससे चीनी और ताम चीनी के बर्तन बनाये जाते हैं। इस भाग में वर्षा ख़ूब होती है और चरागाह अधिक हैं। इस कारण डेवान का मक्खन और मलाई बहुत प्रसिद्ध है। 'प्लाई मथ' अटलांटिक महासागर में यात्रा करने वाले जहाजों के कोयले पानी का मुख्य बन्दर है। यहां बृटिश जंगी जहाजों का बेड़ा रहता है। बृस्टल चैनल पर 'बृस्टल' नामक बन्दरगाह स्थित है, जहाँ अमरीकन तम्बाकू के सिग्रेट बनाये जाते हैं। यहां शीशे का सामान और जहाज भी बनाये जाते हैं।

४. खनिज तथा शिल्प प्रधान भाग—पेनाइन पर्वत जो इङ्गलैन्ड की रीढ़ की हड्डी कहलाता है मध्य इङ्गलैन्ड में उत्तर से दक्षिण को चला गया है और पूर्वी तट की अपेक्षा पश्चिमी तट के अधिक निकट स्थित है। पेनाइन के पश्चिमी ढालों पर वर्षा अधिक होती है और लम्बी लम्बी घास पैदा होती है। पूर्वी भाग में वर्षा छाँह का क्षेत्र होने के कारण वर्षा कम होती है और छोटी छोटी घास उगती है। अतः प्राचीन काल में पश्चिम में ढोर और पूर्व में भेड़ें चराई जाती थीं। भेड़ों की ऊन पहाड़ी नदियों के पानी में ख़ूब साफ होती थी और बहते पानी की शक्ति से मशीनें चला कर ऊनी कपड़े बुने जाते थे। जब पेनाइन के दोनों ओर लोहे और कोयले की खानें ज्ञात हुईं और भाप से चलने वाली कलों का आविष्कार हुआ, तो बृटिश जुलाहों ने पश्चिम की तर-वायु में रुई के कपड़े के कारखाने खोल दिये और पूर्व की खुश्क हवा में ऊनी कपड़ों के कारखाने पूर्ववत् चलते रहे। पहिले तो कारखानों में इङ्गलैन्ड के लोहे और ऊन

का ही प्रयोग होता था परन्तु अब बहुत सा ऊन आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड से आने लगा है। रुई अमरीका के संयुक्त राज्य, मिश्र और भारतवर्ष से आती है। लोहा स्पेन तथा स्वीडन से मँगाया जाता है। इस तरह इस प्रदेश में शिल्प और कला-कौशल की उन्नति हुई है।

इंगलिस्तान में निम्न लिखित खनिज और शिल्प प्रधान प्रदेश हैं जो कोयले की खानों के पास उत्पन्न हो गये हैं :—

१. **लंकाशायर**—यहाँ कोयले की खानों के दर्द गि ँ रुई और कपड़े के कारखाने हैं। पहिले यहाँ ऊन के कपड़े बुने जाते थे जो केवल इङ्गलिस्तान और निकटवर्ती कुछ देशों में ख़रीदे जाते थे। मगर रुई के कपड़े की बड़ी माँग देख कर लंकाशायर के जुलाहों ने पश्चिमी इङ्गलिस्तान की तर जल-वायु में रुई के बड़े बड़े कारखाने खोले। आज लिवरपूल और मेनचेस्टर समस्त संसार के रुई के माल का एक चौथाई भाग पैदा करने लगा है। लिवरपूल मरसे नदी के मुहाने पर स्थित है। यहाँ से एक जहाजी नहर मेनचेस्टर को जाती है। इन दोनों शहरों के उत्तर में बहुत से शिल्प प्रधान नगर जैसे राश्डेल, बोल्डम, ब्लैकबर्न इत्यादि स्थित हैं। इनमें से प्रत्येक नगर सूत बनाने या कपड़ा रंगने अथवा किसी खास रंग का कपड़ा बुनने के लिये प्रसिद्ध है। वाईगान जो मेनचेस्टर के पश्चिम में स्थित है मशीन और इञ्जन बनाता है। पहिले लंकाशायर का लोहा मशीने बनाने के काम आता था परन्तु अब अधिकतर बाहर से मंगाया जाता है और यहाँ से कोयला बाहर को भेजा जाता है। इस प्रदेश

के दक्षिण में चीशायर नगर में नमक खोदा जाता है तथा सेन्ट हेलिन और वारिङ्गटन में दवाइयाँ बनाई जाती हैं।

२. यार्कशायर—इसके कोयले की खानें पेनाइन के पूर्वी ढाल पर स्थित हैं। जिस प्रकार लंकाशायर ने विशेषकर रुई के कपड़े के शिल्प और व्यापार को अपना लिया है उसी प्रकार यार्कशायर ने ऊनी कपड़े के शिल्प-कला में उन्नति की है। इन खानों के चारों ओर बहुत से शिल्प-प्रधान नगर स्थित हैं, जिनमें से हर एक में एक ही प्रकार का कपड़ा बुना जाता है। जैसे हैलीफैक्स में ऊनी कालीन बनते हैं और ब्रेडफोर्ड में ऊनी कपड़े। लीड्स, हडूसफील्ड यहाँ के अन्य प्रसिद्ध नगर हैं इसी प्रदेश के दक्षिणी भाग में लोहे और फौलाद की चीजें बनाई जाती हैं। शेफील्ड में चाकू, उस्तरे इत्यादि अच्छे बनते हैं। नाटिंघम में लोहा निकलता है मगर अब बहुत सा लोहा स्पेन से मँगाया जाता है।

३. नार्थम्बर लैन्ड और डरहम—इङ्गलैन्ड के उत्तरी पूर्वी तट पर स्थित हैं। ये बृटिश द्वीप समूह के फौलादी शिल्प का सब से बड़ा केन्द्र है। लोहा यार्कशायर से मँगाया जाता है। जितना लोहे का सामान इस प्रदेश में बनाया जाता है उतना कहीं नहीं बनाया जाता। मिडिल्सबरो इस फौलादी शिल्प-कला का मुख्य केन्द्र है। डार्लिङ्‌-टन में रेलें बनाई जाती हैं। न्यूकेसिल, स्टाकूटन, सन्डरलैन्ड, हार्टिलपूल इत्यादि में हजारों जहाज बनाये जाते हैं। न्यूकेसिल से बहुत सा कोयला बाहर को भेजा जाता है।

४. मध्य भाग—इसमें बहुत सी छोटी छोटी कोयले की खानें स्थित हैं। बरमिङ्गहम इस प्रदेश का केन्द्र है। इसके चारों ओर इतने कारखाने और मिलें हैं कि तमाम वायु-मंडल अन्धकारमय रहता है। अतः इस भाग का नाम काला देश पड़ गया है। यहाँ बन्दूकें, घड़ियाँ और शीशे तथा लोहे के हजारों प्रकार के सामान बनाये जाते हैं। कावेन्ट्री के मोटरकार, किडर मिन्सटर के कालीन और वारिस्टर के चीनी के बर्तन बहुत प्रसिद्ध हैं।
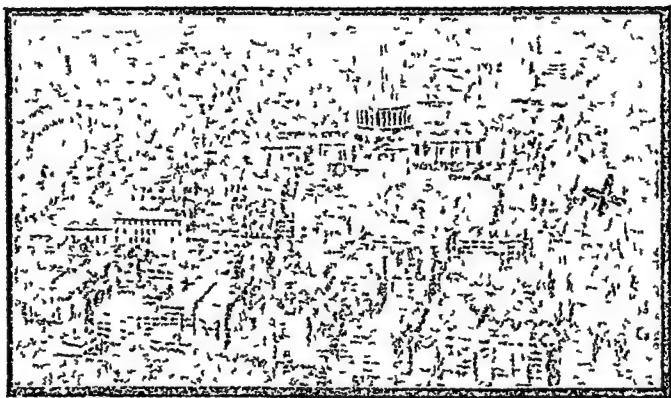
लंडन

५. दक्षिणी पूर्वी प्रदेश—इङ्गलिस्तान के दक्षिणी पूर्वी भाग में गेहूँ की खेती होती है और फल उगाये जाते हैं। इस प्रदेश का पश्चिमी भाग पूर्वी भाग से अधिक नम है। अतः पश्चिम में दूध और मक्खन के कारखाने हैं, भूमि अधिकतर ऊँची नीची है जहाँ ढोर और भेड़ें चराई जाती हैं। नीची घाटियों में खेती होती है।

प्रत्येक किसान अपने खेत के निकट रहता है और गाय, बैल, घोड़ा सुअर, मुर्गी और भेड़ें पालता है। नये नये खाद का प्रयोग करके भारतवर्ष से प्रति एकड़ डेढ़ गुनी फसल उगाता है। तरकारियाँ और फल इस भाग में अधिकता से होते हैं।

शिल्प प्रधान की अपेक्षा इस भाग की आबादी कम घनी है और बड़े बड़े शहर भी कम हैं। हारविच में कृषि सम्बन्धी यंत्र, हल ट्रैक्टर इत्यादि कलें बनाई जाती हैं। नार्थम्पटम और नाटिङ्घम में चमड़े का सामान बनाया जाता है। 'लंडन' बृटिश साम्राज्य की राजधानी और संसार के व्यापार का केन्द्र इसी भाग में स्थित है। यहाँ कोई मुख्य खान या शिल्पकारी नहीं है, किन्तु महाद्वीप यूरोप के धनी राज्यों के समीप होने के कारण इतनी उन्नति कर गया है। इसका बन्दरगाह भी प्राकृतिक नहीं किन्तु बहुत सा रुपया खर्च करके बनाया गया है। पूर्वी और दक्षिणी तट पर तुम बहुत से छोटे छोटे व्यापारी बन्दरगाह अपने नक्शे में देख कर मालूम कर सकते हो। इनमें से फाक्सटन, डोवर, साउथम्पटन, ग्रिम्सबी इत्यादि अत्यन्त प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

इङ्गलिस्तान में रेलों का एक जाल सा बिछा हुआ है और लंडन इन रेलों का केन्द्र है। यहाँ से देश के प्रत्येक भाग में रेलें जाती हैं। इन रेलों की प्रत्येक स्थान में दो पटरियाँ हैं, एक जाने के लिये और दूसरी आने के लिये। व्यापार अधिक होने के कारण गाड़ियाँ जल्द जल्द छूटती हैं। हिन्दुस्तानी रेलों के मुकाबिले में दूनी तेज़ चलती हैं। इङ्गलैन्ड के चारों ओर जहाज चलते हैं और नदियों के

मुहाने में भीतर तक चले जाते हैं। यहाँ बहुत सी नहरें ऐसी बनाई गई हैं जिनमें जहाज आ जा सकते हैं।

आयरलैन्ड

यह एक खेतिहर देश है। इसके पूर्वी भाग की ज़मीन पश्चिमी हिस्से की अपेक्षा अधिक उपजाऊ है। पश्चिमी और दक्षिणी तर भागों में सुअर और ढोर चराये जाते हैं। उपजाऊ भूमि में ओट, जौ और अलसी (कतान) पैदा होती है। इसी कारण बेलफास्ट बन्दरगाह में कतान के कारखाने हैं। डबलिन आयर्लैंड की राजधानी है। लंडनडेरी और कार्क उत्तरी व दक्षिणी तट के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—रीजन (प्राकृतिक भूखण्ड) किसे कहते हैं? तुम स्काटलैन्ड को कितने रीजन्स में बांटोगे? इनमें से किसी एक का संक्षिप्त वर्णन करो?

२—पेनाइन पर्वत को इङ्गलैन्ड की रीढ़ की हड्डी क्यों कहते हैं? इस पर्वत ने इस देश की जल वायु और शिल्प कला पर क्या प्रभाव डाला है?

३—नीचे लिखी बातों में इङ्गलैन्ड के पश्चिमी भाग की पूर्वी भाग से तुलना करो। (अ, जल-वायु और वर्षा (ब) पैदावार (स) निवासियों के उद्यम?

४—निम्न लिखित नगरों की ठीक स्थिति बताओ और उनकी महत्ता के क्या कारण हैं? ग्लासगो, वर्मिंघम, लीड्ज़, हारविच, लिवरपूल, बेलफास्ट?

५—इङ्गलैन्ड के खनिज प्रदेश बताओ और किसी एक का संक्षिप्त वर्णन करो?

६—बृटिश द्वीप समूह के कला-कौशल व्यापार की उन्नति के क्या कारण हैं?

७—बृटिश द्वीपसमूह में नीचे लिखी शिल्पकारियां कहाँ कहाँ पाई जाती हैं? रुई और ऊन के कपड़े बुनना, चाकू-उस्तरे बनाना, जहाज़ और मोटर बनाना।

---

२. यूरोप के रीजन्स और राजनैतिक भाग

उत्तरी पश्चिमी यूरोप के तर शीतोष्ण देश

फ्रांस

यह इङ्गलिश चैनेल से रूम सागर तक फैला हुआ है। इसके पश्चिम में मैदान और पूरब में पहाड़ हैं। अतः यहाँ कई प्रकार की जल-वायु पाई जाती है। हम फ्रांस को ५ प्राकृतिक भागा में विभाजित कर सकते हैं:—

१. उत्तरी मैदान—यह यूरोप के बड़े मैदान का भाग है। बृटैनी प्रायद्वीप डेवन की तरह कई चट्टानों से बना है और पहाड़ी है। यहां वर्षा अधिक होती है, गल्लेबानी और माहीगीरी यहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम है। ब्रेस्ट में फ्रॉन्सीसी जंगी बेड़ा रहता है और नॉट में लायर नदी पर जहाज बनाये जाते हैं। इस प्रायद्वीप के पूरब मे जल-वायु कुछ खुश्क हो जाती है। लायर और सीन नदियों ने यहाँ की भूमि को उपजाऊ बना दिया है। यह फ्रांस का कृषि प्रधान देश है। और पेरिस-बेसिन कहलाता है।

यहां की मुख्य उपज गेहूँ, चुकन्दर की शक्कर और ओट है। भेड़ें भी चराई जाती हैं। पेरिस लंडन की तरह कृषि क्षेत्र के मध्य में स्थित

है। इसके समीप कोई खान नहीं है परन्तु यहाँ बिसात खाने की छोटी छोटी वस्तुयें बनाई जाती हैं। पेरिस के पूर्व में कीमती अंगूरी शराब (शेम्पियन) बनाई जाती है।

फ्राँस के उत्तर और पूर्व के कोने में लील नगर कोयले की खानों पर स्थित है। अतः यह एक शिल्प प्रधान नगर बन गया है। यहां लोहे और फौलाद की वस्तुयें तथा मशीनें बनाई जाती हैं। रुई के कारखाने, लील, रुबे और रुआं में पाये जाते हैं। शेरबर्ग और हावर्ग बड़े बड़े बन्दरगाह हैं प्रायद्वीप ब्रिटैनो के दक्षिण में शीतोष्ण जल-वायु का भाग स्थित है। यहां अंगूर बहुत पैदा होता है अतः बोर्डो शराब का बन्दरगाह प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त गेहूँ और ज्वार भी पैदा होती है तथा ढोर चराये जाते हैं। पेरिनीज के पहाड़ी ढालों पर भेड़ें चराई जाती हैं।

२. **मध्य प्लेटो**—यह सख्त चट्टानों का प्लेटो है और यहाँ की जमीन अनुपजाऊ है। राई और घास यहाँ की मुख्य पैदावार है और भेड़ें चराई जाती हैं। सेन्टएटियन के समीप लोहा और कोयला पाया जाता है। अतः यह लोहे और फौलाद की शिल्प-कला का केन्द्र बन गया है।

३. **रूम सागरीय प्रदेश**—इसमें रोम नदी की घाटी कुछ ठंडी है, क्योंकि यहाँ एल्प्स की ठंडी हवायें चलती हैं। दक्षिणी तट रूमी जल-वायु का प्रदेश है इसलिये जैतून, अंगूर और शहतूत इत्यादि यहां की उपज है। रोम नदी की घाटी में लियोन रेशम के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ चीन और जापान इत्यादि से भी कच्चा रेशम मँगाया जाता है

तथा रेशमी कपड़ा बुना जाता है। मारसेल्ज इस तट का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। यहाँ तेल, इत्र, साबुन और मोमबत्ती इत्यादि के कारखाने हैं। यहां के कारखानों के लिये भारतवर्ष और अफ्रीका से तेलहन और ताड़ का तेल मँगाया जाता है। हिन्दुस्तान की डॉक इसी बन्दरगाह पर उतारी जाती और रेल द्वारा कैले को भेज दी जाती है, वहाँ से अग्निबोट द्वारा लंदन पहुँच जाती है। यहाँ जहाज भी बनाये जाते हैं। इसके पूर्व में टूलोन सामुद्रिक बेड़े का केन्द्र है। रूमसागर का वह तट जो इटली के समीप स्थित है जाड़ों में शीतोष्ण रहता है। अतः यहाँ जाड़ों में लोग वायु-सेवन को आते हैं।

४. एल्प्स का पहाड़ी प्रदेश—इस भाग में एल्प्स के पर्वत स्थित हैं जिनको काट कर मांन्ट सेनिस नामी सुरंग में होकर एक रेल बनाई गई है जो इटली को फ्रांस से मिलाती है। इस प्रदेश में झरनों और नदियों की तेज धारा से मशीने चलाकर बिजली पैदा की जाती है जिससे दवाओं के कारखाने और मिलें चलती हैं।

५. अलसास और लोरेन—जो पहिले जर्मनियों ने फ्रांस से छीन लिए थे। यूरोप के महायुद्ध के बाद से फिर फ्रांस के अधिकार में आ गये हैं। यहाँ लोहा खूब निकलता है और लील के शिल्प-प्रधान नगर को भेज दिया जाता है। सार में कोयला खोदा जाता है। लोहे और कोयले के कारण मुलहाउस में कपड़े के कारखाने खुल गये हैं।

पेरिस रेलों का केन्द्र है। यहाँ से हर तरफ को रेलें जाती हैं, तुम इनको अपने नक़शे में देख सकते हो। सीन, लायर, रोम और

रोन नदियो को नहरों द्वारा मिला दिया गया है, जिसमें होकर रूम सागर से इङ्गलिश चैनेल तक नावें आती जाती हैं और दरियाई रास्ते से व्योपार हो सकता है।
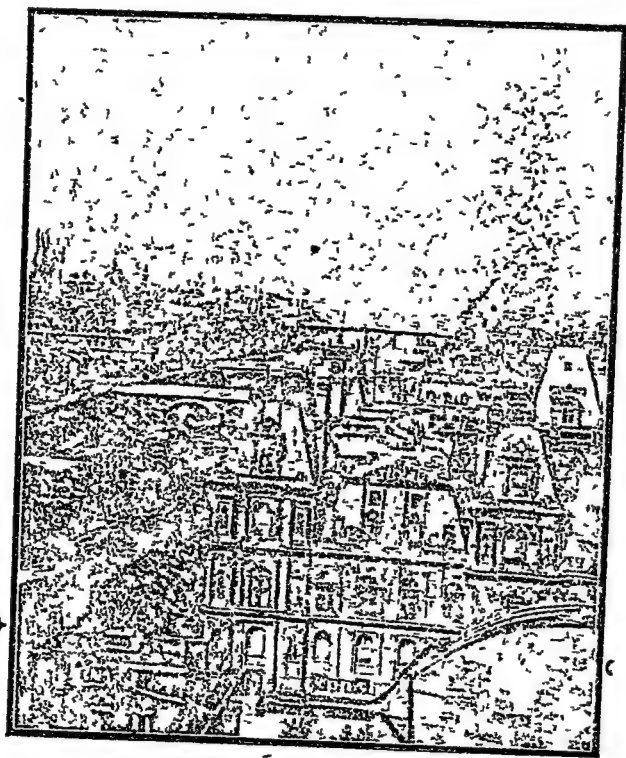
सीन नदी का दृश्य

बेलजियम

फ्रांस के उत्तर पूर्व के कोने पर बेलजियम का छोटा सा राज्य त है। इसके तीन प्राकृतिक रीजन्स हो सकते हैं :—

१. उत्तर की ऊँची भूमि—इसमें खेती होती है, यहां की मुख्य पैदावार राई, ओट, गेहूँ, आलू और चुकन्दर की शक्कर है। नीची भूमि में अलसी होती है और ढोर भी चराये जाते हैं। घेन्ट नगर में कतान बुना जाता है। 'ब्रूसेल्स' रेलों का केन्द्र सबसे बड़ा शहर और राजधानी है। 'एन्टवर्प' का सब से बड़ा बन्दर शेल्ड नदी पर स्थित है, किन्तु इस बन्दरगाह तक हालैन्ड में होकर जहाज़ आते जाते हैं।

२. आर्डेन प्लेटो—यह दक्षिण में है, जिसमें पहाड़ियों पर जगल हैं और ढालों पर भेड़ चराई जाती हैं। प्लेटो के दक्षिणी ढाल पर लोहा निकलता है और इस प्रदेश की जन संख्या बहुत कम है।

३. खनिज और शिल्प प्रधान प्रदेश—उत्तरी खेतिहर भाग और दक्षिणी प्लेटो के मध्य पूर्व से पश्चिम तक कोयले की खानों की एक पतली पट्टी चली गई है, यह बेलजियम का एक बड़ा शिल्प-प्रधान प्रदेश है। यहाँ लोहा दक्षिणी भाग (लगजेमबर्ग) से मँगाया जाता है। 'नामूर' और 'लियेज' की प्रसिद्ध कोयले की खानों के चारों ओर भांति भांति की चीज़ें बनाई जाती हैं। लियेज़ में रेलें, मशीनें और लोहे के पुल बनते हैं। शीशे की चीजें और दवाइयां 'चार्लेराय' में बनाई जाती हैं, इसलिये यह भाग अत्यन्त घना बसा हुआ है। बेलजियम एक शिल्प प्रधान देश है। यहाँ से लोहे और फौलाद की वस्तुयें, मशीनें, लोहे की चादरें, खम्भे, शीशे की वस्तुयें, कपड़ा, कतान, सूत और लकड़ी के तख्ते बाहर को भेजे जाते हैं।

बेलजियम का क्षेत्र फल धीरे धीरे बढ़ रहा है क्योंकि समुद्र पीछे

हटता जाता है। बहुत से छोटे छोटे प्राचीन बन्दरगाह अब समुद्र त
से बहुत दूर हो गये हैं। 'घेन्ट' किसी समय एक बन्दरगाह था जो
अब भीतरी नगर है। शेल्ड और म्यूज़ नदियों में नावें चलती हैं।
ब्रूसेल्स से चारों ओर को रेलें जाती हैं, जिनसे बेलज़ियम के
व्यापार का अनुमान हो सकता है।

हालैन्ड

बेलजियम के उत्तर पूरब में एक छोटा सा राज्य 'हालैन्ड' स्थित
है। इसमें 'राइन' और 'म्यूज़' नदी के डेल्टे तथा 'ज़्वीडरज़ी' के पूर्व
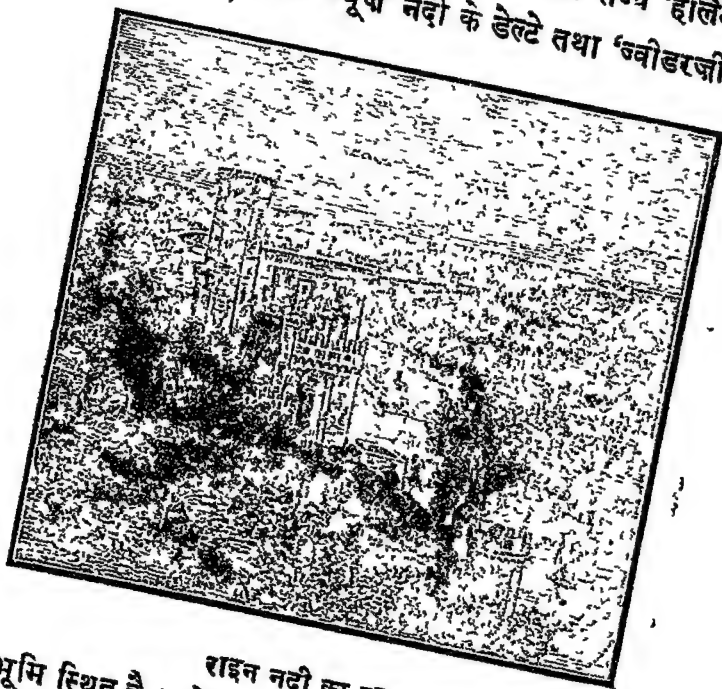
राइन नदी का दृश्य

ीय भूमि स्थित है। जो समुद्र तल से भी नीची है। इसी कारण
राज्य का नाम 'नीदर लैन्ड' या नीचा प्रदेश पड़ गया है। डच

लोग बड़े परिश्रमी और कारीगर होते हैं। इन्होंने पक्के बंद बाँध कर समुद्र को रोक रक्खा है। समुद्र के पानी को मशीनों और पम्प के द्वारा निकाल निकाल कर समुद्र को खुश्क कर लिया है तथा समुद्री भूमि पर अधिकार जमा कर अपने काम में लाये हैं। 'ज्वीडरज़ी' को बराबर खुश्क किया जा रहा है और देश का क्षेत्रफल बढ़ रहा है।

इन कठिनाइयों के होते हुये भी हालैन्ड एक बड़ा धनी देश है। यहां ओट, राई, जौ, आलू, गेहूँ और चुकन्दर की शक्कर पैदा होती है। तथा बाहर को भेजी जाती है। यहां ढोर अधिकता से पाले जाते हैं और मक्खन, मलाई तथा पनीर बाहर को भेजा जाता है। बेलजियम की सीमा के निकट कुछ थोड़ा सा कोयला भी पाया जाता है। जिसकी सहायता से शिल्प तथा व्यवसाय उन्नति कर रहे हैं। यहां पश्चिमी हवा बराबर चलती रहती है जिसके द्वारा आटा पीसने की चक्कियां चलाई जाती हैं। समुद्रतट पर मछली पकड़ी जाती हैं। 'दी हेग' यहाँ की राजधानी है। 'ऐम्सटरडम' हालैन्ड का सबसे बड़ा बन्दरगाह है और जवाहरात का संसार-प्रसिद्ध बाज़ार है। राटर्डम बहुत बड़ा बन्दरगाह है जहाँ राई से 'जिन' नामी शराब बनाई जाती है और बाहर को भेजी जाती है। 'हारलीम' में बिजली के कारखाने हैं जहाँ के बल्ब समस्त संसार में बिकते हैं। यहाँ कतान के भी कारखाने हैं। 'अटरिच' में रुई के कपड़े के कारखाने हैं। 'ग्रूनिञ्जेन' मक्खन का प्रसिद्ध बाज़ार है। 'ऐम्सटरडम' से दो रेलें बेलजियम और जर्मनी को जाती हैं। रेलों के अतिरिक्त दरियाई रास्ते भी अधिकता से प्रयोग में लाये जाते हैं।

डेन्मार्क

जटलैन्ड का नीचा प्रायद्वीप और जीलैन्ड इत्यादि द्वीप जो इसके पूर्व में स्थित हैं डेन्मार्क राज्य में सम्मिलित हैं। यहाँ को भूमि अधिकतर चौरस है किन्तु पश्चिमी भाग बेकार है। क्योंकि यहाँ समुद्र ने रेत के ढेर इकट्ठे कर दिये हैं और रेत पश्चिमी हवा के
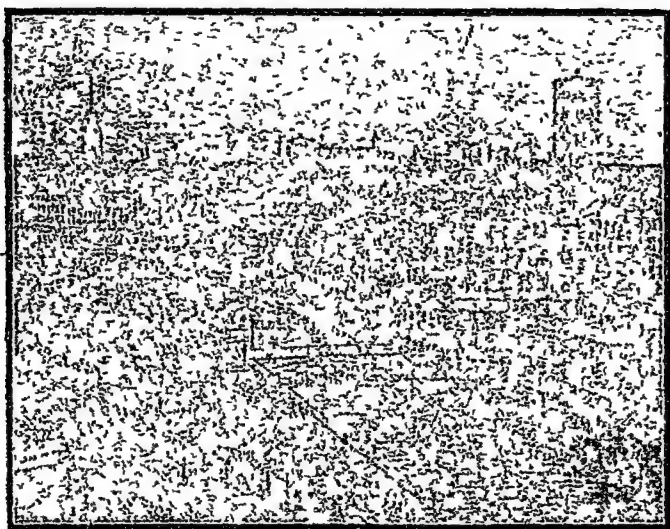
कोपन हैगन

साथ देश के भीतर उड़ उड़ कर जाता रहता है। अब इसको रोकने के लिये पश्चिमी तट पर जंगल उगा दिये गये हैं। यहाँ के निवासियों के मुख्य उद्यम खेती, गल्लाबानी, माहीगीरी और व्यापार हैं। गेहूँ, जौ, चुकन्दर की शक्कर और ओट यहाँ की मुख्य उपज है। मक्खन,

पनीर, गोश्त, चमड़ा और अंडे यहां से बाहर को भेजे जाते हैं। 'एब्जर्ग' माहीगीरी का केन्द्र है। 'कोपनहैगन' राजधानी है। यहां चमड़े के बड़े बड़े कारखाने हैं।

"आइसलैन्ड', 'फेअरो' और ग्रीनलैन्ड के द्वीप डच लोगों के अधिकार में हैं, जिनमें से 'आइसलैन्ड' भीतरी राजनैतिक प्रबन्ध के लिये स्वतन्त्र है। इसका उत्तरी भाग पर्वतीय बर्फ से ढका रहता है। दक्षिण के भाग में सर्दी कम होती है। यहां गाय, बैल, भेड़, बकरी और घोड़े चराये जाते हैं। 'रीकजावेक' यहां का मुख्य शहर है। फेयरो द्वीप भेड़ों का द्वीप प्रसिद्ध है किन्तु ग्रीनलैन्ड बिल्कुल बेकार है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—फ्रांस के मुख्य प्राकृतिक रीजन्स बताओ और उनमें से किसी एक का संक्षिप्त हाल वर्णन करो ?

२—निम्नलिखित बातों की दृष्टि से बेलजियम और हालैन्ड की तुलना करो:—

(अ) भूमि की बनावट।

(ब) शिल्पकारी और व्यापार।

३—निम्नलिखित स्थानों की भौगोलिक विशेषता तथा प्रसिद्धि के कारण बताओ :—

एन्टवर्प, मार्सैल्स, हावर, कील, ऐम्सटर्डम और पेरिस।

४—डेन्मार्क की प्राकृतिक दशा और उपज का वर्णन करो तथा यह भी बताओ कि यह राज्य बेलजियम की भाँति शिल्प प्रधान देश क्यों नहीं है ?

३. यूरोप के रीजन्स और राजनैतिक भाग

उत्तरी और पूर्वी यूरोप के ठंडे देश

स्कैन्डीनेविया

यूरोप के नकशे में प्रायद्वीप स्कैन्डीनेविया के पश्चिम तट की स्काटलैन्ड के पश्चिमी तट से तुलना करो। स्कैन्डीनेविया पर्वत ढूँढ़ो और बताओ कि यह किस किनारे के निकट है। इसके पश्चिमी ढाल अधिक ढालू हैं परन्तु पूर्वी ढाल धीरे धीरे पूर्वी स्वीडन के तटीय मैदानों से जा मिले हैं। इसलिये पश्चिमी ढाल की नदियाँ बहुत छोटी और तेज बहने वाली हैं तथा इनसे बिजली बनाई जाती है। पूर्वी ढाल की नदियाँ अधिकतर बड़ी हैं और धीरे धीरे बहती है। इनमें पहाड़ी लकड़ी बहाई जा सकती है।

इन पहाड़ों के पश्चिमी ढालों की जल-वायु पूर्व की अपेक्षा अधिक शीतोष्ण और तर रहती है। क्योंकि इन पहाड़ों के कारण दक्षिणी पश्चिमी हवा और अटलांटिक ड्रिफ्ट का गर्म प्रभाव पहाड़ों के दूसरी ओर नहीं पहुँच सकता। यद्यपि उत्तरी अन्तरीप सुमेर रेखा के उत्तर में स्थित है तो भी इस गर्म धारा के प्रभाव से समुद्र कभी नहीं जमता। नार्वे के पश्चिमी ढालों पर घने जंगल हैं। स्वीडन

को जल-वायु कड़ी रहती है और जाड़ों में कड़ी सर्दी होती है। नार्वे के निवासियों के मुख्य उद्यम जंगल की लकड़ी काटना, कागज़ और दियासलाई बनाना तथा मछली का शिकार करना है। फियोर्ड के आस पास और तंग घाटियों में थोड़ी बहुत खेती भी हो जाती है। नार्वे में कोयला नहीं पाया जाता, अतः बिजली की शक्ति से कोयले का काम लिया जाता है और कलें व कारखाने चलाये जाते हैं। 'आस्लो' नार्वे की राजधानी और व्यापारिक बन्दरगाह है। यहाँ से लकड़ी, काग़ज बनाने का मसाला, कागज और दियासलाई बाहर को भेजी जाती हैं। 'बरज़िन' पश्चिमी तट पर लकड़ी के व्यापार का बन्दरगाह है और माहीगोरी का केन्द्र है। 'ट्रान्डम्हेम-फियोर्ड' से ग्लोमन घाटी में होती हुई एक रेल आस्लो तक और दूसरी स्टाखोम तक जाती है जो स्वीडन की राजधानी है।

स्वीडन

स्वीडन नार्वे से दूना बड़ा है और जनसंख्या दूनी से भी अधिक है। स्वीडन का उत्तरी भाग नार्वे के समान पर्वतीय है। अतः यहाँ के निवासियों के भी वही व्यवसाय हैं जो नार्व के निवासियों के। दक्षिणी भाग यूरोप के बड़े मैदान का एक भाग है। यहाँ की भूमि अमरीकन बड़ी झीलों के आस पास की भूमि की भाँति ग्लेशियरों की बनाई हुई है और 'वेनर', 'वेटर' और 'मैलर' झीलें इन्हीं ग्लेशियरों के शेष भाग हैं जो अब पिघल गये हैं। इस प्रदेश में जौ, ओट और राई पैदा होती है। अधिक सर्दी के कारण गेहूँ पैदा नहीं हो सकता। ढोरों के लिये घास तथा चारा भी उगाया जाता है। उत्तरी भाग में

लोहा खोदा जाता है और 'टोर्नियां' नदी की घाटी में 'गैलीवारा' खान की खुदाई का केन्द्र है। 'स्टाखोम' में लकड़ी और लोहे के कारखाने हैं तथा दियासलाई बनाई जाती है। 'गोटेबर्ग' यहां का मुख्य बन्दरगाह है। 'नारकोपिंग' में कपड़े बनाने के कारखाने हैं। स्वीडन के बन्दरगाह जाड़ों में बर्फ से ढक जाते है और सामुद्रिक व्यापार बन्द हो जाता है। स्वीडन में उत्तर से दक्षिण तक रेलें फैली-हुई हैं तुम उनको नकशे में ढूँढ़ सकते हो। स्वीडन की झीलों और बाल्टिक सागर को 'गोटा' की नहर से मिला दिया है। यह नहर सामुद्रिक व्यापार के लिये बड़ी उपयोगी है।

रूस और बाल्टिक सागर के तटीय राज्य

यूरोप के महायुद्ध से पहिले रूस का राज्य संसार में सबसे बड़ा राज्य था, परन्तु क्रान्ति के पश्चात् इसके, बहुत से भाग स्वतन्त्र हो गये। अतः यूरोप में बाल्टिक सागर के तट पर 'फिन्लैण्ड', स्टोनियां' 'लैटविया' और 'लेथुआनियां' के राज्य स्वतन्त्र हो गये। रूस का ज़ार गद्दी से उतार दिया गया और मज़दूरों तथा किसानों का 'सोवियट' राज्य स्थापित हो गया। यहाँ का सबसे बड़ा शासक प्रेसीडेन्ट एक नियत समय के लिए चुना जाता है और सोवियट सभा की सहायता से शासन करता है। यहाँ की शासन पद्धति विचित्र है। समस्त रूस की खानें, जंगल, रेलवे, भूमि, कारखानें और सम्पत्ति गवर्नमेंट के अधीन है। निवासी एक नियत संख्या से अधिक धन नहीं रख सकते। सब लोग सोवियट की आज्ञा नीति के अनुसार

उद्यम तथा व्यवसाय करते हैं। कमाया हुआ धन सोवियट सरकार के कोष में जमा हो जाता है। पुनः खाना, कपड़ा और खर्चा सरकार की ओर से सब निवासियों को बाँटा जाता है।

फिन्लैन्ड फिन्लैन्ड का स्वतन्त्र राज्य इसी नाम की खाड़ी के उत्तर में स्वीडन और नार्वे की हद्दों तक फैला हुआ है और अधिकतर ठंडे जंगलों से ढका हुआ है। अतः लक़ड़ी, कागज़ और कागज़ बनाने का ममाला यहाँ की मुख्य व्यापारिक उपज है। इसके अतिरिक्त माहीगीरी, गल्लावानी और मोटे अनाज की कृषि भी होती है। 'हैलसिंग्फार्स' (हैलसिंग्की) यहाँ का मुख्य नगर और वन्दरगाह है जो रेलों द्वारा उत्तर में 'टोर्नियां' और दक्षिण में 'लेनिन्ग्राट' से मिला हुआ है। फिन्लैन्ड की झीलें नहरों के द्वारा वाल्टिक सागर से मिली हुई हैं। यह भाग प्राचीन ग्लेशियरों की मिट्टी से बना और उपजाऊ है तथा उत्तरी भाग बहुत कम आबाद है। लापलैन्ड के निवासी 'लैप्स' टुन्ड्रा निवासियों के समान मारे मारे फिरते रहते हैं और रेन्डियर तथा शिकार उनके जीवन का सहारा है।

स्टोनियाँ यह फिन्लैन्ड की खाड़ी के दक्षिण में स्थित है। यहाँ की उपज और निवासियों के व्यवसाय फिन्लैंड के समान हैं। यहाँ की सर्द जल-वायु में गेहूँ नहीं होता। राई, जौ, ओट और आलू की खेती होती है जो यहाँ के निवासियों का मुख्य आहार है। यहाँ से कतान, लकड़ी और कागज बाहर को भेजा जाता है। टालिन यहाँ का मुख्य शहर और बन्दरगाह है। 'लेनिन्ग्राड' की भौगोलिक स्थिति को देखो। फिन्लैन्ड और स्टोनियां के

राज्यों को फिन्लैन्ड की खाड़ी के सामुद्रिक मार्ग पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है। इसलिये लेनिन्ग्राड और रूसी बन्दरगाह का व्यापार एक प्रकार से इन्हीं राज्यों की स्वेच्छा पर निर्भर है।

लैटविया यह राज्य 'रिगा' की खाड़ी पर स्थित है। 'रिगा' यहाँ का मुख्य शहर और बन्दरगाह है जो पश्चिमी 'डुआइना' नदी के मुहाने पर बसा हुआ है। पहिले इस बन्दरगाह से रूस का बहुत सा माल बाहर को जाता था परन्तु अब कम जाता है। यह बन्दरगाह बाल्टिक सागर के दूसरे बन्दरगाहों की भांति जाड़ों में बर्फ से ढक जाता है किन्तु रेलों द्वारा व्यापार होता रहता है। अपने नकशे में तुम इन रेलों को देख सकते हो। यहाँ का व्यापार और उपज स्टोनियां के समान है।

लेथुआनियाँ यह 'लैटविया' से कुछ बड़ा राज्य है परन्तु इसका समुद्र तट बहुत छोटा है। यहाँ का मुख्य बन्दर 'मेमिल' है और मुख्य व्यापारिक उपज मक्खन, मलाई, पनीर, कतान और लकड़ी है। अन्य तटीय राज्यों की भांति खेती, माहीगीरी गल्लावानी, लम्बरिङ्ग (लकड़ी काटना) और कागज़ बनाना इस राज्य के निवासियों के मुख्य उद्यम हैं।

रूस

रूस एक विस्तृत राज्य है। इसमें यूरोप के समस्त टुण्ड्रा, डैगा, स्टेप्स के रीजन और एक तिहाई पतझड़ करने वाले जंगलों का प्रदेश स्थित है। इसकी समस्त भूमि एक नीचा मैदान है। मध्य रूस

की 'वल्दाई' पहाड़ियां केवल एक हजार फीट ऊँची हैं। वाल्गा, डान, नीपर और डुआइना इत्यादि नदियों के बहाव से विदित है कि रूस का अधिक भाग दक्षिण को ढालू है। चूँकि यह देश ऊँचे अक्षांशों में स्थित है इसलिये यहाँ की जल-वायु बहुत सर्द रहती है। गर्मी में अटलांटिक सागर की तर हवायें रूस तक पहुँच जाती हैं और मामूली वर्षा हो जाती है। परन्तु जाड़ों में उत्तरी बर्फीली हवाएँ चलती हैं और समस्त रूस में बर्फ पड़ती है। अतः यहाँ की जलवायु कड़ी है। ज्यों ज्यों हम उत्तर से दक्षिण को जाते हैं जल-वायु गर्म होती जाती है और ज्यों ज्यों पश्चिम से पूरब को जाते हैं वर्षा कम होती जाती है।

हम रूस को निम्न-लिखित तीन रीजनों में विभाजित करते हैं:—

(१) टुन्ड्रा और टैगा रीजन।

(२) पतझड़ करने वाले जङ्गलों का प्रदेश।

(३) स्टेप्स और मरु-स्थल।

१. टुन्ड्रा और टैगा रीजन—लापलैन्ड में रूस का टुन्ड्रा रीजन स्थित है। जहाँ लैप्स और सैमायडीज जातियां पाई जाती हैं। ये एक जगह पर जम कर नहीं रहते किन्तु मारे मारे फिरते हैं। इन का मुख्य धन रेन्डियर है। मरमांस्क रूसी टुन्ड्रा का बन्दरगाह है जो रेल द्वारा लेनिनग्राड से मिला हुआ है। यह बन्दरगाह अटलांटिक की गर्म धारा के प्रभाव से जमता नहीं है।

टैगा रीजन की चौड़ी पट्टी में अब भी अधिकतर जङ्गल उगे हुये

हैं। जंगलों को काट कर पश्चिम भाग साफ़ कर लिया गया है और लैडोगा, ओनेगा झीलों के समीप राई, ओट और कतान पैदा होती है। लेनिन्ग्राड यहां का सबसे बड़ा बन्दरगाह है जहां से पश्चिम यूरोप के व्यापारिक देशों को जहाज और रेलें जाती हैं।

२. पतझड़ करने वाले जंगलों का प्रदेश—यह रूस के मध्य में स्थित है। इस भाग को खेती के लिये साफ़ कर लिया गया है
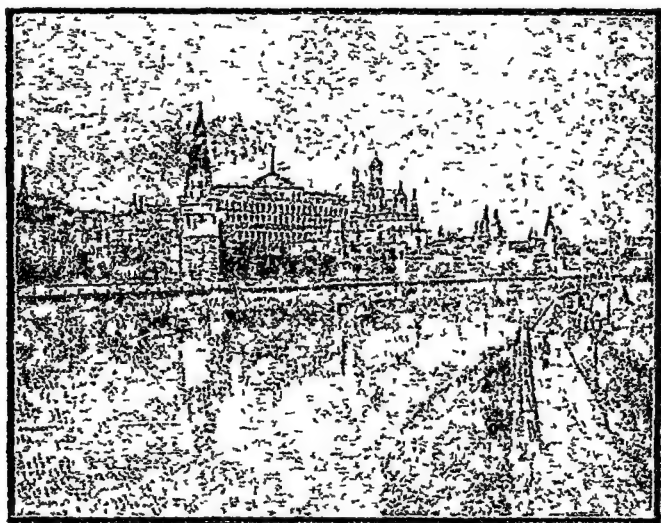
रूस की राजधानी मास्को

और यहाँ राई, जो, आलू, कतान तथा रूसी सन अधिक पैदा होता है। कतान, अलसी और रूसी सन बाहर को भेजा जाता है। मास्को रूस की राजधानी है और रेलों का केन्द्र है। तुम अपने नक़शे में रूस के दरियाई मार्ग और रेलें देख सकते हो। मास्को के दक्षिण में

कोयला और लोहा निकलता है जिसके कारण टूला नगर रूस का बर्मिंघम बन गया है। टूला और मास्को में रुई, कतान, ऊन कातना, कपड़ा बुनना और लोहे व फ़ौलाद की वस्तुएँ तथा कलें ढालने के बड़े बड़े कारखाने हैं। इस भाग का व्यापार लेनिनग्राड के बन्दरगाह द्वारा होता है।

३. स्टेप्स और मरु-स्थल—दक्षिणी और पूर्वी रूस के स्टेप्स तथा मरु-स्थली भाग कास्पियन और काले सागर के उत्तर में स्थित हैं। कास्पियन सागर के उत्तर की भूमि खुश्क, खारी और मरु-स्थली है। परन्तु इसके पश्चिम का समस्त प्रदेश उपजाऊ और काली मिट्टी का मैदान है। जहाँ गेहूँ अधिक होता है और ओडेसा के बन्दरगाह से बहुत सा गेहूँ संसार के भिन्न भिन्न देशों को भेजा जाता है। राई, ज्वार, चुकन्दर की शक्कर, मक्का इत्यादि भी पैदा होती है जो रूस निवासियों के काम में आती है। अज़ाफ़ सागर के उत्तर में 'डोनेट्ज़' नदी के बेसिन में कोयला, लोहा और मेगानीज निकलता है। अतः यहाँ लोहे और फौलाद के बड़े बड़े कारखाने हैं। 'कीव' और 'खारकोव' शक्कर और गेहूँ की प्रसिद्ध मंडियाँ हैं।

यूराल पर्वतों में प्लेटीनम धातु जो सोने से भी अधिक बहु-मूल्य होती है अधिकता से निकलती है। इसके अतिरिक्त यहाँ सोना, चांदी, तांबा, लोहा और कोयला भी खोदा जाता है। अतः 'पर्म' और एकाटरेन बर्ग के खनिज खुदाई के केन्द्र बहुत प्रसिद्ध हो गये हैं। क़ाफ़ पर्वतों की खानों के प्रदेश में मिट्टी के तेल के अधिक सोते हैं यहाँ दूसरे खनिज पदार्थ भी हैं परन्तु इनकी खुदाई नहीं होती।

तुम पढ़ चुके हो कि 'बाकू' और बाटूम मिट्टी के तेल की जगत्-प्रसिद्ध मंडियां हैं। तुम रूस के दरिआई मार्ग और रेलें अपने नक़शे में देख सकते हो और रूस के व्यापार का अनुमान कर सकते हो। रूस की क्रान्ति के पश्चात् रूस के शिल्पकारिक व्यवसाय, मिलें और कारखाने धीरे धीरे बढ़ते जा रहे हैं जिनसे व्यापार उन्नति कर रहा है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—यूरोप के महायुद्ध के पश्चात् बाल्टिक सागर पर कौन कौन से नये राज्य स्थापित हो गये हैं इनमें से किसी एक का हाल बताओ ?

२—स्वीडन और रूस की झीलें बताओ तथा यह भी बताओ कि इनकी उत्पत्ति कैसे हुई ? इनके आस-पास की भूमि के उपजाऊ होने के क्या कारण हैं ?

३—निम्न-लिखित स्थानों की ठीक ठीक स्थिति बताओ और यह भी बताओ कि वे क्यों प्रसिद्ध हैं ? अस्त्राखान, ओडेसा, रिगा, हेल्सिंगफ़ार्स, मरमाँस्क, लेनिनग्राड और मास्को।

४—रूस के प्राकृतिक रीजन्स लिखो और बताओ कि यूरोप में टुंड्रा और टैगा के प्रदेश महाद्वीप एशिया के टुंड्रा और टैगा की तरह चौड़े क्यों नहीं हैं ?

५—नीचे लिखी हुई बातों की दृष्टि से यूरोप और एशिया के स्टेप्स की तुलना करो ? (अ) पृथ्वी की बनावट (ब) उपज और निवासियों के व्यवसाय।

६—नीचे लिखी हुई वस्तुयें रूस में कहां कहाँ पाई जाती हैं ?
(अ) मिट्टीके तेल के चश्मे (ब) कोयले और लोहे की खानें (स) रुई के कपड़े के कारखाने (ज) गेहूँ, शक्कर और कतान पैदा करने वाले प्रदेश।

१—क्या कारण है कि :—

(अ) टूला को रूस का बर्मिंघम कहते हैं ?

(ब) मास्को से चारों ओर को रेलों की बड़ी लाइनें जाती हैं ?

(स) जाड़ों में काला सागर के बहुधा बन्दरगाह बर्फ़ से ढक जाते हैं?

---

४. यूरोप के रीजन्स और राजनैतिक भाग

मध्य यूरोप के ठंडे देश

पोलैण्ड

पहिले यह एक स्वतन्त्र राज्य था, परन्तु कुछ काल पीछे इसका पश्चिमी भाग जर्मनी के और पूर्वी भाग रूस के अधिकार में आ गया था। महायुद्ध के पश्चात् यहां के 'पोलस' निवासियों ने पोलैन्ड में फिर एक प्रजातन्त्र राज्य स्थापित कर लिया है। पोलैन्ड क्षेत्रफल और आबादी में बम्बई से अधिक बड़ा है। इसके दो प्राकृतिक रीजन हैं :—

(१) उत्तरी मैदान जो यूरोप के उत्तरी मैदान का भाग है।

(२) दक्षिणी ढालू भाग तथा गैलीशिया।

तुम पढ़ चुके हो कि अटलांटिक का सामुद्रिक प्रभाव पोलैन्ड तक नहीं पहुँचता। यहाँ की जल-वायु कड़ी कही जा सकती है क्योंकि जाड़ों में सर्दी के कारण विस्चूला नदी बर्फ से ढक जाती है और गर्मी में वर्षा होती है तथा जल-वायु शीतोष्ण रहती है। पोलैन्ड के मध्य भाग का मुख्य उद्यम खेती है और राई, जौ, आलू, चुकन्दर तथा कतान अधिक पैदा होते हैं। परन्तु अधिक सर्दी होने के कारण

यहां गेहूँ कम होता है। पोलैन्ड के पूर्वी और पश्चिमी भाग में दल-दलें हैं। बहुधा स्थान जंगलों से ढके हुये हैं और चरागाहें भी अधिक हैं। लाखों गायें और सुअर पाले जाते हैं। खेतिहर प्रदेश के मध्य में विस्चूला नदी के किनारे पोलैन्ड की राजधानी 'वार्सा' स्थित है। यह रेलों का केन्द्र है और विस्चूला के दरियाई मार्ग द्वारा बन्दरगाह डान्जिग से मिला हुआ है।

यद्यपि 'वार्सा' एक खेतिहर भाग में बसा हुआ है तथापि यहां लोहे और फ़ौलाद के बड़े बड़े कारखाने हैं। चमड़े और कपड़े की बड़ी बड़ी मिलें हैं। लोड्ज और 'लुबलिन' यहाँ के अन्य शिल्प-प्रधान और व्यापारिक केन्द्र है।

पोलैन्ड का दक्षिणी भाग कार्पेथियन पहाड़ के उत्तरी ढाल पर स्थित है। इसके उत्तरी पश्चिमी भाग में कोयला और लोहे की खानें हैं। 'क्राको' मुख्य शिल्प-कारिक और व्यापारिक नगर है। पूर्वी भाग में नमक का खानें और मिट्टी के तेल के सोते हैं। इस भाग में 'लेम्बर्ग' मुख्य नगर है।

पोलैन्ड अपनी उपज अधिकतर जर्मनी के हाथ बेचता है और लकड़ी इङ्गलैन्ड को भेजता है तथा उनसे कलें इत्यादि बनी हुई वस्तुएँ खरीदता है। 'डान्जिङ्ग' पहिले जर्मनियों का बन्दरगाह था, परन्तु महायुद्ध के पश्चात् समुद्र तट तक पहुँचने के लिये पोलैन्ड ने इस बन्दरगाह पर अधिकार जमाना चाहा और यहाँ के जर्मन निवासियों ने पोलैन्ड के शासन में रहना स्वीकार नहीं किया। इस कारण डान्जिङ्ग एक स्वतन्त्र रियासत बना दो गई और इस बन्दर-

गाह में यूरोप की समस्त जातियों को व्यापार करने की आज्ञा दी गई और उसका शासन-प्रबन्ध 'लीग आफ नेशन्स' नामी सभा को दे दिया गया। इस सभा में संसार के बड़े बड़े राज्यों के प्रतिनिधि नियत किये जाते हैं और इनका यह काम होता है कि जहाँ तक सम्भव हो भिन्न भिन्न देशों के झगड़े बखेड़े पञ्चायत द्वारा निपटा दें और युद्ध की आवश्यकता न हो।

जर्मनी

यूरोप के महायुद्ध से पहिले जर्मनी एक विशाल राज्य था और 'कैसर' के अधिकार में था। परन्तु युद्ध के पश्चात् इसके उपनिवेश छिन गये और यूरोप में भी इस राज्य का बहुत सा भाग फ्रांस, बेलजियम, डेन्मार्क, पोलैंड और जीकोस्लोवेकिया को दे दिया गया है तो भी जर्मनी एक बड़ा और धनी प्रजातन्त्र राज्य है। क्षेत्रफल मे यह मद्रास और मैसूर के बराबर है किन्तु जन संख्या अधिक है। जर्मनी को दो प्राकृतिक भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

(१) उत्तरी मैदान जो ग्लेशियरों की मिट्टी और रेत से बना है।

(२) दक्षिणी पर्वती भाग जो एल्प्स पहाड़ों का उत्तरी ढालू प्रदेश है।

जर्मनी के दरियाई मार्ग विशेष कर 'राइन' और 'एल्प्स' के मध्य में स्थित हैं जिन्हें तुम अपने नकशे में देख सकते हो। इसलिये यहाँ की जल-वायु न तो सामुद्रिक है और न स्थली, किन्तु एक बीच की अवस्था उत्पन्न हो गई है। ज्यों ज्यों पश्चिम से पूर्व को जाते हैं जल-वायु कड़ी होती जाती है। पहाड़ों पर चीड़ के बहु-मूल्य जंगल

पाये जाते हैं। शेष भाग के शीतोष्ण और पतझड़ वाले जंगल अधिक-तर काट डाले गये हैं और उनमें कृषि एवं गल्लेवानी होने लगी है।

जर्मनी के मैदान की भूमि कहीं खुश्क तथा रेतीली है और कहीं दलदली। दलदली भूमि को खुश्क और खुश्क भूमि को खेतो के योग्य बना लिया है। अतः जर्मनी में गल्लावानी और खेती अधिक होती है। यहाँ की मुख्य उपज राई, ओट, आलू, चुकन्दर की शक्कर गेहूँ, शराब, ऊन और चमड़ा है। चुकन्दर की शक्कर तो इतनी पैदा होती है कि किसी अन्य देश में पैदा न होती होगी। इस भाग में जर्मनी की राजधानी 'बर्लिन' 'स्प्रो' नदी पर स्थित है और रेलों का केन्द्र है। रेलों, नहरों और दरियाई रास्तों के द्वारा बन्दरगाह 'स्टेटिन' से मिला हुआ है। स्टेटिन बाल्टिक सागर का बन्दरगाह है और यहाँ जहाज़ बनाये जाते हैं। उत्तरी सागर पर जर्मनी का सबसे बड़ा बन्दर 'हामबर्ग' एल्ब नदी के मुहाने पर स्थित है और जूट के कारखानों के लिये प्रसिद्ध है। कच्ची जूट हिन्दुस्तान से आती है। 'ब्रीमन' का बन्दरगाह 'बेसर' नदी पर स्थित है और 'ब्रस्ला' ओडर' पर। ये बड़े व्यवसायी और शिल्प प्रधान नगर हैं।

जर्मनी के मध्य और दक्षिणी भाग मे भेड़ें चराई जाती हैं और ऊन खूब पैदा होती है। पहाड़ों पर लकड़ी की अधिकता है और ढालू भूमि में अंगूर अधिकता से पैदा होते हैं। इंगलैंड की भांति जर्मनी मे लोहे और कोयले की बहुत सी खानें हैं जिनके चारों ओर शिल्पकारिक नगर पैदा हो गये हैं। सार, बेसिन और लोरेन की कोयले तथा लोहे की खानें जो बेलजियम के दक्षिण में स्थित हैं

महायुद्ध से पहिले जर्मनी के अधिकार में थीं, परन्तु अब फ्रांस के अधिकार में हैं। इस कारण जर्मनी को बहुत सा लोहा स्वीडन और फ्रांस से खरीदना पड़ता है। कोयले के तीन बड़े खनिज प्रदेश अब भी जर्मनी के हाथ में हैं और ये प्रदेश बड़े शिल्प प्रधान हो गये हैं।

१. रूर—इस नदी की घाटी में कोयला और कुछ लोहा निकलता है। इसलिए 'ईजेन' में लोहे और फौलाद की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। रुई का कपड़ा 'डसलडार्फ' तथा 'वार्मिन' में रेशम व मखमल 'क्रीफेल्ड' में अधिकता से बनाई जाती है। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न प्रकार की अन्य वस्तुएँ बनाई जाती हैं जो बाज़ारों में बिकने आती हैं। यह भाग जर्मनी का सबसे अधिक शिल्प-प्रधान, व्यवसायी और धनी है।

२. सेक्सुनी—इसमें लोहा और कोयला पास पास निकलता हैं। अतः 'केयनिट्ज़' और 'ज्वीका' में रुई तथा ऊन के कपड़े के कारखाने हैं। 'ड्रूसडेन' में चीनी के बर्तन अच्छे बनते हैं।

३. सिलेशिया का खनिज प्रदेश—यह कोयले, लोहे, शीशे और जस्ते से भरा पड़ा है। अतः इस भाग में बहुत प्रसिद्ध शिल्प-प्रधान नगर स्थित हैं। परन्तु इन खानों का आधे से अधिकांश भाग अब पोलैंड के अधिकार में है।

राइन नदी की घाटी और जर्मनी के दक्षिणी भाग की जल-वायु उत्तरी जर्मनी की अपेक्षा अधिक शीतोष्ण है। प्राकृतिक नकशे में देख कर तुम इसका कारण मालूम करो। यहाँ की प्रिय जल-वायु मे अंगूर अधिक होता है जिसकी शराब बनाई जती है। ढोर भी पाले

जाते हैं और दूध तथा मक्खन अधिकता से होता है। शेष जर्मनी के विरुद्ध इस भाग में गेहूँ और जौ पैदा होता है। 'म्यूनिच' जौ के शराब की बड़ी मंडी है। 'न्यूरेनबर्ग' में यन्त्र, शीशे की वस्तुयें और खिलौने अधिक बनते हैं।

जर्मनी के बन्दरगाह तट के रेत के कारण अच्छे नहीं रहते इसलिये प्रायः बन्दरगाह नदी के भीतरी भाग में बनाये गये हैं। जर्मनी में रेलें और नहरें अधिक हैं। तुम इनको अपने एटलस में देख सकते हो।

स्विटज़र लैन्ड का प्रजातन्त्र राज्य

स्विटजर लैन्ड का कुछ हाल तुम एल्प्स पहाड़ों के वर्णन में पढ़ चुके हो। यह लंका से भी छोटा राज्य है। इसका अर्द्ध-भाग पहाड़ों से घिरा हुआ है किन्तु लङ्का से अधिक आबाद है। स्विटरज़र-लैन्ड की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर 'जूरा' पर्वत और दक्षिणी पर 'एल्प्स' स्थित है तथा मध्य भाग प्लेटो है। यह प्लेटो बहुत घना आबाद है। जाड़ों में मवेशी पहाड़ों के ढालों पर चरते हैं और गर्मियों में नीची घाटियों मे उतर आते हैं। यहाँ से दूध, पनीर और मक्खन अधिकता से बाहर को जाता है। यहाँ कोयले की खानें नहीं हैं पर बिजली से कारखाने और रेलें चलाई जाती हैं। ढुलाई की कठिनता के कारण ऐसी वस्तुएँ बनाई जाती हैं जो बहु-मूल्य तो हों किन्तु भारी न हों। अतः 'न्यूचैटिल' और 'जनेवा' नगरों में तथा 'जूरा' पहाड़ के छोटे छोटे गांवों में घड़ियाँ बनाई जाती हैं। 'ज्यूरिख', 'बेल' और 'बर्न' में रेशम का कपड़ा, बेलें इत्यादि

अधिक बनती हैं। यहाँ हजारों आदमी हर साल वायुसेवन को आते हैं इसलिये होटल चलाना भी एक अच्छा उद्यम हो गया है। पर्वतीय प्रदेश होने पर भी स्विटज़रलैन्ड व्यापार के विचार से बड़ा धनी देश है। किन्तु इसको गेहूँ, शक्कर, तरकारियाँ, रुई कच्चा रेशम ऊन और धातुएँ बाहर से मँगानी पड़ती हैं। यहाँ की रेलें पहाड़ों में सुरंगें काटकर बनाई गई हैं जो स्विटजरलैंड को 'आस्ट्रिया', फ्रान्स', 'जर्मनी' और 'इटली' से मिलाती हैं। तुम अपने एटलस में 'सिम्प-लन', 'गोथार्ड', 'ब्रेनर' औ 'इंसब्रुक' की सुरगें मालूम करो और बताओ कि इनमें होकर कौन कौन से देशों की रेलें जाती हैं।

महायुद्ध के पश्चात् यूरोप का राजनैतिक नक़शा ही बदल गया है। 'आस्ट्रिया', 'हंगरी' का प्राचीन सयुक्त राज्य नष्ट हो गया। 'सरविया' का राज्य भी समाप्त हो गया। जर्मनी और तुर्की का बहुत सा भाग छिन गया और मध्य यूरोप के देशों की सीमाएँ नये सिरे से नियत हो गई हैं। इसका कारण यह है कि इस प्रदेश में भिन्न भिन्न जातियाँ आबाद थीं और सब की सब अन्य जातियों का शासन स्वीकार नहीं करती थीं। अतः इन्होंने स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये।

डैन्यूब घाटी के राज्य

आस्ट्रिया यह मैसूर के बराबर एक छोटा सा राज्य है जो एल्प्स के पहाड़ी हिस्से में स्थित है। इसका उत्तरी पूर्वी भाग मैदान है जिसमें होकर डैन्यूब नदी बहती है। डैन्यूब की घाटी इस राज्य का सबसे अधिक धनी भाग है। यह नदी अपना

मैदानी भाग यहां से आरम्भ करती है। नदी के दाहिने किनारे पर 'वियना' स्थित है जो इस राज्य की राजधानी और प्राचीन घनी नगर है। यह रेलों का केन्द्र है। यहाँ कोयला नहीं निकलता किन्तु लोहा पाया जाता है। अतः पहाड़ी नदियों की तेज धार से बिजली बनाई जाती है। जंगलों की लकड़ी शिल्प और व्यापार के काम आ सकती है। इसलिये 'वियना' की शिल्प और कला कौशल उन्नति कर रही है।

हंगरी इसका राज्य आस्ट्रिया से बड़ा और अधिक घना बसा हुआ है। यहां पहाड़ बहुत ही कम हैं और समस्त राज्य यूरोप के मध्यस्थ मैदान का एक भाग है जो चारो ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है इसलिये यहाँ की जल-वायु स्थली है। वास्तव में यह यूरोपीय स्टेप्स का भाग है इसलिये यहाँ वृक्ष बहुत कम हैं। यहाँ के निवासी जो 'मगियार' कहलाते हैं अधिकतर किसान हैं। उत्तरी भाग की खराब भूमि में राई, ओट और जौ पैदा होता है। परन्तु दक्षिण की उपजाऊ भूमि में गेहूँ, चुकन्दर की शक्कर और मक्का अधिकता से होती है तथा ढोर भी पाले जाते हैं अतः हंगरी निवासियों के मुख्य उद्यम खेती करना, शक्कर बनाना आटा पीसना और शराब खींचना है। यहाँ उत्तरी भाग में कुछ कोयला भी पाया जाता है।

'बुडा' और 'पेस्ट' नामक दो शहर एक दूसरे के सम्मुख 'डैन्यूब' नदी के दोनों किनारो पर स्थित हैं और ये दोनों मिलकर 'बुडापेस्ट' नाम से पुकारे जाते हैं। बुडापेस्ट रेलों का केन्द्र दरियाई बन्दरगाह

और हंगरी के नवीन राज्य की राजधानी है। दक्षिणी आस्ट्रिया में सेज्ड नामी एक दूसरा प्रसिद्ध नगर है जो तीसा नदी पर स्थित है।

जोकोस्लोवेकिया आस्ट्रिया और हंगरी के उत्तर में चीकोस्लोवेकिया का नया राज्य स्थित है। यह पहिले आस्ट्रिया हंगरी के संयुक्तराज्य का एक भाग था। यह क्षेत्रफल में आसाम के बराबर होगा परन्तु इसकी जन संख्या आसाम से दूनी है। इसके तीन प्राकृतिक रीजन्स हैं:—

१. पश्चिमी प्लेटो (बोहेमिया)—यह वास्तव में 'एल्ब' नदी की घाटी है, इसका ढाल जर्मनी की ओर है। नदी की मिट्टी से यह

ब्लेक फारेस्ट (काला जङ्गल)

भाग बहुत उपजाऊ हो गया है अतः उत्तरी भाग में आलू, गेहूँ, चुकन्दर की शक्कर और हाप खूब पैदा होता है। हाप शराब बनाने

के काम आती है। इस प्लेटो के दक्षिणी ऊँचे भागों में राई, ओट और जौ पैदा होता है।

इस भाग में लोहे और कोयले की कई खानें हैं इसलिये खेती के अतिरिक्त शिल्प-कला भी उन्नति पर है। कोयले की खानों के आस पास रुई के कपड़ों की मिलें, शीशा, काग़ज़, लकड़ी और दवाओं के कारखानें हैं। पश्चिमी प्लेटो में बोहेमियन फारेस्ट और ब्लेक फ़ारेस्ट (काला जंगल) की कतारें चली गई हैं जिनके निकट कागज और लकड़ी के कारखाने हैं जहाँ नदियों की धारा से बिजली बनाई जा सकती है। 'प्राग' (प्राह) इसकी राजधानी है। 'प्राग' और 'पिलसन' इस भाग के मुख्य शिल्प प्रधान नगर हैं। यहाँ लोहे, फ़ौलाद, बिसात खाना, शराब इत्यादि के बड़े बड़े कारखानें हैं।

२. कारपेथियन रीजन—यह राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है और कारपेथियन पहाड़ राज्य की उत्तरी सीमा है। दक्षिण की घाटियाँ मध्य यूरोप के मैदान से जा मिली हैं और पहाड़ों पर जङ्गल अधिकता से पाये जाते हैं। ढालों पर मवेशी चराये जाते हैं और खानें भी खोदी हैं। नीची घाटियों में आलू, जौ और चुकन्दर से शक्कर पैदा होती है।

३. मोरेविया की घाटी—इसमें भूमि खेती के योग्य है। यहां उत्तर में जौ और चुकन्दर की शक्कर पैदा होती है तथा दक्षिण में मक्का और फल। उत्तरी भाग वास्तव में सिलेशिया के खनिज प्रदेश का एक भाग है जहाँ कोयला पाया जाता है। दक्षिण में भी कोयले की अधिकता है। अतः यह प्रदेश शिल्प प्रधान हो गया है। इस

घाटी के मध्य 'ब्रूनो' में ऊनी कपड़ों के कारखाने हैं और मशीनें ढाली जाती हैं। दक्षिणी भाग का व्यवसायी और व्यापारी नगर ब्रैटिश लावा है जो मार्च नदी पर स्थित है। इस देश से अधिकतर शिल्प सम्बन्धी अर्थात् बनी हुई वस्तुएँ बाहर को भेजी जाती हैं। तुम नक़शे में बोहेमियां प्लेटो और मोरेविया घाटी की रेलें देख सकते हो। इस बात का अनुमान कर सकते हो कि 'एल्ब', 'ओडर' और 'मार्च' नदियों ने व्यापार में कितनी सुगमता पैदा कर दी है।

यूगोस्लाविया यह भी एक नया राज्य है जो सर्विया मान्टीनिगरो और ऐड्रियाटिक तट प्रदेश को मिलाकर बनाया गया है। यह एक खेतिहर देश है और आबादी तथा क्षेत्र फल में भारतवर्ष के मध्य प्रदेश के बराबर है। इसको तीन प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है:—

१. **एड्रियाटिक सागर का पर्वतीय तट**—इसमें चूने के पत्थर की शिकन्दार पहाड़ियाँ स्थित हैं। ये पहाड़ियाँ समुद्र तट के समानान्तर चली गई हैं इस कारण इस तट पर कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं है। भूमि अधिकतर खुश्क है और पानी जमीन के नीचे नीचे चूने के पत्थरों की दरारों में होकर बह जाता है। यहाँ केवल उपजाऊ घाटियों में वर्षा होती है और इस प्रदेश का उत्तरी हिस्सा धनी है। यहाँ जङ्गल की लकड़ी और निज पदार्थ पाये जाते हैं।

२. **उत्तरी मैदान**—यह वास्तव में यूरोप के मध्य मैदान का एक भाग है और डैन्यूब नदी के बेसिन में स्थित है। पहाड़ों के पीछे

स्थित होने के कारण यहां की जल-वायु हंगरी के मैदान के समान कड़ी रहती है। मैदान की भूमि अधिकतर उपजाऊ है तथा गेहूँ, मक्का, तम्बाकू और चुकन्दर की शक्कर अधिक पैदा होती है। 'जग्रेव' यहाँ का मुख्य नगर है जो उत्तर में सावा नदी पर स्थित है। यहाँ से सूखे बेर बाहर को भेजे जाते हैं। इनकी मदिरा भी खींची जाती है।

३. दक्षिणी भाग—इसमें ऊँची पहाड़ियों की श्रेणियाँ स्थित हैं पहाड़ों पर जङ्गल और चरागाह हैं। घाटियों में खेती होती है और यहाँ गेहूँ, मक्का, फल अधिकता से पैदा होते हैं। बेर, अंगूर, चुकन्दर, तम्बाकू और एक तरह की सन भी पैदा होती है।

'बेलग्रेड' इस राज्य की राजधानी है और डैन्यूब नदी पर स्थित है। तुम अपने नकशे में डैन्यूब की सहायक नदियाँ तलाश करो और बताओ कि उन्होंने इस दरियाई बन्दरगाह की तिजारत पर क्या प्रभाव डाला है। बेलग्रेड के उत्तर में एक रेल बुदापेस्ट और दूसरी पश्चिम की ओर 'फ़ियूम' और 'ट्राइस्ट' को जाती हैं। दक्षिण में यही रेल नीश तक चली गई है। फिर नीश से इसकी दो शाखाएँ हो गई हैं। पहिली तो मारिट्ज़ा नदी की घाटी में होती हुई कुस्तुन्तुनियाँ को जाती है और दूसरी वार्डर नदी की घाटी में होती हुई सलोनिका को। बस तुम समझ सकते हो कि यहाँ के माल का निकास या तो सालोनिका के बन्दर से हो सकता है या फियूम और ट्राइस्ट से। यहाँ से लकड़ी, फल, मवेशी, गेहूँ और मक्का बाहर को जाती है तथा शिल्पकला सम्बन्धी बनी हुई वस्तुएँ बाहर से मँगाई जाती हैं।

रोमानियाँ यूरोप के महायुद्ध के पश्चात् हंगरी का कुछ भाग रोमानियाँ में मिला दिया गया था। इसलिये अब इसका क्षेत्रफल पहिले से दूना हो गया है। अब यह राज्य विस्तार और जन संख्या में लगभग बम्बई के बराबर है। इस राज्य के पूर्वी भाग में वैलेचियन मैदान काला सागर तक फैला हुआ है। डैन्यूब नदी वैलेचियन मैदान को सींचती है। यह प्रदेश यूरोपीय स्टेप्स का एक भाग है। यहाँ की जल-वायु कड़ी है और गर्मियों में थोड़ी सी वर्षा हो जाती है। इसलिये उकराइन की तरह यह प्रदेश भी संसार के गेहूँ पैदा करने वाले सबसे बड़े भागों में गिना जाता है। उत्तरी भाग की खराब भूमि में ओट और समस्त भागों में गेहूँ, जौ तथा मक्का पैदा होती है। 'बुखारेस्ट' रोमानियां की राजधानी है। 'गलाट्ज़' और 'ब्रेला' डैन्यूब नदी पर गेहूँ की मँडियाँ हैं। 'काँसटन्टा' यहाँ का सबसे अच्छा बन्दरगाह है और अस्वद सागर के तट तर डैन्यूब नदी के डेल्टे के दक्षिण में स्थित है। काँसटन्टा का हारबर बर्फ़ से नहीं जमता और व्यापार बन्द नहीं होता। यहाँ के मुख्य उद्यम खेती करना, आटा पीसना, शक्कर और शराब बनाना है।

रोमानियाँ राज्य के पश्चिमी भाग में ट्रान्सिलवीनियन, एल्प्स और कारपेथियन पवत स्थित हैं। कार्पेथियन पर्वत जङ्गलों से ढका हुआ है। इन जङ्गलों की लकड़ी नदियों में डालकर बहा दी जाती है और गलाट्ज़ में निकाल ली जाती है। इसलिये यहाँ बहुत से लकड़ी के कारखाने और चिरान की मिलें हैं। ऊँचे स्थानों पर भेड़ों के चरागाह हैं। बुखारेस्ट के उत्तर में नीची पहाड़ियों पर 'प्लोइस्टी' के

संसार प्रसिद्ध मिट्टी के तेल के सोते हैं जहाँ हिन्दुस्तान से दूना तेल निकलता है। यहाँ से यह तेल पम्प द्वारा 'कॉंसटन्टा' बन्दरगाह तक पहुँचाया और फिर बाहर को भेज दिया जाता है। ट्रान्सिलवीनियन एल्प्स में सोना, चाँदी, सीसा, कोयला और लोहा भी पाया जाता है किन्तु अभी इनकी खुदाई कम होती है। रोमानियाँ अभी तक एक कृषि प्रधान देश है। गेहूँ; मक्का, मिट्टी का तेल, लकड़ी और मवेशी तथा भेड़ें बाहर को भेजो जाती हैं। मशीनों से बनी हुई वस्तुएँ बाहर से आती हैं।

बलगेरिया रोमानियां के दक्षिण में बलगेरिया का पहाड़ी राज्य स्थित है। यहाँ की जलवायु भी कड़ी है और देश भी अधिक उन्नति हीन है। लोगों का उद्यम अधिकतर खेती करना है। इस राज्य के तीन प्राकृतिक रीजन्स हैं :—

(१) पहाड़ी बलकान और रोडप (२) पहाड़ी बलकान के उत्तर में डैन्यूब नदी का बेसिन (३) मारट्ज़िा नदी की घाटी।

पर्वतों पर शाहबलूत के जङ्गल पाये जाते हैं और अनेक चरागाह हैं। चरागाहों में हजारों भेड़ें और बकरियां पाली जाती हैं। हजारों सुअर जङ्गल के फल चरते हैं। यहाँ की मुख्य उपज गेहूँ, मक्का, तम्बाकू और चुकन्दर की शक्कर है। दक्षिण पश्चिम की सुरक्षित घाटियों में फल होते हैं।

'सोफ़िया' यहाँ का सबसे बड़ा नगर तथा राजधानी है और कुस्तुन्तुनियाँ से उत्तरी पश्चिमी यूरोप को जाने वाली रेलवे का स्टेशन है। 'फ़िज़प्पो पोलिस' मारट्ज़िा नदी की घाटी का मुख्य नगर

है और यहाँ शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। 'रिश्क़' डैन्यूब नदी का और 'वार्ना' काला सागर का व्यापारिक बन्दरगाह है। अब तुम स्वयं बताओ कि यहाँ से बाहर को क्या क्या वस्तुएँ जाती हैं और बाहर से कौन कौन वस्तुएँ यहां आती हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—मध्य यूरोप के ठंडे देशों में कौन कौन से देश शिल्पकारी में अधिक उन्नति कर गये हैं?

२—पोलैन्ड के प्राकृतिक भूखंड और निवासियों के मुख्य व्यवसाय बताओ?

३—'जैकोस्लोवेकिया' की शिल्पकारिक उन्नति के कारण बताओ और यह भी बताओ कि यहाँ से कौन कौन सी वस्तुयें दूसरे देशों को भेजी जाती हैं?

४—क्या कारण है कि :—

(अ) यूगोस्लोविया का पश्चिमी तट बहुत निर्धन है और यहाँ कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं है।

(ब) रोमानियां के पूर्वी भाग में गेहूँ अधिक होता है।

(स) हंगरी का मुख्य उद्यम खेती और कृषि सम्बन्धी कार्य है।

५—निम्न लिखित स्थानों की भौगोलिक स्थिति और उनकी शिल्पकारिक तथा व्यापारिक उन्नति के कारण बताओ?

गलाट्ज़ बुदापेस्ट, वियना, प्राग, डेन्ज़िग, ईज़न, ब्रिमन, जनेवा, और बर्लिन।

६—आस्ट्रिया के प्राकृतिक भाग, भौगोलिक रीजन्स और निवासियों के उद्यम बताओ?

७—स्विटज़रलैन्ड की शिल्पकारी और व्यापार की उन्नति के कारण बताओ और यहाँ के निवासियों के मुख्य उद्यम क्या हैं ?

---

५. यूरोप के रीजन्स और राजनैतिक भाग

रूमी जल-वायु के देश

इस जल-वायु में यूरोप के तीन प्रायद्वीप आइबेरिया, इटली और बलकान स्थित हैं। तुम इनकी प्राकृतिक, दशा, जल-वायु और पैदावार का हाल पढ़ चुके हो। उनको फिर से दुहरालो, तत्पश्चात् उनका विस्तृत हाल पढ़ो।

आइबेरिया प्रायद्वीप एक पहाड़ी प्लेटो है जिसमें नदियों ने घाटियाँ काट ली हैं। प्रायद्वीप के पूर्व में 'प्रोनीज़' पर्वत स्थित हैं जो स्पेन को फ्रांस से पृथक करते हैं। उत्तर में कैम्ब्रियन और दक्षिण में 'सीरानवादा' की शिकनदार पहाड़ियां हैं।

पुर्तगाल यह प्रजातन्त्र राज्य प्रायद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित है। इसमें 'डाब्रो', 'टैगस' और 'ग्वाडव्याना नदियों की घनी घाटियां और घाटियों के दोनों ओर पर्वत श्रेणियां हैं। यूरोप की जल-वायु के पाठ में तुम पढ़ चुके हो कि यहां सारे साल खूब वर्षा होती है और जल-वायु इङ्गलैन्ड की भांति शीतोष्ण व तर है। इस कारण पहाड़ों पर कार्क और शाहबलूत के रूमी जङ्गल हैं जिनके नीचे हज़ारों सुअर रहते हैं। उत्तरी तर भाग में मक्का और

मवेशी, पहाड़ी भागों में राई, भेड़ें तथा बकरियाँ और दक्षिण में गेहूँ, मक्का और सुअर की अधिकता है। ताड़ का तेल और अंगूर की शराव बनाना यहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम है। तटों पर खेती होती है और मछलियां पकड़ी जाती हैं। यहां बहु-मूल्य धातुओं की खानें हैं परन्तु कोयला न होने के कारण खोदी नहीं जातीं।

पुर्त्तगाल की राजधानी 'लिसवन' टैगस नदी के मुहाने पर स्थित है। 'ओपार्टो' पार्ट नामक शराव का बन्दरगाह है। कार्क शराव और मछली यहाँ से बाहर को जाती है। कोयला तथा अन्य आवश्यक वस्तुयें बाहर से आती हैं।

स्पेन

यह राज्य पुर्त्तगाल के पूरब व उत्तर में फैला हुआ है। इसमें डाम्रो, टैगस और ग्वाड क्याना नदियों की बड़ी बड़ी घाटियाँ हैं। यह पहाड़ों से घिरा हुआ है और इसको तीन प्राकृतिक रीजन्स में बाँट सकते हैं।

१. उत्तर का तटीय खंड—यह भाग पहाड़ी है तथा साल भर वर्षा होती है। समुद्र के प्रभाव से जल-वायु शीतोष्ण रहती है। स्पेन में सब से धनी और घना आबाद यही खंड है। पहाड़ों के बीच घाटियों में मक्का, पहाड़ी ढालों पर मवेशी और पहाड़ों पर जङ्गल अधिक पाये जाते हैं। लोहा यहाँ का मुख्य धन है जो 'बिलबाओ' और 'सान्टनडार' के बन्दरगाहों से इंगलैन्ड को भेजा जाता है। कोयला 'ओवीडो' के समीप निकाला जाता है।

२. मसीटा का पठार—यह लगभग सब स्पेन में फैला हुआ यह तथा अधिकतर खुश्क सर्द और बेकार है। 'वेलाडोलिड' डोरो

नदी की उपजाऊ घाटी में ठीक नदी के किनारे स्थित है अतः यह गेहूँ और ओट की बड़ी मंडी है। मध्यवर्ती प्लेटो में 'मैडरिड' स्पेन की राजधानी तथा रेलों का केन्द्र है। अपने नकशे में तुम इन रेलों को देख सकते हो। प्लेटो का दक्षिणी भाग इतना सर्द नहीं है। यहाँ रूमी जल-वायु के फल पैदा होते हैं अतः यहाँ किसमिश और शराब खूब बनाई जाती है। खुश्क भागों में सिंचाई की जाती है जहाँ चुकन्दर एवं गन्ने की शक्कर बनाई जाती है। लोहा, ताँबा और पारा पहाड़ों पर खोदा जाता है। 'ग्वाडलकीवर' नदी पर सेविल बन्दरगाह स्थित है जो आज कल उन्नति पर है। 'कैडिज' पुराना बन्दर है किन्तु आज कल उपयोग में कम आता है। 'मलागा' दक्षिणी तट पर व्यापारिक बन्दरगाह है। 'जिब्रालटर' का वृटिश बन्दर रूम सागर की कुञ्जी कहलाता है तथा जल-संयोजक से पूर्व की ओर स्थित है।

३. रूम सागर का तटीय प्रदेश—यह भाग रूमी जल-वायु के फल; अंगूर, जैतून, नारङ्गी और नीबू के लिये प्रसिद्ध है। पहाड़ों के पीछे स्थित होने के कारण वर्षा बहुत कम होती है इसलिये सिंचाई करके फल इत्यादि उगाये जाते हैं।

'बर्सीलोना' इस प्रदेश का मुख्य बन्दरगाह और शिल्पप्रधान नगर है। यहाँ ऊनी, सूती कपड़े, लोहे तथा फ़ौलाद के बड़े बड़े कारखाने हैं। 'वालसिया' और 'कार्टेजना' फलों के लिये प्रसिद्ध हैं। 'मुर्सिया' मूर लोगों का बसाया हुआ प्राचीन नगर है और शिल्प तथा व्यापार का केन्द्र है। 'सारागोसा' एब्रो नदी के किनारे एक

उपजाऊ घाटी में स्थित है। यद्यपि स्पेन एक पहाड़ी देश है तथापि यहाँ के मुख्य नगर रेलों से मिला दिये गये हैं। तुम अपने नक़शे में 'पेरीनीज' के पूर्वी और पश्चिमी सिरो पर दो रेलों को देख सकते हो जो स्पेन को फ्रांस से मिलाती हैं।

इटली यह राज्य एक प्रायद्वीप है जिसका आकार मनुष्य के पैर की बनावट से मिलता जुलता है और पन्जे के पास सिसली इत्यादि द्वीप स्थित हैं। इटली क्षेत्रफल और जन-संख्या में मद्रास प्रान्त के बराबर है। इसके मुख्य तीन प्राकृतिक रीजन्स हो सकते हैं :—

(१) एल्प्स के ढाल (२) 'पो' नदी की घाटी (३) प्रायद्वीप इटली का दक्षिणी भाग।

१. एल्प्स के ढाल—इनमें से दक्षिणी प्रायद्वीप की जल-वायु रूमी है। 'पो' नदी की घाटी अर्थात् 'लोमबार्डी के मैदान' में जाड़ों में कड़ी सर्दी होती है परन्तु ग्रीष्म काल तर और शीतोष्ण रहता है। उत्तरी इटली में सर्द 'बोरा' और दक्षिणी में गर्म 'सिराको' नामी हवायें चलती हैं और तूफान आते हैं। उत्तरी-पहाड़ी प्रदेश प्राकृतिक दृश्यों के लिये प्रसिद्ध है। यहां स्विट्जरलैन्ड के समान सुन्दर झीलें स्थित हैं जहाँ लोग सैर और वायु सेवन को जाते हैं। इस भाग की जल-वायु कुछ कुछ गर्म रहती है क्योंकि एल्प्स के दक्षिणी ढाल सूर्य की किरणों के सामने पड़ते हैं इसलिये यहाँ रूमी जल-वायु के फल खूब होते हैं। नदियों की तेज धारा से बिजली पैदा होती है जो शिल्प तथा व्यापार के कार्यों में लाई जाती है।

२. 'पो' नदी की घाटी—यह सबसे उपजाऊ और धनी प्रदेश है। इटली की जन-संख्या का अर्द्ध-भाग इसी खंड में बसा हुआ है। यहाँ की मुख्य उपज चावल और मक्का है। सर्द जलवायु होने के कारण यहाँ रूमी जल-वायु के वृक्ष नहीं होते, किन्तु शहतूत अधिकता से होता है जिस पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। 'मिलान' रेशम के कार्य का मुख्य केन्द्र है। यहाँ सूती और ऊनी कपड़े के कारखाने हैं। कोयले की कमी के कारण बिजली से मिलें चलाई जाती हैं। रुई और ऊन बाहर से आती है। मशीनें और रेलें इत्यादि 'ट्यूरिन' और 'मिलान' में बनाई जाती हैं। 'वेनिस' में जहाज बनाये जाते हैं। 'ट्राईस्ट' और 'फियूम' यद्यपि इटली के बन्दरगाह हैं किन्तु 'आस्ट्रिया-हंगरी' और 'यूगोस्लाविया' के अधिक काम आते हैं।

प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग की जल-वायु रूमी है। यहाँ गेहूँ और फल पैदा होते हैं। 'फ़्लोरेन्स' में गेहूँ के डंठलों की टोकरियां और चटाइयाँ बनाई जाती हैं। यह पुराना शिक्षा केन्द्र है। जनेवा में जहाज़ बनाये जाते हैं और लोहे, फौलाद तथा रूई के कपड़ों के कारखाने हैं। नैपिल्स में भी रूई के कपड़े की मिलें हैं। 'पाल्मों' सिसली के उत्तरी पश्चिमी कोने पर स्थित है। यहाँ लोहा गला कर साफ़ किया जाता है सिसली के दूसरे कोने पर 'मेसीना' के आस पास गन्धक पाई जाती है। यह शहर सन् १६०८ ई० में भूकम्प के के कारण नष्ट हो गया था अब धीरे धीरे फिर बसाया जा रहा है। सार्डीनियां द्वीप खनिज पदार्थ से भरा पड़ा है परन्तु इस धन से अभी

अधिक काम नहीं लिया गया है। प्रायद्वीप इटली के दक्षिण पूर्व के कोने पर 'ब्रिंडिसी' स्थित है। पहिले यहाँ हिन्दुस्तान और दूरवर्ती पूर्वी प्रदेश की डाक उतारी जाती थी तथा रेलों द्वारा उत्तरी पश्चिमी यूरोप और इङ्गलैन्ड को भेज दी जाती थी परन्तु अब यह काम 'मासल्स' से लिया जाता है।

इटली से रेशम, रेशमी और सूती कपड़े, फल, रबड़ का सामान और कुछ ऊनी वस्तुयें बाहर को जाती हैं। धातु, ऊन, रुई तथा अनाज बाहर से आता है। 'ब्रिंडिसी' से डावर जाने वाली रेल नक़शे में ढूँढ़ो और बताओ कि किन किन भैागोलिक प्रदेशों में होकर जाती है।

यूनान बालकन प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में यूनान का राज्य स्थित है। तुमने मेसीडोनिया के सम्राट सिकन्दर महान का नाम सुना है। उसने समस्त तुर्की, फ़ारस तथा पञ्जाब पर विजय प्राप्त की थी। अब यूनान का राज्य केवल निकटवर्ती द्वीपों ही में रह गया है। यह राज्य भी तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :—

(१) मध्यवर्ती पहाड़ी प्रदेश तथा पश्चमी तट (२) पूर्वी तट के मैदान जिसमें 'थ्रेस,' 'मेसीडोनिया' और 'थिसैली' के मैदानों को पर्वत श्रेणियों ने पृथक कर दिया है (३) 'आयोमियन' द्वीप समूह।

यूनान का अधिक भाग पहाड़ी और निरर्थक है। 'अलबानियां' और 'यूगोस्लाविया' के पहाड़ और चूने के पत्थर की खुश्क चट्टानें

यूनान तक चली आई हैं। इसलिये यहाँ के बहुधा पहाड़ नंगे हैं और कहीं कहीं जंगलों से ढके हुये हैं। वर्षा कम होती है परन्तु जल-वायु रूम सागरीय है। सिंचाई की असुविधा के कारण खेती करना कठिन है। इसलिये आबादी का अधिकांश भाग नदियों की घाटियों में बसा हुआ है। जौ और मक्का की खेती होती है परन्तु रूम सागरीय जल-

एथेन्स नगर

वायु के फल अर्थात् किशमिश, जैतून, अञ्जीर, नारंगी इत्यादि अधिकता से होते हैं और बाहर को भेजे जाते हैं। तम्बाकू भी बाहर को भेजी जाती है। उत्तरी पहाड़ी प्रदेश में भेड़ें बहुत पाली जाती हैं

और उनसे ऊन निकाली जाती है। खनिज पदार्थों की कमी है। इन सब बातों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि यूनान एक कृषि-प्रधान प्रदेश है। जैतून का तेल, चमड़ा, दूध और मक्खन से बनी हुई वस्तुयें तथा साबुन बनाना यहाँ की मुख्य शिल्पकारी है।

'एथेन्स' यूनान का प्राचीन प्रसिद्ध नगर और राजधानी है। यहाँ प्राचीनकाल के अनेक स्मारक हैं जिनको देखने के लिए दूर दूर से यात्री आते हैं। एथेन्स के दक्षिण में 'पिरियस' नामक नया बन्दरगाह स्थित है। यह एक व्यापारिक केन्द्र बन गया है। 'सालोनिका' वार्डर नदी की घाटी में स्थित है जहाँ से यूगोस्लाविया का व्यापार होता है। पश्चिमी तट पर 'पटलास' से किशमिश बाहर को भेजी जाती है। थल-संयोजक 'कोरिंथ' को काट कर नहर कोरिंथ बना दी गई है, इसलिये अब 'पटरास' से पिरियस तक जहाज आते जाते हैं। यूनान निवासी प्राचीन काल से ही बड़े मांझी और व्यापारी चले आते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—प्रायद्वीप आईबेरिया के प्राकृतिक रीजन्स बताओ और टैगस की घाटी का संक्षिप्त वर्णन करो?

२—निम्नलिखित स्थानों की ठीक ठीक स्थिति बताओ और यह भी बताओ कि वे क्यों प्रसिद्ध हैं:—
लिस्बन, ओपार्टो, ओवीडो, मार्सेल्स, रोम, वेनिस, पालर्मो, पटरास और सालोनिका।

३—लोम्बार्डी, रेवीयरा और मसीटा के विषय में तुम क्या जानते हो इनका संक्षिप्त हाल बताओ ?

४—स्पेन की जलवायु, पैदावार और निवासियों के उद्यम बताओ ?

५—तुम इटली को कौन कौन से रीजन्स में विभाजित करोगे। इनमें से किसी एक रीजन का हाल, भूमि की बनावट, जलवायु, उपज तथा शिल्प के विचार से बताओ ?

६—एल्प्स पर्वत की सुरंगों में होकर इटली से किस किस देश को रेलें गई हैं।

७—क्या कारण है कि :—

(अ) इटली के उत्तरी पहाड़ी ढालों की जल-वायु शीतोष्ण रहती है।

(ब) पटरास किशमिश का बन्दरगाह प्रसिद्ध है।

(स) वेनिस को ऐड्रियाटिक सागर की रानी कहते हैं।

—

वर्नाक्यूलर फ़ाइनल (मिडिल) परीक्षा के भौगोलिक प्रश्न पत्र सन् १९३०

१—भारत का चित्र खींचो और नीचे लिखी बातें दर्ज करो :—

(अ) मद्रास कलकत्ता, बम्बई, लाहौर, रंगून, पेशावर, देहली इलाहाबाद ।

(ब) सतपुड़ा, ताप्ती, गङ्गा, सिन्ध नदी ।

(ज) दक्षिणी-पश्चिमी मानसून ।

(द) कोयला निकालने के स्थान ।

(स) इलाहाबाद से बम्बई जाने का मार्ग और दो प्रसिद्ध स्थान जो रास्ते में पड़ेंगे ।

२—(अ) ग्रीष्म-ऋतु में हरिद्वार में अधिक वर्षा होती है अथवा आगरे में, कारण सहित लिखो ।

(ब) बम्बई और मद्रास में कौन सा बन्दरगाह अधिक अच्छा है और क्यों ?

(ज) गक्ष की सहायता से समझाओ कि किस तरह उत्तरी ध्रुव में २१ मार्च को सुबह, २१ जून को दोपहर और २३ सितम्बर को शाम होती है ।

३—साइवेरियन रेलवे (साइबेरिया और रूस के मुल्कों में जाती हैं) और कैनेडियन पैस्फ़िक रेलवे (जो कैनेडा में जाती है) में से किसी एक रेलवे के लाभ लिखो वह कहां से कहां तक बनाई गई है।

४—इसका क्या कारण है :—

(अ) पञ्जाब में नहरों का एक जाल सा फैला हुआ है और बङ्गाल में नहरें नहीं हैं।

(ब) आमेज़न नदी में हमेशा बाढ़ रहती है।

(ज) बम्बई, अहमदाबाद, कानपुर में अधिकतर कपड़ों के कारखाने हैं।

(द) आस्ट्रेलिया से गेहूँ, ऊन अधिक परिमाण में बाहर भेजी जाती है।

(स) अफ्रीका की झीलें इतनी उपयोगी नहीं हैं जितनी उत्तरी अमेरिका की।

५—निम्न लिखित प्रश्नों में से किसी तीन का उत्तर लिखो :—

(अ) यह देखा गया है कि जिस साल हमारे सूबे में मई, जून के महीने में आंधियाँ अधिक आया करती हैं, प्रायः उस साल वर्षा अधिक होती है, क्या कारण है?

(ब) शक्ल बनाकर समझाओ कि सुबह शाम के मुक़ाबले में दोपहर की गर्मी अधिक होती है।

(ज) क्या कारण है कि सिन्ध नदी के दक्षिणी भाग में कोई नदी आकर नहीं गिरती?

(द) किस कारण से आस्ट्रेलिया, अफ्रीका में बड़े बड़े शहर अधिकांश समुद्र के किनारे पर बसे हुये हैं और अन्दर मुल्क के नहीं।

६—एक छोटा सा निबन्ध (कापी के दो पृष्ठों से अधिक नहीं) न्यूज़ीलैन्ड, ईस्ट इण्डीज़ (पूर्वीय द्वीप समूह) की आबोहवा-पैदावार और प्रसिद्ध स्थानों पर लिखो।

प्रश्न पत्र सन् १६३१

१—दिये हुये कोरे नकशे में निम्न-लिखित बातें दिखाओ :—

(क) अदन, बग़दाद, टोकियो, कुस्तुन्तुनियाँ, कराँची इरकुटस्क, कैले, ब्रिन्डिसी, व्लाडीवास्टक, हाँगकाँग, साइप्रस, मास्को।

(ख) ह्वांगहो, ओबी, ट्राँस साइबेरियन रेलवे, टुण्ड्रा, २३½ अंश उत्तर अक्षांश, बम्बई और लन्दन के बीच में डाक जाने का रास्ता।

२—गङ्गा और उनकी सहायक नदियों का नक़शा खींचो और उसमें गङ्गा के किनारे के कोई से ६ प्रसिद्ध नगर दिखाओ।

३—कौन कौन कारण ऐसे हैं जो लोगों को अपना जीवन एक ही स्थान पर घर बनाकर व्यतीत नहीं करने देते और उनको घूमने पर बाधित करते हैं। उत्तर में एशिया से उदाहरण लेकर लिखो।

४—इसका क्या कारण है कि :—

(क) जाड़े के मौसम में मद्रास में बम्बई की अपेक्षा अधिक

वर्षा होती है और गर्मी के मौसम में इसके विरुद्ध होता है।

(ख) लङ्काशायर में सूती कपड़े के बहुत से कारखाने हैं।

(ग) जापान के रहने वाले लकड़ी के मकान बनाते हैं।

५—निम्नलिखित तीन भागों में से किसी दो का उत्तर लिखो :—

(क) अगर हम न्यूयार्क से सीधे सैन्फ्रान्सिस्को को जायें, तो बतलाओ कौन कौन से कृषि और बनस्पति संबंधी खंड क्रमशः रास्ते में मिलेंगे ?

(ख) उपज, आबादी और आने जाने के रास्तों के सम्बन्ध में, गङ्गा नदी के बेसिन की तुलना सिन्ध नदी के बेसिन से करो (समानता और भिन्नता की बातें लिखो)।

(ग) (१) हिमालय पर्वत पर (२) ऐंडीज पर्वत पर और टुन्ड्रा में कौन कौन से पशु मनुष्य के काम आते हैं ? बतलाओ कि वह वहाँ के लिये किस प्रकार अनुकूल हैं और वह क्या क्या काम देते हैं।

६—मिस्र, अरजेंटीना और न्यू-साउथ-वेल्स में से किसी एक देश का, उसकी जलवायु, उपज और व्यापार के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त लेख लिखो।

प्रश्न पत्र सन् १६३२

१—दिये हुये कोरे नक़शे में नीचे की बातें दर्ज करो :—

(क) खास-खास पहाड़ों की श्रेणियाँ।

(ख) गर्मी के मौसम में हवाओं का रुख।

(ग) टैगा अर्थात् ठंडे जङ्गलों का प्रान्त ।

(घ) देहली, बनारस, इलाहाबाद, हैदराबाद, मक्का, अदन, सिंगापूर, वर्खोयास्क ।

(ङ) बम्बई, बड़ोदा, सेस्ट्रल इंडिया रेलवे और क्यूरोसीवो ।

२—सिन्ध और उसकी सहायक नदियों का नक़शा खींचो और उन नदियों के किनारे के कोई ६ प्रसिद्ध स्थान दिखलाओ ।

३—(क) किसी देश की प्राकृतिक दशा का उसके निवासियों के कारबार और उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? उत्तर एशिया से उदाहरण देकर लिखो ।

(ख) अफ्रीका का नाम अँधेरा 'प्रायद्वीप' क्यों पड़ा ?

४—(क) सिन्ध और गङ्गा के मैदान का नकशा बनाकर उनमें निम्न लिखित बातें दिखाओ :—

(१) वह सब प्रान्त जहाँ जन-संख्या बहुत घनी है ।

(२) वह प्रान्त जहाँ गेहूँ, पाट और अफीम की खेती अधिक होती है।

(ख) हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों के खेतो में सिंचाई की आवश्यकता क्यों होती है ? पानी के सिचाई के भिन्न-भिन्न साधनों के नाम लिखकर यह बताओ कि हर एक किस किस हिस्से में इस्तेमाल होता है ।

५—इसका क्या कारण है कि:—

(क) हिन्दुस्तान की नील और गन्ने की खेती को हानि पहुँची है ।

(ख) बम्बई में सूती, याकंशायर में ऊनी कारखाने ज्यादा हैं ।

—निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी दो के उत्तर दो :—

(क) दिन और रात कैसे होते हैं ? रात में सूर्य कहां छिप जाता है ? सबसे बड़ा दिन और सबसे बड़ी रात कब होती है ?

(ख) अगर हम टोकियो से लन्दन सीधे जाँय तो बतलाओ कि कौन कौन से खेती और बनस्पति के हिस्से रास्ते में मिलेंगे ?

(ग) करांची से लन्दन तक हवाई जहाज के रास्ते का हाल लिखो और यह भी लिखो कि इससे हिन्दुस्तान को क्या फ़ायदा पहुँच रहा है और आगे को क्या पहुंचेगा ?

-नाइजीरिया, चिली, तस्मानियां में से किसी एक देश पर छोटा सा निबन्ध उसके जल-वायु उपज और व्यापार के सम्बन्ध में लिखो।

प्रश्न पत्र सन् १६३३

दुनियाँ के दिये हुये खाके में नीचे की बातें दिखाओ :—

(क) हिमालय पहाड़, एल्प्स पहाड़, राकीज़ पहाड़, ड्राकिन्स-बर्ग पहाड़, (ये पहाड़ गहरी और मोटी काली रेखा से दिखाओ)।

(ख) ह्वाँगहो नदी, मिसीसिपी नदी, नील नदी, सिन्ध नदी।

(ग) टुन्ड्रा, रेगिस्तान कालाहारी, रेगिस्तान थार (: : इस निशान से दिखाओ)॥

जल-वायु के प्रान्त (
प्रान्तों को बिलकुल पेन्सिल से स्याह कर दो)।

(ङ) इलाहाबाद, हैदराबाद, दक्खिन, पेकिंग, अंगोरा, बर्लि
रोम, न्यूयार्क, केपटाउन, सिडनी, सिङ्गापूर, बम्ब
अदन (० इस निशान) से दिखाओ।

(च) कर्क रेखा व मकर रेखा और देशान्तर ८० अंश पूर्व

२—गङ्गा और उसकी सहायक नदियों का नकशा खींचो और
नदियों के किनारे कोई छः स्थान दिखाओ।

३—स्टैप्स (घास के मैदान) के रहने वालों का हाल लिखो औ
उसमें नीचे की बातें बताओ :—
घर, कपड़े, खाना, उद्यम, सफ़र करने के ढंग, भिन्न-भि
ऋतुओं में देश की दशा।

४—(क) हमारे हिन्दुस्तान के लोगों का मुख्य उद्यम क्या है ? उ
के विचार से इनकी अङ्गरेज़ों से तुलना करो।

(ख) हमारे हिन्दुस्तान में बाहर के देशों से प्रतिवर्ष क्या
चीजें आया करती हैं ?

५—(क) हमारे सूबे में शीतकाल में किन हवाओं से वर्षा होती
गर्मी के मौसम में साधारण रूप से किस तरफ़ से
चला करती है।

(ख) संयुक्त प्रान्त की नहरों का संक्षिप्त वर्णन करो।

६—नीचे के प्रश्नों में से किसी दो का उत्तर लिखो :—

(क) भूचाल कैसे आता है ? एशिया में वे कौन से हिस्से
जहाँ भूचाल अधिकतर आते हैं।

(ख) गल्फ स्ट्रीम क्या है इसका किस किस देश पर अधिक प्रभाव पड़ता है उदाहरण देकर बताओ ?

(ग) बम्बई से लन्दन जाने के कौन कौन से रास्ते हैं ? तुम किस रास्ते को सबसे अधिक पसन्द करते हो और क्यों ?

७—जापान, तिब्बत या स्विट्ज़रलैन्ड में से किसी एक देश पर संक्षिप्त निबन्ध उसकी प्राकृतिक दशा, जल-वायु. उपज, शिल्प प्रसिद्ध स्थान के सम्बन्ध में लिखो।

प्रश्न पत्र सन् १९३४

१—एशिया के दिये हुये नकशे में नीचे लिखी बातें दिखाओ :—

(क) हिन्दूकुश पहाड़, अलताई पहाड़, अराकानयोमा, पश्चिमी घाट (गहरी और मोटी काली रेखा से दिखाओ)।

(ख) यांग-टिसी-क्यांग नदी, ओबी नदी, मीकांग नदी, गंगा नदी।

(ग) कोनोफर (अर्थात् नोकीले पत्तों के) जङ्गलों का प्रान्त, मरु-भूमि, गोबी, खैबर का दर्रा, दक्षिण का पठार।

(घ) मानसून हवाओं के देश, गङ्गा की तरेटी में अगस्त के महीने में हवा चलने की दिशा।

(ङ) देहली, बम्बई, तेहरान, काबुल, सिंगापूर, टोकियो, काठमांडू, ब्लाडीवोस्टक।

(च) कुमारी अन्तरीप, प्रायद्वीप कोरिया, स्याम की खाड़ी, जल-डमरूमध्य मलक्का।

२—सिन्ध नदी और उसकी सहायक नदियों का नक़शा खींचो और इन नदियों के किनारे के कोई छः शहर दिखलाओ।

३—(क) एशिया की जल-वायु का संक्षेप में वर्णन करो।

(ख) तिजारती हवाएँ किनको कहते हैं? प्रायः यह किस दिशा में चलती हैं और यह पृथ्वी के कौन से भाग में चलती हैं।

४—हिन्दुस्तान को उसके प्राकृतिक भागों में बांटो और उसमें से किसी एक भाग का संक्षिप्त वर्णन करो।

५—(क) हमारे प्रान्त की मुख्य मुख्य खेती की उपज क्या है? कारण सहित लिखो।

(ख) हिन्दुस्तान से बाहर के देशों को अधिकतर कौन कौन सी वस्तुएँ जाती हैं?

६—निम्न लिखित प्रश्नों में से किसी दो का उत्तर लिखो:—

(क) भूचाल आने के क्या कारण हैं? पृथ्वी के किन भागों में भूचाल बहुधा आते हैं? उत्तरी हिन्दुस्तान में जो हाल में भूचाल आया था उससे किन किन स्थानों को अधिक हानि पहुंची?

(ख) हिन्दुस्तान में प्रायः वर्षा साल के किस भाग में होती है और क्यों?

(ग) विषुवत रेखा, देशान्तर, पैमाना और नक़शे से तुम क्या समझते हो?

७—ईरान, मिस्र या न्यूज़ीलैन्ड में से किसी एक देश का संक्षिप्त हाल उसकी प्राकृतिक दशा, जल-वायु, उपज, शिल्प, प्रसिद्ध स्थान के सम्बन्ध में लिखो।